

राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों

की

ग्रन्थ-सूची

[भाग ३]

[जयपुर के श्री दिगम्बर जैन मन्दिर दीवान बधीचन्दजी एवं दिगम्बर जैन मन्दिर
ठोलियों के शास्त्र भण्डारों के ग्रन्थों की सूची]



सम्पादक :—

कस्तूरचन्द कासलीवाल

एम. ए., शास्त्री

अनूपचन्द न्यायतीर्थ

साहित्यरत्न,



प्रकाशक :—

बधीचन्द गंगवाल

मन्त्री :—

प्रबन्धकारिणी कमेटी

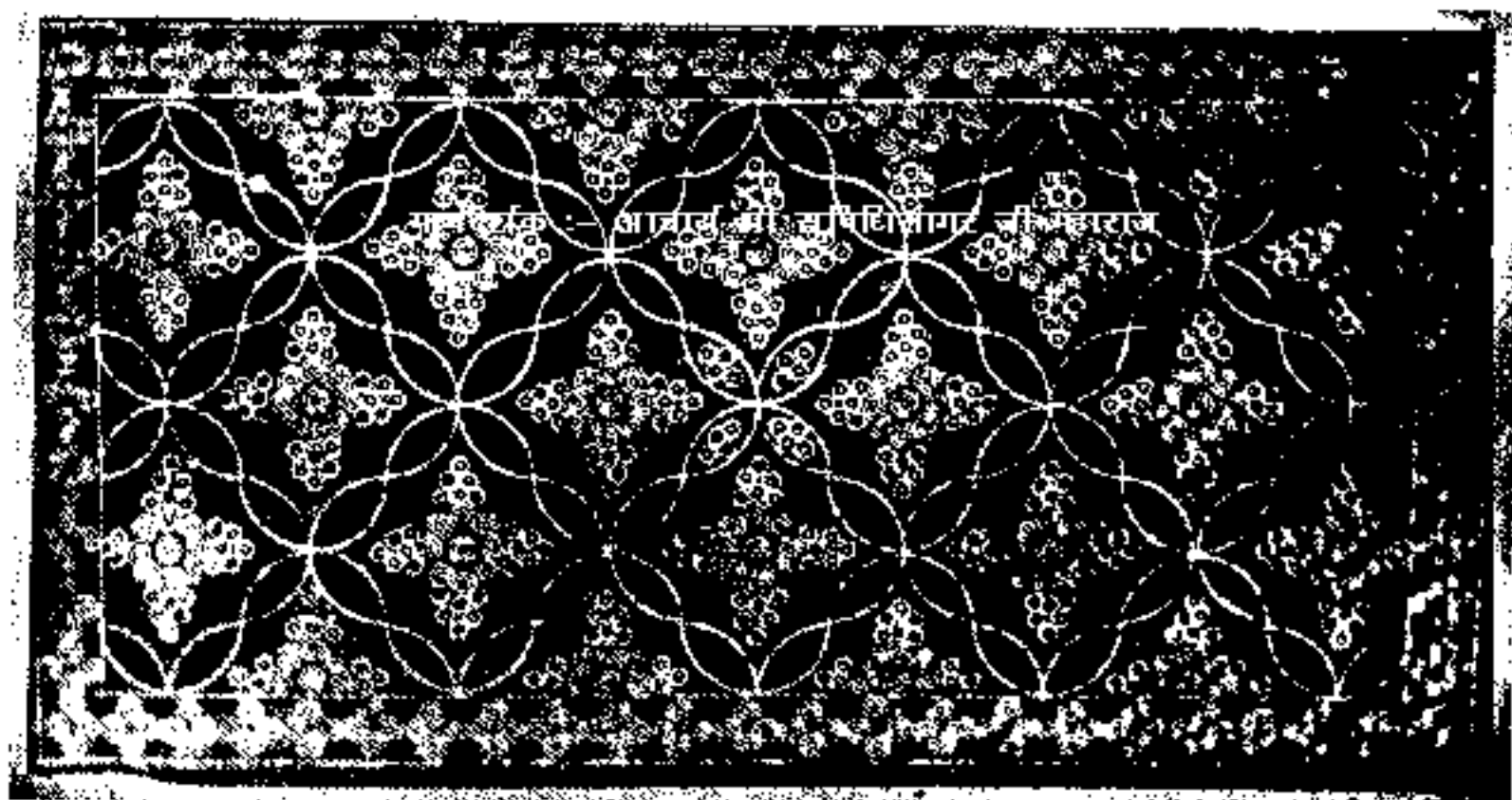
श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी

महावीर पार्क रोड, जयपुर.

★ विषय सूची ★

१. प्रकाशकीय	—	पृष्ठ संख्या
२. प्रस्तावना	—	अ
३. विषय	बधीषन्दजी के मन्दिर के ग्रन्थ	ठोलियों के मन्दिर के ग्रन्थ
	पृष्ठ	पृष्ठ
सिद्धान्त एवं चर्चा	१—२२	१७५—१८२
धर्म एवं आचार शास्त्र	२३—३८	१८२—१९०
अध्यात्म एवं योग शास्त्र	३८—४६	१९१—१९५
न्याय एवं दर्शन	४६—४९	१९६—१९७
पूजा एवं प्रतिष्ठादि अन्य विधान	४९—६३	१९७—२०६
पुराण	६३—६७	२२२—२२४
काव्य एवं चरित्र	६७—८०	२०६—२२१
कथा एवं रासा साहित्य	८१—८७	२२४—२२६
व्याकरण शास्त्र	८७	२३०—२३१
कोश एवं छन्द शास्त्र	८८	२३२—२३३
नाटक	८८—९२	२३३—२३४
लोक विज्ञान	९२—९४	२३४
सुभाषित एवं नीति शास्त्र	९४—१००	२३५—२३७
स्तोत्र	१००—१०६	२३८—२४४
ज्योतिष एवं निमित्तज्ञान शास्त्र	—	२४५—२४६
आयुर्वेद	—	२४६—२४७
गणित	—	२४८
रस एवं अलंकार	—	२४८—२५२
रसुट एवं अवशिष्ट रचनायें	१६८—१७४	२५२—२५८
गुटके एवं संग्रह ग्रन्थ	१९०—१९७	२५८—२६४
४. ग्रन्थानुक्रमणिका	—	२६५—२६६
५. ग्रन्थ प्रशस्तियों की सूची	—	२६०—२६३
६. लेखक प्रशस्तियों की सूची	—	२६४—२६५
७. ग्रन्थ एवं ग्रन्थकार	—	२६६—२७६
८. शुद्धाशुद्धिपत्र	—	२७७

जैन शास्त्र-भण्डारों के ग्रन्थों के नीचे ऊपर लगाये जाने वाले कलात्मक पुटों के चित्र—



जयपुर के चौधरियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डार का एक कलात्मक पुटा
जिस पर चांदी के तारों से काम किया गया है।

मिथ्याजीविय नित्यचेतनास्वरूपमेवैलम्योहेप्रनारितैकलैककर्ममिसकोताहीकोनिमित्तपाये
रागादिकसावनएवयोहेशरीरकोमिन्नामजैसेभवत्यको॥रागादिकसावनकोपायकैनिमित्तपु
निहतकर्मवैभ्रिहोहेवनावकलको॥जैमैहीप्रमततयोमानुषशरीरजोगहूँवमैतौमनै
इहोवामनिजयलको॥३६॥तिहा॥रिजापतिसुतगुनजन्माजाकोजोगीसमा॥सोरमिहो
जाते॥मारेप्रगदमकास॥३७॥जैआतमअरपुल्लसै॥मिहिकैजमोयस्यरवभा॥तोअसम

जयपुर के बभीचन्दजी के मन्दिर के शास्त्र भण्डार में संग्रहीत महा पं० टींडरमलजी द्वारा
लिखित 'मोक्षमार्ग प्रकाश' का चित्र।



जयपुर के ठोलियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डार का एक पुटा—
जिस पर झिले हुए फूलों का जाल बिछा हुआ है।

—== प्रकाशकीय ==—

श्री महावीर ग्रन्थमाला का यह सातवां पुष्प है तथा राजस्थान के जैन ग्रन्थभण्डारों की ग्रन्थ सूची का तीसरा भाग है जिसे पाठकों के हाथों में देने के लिये बड़ी प्रसन्नता होती है। ग्रन्थ सूची का दूसरा भाग सन् १९५४ में प्रकाशित हुआ था। तीन वर्ष के इस लम्बे समय में किसी भी पुस्तक का प्रकाशन न होना अवश्य खटकने वाली बात है लेकिन जयपुर एवं अन्य स्थानों के शास्त्र भण्डारों की छान बीन तथा सूची बनाने आदि के कार्यों में व्यस्त रहने के कारण प्रकाशन का कार्य न हो सका। सूची के इस भाग में जयपुर के दि० जैन मन्दिर बधीचन्दजी तथा ठोलियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डारों के ग्रन्थों की सूची दी गयी है। ये दोनों ही मन्दिर जयपुर के प्रमुख एवं प्रासेद्ध मन्दिरों में से हैं। दोनों भण्डारों में कितना महत्वपूर्ण साहित्य संग्रहीत है यह बताना तो विद्वानों का कार्य है किन्तु मुझे तो यहाँ इतना ही उल्लेख करना है कि बधीचन्दजी के मन्दिर का शास्त्र भण्डार तो १८ वीं शताब्दी के सर्व प्रसिद्ध विद्वान् टोडरमलजी की साहित्यिक सेवाओं का केन्द्र रहा था और आज भी उनके पावन हाथों से लिखी हुई मोक्षमार्गप्रकाश एवं आत्मानुशासन की प्रतियाँ इस भण्डार में संग्रहीत हैं। ठोलियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डार में भी प्राचीन साहित्य का अच्छा संग्रह है तथा जयपुर के व्यवस्थित भण्डारों में से है।

इस तीसरे भाग में निर्दिष्ट भण्डारों के अतिरिक्त जयपुर, भरतपुर, कामां, डीग, दौसा, मौजमावाड़, बसवा, करौली, बयाना आदि स्थानों के करीब ४० भण्डारों की सूचियाँ पूर्ण रूप से तैयार हैं जिन्हें चतुर्थ भाग में प्रकाशित करने की योजना है। ग्रन्थ सूचियों के अतिरिक्त हिन्दी एवं अपभ्रंश भाषा के ग्रन्थों के सम्पादन का कार्य भी चल रहा है तथा जिनमें से कवि सधारू कृत प्रद्युम्नचरित, प्राचीन हिन्दी पद संग्रह, हिन्दी भाषा की प्राचीन रचनाएँ, महाकवि नयनन्दि कृत सुदंशणचरित एवं राजस्थान के जैन मूर्तिलेख एवं शिलालेख आदि पुस्तकें प्रायः तैयार हैं तथा जिन्हें शीघ्र ही प्रकाशित करवाने की व्यवस्था की जा रही है।

हमारे इस साहित्य प्रकाशन के छोटे से प्रयत्न से भारतीय साहित्य एवं विशेषतः जैन साहित्य को कितना लाभ पहुँचा है यह बताना तो कुछ कठिन है किन्तु समय समय पर जो रिसर्चस्कालर्स जयपुर के जैन भण्डारों को देखने के लिये आने लगे हैं इससे पता चलता है कि सूचियों के प्रकाश में आने से जैन शास्त्र भण्डारों के अवलोकन की ओर जैन एवं जैनेतर विद्वानों का ध्यान जाने लगा है तथा वे खोजपूर्ण पुस्तकों के लेखन में जैन भण्डारों के ग्रन्थों का अवलोकन भी आवश्यक समझने लगे हैं।

सूचियाँ बनाने का एक और लाभ यह होता है कि जो भण्डार वर्षों से बन्द पड़े रहते हैं वे भी खुल जाते हैं और उनको व्यवस्थित बना दिया जाता है जिससे उनसे फिर सभी लाभ उठा सकें। यहाँ

हम समाज से एक निवेदन करना चाहते हैं कि यदि राजस्थान अथवा अन्य स्थानों में प्राचीन शास्त्र भण्डार हों तो वे हमें सूचित करने का कष्ट करें। जिससे हम वहाँ के भण्डारों की ग्रन्थ सूची तैयार करवा सकें। तथा उसे प्रकाश में ला सकें।

क्षेत्र के सीमित साधनों को देखते हुये साहित्य प्रकाशन का भारी कार्य जल्दी से नहीं हो रहा है इसका हमें भी दुःख है लेकिन भविष्य में यही आशा की जाती है कि इस कार्य में और भी तेजी आवेगी और हम अधिक से अधिक ग्रन्थों को प्रकाशित कराने का प्रयत्न करेंगे।

अन्त में हम बधीचन्दजी एवं ठोलियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डार के व्यवस्थापकों को धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकते जिन्होंने हमें शास्त्रों की सूची बनाने एवं समय समय पर ग्रन्थ देखने की पूरी सुविधाएं प्रदान की हैं।

जयपुर

ता० १५-६-५७

बधीचन्द गंगवाल



== प्रस्तावना ==

राजस्थान प्राचीन काल से ही साहित्य का केन्द्र रहा है। इस प्रदेश के शासकों से लेकर साधारण जनो तक ने इस दिशा में प्रशंसनीय कार्य किया है। कितने ही राजा महाराजा स्वयं साहित्यिक थे तथा साहित्य निर्माण में रस लेते थे। उन्होंने अपने राज्यों में होने वाले कवियों एवं विद्वानों को आश्रय दिया तथा बड़ी बड़ी पदवियां देकर सम्मानित किया। अपनी अपनी राजधानियों में हस्तलिखित ग्रंथ संग्रहालय स्थापित किये तथा उनकी सुरक्षा करके प्राचीन साहित्य की महत्वपूर्ण निधि को नष्ट होने से बचाया। यही कारण है कि आज भी राजस्थान में कितने ही स्थानों पर लिखे हुए जयपुर, अलवर, बीकानेर आदि स्थानों पर राज्य के पोधीखाने मिलते हैं जिनमें संस्कृत, हिन्दी एवं राजस्थानी भाषा का महत्वपूर्ण साहित्य संग्रहीत किया हुआ है। यह सब कार्य राज्य-स्तर पर किया गया। किन्तु इसके विपरीत राजस्थान के निवासियों ने भी पूरी लगन के साथ साहित्य एवं साहित्यिकों की उल्लेखनीय सेवाएं की हैं और इस दिशा में ब्राह्मण परिवारों की सेवाओं से भी अधिक जैन यतियों एवं गृहस्थों की सेवा अधिक प्रशंसनीय रही है। उन्होंने विद्वानों एवं साधुओं से अनुरोध करके नवीन साहित्य का निर्माण करवाया। पूर्व निर्मित साहित्य के प्रचार के लिये ग्रंथों की प्रतिलिपियां करवायी गयीं तथा उनको स्वाध्याय के लिये शास्त्र भण्डारों में विराजमान की गयीं। जन साधारण के लिये नये नये ग्रंथों की उपलब्धि की गयी, प्राचीन एवं अनुपलब्ध साहित्य का संग्रह किया गया तथा जीर्ण एवं शीर्ण ग्रंथों का जीर्णोद्धार करवा कर उन्हें नष्ट होने से बचाया। उधर साहित्यिकों ने भी अपना जीवन साहित्य सेवा में होम दिया। दिन रात वे इसी कार्य में जुटे रहे। उनको अपने खान-पान एवं रहन-सहन की कुछ भी चिन्ता न थी। महापंडित टोडरमलजी के सम्बन्ध में तो यह किम्वदन्ती है कि साहित्य-निर्माण में व्यस्त रहने के कारण ६ मास तक उनके भोजन में नमक नहीं डाला गया किन्तु इसका उनको पता भी न लगा। ऐसे विद्वानों के कारण ही विशाल साहित्य का निर्माण हो सका जो हमारे लिये आज अमूल्य निधि है। इसके अतिरिक्त कुछ साहित्यसेवी जो अधिक विद्वान् नहीं थे वे प्राचीन ग्रंथों की प्रतिलिपियां करके ही साहित्य सेवा का महान पुण्य उपार्जन करते थे। राजस्थान के जैन शास्त्र-भण्डारों में ऐसे साहित्य-सेवियों के हजारों शास्त्र संग्रहीत हैं। विज्ञान के इस स्वर्णयुग में भी हम प्रकाशित ग्रंथों को शास्त्र-भण्डारों में इसलिये संग्रह करना नहीं चाहते कि उनका स्वाध्याय करने वाला कोई नहीं है किन्तु हमारे पूर्वजों ने इन शास्त्र भण्डारों में शास्त्रों का संग्रह केवल एक मात्र साहित्य सेवा के आधार पर किया था न कि स्वाध्याय करने वालों की संख्या को देख कर। क्योंकि यदि ऐसा होता तो आज इन शास्त्र भण्डारों में इतने वर्षों के पश्चात् भी हमें हजारों की संख्या में हस्तलिखित ग्रंथ संग्रहीत किये हुये नहीं मिलते।

जैन संघ की इस अनुकरणीय एवं प्रशंसनीय साहित्य सेवा के फलस्वरूप राजस्थान के गांवों, कस्बों एवं नगरों में ग्रंथ संग्रहालय स्थापित किये गये तथा उनकी सुरक्षा एवं संरक्षण का सारा भार उन्हीं स्थानों पर रहने वाले जैन आबकों को दिया गया। कुछ स्थानों के भण्डार भट्टारकों, यतियों एवं पांड्यों के अधिकार में रहे। ऐसे भण्डार इंदौर, जैन समाज में अधिक हैं। राजस्थान में आज भी करीब ३०० गांव, कस्बे तथा नगर आदि होंगे जहाँ जैन शास्त्र संग्रहालय मिलते हैं। यह तीन सौ की संख्या स्थानों की संख्या है भण्डारों की नहीं। भण्डार तो किसी एक स्थान में दो तीन से लेकर २५-३० तक पाये जाते हैं। जयपुर में ३० से अधिक भण्डार हैं, पाटन में बीस से अधिक भण्डार हैं तथा बीकानेर आदि स्थानों में दस पन्द्रह के आस पास होंगे। सभी भण्डारों में शास्त्रों की संख्या भी एक सी नहीं है। यदि किसी किसी भण्डार में पन्द्रह हजार तक ग्रन्थ हैं तो किसी में दो सौ तीन सौ भी हैं। भण्डारों की आकार प्राकार के साथ साथ उनका महत्त्व भी अनेक दृष्टियों से भिन्न भिन्न है। यदि किसी भण्डार में प्राचीन प्रतियों का अधिक संग्रह है तो दूसरे भण्डार में किसी भाषा विशेष के ग्रंथों का अधिक संग्रह है। यदि किसी भण्डार में सैद्धान्तिक एवं धार्मिक ग्रन्थों का अधिक संग्रह है तो किसी भण्डार में काव्य, नाटक, रासा, व्याकरण, ज्योतिष आदि लौकिक साहित्य का अधिक संग्रह है। इनके अतिरिक्त किसी किसी भण्डार में जैनेतर साहित्य का भी पर्याप्त संग्रह मिलता है।

साहित्य संग्रह की इस दिशा में राजस्थान के अन्य स्थानों की अपेक्षा जयपुर, नागौर, जैसलमेर, बीकानेर, अजमेर आदि स्थानों के भण्डार संख्या, प्राचीनता, साहित्य-समृद्धि एवं विषय-वैविध्य आदि सभी दृष्टियों से उल्लेखनीय हैं। राजस्थान के इन भण्डारों में, ताडपत्र, कपड़ा, और कागज इन तीनों पर ही ग्रंथ मिलते हैं किन्तु ताडपत्र के ग्रंथ तो जैसलमेर के भण्डारों में ही मुख्यतया संग्रहीत हैं अन्य स्थानों में उनकी संख्या नाम मात्र की है। कपड़े पर लिखे हुये ग्रंथ भी बहुत कम संख्या में मिलते हैं। अभी जयपुर के पार्वनाथ ग्रंथ भण्डार में कपड़े पर लिखा हुआ संवत् १५१६ का एक ग्रंथ मिला है। इसी तरह के ग्रंथ अन्य भण्डारों में भी मिलते हैं लेकिन उनकी संख्या भी बहुत कम है। सबसे अधिक संख्या कागज पर लिखे हुये ग्रंथों की है जो सभी भण्डारों में मिलते हैं तथा जो १३ वीं शताब्दी से मिलने लगते हैं। जयपुर के एक भण्डार में संवत् १३१६ (सन् १२६२) का एक ग्रंथ कागज पर लिखा हुआ सुरक्षित है।

यद्यपि जयपुर नगर को बसे हुये करीब २२५ वर्ष हुये हैं किन्तु यहाँ के शास्त्र-भण्डार संख्या, प्राचीनता, साहित्य-समृद्धि एवं विषय वैविध्य आदि सभी दृष्टियों से उत्तम हैं। वैसे तो यहाँ के प्रायः प्रत्येक मन्दिर एवं चैत्यालय में शास्त्र संग्रह किया हुआ मिलता है किन्तु आमेर शास्त्र भण्डार, बड़े मन्दिर का शास्त्र भण्डार, बाबा दुलीचन्द का शास्त्र भण्डार, ठोलियों के मन्दिर का शास्त्र भण्डार, बंधीचन्दजी के मन्दिर का शास्त्र भण्डार, पांडे लूणकरणजी के मन्दिर का शास्त्र भण्डार, गोधों के मन्दिर का शास्त्र भण्डार, पार्वनाथ के मन्दिर का शास्त्र भण्डार, पाटोदी के मन्दिर का शास्त्र भण्डार, लश्कर के मन्दिर

का शास्त्र भण्डार, छोटे दीवान जी के मन्दिर का शास्त्र भण्डार, संधीजी के मन्दिर का शास्त्र भण्डार, झाबड़ों के मन्दिर का शास्त्र भण्डार, जोबनेर के मन्दिर का शास्त्र भण्डार, नया मन्दिर का शास्त्र भण्डार आदि कुछ ऐसे शास्त्र भण्डार हैं जिनमें संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी, भाषाओं के महत्त्वपूर्ण साहित्य का संग्रह है। उक्त भण्डारों की प्रायः सभी की ग्रंथ सूचियाँ तैयार की जा चुकी हैं जिससे पता चलता है कि इन भण्डारों में कितना अपार साहित्य संकलित किया हुआ है। राजस्थान के ग्रंथ भण्डारों के छोटे से अनुभव के आधार पर यह लिखा जा सकता है कि अपभ्रंश एवं हिन्दी की विभिन्न धाराओं का जितना अधिक साहित्य जयपुर के इन भण्डारों में संग्रहीत है उतना राजस्थान के अन्य भण्डारों में संभवतः नहीं है। इन ग्रन्थ भण्डारों की ग्रन्थ सूचियाँ प्रकाशित हो जाने के पश्चात् विद्वानों को इस दिशा में अधिक जानकारी मिल सकेगी।

ग्रंथ सूची का तृतीय भाग विद्वानों के समक्ष है। इसमें जयपुर के दो प्रसिद्ध भण्डार—बधीचन्दजी के मन्दिर का शास्त्र भण्डार एवं ठोलियों के मन्दिर का शास्त्र भण्डार—के ग्रंथों का संक्षिप्त परिचय उपस्थित किया गया है। ये दोनों भण्डार नगर के प्रसिद्ध एवं महत्त्वपूर्ण भण्डारों में से हैं।

बधीचन्दजी के मन्दिर का शास्त्र भण्डार—

बधीचन्दजी का दि० जैन मन्दिर जयपुर के जैन पञ्चायती मन्दिरों में से एक मन्दिर है। यह मन्दिर गुमानपन्थ के आम्नाय का है। गुमानीरामजी महापंडित टोडरमलजी के सुपुत्र थे जिन्होंने अपना अलग ही गुमानपन्थ चलाया था। यह पन्थ दि० जैनों के तेरहपन्थ से भी अधिक सुधारक है तथा भट्टारकों द्वारा प्रचलित शिथिलाचार का कट्टर विरोधी है। यह विशाल एवं कलापूर्ण मन्दिर नगर के जौहरी बाजार के घी वालों के रास्ते में स्थित है। काफी समय तक यह मन्दिर पं० टोडरमलजी, गुमानीरामजी की साहित्यिक प्रवृत्तियों का केन्द्रस्थल रहा है। पं० टोडरमलजी ने यहीं बैठकर गोमटसूत्र, आत्मानुशासन जैसे महान ग्रंथों की हिन्दी भाषा एवं मोक्षमार्गप्रकाश जैसे महत्त्वपूर्ण सैद्धान्तिक ग्रन्थ की रचना की थी। आज भी इस भण्डार में मोक्षमार्गप्रकाश, आत्मानुशासन एवं गोमटसूत्र भाषा की मूल प्रतियाँ जिनको पंडितजी ने अपने हाथों से लिखा था, संग्रहीत हैं।

पञ्चायती मन्दिर होने के कारण तथा जयपुर के विद्वानों की साहित्यिक प्रगतियों का केन्द्र होने के कारण यहाँ का शास्त्र भण्डार अधिक महत्त्वपूर्ण है। यहाँ संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश हिन्दी, राजस्थानी एवं द्वादारी भाषाओं के ग्रन्थों का उत्तम संग्रह किया हुआ मिलता है। इन हस्तलिखित ग्रन्थों की संख्या १२७८ है। इनमें १६२ गुटके तथा शेष १११६ ग्रंथ हैं। हस्तलिखित ग्रंथ सभी विषय के हैं जिनमें सिद्धान्त, धर्म एवं आचार शास्त्र, अध्यात्म, पूजा, स्तोत्र आदि विषयों के अतिरिक्त, काव्य, चरित, पुराण, कथा, नीतिशास्त्र, सुभाषित आदि विषयों पर भी अच्छा संग्रह है। लेखक प्रशस्ति संग्रह में ४० लेखक प्रशस्तियाँ इसी भण्डार के ग्रन्थों पर से दी गयी हैं। इनसे पता चलता है कि भण्डार में

१२ वीं शताब्दी से लेकर १६ वीं शताब्दी तक की प्रतियों का अच्छा संग्रह है। ये प्रतियां सम्पादन कार्य में काफी सहायक सिद्ध हो सकती हैं। हेमराज कृत प्रवचनसार भाषा एवं गोमटसार कर्मकाण्ड भाषा, बनारसीदास का समयसार नाटक, भ० शुभचन्द्र का चारित्रशुद्धि विधान, पं० लाखू का जिणदत्तचरित्र, पं० टोडरमलजी द्वारा रचित गोमटसार भाषा, आदि कितने ही ग्रन्थों की तो ऐसी प्रतियां हैं जो अपने अस्तित्व के कुछ वर्षों पश्चात् की ही लिखी हुई हैं। इनके अतिरिक्त कुछ ग्रन्थों की ऐसी प्रतियां भी हैं जो ग्रन्थ निर्माण के काफी समय के पश्चात् लिखी होने पर भी महत्वपूर्ण हैं। ऐसी प्रतियों में स्वयम्भू का हरिवंशपुराण, प्रभाचन्द्र की आत्मानुशासन टीका, महाकवि बीर कृत जम्बूरवार्त्ताचरित्र, कवि सधारू का प्रद्युम्नचरित, नन्द का यशोधर चरित्र, मल्लकवि कृत प्रबोधचन्द्रोदय नाटक, सुखदेव कृत वणिकप्रिया, वंशीधर की दस्तूरमालिका, पूज्यपाद कृत सर्वार्थसिद्धि आदि उल्लेखनीय हैं।

भण्डार में सबसे प्राचीन प्रति बृहद्भारणकाव्य की वृत्ति की है जो संवत् १४८१ की लिखी हुई है। यह प्रति अपूर्ण है। तथा सबसे नवीन प्रति संवत् १६८७ की अढाई द्वीप पूजा की है। इस प्रकार गत ५०० वर्षों में लिखा हुआ साहित्य का यहाँ उत्तम संग्रह है। भण्डार में मुख्य रूप में आमेर एवं सांगानेर इन दो नगरों से आये हुये ग्रन्थ हैं जो अपने २ समय में जैनो के केन्द्र थे।

ठोलियों के दि० जैन मन्दिर का शास्त्र भण्डार—

ठोलियों के मन्दिर का शास्त्र भण्डार भी ठोलियों के दि० जैन मन्दिर में स्थित है। यह मन्दिर भी जयपुर के सुन्दर एवं विशाल मन्दिरों में से एक है। मन्दिर में विराजमान चिल्लोरी पात्राण की सुन्दर मूर्तियां दर्शनार्थियों के लिये विशेष आकर्षण की वस्तु है। जयपुर के किसी ठोलिया परिवार द्वारा निर्मित होने के कारण यह मन्दिर ठोलियों के मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध है। मन्दिर पञ्चायती मन्दिर तो नहीं है किन्तु नगर के प्रमुख मन्दिरों में से एक है। यहाँ का शास्त्र भण्डार एक नवीन एवं भव्य कमरे में विराजमान है। शास्त्र भण्डार के सभी ग्रन्थ वेष्टनों में बंधे हुये हैं एवं पूर्ण व्यवस्था के साथ रखे हुये हैं जिससे आवश्यकता पडने पर उन्हें सरलता से निकाला जा सकता है। पहिले गुटकों की कोई व्यवस्था नहीं थी तथा न उनकी सूची ही बनी हुई थी किन्तु अब उनको भी व्यवस्थित रूप से रख दिया गया है।

ग्रन्थ भण्डार में ५१५ ग्रन्थ तथा १४३ गुटके हैं। यहाँ पर प्राचीन एवं नवीन दोनों ही प्रकार की प्रतियों का संग्रह है जिससे पता चलता है कि भण्डार के व्यवस्थापकों का ध्यान सदैव ही हस्तलिखित ग्रन्थों के संग्रह की ओर रहा है। इस भण्डार में ऐसा अच्छा संग्रह मिल जावेगा ऐसी आशा सूची बनाने के प्रारम्भ में नहीं थी। किन्तु वास्तव में देखा जावे तो संग्रह अधिक न होने पर भी महत्वपूर्ण है और भाषा साहित्य के इतिहास की कितनी ही कड़ियां जोड़ने वाला है। यहाँ पर मुख्यतः संस्कृत और हिन्दी इन दो भाषाओं के ग्रन्थों का ही अधिक संग्रह है। भण्डार में सबसे प्राचीन प्रति ब्रह्मदेव कृत द्रव्यसंग्रह टीका की है जो संवत् १४१६ (सन् १३५६) की लिखी हुई है। इसके अतिरिक्त ये गीन्द्रदेव

का परमात्मप्रकाश सटीक, हेमचन्द्राचार्य का शब्दानुशासनवृत्ति एवं पुष्पदन्त का आदिपुराण आदि रचनाओं की भी प्राचीन प्रतियाँ उल्लेखनीय हैं। यहाँ पर पूजापाठ संग्रह का एक गुटका है जिसमें ४७ पूजाओं का संग्रह है। गुटका प्राचीन है। प्रत्येक पूजा का मण्डल चित्र दिया हुआ है। जो रंगीन एवं सुन्दर है। इस सचित्र ग्रन्थ के अतिरिक्त वेष्टनों के २ पुट्टे ऐसे मिले हैं जिनमें से एक पर तो २४ तीर्थंकरों के चित्र अंकित हैं तथा दूसरे पुट्टे पर केवल बेल बूटे हैं।

भण्डार में संग्रहीत गुटके बहुत महत्त्व के हैं। हिन्दी की अधिकांश सामग्री इन्हीं गुटकों में प्राप्त हुई है। भ० शुभचन्द्र, मेघराज, रघुनाथ, ब्रह्म जिनदास आदि कवियों की कितनी ही नवीन रचनाएँ प्राप्त हुई हैं जिनको हिन्दी साहित्य में महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त होगा। इनके अतिरिक्त भण्डार में २ रासो मिले हैं जो ऐतिहासिक हैं तथा दिगम्बर भण्डारों में उपलब्ध होने वाले ऐसे साहित्य में सर्वप्रथम रासों हैं। इनमें एक पर्वत पाटणी का रासो है जो १६ वीं शताब्दी में होने वाले पर्वत पाटणी के जीवन पर प्रकाश डालता है। दूसरा कृष्णदास वधेरवाल का रासो है जो कृष्णदास के जीवन पर तथा उनके द्वारा किये गये चान्दखेड़ी में प्रतिष्ठा महोत्सव पर विस्तृत प्रकाश डालता है। इसी प्रकार संवत् १७३३ में लिखित एक भट्टारक पट्टावलि भी प्राप्त हुई है जो हिन्दी में इस प्रकार की प्रथम पट्टावलि है तथा भट्टारक परम्परा पर प्रकाश डालती है।

भण्डारों में उपलब्ध नवीन साहित्य—

जैसा कि पहिले कहा जा चुका है दोनों शास्त्र भण्डार ही हिन्दी रचनाओं के संग्रह के लिए अत्यधिक महत्त्वपूर्ण हैं। १४ वीं शताब्दी से लेकर २० वीं शताब्दी तक जैन एवं जैनेतर विद्वानों द्वारा निर्मित हिन्दी साहित्य का यहाँ अच्छा संग्रह है। हिन्दी साहित्य की नवीन कृतियों में कवि सुधारु का प्रद्युम्न चरित, (सं० १४११) कवि वीर कृत भण्डार गीत, आज्ञासुन्दर की विद्याविलास चौपई (१५१६), मुनि कनकामर की ग्यारहप्रतिमावर्णन, पद्मनाभ कृत झूंगर की बावनी (१५४३), विनयसमुद्र कृत विक्रमप्रबन्ध रास (१५७३) झीहल का उदर गीत एवं पद, ब्रह्म जिनदास का आदिनाथस्तवन, ब० कामराज कृत त्रैलोक्य शलाकापुरुषवर्णन, कनकसोम की जड़तपदवेलि (१६२५), कुमदचन्द्र एवं पूनो की पद एवं विनतियाँ आदि उल्लेखनीय हैं। ये १४ वीं से लेकर १६ वीं शताब्दी के कुछ कवि हैं जिनकी रचनाएँ दोनों भण्डारों में प्राप्त हुई हैं। इसी प्रकार १७ वीं शताब्दी से १९ वीं शताब्दी के कवियों की रचनाओं में ब० गुलाल की विवेक चौपई, उपाध्याय जयसागर की जिनकुशलसूरि स्तुति, जितरंगसूरि की प्रबोधबावनी एवं प्रस्ताविक दोहा, ब० ज्ञानसागर का अतकथाकोश, टोडर कवि के पद, पदमराज का राजुल का बारहमासा एवं पार्श्वनाथस्तवन, नन्द की यशोधर चौपई (१६७०), पोपटशाह कृत मदनमंजरी कथा प्रबन्ध, बनारसीदास कृत मांभा, मनोहर कवि की चिन्तामणि मनबावनी, लघु बावनी एवं सुगुरुसीस, मल्लकवि कृत प्रबोधचन्द्रोदयनाटक, मुनि मेघराज कृत संयम प्रवहणगीत (१६६८), रूपचन्द्र का आध्यात्म सर्वग्या, भ० शुभचन्द्र कृत तत्त्वसार-

दोहा; समयसुन्दर का आत्मउपदेशगीत, जमावत्तीसी एवं दानशीलसंवाद; सुखदेव कृत वणिकप्रिया, (१७१३) हर्षकीर्ति का नेमिनाथराजुलगीत, नेमीश्वरगीत, एवं मोरदा; अजयराज कृत नेमिनाथचरित (१७६३) एवं यशोधर चौपई (१७६६); कनककीर्ति का मेघकुमारगीत, गोपालदास का प्रमादीगीत एवं यदुरासो; धानसिंह का रत्नकरण्ड आवकाचार एवं सुबुद्धिप्रकाश (१८४७) दाबूदयाल के दोहे, दूल्हा कवि का कविकुलकरुणा-भरण; नगरीदास का इश्कचिमन; एवं बैनविलास, वंशीधर कृत इस्तूरमालिका; भगवानदास के पद; मनराम द्वारा रचित अक्षरमाला, मनरामविलास, एवं धर्मसहेली; मुनि महेस की अक्षरवत्तीसी, रघुनाथ का गणभेद, ज्ञानसार, नित्यविहार एवं प्रसंगसार, श्रुतसागर का षट्मालवर्णन (१८२१); हेमराज कृत दोहाशतक; केशरीसिंह का वर्द्धमानपुराण (१८७३) चंपाराम का धर्मप्रश्नोत्तरआवकाचार, एवं भद्रबाहु-चरित्र, बाबा दुलीचन्द कृत धर्मपरीक्षा भाषा आदि उल्लेखनीय हैं। ये रचनायें काव्य, पुराण, चरित, नाटक, रस एवं अलंकार अर्थशास्त्र, इतिहास आदि सभी विषयों से सम्बन्धित हैं। इनमें से बहुत सी तो ऐसी रचनायें हैं। जो सम्भवतः सर्व प्रथम विद्वानों के समक्ष आयी होंगी।

सचित्र साहित्य—

दोनों भण्डारों में हिन्दी एवं अपभ्रंश का महत्त्वपूर्ण साहित्य उपलब्ध होते हुये सचित्र साहित्य का न मिलना जैन श्रावकों एवं विद्वानों की इस ओर उदासीनता प्रगट करती है। किन्तु फिर भी ठोलियों के मन्दिर में एक पूजा संग्रह प्राप्त हुआ है जो सचित्र है। इसमें पूजा के विधानों के मंडल चित्रित किये हुये हैं। चित्र सभी रंगीन हैं एवं कला पूर्ण भी हैं। इसी प्रकार एक शस्त्र के पुट्टे पर चौबीस तीर्थंकरों के चित्र दिये हुये हैं। सभी रंगीन एवं कला पूर्ण हैं। यह पुट्टा १६ वीं शताब्दी का प्रतीत होता है।

विद्वानों द्वारा लिखे हुये ग्रन्थ—

इस दृष्टि से वधीचन्दजी के मन्दिर का शास्त्र भण्डार उल्लेखनीय है। यहाँ पर महा पंडित टोडरमलजी द्वारा लिखित मोक्षमार्गप्रकाश एवं आत्मानुशासन भाषा एवं गोमटसार भाषा की प्रतियां सुरक्षित हैं। ये प्रतियां साहित्यिक दृष्टि से नहीं किन्तु इतिहास एवं पुरातत्त्व की दृष्टि से अधिक महत्त्वपूर्ण हैं।

विशाल पद साहित्य—

दोनों भण्डारों के गुटकों में हिन्दी कवियों द्वारा रचित पदों का विशाल संग्रह है। इन कवियों की संख्या ६० है जिनमें कबीरदास, वृन्द, सुन्दर, सूरदास आदि कुछ कवियों के अतिरिक्त शेष सभी जैन कवि हैं। इनमें अजयराज, छीहल, जगजीवन, जगतराम, मनराम, रूपचन्द, हर्षकीर्ति आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। इन कवियों द्वारा रचित हिन्दी पद भाषा एवं भाष की दृष्टि से अच्छे हैं तथा जिनका प्रकाश में आना आवश्यक है। क्षेत्र के अनुसन्धान विभाग की ओर से ऐसे पद एवं भजनों का संग्रह

किया जा रहा है और शीघ्र ही करीब २५०० पदों का एक बृहद् संग्रह प्रकाशित करने का विचार है । जिससे कम से कम यह तो पता चल सकेगा कि जैन विद्वानों ने इस दिशा में कितना महत्त्वपूर्ण कार्य किया है ।

गुटकों का महत्त्व—

वास्तव में यदि देखा जावे तो जितना भी महत्त्वपूर्ण एवं अनुपलब्ध साहित्य मिलता है उसका अधिकांश भाग इन्हीं गुटकों में संग्रहीत किया हुआ है । जैन श्रावकों को गुटकों में छोटी छोटी रचनायें संग्रहीत करवाने का बड़ा चाव था । कभी कभी तो वे स्वयं ही संग्रह कर लिया करते थे और कभी अन्य लेखकों के द्वारा संग्रह करवाते थे । इन दोनों भण्डारों में भी जितना हिन्दी का नवीन साहित्य मिला है उसका आधे से अधिक भाग इन्हीं गुटकों में संग्रह किया हुआ है । दोनों भण्डारों में गुटकों की संख्या ३०५ है । यद्यपि इन गुटकों में सर्वसाधारण के काम आने वाले स्तोत्र, पूजायें, कथायें आदि की ही अधिक संख्या है किन्तु महत्त्वपूर्ण साहित्य भी इन्हीं गुटकों में उपलब्ध होता है । गुटके सभी साइज के मिलते हैं । यदि किसी गुटके में १०-२० पत्र ही हैं तो किसी किसी गुटके में ४००-५०० पत्र तक हैं । ठोलियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डार के एक गुटके में ६५४ पत्र हैं जिनमें ४७ पूजाओं का संग्रह किया हुआ है । कुछ गुटकों में तो लेखनकाल उसके अन्त में दिया हुआ होता है किन्तु कुछ गुटकों में बीच बीच में भी लेखन-काल दे दिया जाता है अर्थात् जैसे जैसे पाठ समाप्त होते जाते हैं वैसे वैसे लेखनकाल भी दे दिया जाता है ।

इन गुटकों में साहित्यिक एवं धार्मिक रचनाओं के अतिरिक्त आयुर्वेद के नुसखे भी बहुत मिलते हैं । यदि इन्हीं नुसखों के आधार पर कोई खोज की जावे तो वह आयुर्वेदिक साहित्य के लिये महत्त्वपूर्ण चीज प्रमाणित हो सकती है । ये नुसखे हिन्दी भाषा में अनुभव के आधार पर लिखे द्युये हैं ।

आयुर्वेदिक साहित्य के अतिरिक्त किसी किसी गुटके में ऐतिहासिक सामग्री भी मिल जाती है । यह सामग्री मुख्यतः राजाओं अथवा बादशाहों की वंशावलि के रूप में होती है । कौन राजा कब राज्य सिंहासन पर बैठा तथा उसने कितने वर्ष, कितने महिने एवं कितने दिन तक शासन किया आदि विवरण दिया हुआ रहता है ।

ग्रन्थ-सूची के सम्बन्ध में—

प्रस्तुत ग्रन्थ-सूची में जयपुर के केवल दो शास्त्र भण्डारों की सूची है । हमारा विचार तो एक भण्डार की और सूची देना था लेकिन ग्रन्थ सूची के अधिक पत्र हो जाने के डर से नहीं दिया गया । प्रस्तुत ग्रन्थ सूची में जिन नवीन रचनाओं का उल्लेख आया है उनके आदि अन्त भाग भी दे दिये गये हैं जिससे विद्वानों को ग्रन्थ की भाषा, रचनाकाल, एवं ग्रन्थकार के सम्बन्ध में कुछ परिचय मिल सके ।

इसके अतिरिक्त जो लेखक प्रशस्तियां अधिक प्राचीन एवं महत्त्वपूर्ण थी उन्हें भी ग्रन्थ सूची में दे दिया गया है। इस प्रकार सूची में १०६ ग्रन्थ प्रशस्तियां एवं ५५ लेखक प्रशस्तियां दी गयी हैं जो स्वयं एक पुस्तक के रूप में हैं।

प्रस्तुत सूची में एक और नवीन ढंग अपनाया गया है वह यह है कि अधिकांश ग्रन्थों की एक प्रति का ही सूची में परिचय दिया गया है। यदि उस ग्रन्थ की एक से अधिक प्रतियाँ हैं तो विशेष में उनकी संख्या को ही लिख दिया गया है लेकिन यदि दूसरी प्रति भी महत्त्वपूर्ण अथवा विशेष प्राचीन है तो उस प्रति का भी परिचय सूची में दे दिया गया है। इस प्रकार करीब ५०० प्रतियों का परिचय ग्रन्थ-सूची में नहीं दिया गया जो विशेष महत्त्वपूर्ण प्रतियां नहीं थी।

कुछ विद्वानों का यह मत है कि प्रत्येक भण्डार की ग्रन्थ सूची न होकर एक सूची में १०-१५ भण्डारों की सूची हो तथा एक ग्रन्थ किस किस भण्डार में मिलता है इतना मात्र उसमें दे दिया जावे जिससे प्रकाशन का कार्य भी जल्दी हो सके तथा भण्डारों की सूचियां भी आजावें। हमने इस शैली को अभी इसीलिये नहीं अपनाया कि इससे भण्डारों का जो भिन्न भिन्न महत्त्व है तथा उनमें जो महत्त्वपूर्ण प्रतियां हैं उनका परिचय ऐसी ग्रन्थ सूची में नहीं आसकेगा। यह तो अवश्य है कि बहुत से ग्रन्थ तो प्रत्येक भण्डार में समान रूप से मिलते हैं तथा ग्रन्थ सूचियों में बार बार में आते हैं जिससे कोई विशेष अर्थ प्राप्त नहीं होता। आशा है भविष्य में सूची प्रकाशन का यह कार्य किस दिशा में चलना चाहिये इस पर इस सम्बन्ध के विशेषज्ञ विद्वान् अपनी अमूल्य परामर्श से हमें सूचित करेंगे जिससे यदि अधिक लाभ हो सके तो उसी के अनुसार कार्य किया जा सके।

ग्रन्थ सूची बनाने का कार्य कितना जटिल है यह तो वे ही जान सकते हैं जिन्होंने इस दिशा में कार्य किया हो। इसलिये कभियां रहना आवश्यक हो जाता है। कौनसा ग्रन्थ पहिले प्रकाश में आ चुका है तथा कौनसा नवीन है इसका भी निर्णय इस सम्बन्ध की प्रकाशित पुस्तकें न मिलने के कारण जल्दी से नहीं किया जा सकता इससे यह होता है कि कभी कभी प्रकाश में आये हुये ग्रन्थ नवीन समझने की गल्ती हो जाया करती है। प्रस्तुत ग्रन्थ सूची में यदि ऐसी कोई अशुद्धि हो गयी हो तो विद्वान् पाठक हमें सूचित करने का कष्ट करेंगे।

दोनों भण्डारों में जो महत्त्वपूर्ण कृतियां प्राप्त हुई हैं उनके निर्माण करने वाले विद्वानों का परिचय भी यहां दिया जा रहा है। यद्यपि इनमें से बहुत से विद्वानों के सम्बन्ध में तो हम पहिले से ही जानते हैं किन्तु उनकी जो अभी नवीन रचनायें मिली हैं उन्हीं रचनाओं के आधार पर उनका संहितित परिचय दिया गया है। आशा है इस परिचय से हिन्दी साहित्य के इतिहास निर्माण में कुछ सहायता मिल सकेगी।

१. अचलकीर्ति

अचलकीर्ति १८ वीं शताब्दी के हिन्दी कवि थे। विषादहार स्तोत्र भाषा इनकी प्रसिद्ध रचना है जिसका समाज में अच्छा प्रचार है। अभी जयपुर के बंधीचन्दजी के मान्दर के शास्त्र भण्डार में कर्मवत्सी नाम की एक और रचना प्राप्त हुई है जो संवत् १७७७ में पूर्ण हुई थी। इन्होंने कर्मवत्सी में पावा नगरी एवं बीर संघ का उल्लेख किया है। इसकी एक रचना रविवतकथा देहली के भण्डार में संग्रहीत है।

२. अजयराज

१८ वीं शताब्दी के जैन साहित्य सेवियों में अजयराज पाटणी का नाम उल्लेखनीय है। ये खण्डेलवाल जाति में उत्पन्न हुये थे तथा पाटणी इनका गोत्र था। पाटणीजी आमेर के रहने वाले तथा धार्मिक प्रकृति के प्राणी थे। ये हिन्दी एवं संस्कृत के अच्छे ज्ञाता थे। इन्होंने हिन्दी में कितनी ही रचनाएँ लिखी थी। अब तक छोटी और बड़ी २० रचनाओं का तो पता लग चुका है इनमें से आदि पुराण भाषा, नेमिनाथचरित्र, यशोधरचरित्र, चरखा चउपई, शिव रमणी का विवाह, कक्षावत्सी आदि प्रमुख हैं। इन्होंने कितनी ही पूजाएँ भी लिखी हैं। इनके द्वारा लिखे हुये हिन्दी पद भी पर्याप्त संख्या में मिलते हैं। कवि ने हिन्दी में एक जिनजी की रसोई लिखी है जिसमें षट् रस व्यंजन का अच्छा वर्णन किया गया है।

अजयराज हिन्दी साहित्य के अच्छे विद्वान् थे। इनकी रचनाओं में काव्यत्व के दर्शन होते हैं। इन्होंने आदिपुराण को संवत् १७६७ में यशोधरचौपई को १७६२ में तथा नेमिनाथचरित्र को संवत् १७६३ में समाप्त किया था।

३. ब्रह्म अजित

ब्रह्म अजित संस्कृत भाषा के अच्छे विद्वान् थे। हनुमच्चरित में इनकी साहित्य निर्माण की कला स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। ये गोलभृंगार वंश में उत्पन्न हुये थे। माता का नाम पीथा तथा पिता का नाम धीरसिंह था। भृगुकच्छपुर में नेमिनाथ के जिन मन्दिर में इनका मुख्य रूप से निवास था। ये भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति के प्रशिष्य एवं विद्यानन्दि के शिष्य थे।

हिन्दी में इन्होंने हंसा भावना नामक एक छोटी सी आध्यात्मिक रचना लिखी थी। रचना में ३७ पद्य हैं जिनमें संसार का स्वरूप तथा मानव का वास्तविक कर्तव्य क्या है, उसे क्या करना चाहिये तथा किसे छोड़ना चाहिये आदि पर प्रकाश डाला है। हंसा भावना अच्छी रचना है, तथा भाषा एवं शैली दोनों ही दृष्टियों से पढ़ने योग्य है। कवि ने इसे अपने गुरु विद्यानन्दि के उपदेश से बनायी थी।

४. अमरपाल

इन्होंने 'आदिनाथ के पंच मंगल' नामक रचना को संवत् १७७२ में समाप्त की थी। रचना में दिये हुये समय के आधार पर ये १८ वीं शताब्दी के विद्वान् ठहरते हैं। ये खण्डेलवाल जाति में उत्पन्न हुये थे तथा गंगवाल इनका गोत्र था। देहली के समीप स्थित जयसिंहपुरा इनका निवास स्थान था। आदिनाथ के पंचमंगल के अतिरिक्त इनकी अन्य रचना अभी तक उपलब्ध नहीं हुई है।

५. आझासुन्दर

ये खरतरगच्छ के प्रधान जिनवर्द्धनसूरि के प्रशिष्य एवं आनन्दसूरि के शिष्य थे। इन्होंने संवत् १४१६ में विद्याविलास गौरी की रचना समाप्त की थी। इसमें ३६४ पद्य हैं। रचना अच्छी है।

६. उदैराम

उदैराम द्वारा लिखित हिन्दी की २ जखड़ी अभी उपलब्ध हुई हैं। दोनों ही जखड़ी ऐतिहासिक हैं तथा भट्टारक अनन्तकीर्ति ने संवत् १७८५ में सांभर (राजस्थान) में जो चातुर्मास किया था उसका उन दोनों में वर्णन किया गया है। दिगम्बर साहित्य में इस प्रकार की रचनायें बहुत कम मिलती हैं इस दृष्टि से इनका अधिक महत्व है। वैसे भाषा की दृष्टि से रचनायें साधारण हैं।

७. ऋषभदास निगोत्या

ऋषभदास निगोत्या का जन्म संवत् १८४० के लगभग जयपुर में हुआ था। इनके पिता का नाम शोभाचन्द था। इन्होंने संवत् १८८८ में मूलाचार की हिन्दी भाषा टीका सम्पूर्ण की थी। ग्रन्थ की भाषा ठूठारी है तथा जिस पर पं० टोडरमलजी की भाषा का प्रभाव है।

८. कनककीर्ति

कनककीर्ति १७ वीं शताब्दी के हिन्दी के विद्वान् थे। इन्होंने तत्त्वार्थसूत्र श्रतसागरी टीका पर एक विस्तृत हिन्दी राद्य टीका लिखी थी। इसके अतिरिक्त कर्मघटावलि, जिनराजस्तुति, मेघकुमारगीत, श्रीपालस्तुति आदि रचनायें भी आपकी मिल चुकी हैं। कनककीर्ति हिन्दी के अच्छे विद्वान् थे। इनकी भाषा ठूठारी है जिसमें 'है' के स्थान पर 'ह्यै' का अधिक प्रयोग हुआ है। गुटकों में इनके कितने ही पद भी मिले हैं।

९. कनकसोम

कनकसोम १६ वीं शताब्दी के कवि थे। 'जइतपदवेलि' इनकी इतिहास से सम्बन्धित कृति है जो संवत् १६२५ में रची गयी थी। वेलि में उसी संवत् में मुनि वाचकदया ने आगरे में जो चातुर्मास किया था उसका वर्णन दिया हुआ है। यह खरतरगच्छ की एक अच्छी पद्यावलि है कवि ने इसमें साधुकीर्ति आदि कितने ही विद्वानों के नामों का उल्लेख किया है। रचना में ४६ पद्य हैं। भाषा हिन्दी है लेकिन

गुजराती का प्रभाव है। कवि की एक और रचना आषाढाभूतिस्वाध्याय पहिले ही मिल चुकी है। जो गुजराती में है।

११. मुनि कनकासर

मुनिकनकासर द्वारा लिखित 'ग्यारह प्रतिमा वर्णन' अपभ्रंश भाषा का एक गीत है। कनकासर कौनसे शताब्दी के कवि थे यह तो इस रचना के आधार से निश्चित नहीं होता है। किन्तु इतना अवश्य है कि वे १६ वीं या इससे भी पूर्व की शताब्दी के थे। गीत में १२ प्रतिमाओं का वर्णन है जिसका प्रथम पद्य निम्न प्रकार है।

मुनिवर जंपइ मृगनयणी, अंसु जल्लोलीइय गिरवयणी ।
नवनीलोपलकोमलनयणी, पहु कसयंवर भणमि पई ।
किम्म इह लवभइ सिवपुर रमणी, मुनिवर जंपइ मृगनयणी ॥ १ ॥

१२. कुलभद्र

सारसमुच्चय ग्रन्थ के रचयिता श्री कुलभद्र किस शताब्दी तथा किस प्रान्त के थे इसके विषय में कोई उल्लेख नहीं मिलता। किन्तु इतना अवश्य है कि वे १६ वीं शताब्दी के पूर्व के विद्वान् थे। क्योंकि सारसमुच्चय की एक प्रति संवत् १५४५ में लिखी हुई नवीचन्द्रजी के मन्दिर के शास्त्र भण्डार के संग्रह में है। रचना छोटी ही है जिसमें ३३ श्लोक हैं। ग्रन्थ का दूसरा नाम ग्रन्थसारसमुच्चय भी है। ग्रन्थ की भाषा सरल एवं क्लृप्त है।

१३. किशनसिंह

ये सवाईमाधोपुर प्रान्त के दामपुरा गांव के रहने वाले थे। छण्डेलजाति में उत्पन्न हुये थे तथा पाटणी इनका गोत्र था। इनके पिता का नाम 'काना' था। ये दो भाई थे। इनसे बड़े भाई का नाम सुखदेव था। अपने गांव को छोड़कर ये सांगानेर आकर रहने लगे थे, जो बहुत समय तक जैन साहित्यिकों का केन्द्र रहा है। इन्होंने अपनी सभी रचनायें हिन्दी भाषा में लिखी हैं। जिनकी संख्या १५ से भी अधिक है। मुख्य रचनाओं में क्रियाकोशभाषा, (१७८४) पुण्याभवकथाकोश, (१७७२) भद्रबाहुचरित भाषा (१७८०) एवं बावनी आदि हैं।

१४. केशरीसिंह

पं० केशरीसिंह भट्टारकों के पंडित थे। इनका मुख्य स्थान जयपुर नगर के लश्कर के जैन मन्दिर में था। ये वहीं रहा करते थे तथा श्रद्धालु श्रावकों को धर्मोपदेश दिया करते थे। दीवान बालचन्द्र के सुपुत्र दीवान जयचन्द्र छावड़ा की इन पर विशेष भक्ति थी और उन्हीं के अनुरोध से इन्होंने संस्कृत भाषा में भट्टारक सकलकीर्ति द्वारा विरचित बद्धमानपुराण की हिन्दी गद्य में भाषा टीका लिखी थी। पंडित जी ने इसे संवत् १८७३ में समाप्त की थी। पुराण की भाषा पर बूढ़ारी (जयपुरी) भाषा का प्रभाव है। ग्रन्थ प्रशस्ति के अनुसार पुराण की भाषा का संशोधन वस्तुपाल छावड़ा ने किया था।

१४. ब्रह्मगुलाल

ब्रह्मगुलाल हिन्दी भाषा के कवि थे यद्यपि कवि की अब तक छोटी २ रचनायें ही उपलब्ध हुई हैं किन्तु भाषा एवं भाषा की दृष्टि से ये साधारणतः अच्छी हैं। इनकी रचनाओं में त्रेपनक्रिया, समवसरणस्तोत्र, जलगालनक्रिया, विवेकचौपई आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। विवेकचौपई अभी जयपुर के ठोलियों के मन्दिर में प्राप्त हुई है। कवि १७ वीं शताब्दी के थे।

१५. गोपालदास

गोपालदास की दो छोटी रचनायें यादुरासो तथा प्रभादीगीत जयपुर के ठोलियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डार के ६७ वें गुटके में संवहीत हैं। गुटके के लेखनकाल के आधार पर कवि १७ वीं शताब्दीया इससे भी पूर्व के विद्वान् थे। यादुरासो में भगवान नेमिनाथ के वन चले जाने के पश्चात् राजुल की विरहावस्था का वर्णन है जो उन्हें वापिस लाने के रूप में है। इसमें २४ पद्य हैं। प्रभादीगीत एक उपदेशात्मकगीत है जिसमें आलस्य त्याग कर आत्महित करने के लिये कहा गया है। इनके अतिरिक्त इनके कुछ गीत भी मिलते हैं।

१६. चंपाराम भांवसा

ये खण्डेलवाल जैन जाति में उत्पन्न हुए थे। इनके पिता का नाम हीरालाल था जो माधोपुर (जयपुर) के रहने वाले थे। चंपाराम हिन्दी के अच्छे विद्वान् थे। शास्त्रों की स्वाध्याय करना ही इनका प्रमुख कार्य था इसी ज्ञान वृद्धि के कारण इन्होंने भद्रबाहुचरित्र एवं धर्मप्रश्नोत्तरश्रावकाचार की हिन्दी भाषा टीका क्रमशः संवत् १८४४ तथा १८६८ में समाप्त की थी। भाषा एवं शैली की दृष्टि से रचनाएँ साधारण हैं।

१७. छीहल

१६ वीं शताब्दी में होनेवाले जैन कवियों में छीहल का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। ये राजस्थानी कवि थे किन्तु राजस्थान के किस प्रदेश को सुशोभित करते थे इसका अभी तक कोई उल्लेख नहीं मिला। हिन्दी भाषा के आप अच्छे विद्वान् थे। इनकी अभी तक ३ रचनायें तथा ३ पद उपलब्ध हुये हैं। रचनाओं के नाम बावनी, पंचसहेली गीत, पंथीगीत हैं। सभी रचनायें हिन्दी की उत्तम रचनाओं में से हैं जो काव्यत्व से भरपूर हैं। कवि की वर्णन करने की शैली उत्तम है। बावनी में आपने कितने ही विषयों का अच्छा वर्णन किया है। पंचसहेली को इन्होंने संवत् १५७५ में समाप्त किया था।

१८. पं जगन्नाथ

पं० जगन्नाथ १७ वीं शताब्दी के विद्वान् थे। ये भट्टारक नरेन्द्रकीर्ति के शिष्य थे तथा संस्कृत भाषा के पहुँचे हुए विद्वान् थे। ये खण्डेलवाल जाति में उत्पन्न हुये थे तथा इनके पिता का नाम पोमराज था। इनकी ६ रचनायें श्वेताम्बरपराजय, चतुर्विंशतिसंधानस्वोपज्ञटीका, सुखनिधान, नेमिनरेन्द्रस्तोत्र,

तथा सुखेणचरित्र तो पहिले ही प्रकाश में आ चुकी है। इनके अतिरिक्त इनकी एक और कृति "कर्मस्वरूप-वर्णन" अभी कधीचन्द्रजी के मन्दिर के शास्त्र भंडार में मिली है। इस रचना में कर्मों के स्वरूप की विवेचना की गयी है। कवि ने इसे संवत् १७०७ (सन् १६५०) में समाप्त किया था। 'कर्मस्वरूप' के उल्लासों के अन्त में जो विशेषण लगाये गये हैं उनसे पता चलता है कि पंडित जी न्यायशास्त्र के पारंगत विद्वान् थे तथा उन्होंने कितने ही शास्त्रार्थों में अपने विरोधियों को हराया था। कवि का दूसरा नाम बाहिराज भी था।

१६. जिनदत्त

पं० जिनदत्त भट्टारक शुभचन्द्र के समकालीन विद्वान् थे तथा उनके धनिष्ठ शिष्यों में से थे। भट्टारक शुभचन्द्र ने अम्बिकाकल्प की जो रचना की थी उसमें मुख्य रूप से जिनदत्त का ही आप्रह था। ये स्वयं भी हिन्दी के अच्छे विद्वान् थे तथा संस्कृत भाषा में भी अपना प्रवेश रखते थे। अभी हिन्दी में इनकी २ रचनायें उपलब्ध हुई हैं जिनके नाम धर्मतरुगीत तथा जिनदत्तविलास हैं। जिनदत्तविलास में कवि द्वारा बनाये हुये पदों एवं स्फुट रचनाओं का संग्रह है तथा धर्मतरुगीत एक छोटा सा गीत है।

२०. ब्रह्म जिनदास

ये भट्टारक सकलकीर्ति के शिष्य थे। संस्कृत, प्राकृत, एवं गुजराती भाषाओं पर इनका पूरा अधिकार था। इसके अतिरिक्त हिन्दी भाषा में भी इसकी तीव्र गति थी। कवि की अब तक संस्कृत एवं गुजराती का कितनी ही रचनायें उपलब्ध हो चुकी हैं इनमें आदिनाथ पुराण, धनपालरास, यशोधररास, आदि प्रमुख हैं। इनकी सभी रचनाओं की संख्या २० से भी अधिक है। अभी जयपुर के ठोलियों के मन्दिर में इनका एक छोटा सा आदिनाथ स्तवन हिन्दी में लिखा हुआ मिला है जो बहुत ही सुन्दर एवं भाव पूर्ण है तथा ग्रंथ सूची में पूरा दिया हुआ है।

२१. ब्रह्म ज्ञानसागर

ये भट्टारक श्रीभूषण के शिष्य थे। संस्कृत के साथ साथ ये हिन्दी के भी अच्छे विद्वान् थे। इन्होंने हिन्दी में २६ से भी अधिक कथायें लिखी हैं जो पद्यात्मक हैं। भाषा की दृष्टि से ये सभी अच्छी हैं। भट्टारक श्रीभूषण ने पाण्डवपुराण (संस्कृत) को संवत् १६५७ में समाप्त किया था। क्योंकि ब्रह्म ज्ञानसागर भी इन्हीं भट्टारक जी के शिष्य थे अतः कवि के १२ वीं शताब्दी के होने में कोई सन्देह नहीं रह जाता है। इन्होंने कथाओं के अतिरिक्त और भी रचनायें लिखी होंगी लेकिन अभी तक वे उपलब्ध नहीं हुई हैं।

२२. ठक्कुरसी

१६ वीं शताब्दी में होने वाले कवियों में ठक्कुरसी का नाम उल्लेखनीय है। ये हिन्दी के अच्छे विद्वान् थे तथा हिन्दी में छोटी छोटी रचनायें लिखकर स्वाध्याय प्रेमियों का दिल चहलाया करते

थे । इनके पिता का नाम खेल्ह था जो स्वयं भी कवि थे । वहि दास रचित पुनर्जागरण तथा लंघेन्द्रिय नेलि तो पहिले ही प्रकाश में आ चुकी हैं लेकिन नेमिराजमतिबेखि पार्श्वशङ्कनसत्ताकीसी और चिन्तामणि-जयमाल तथा सीमंभरस्तवन और उपलब्ध हुए हैं जो हिन्दी की अच्छी रचनायें हैं ।

२३. थानसिंह

थानसिंह सांगानेर (जयपुर) के रहने वाले थे । ये खण्डेलवाल जैन थे तथा ठोड़िया इनका गोत्र था । सुबुद्धि प्रकाश की ग्रन्थ प्रशस्ति में इन्होंने आमेर, सांगानेर तथा जयपुर नगर का वर्णन लिखा है । जब इनके माता पिता नगर में अशान्ति के कारण करौली चले गये थे तब भी ये सांगानेर छोड़कर नहीं जा सके और इन्होंने वहीं रहते हुये रचनायें लिखी थी । कवि की २ रचनायें प्राप्त होती हैं—रत्नकरदशवकाचार भाषा तथा सुबुद्धि प्रकाश । प्रथम रचना को इन्होंने सं. १८२१ में तथा दूसरी को सं. १८४७ में समाप्त किया था । सुबुद्धि प्रकाश का दूसरा नाम थानविलास भी है इसमें कवि की छोटी २ रचनाओं का संग्रह है । दोनों ही रचनाओं की भाषा एवं वर्णन शैली साधारणतः अच्छी है । इनकी भाषा पर राजस्थानी का प्रभाव है ।

२४. मुनि देवचन्द्र

मुनि देवचन्द्र युगप्रधान जिनचन्द्र के शिष्य थे । इन्होंने आगमसार की हिन्दी गद्य टीका संवत् १७७६ में मारोठ गाँव में समाप्त की थी । आगमसार ज्ञानामृत एवं धर्मासृत का सागर है तथा तात्त्विक चर्चाओं से भरपूर है । रचना हिन्दी गद्य में है जिस पर मारवाड़ी मिश्रित जयपुरी भाषा का प्रभाव है ।

२५. देवाग्रह

देवाग्रह हिन्दी के अच्छे कवि थे । इनके सैकड़ों पद मिलते हैं जो विभिन्न राग रागनियों में लिखे हुये हैं । सासबहू का भगडा आदि जो अन्य रचनाये हैं वे भी अधिकांशतः पद रूप में ही लिखी हुई हैं । इन्होंने हिन्दी साहित्य की ठोस सेवा की थी । कवि संभवतः जयपुर के ही थे तथा अनुमानतः १८ वीं शताब्दी के थे ।

२६. बाबा दुलीचन्द

जयपुर के २० वीं शताब्दी के साहित्य सेवियों में बाबा दुलीचन्द का नाम विशेषतः चल्लेखनीय है । ये मूलतः जयपुर निवासी नहीं थे किन्तु पूना (सितारा) से आकर यहां रहने लगे थे । इनके पिता का नाम मानकचन्दजी था । आते समय अपने साथ सैकड़ों हस्तलिखित ग्रन्थ भी साथ लाये थे, जो आजकल जयपुर के बड़े मन्दिर के शास्त्र भण्डार में संग्रहीत हैं तथा यह संग्रहालय भी बाबा दुलीचन्द भण्डार के नाम से प्रसिद्ध है । इस भण्डार में ८०६-१०० हस्तलिखित ग्रन्थ हैं । जो सभी बाबाजी द्वारा संग्रहीत हैं ।

बाबाजी बड़े साहित्यिक थे। दिन रात साहित्य सेवा में व्यतीत करते थे। ग्रन्थों की प्रतिलिपियां करना, नवीन ग्रन्थों का निर्माण तथा पुराने ग्रन्थों को व्यवस्थित रूप से रखना ही आपके प्रतिदिन के कार्य थे। बड़े मन्दिर के भण्डार में तथा स्वयं बाबाजी के भण्डार में इनके हाथ से लिखी हुई कितनी ही प्रतियां मिलती हैं। इन्होंने १५ से अधिक ग्रन्थों की रचना की थी। जिनमें उपदेशरत्नमाला भाषा, जैन-गारप्रक्रिया, ज्ञानप्रकाशविलास, जैनयात्रादर्पण, धर्मपरीक्षा भाषा आदि उल्लेखनीय हैं। इन्होंने भारत के सभी तर्थों की यात्रा की थी और उसीके अनुभव के आधार पर इन्होंने जैनयात्रादर्पण लिखा था। मन्दिरनिर्माण विधि नामक रचना से पता चलता है कि ये शिल्पशास्त्र के भी ज्ञाता थे। इन सबके अतिरिक्त इन्होंने भारत के कितने ही स्थानों के शास्त्र भण्डारों को भी देखा था और उसीके आधार पर संस्कृत और हिन्दी भाषा के ग्रन्थों के ग्रन्थकार विवरण लिखा था जिसमें किस विद्वान् ने कितने ग्रन्थ लिखे थे तथा वे किस किस भण्डार में मिलते हैं दिया हुआ है। अपने ढंग की यह अनूठी पुस्तक है। इनकी मृत्यु ता० ४ अगस्त सन् १९२८ में आगरे में हुई थी।

२६. नन्द

ये अग्रवाल जाति में उत्पन्न हुये थे। गोयल इनका गोत्र था। पिता का नाम भैरू तथा माता का नाम चंदा था। ये गोसना गांव के निवासी थे जो संभवतः आगरा के समीप ही था। कवि की अभी तक एक रचना यशोधर चरित्र चौपई ही उपलब्ध हुई है जो संवत् १५७० में समाप्त हुई थी। इसमें ५६८ पद्य हैं। रचना साधारणतः अच्छी है। तथा अभी तक अप्रकाशित है।

२७. नागरीदास

संभवतः ये नागरीदास वे ही हैं जो कृष्णगढ़ नरेश महाराज सांवतसिंह जी के पुत्र थे। इनका जन्म संवत् १७५६ में हुआ था। इनका कविता काल सं० १७८० से १८१६ तक माना जाता है। इनकी छोटी बड़ी सब रचना मिलाकर ७३ रचनायें प्रकाश में आ चुकी हैं। वैनविलास एवं गुप्तरसप्रकाश नामक अप्राप्य रचनाओं में से वैनविलास जयपुर के ठोलियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डार में उपलब्ध हुई है। इसमें ३० पद्य हैं जिनमें कुंडलिया दोहे आदि हैं।

२८. नाथूलाल दोशी

नाथूलाल दोशी दुलीचन्द दोशी के पौत्र एवं शिवचन्द के पुत्र थे। इनके ६० सदासुखजी काशलीवाल धर्म गुरु थे तथा दीवान् असरचन्द परम सहायक एवं कृपावान् थे। दोशी जी विद्वान् थे तथा ग्रंथ चर्चा में अधिक रस लिया करते थे। इन्होंने हरचन्द गंगवाल की प्रेरणा से संवत् १९१८ में सुकुमालचरित्र की भाषा समाप्त की थी। रचना हिन्दी गद्य में है जिस पर ढूंढारी भाषा का प्रभाव है।

२६. नाथूराम

लमेचू जाति में उत्पन्न होने वाले नाथूराम हिन्दी भाषा के अच्छे विद्वान् थे। ये संभवतः १६ वीं शताब्दी के थे। इनके पिता का नाम दीपचंद था। इन्होंने जम्बूस्वामीचरित का हिन्दी गद्यानुवाद लिखा है। रचना साधारणतः अच्छी है।

३०. निरमलदास

श्रावण निरमलदास में पंचाख्यान नामक ग्रन्थ की रचना की थी। यह पंचतन्त्र का हिन्दी पद्यानुवाद है। संभवतः यह रचना १७ वीं शताब्दी के प्रारम्भ में लिखी गयी थी क्योंकि इसकी एक प्रति संवत् १७५४ में लिखी हुई जयपुर के ठोलियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डार में संग्रहीत है। रचना सरल हिन्दी में है तथा साधारण पाठकों के लिये अच्छी है।

३१. पद्मनाभ

पद्मनाभ १५-१६ वीं शताब्दी के कवि थे। ये हिन्दी एवं संस्कृत के प्रतिभा सम्पन्न विद्वान् थे इसीलिये संघपति झुंगर ने इनसे बावनी लिखने का अनुरोध किया था और उसी अनुरोध से इन्होंने संवत् १५४३ में बावनी की रचना की थी। इसका दूसरा नाम झुंगर की बावनी भी है। बावनी में ५४ सर्ग्य्या हैं। भाषा राजस्थानी है। इसकी एक प्रति अभी जयपुर के ठोलियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डार में उपलब्ध हुई है लेकिन लिखावट विकृत होने से सुपाठ्य नहीं है। बावनी अभी तक अप्रकाशित है।

३२. पन्नालाल चौधरी

जयपुर में होने वाले १६-२० वीं शताब्दी के साहित्यकारों में पन्नालाल चौधरी का नाम उल्लेखनीय है। ये संस्कृत, प्राकृत एवं हिन्दी के अच्छे विद्वान् थे। महाराजा रामसिंह के मन्त्री जीवनसिंह के थे गृह मन्त्री थे। इनके गुरु सदासुखजी काशलीवाल थे जो अपने समय के बहुत बड़े विद्वान् थे। यही कारण है कि साहित्य सेवा इनके जीवन का प्रमुख उद्देश्य हो गया था। इन्होंने अपने जीवन में ३० से भी अधिक ग्रन्थों की रचना की थी। इनमें से योगसार भाषा, सद्भाषितावली भाषा, पाण्डवपुराण भाषा, जम्बूस्वामी चरित्र भाषा, उत्तरपुराण भाषा, भविष्यदत्तचरित्र भाषा उल्लेखनीय हैं। सद्भाषितावलि भाषा आपका सर्व प्रथम ग्रन्थ है जिसे चौधरीजी ने संवत् १६१० में समाप्त किया था। ग्रन्थ निर्माण के अतिरिक्त इन्होंने बहुत से ग्रन्थों की प्रतिलिपियां भी की थी जो आज भी जयपुर के बहुत से भण्डारों में उपलब्ध होती हैं।

३३. पुण्यकीर्ति

ये खरतरगच्छ के आचार्य एवं युगप्रधान जिनचंद्रसूरि के शिष्य थे। तथा ये सांगनेर (जयपुर) के रहने वाले थे। इन्होंने पुण्यसार कथा को संवत् १७६६ में समाप्त किया था। रचना साधारणतः अच्छी है।

३४. बनारसीदास

कविवर बनारसीदास का स्थान जैन हिन्दी साहित्य में सर्वोपरि है। इनके द्वारा रचे हुये समयसार नाटक, बनारसीविलास, अर्द्धकथानक एवं नाममाला तो पहिले ही प्रसिद्ध हैं। अभी इनकी एक और रचना 'भांभा' जयपुर के वधीचन्दजी के मन्दिर के शास्त्र भण्डार में मिली है। रचना आध्यात्मिक रस से ओत प्रोत है। इसमें १३ पद्य हैं।

३५. वंशीधर

इन्होंने संवत् १७६५ में 'दस्तूरमालिका' नामक हिन्दी ग्रंथ रचना लिखी थी। दस्तूरमालिका गणित शास्त्र से सम्बन्धित रचना है जिसमें वस्तुओं के खरीदने की रसम रियाज एवं उनके गुरु दिये हुये हैं। रचना खड़ी बोली में है तथा अपने ढंग की अकेली ही रचना है। इसमें १४३ पद्य हैं। कवि संभवतः वे ही वंशीधर हैं जो अहमदाबाद के रहने वाले थे तथा जिन्होंने संवत् १७८२ में उदयपुर के महाराणा जगतसिंह के साम पर अलंकार रत्नाकर ग्रंथ बनाया था^१।

३६. मनराम

१८ वीं शताब्दी के जैन हिन्दी विद्वानों में मनराम एक अच्छे विद्वान् हो गये हैं। यद्यपि रचनाओं के आधार पर इनके सम्बन्ध में विशेष जानकारी प्राप्त नहीं हो सकी है फिर भी इनकी वर्णन शैली से ज्ञात होता है कि मनराम का हिन्दी भाषा पर अच्छा अधिकार था। अब तक अक्षरमाला, धर्मसहेली, मनरामविलास, बत्तीसी, गुणाक्षरमाला आदि इनकी मुख्य रचनायें हैं। साहित्यिक दृष्टि से ये सभी रचनायें उत्तम हैं।

३७. मन्नासाह

मन्नासाह हिन्दी के अच्छी कवि थे। इसकी लिखी हुई मान बावनी एवं लघु बावनी ये दो रचनायें अभी जयपुर के ठोलियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डार में मिली हैं। रचना के आधार पर यह सरलता से कहा जा सकता है कि मन्नासाह हिन्दी के अच्छे कवि थे। मान बावनी हिन्दी की उच्च रचना है जिसमें सुभाषित रचना की तरह कितने ही विषयों पर थोड़े थोड़े पद्य लिखे हैं। मन्ना साह संभवतः १७ वीं शताब्दी के विद्वान् थे।

३८. मल्ल कवि

प्रबोधचन्द्रोदय नाटक के रचयिता मल्लकवि १६ वीं शताब्दी के विद्वान् थे। इन्होंने कृष्णमिश्र द्वारा रचित संस्कृत के प्रबोधचन्द्रोदय का हिन्दी भाषा में पद्यानुवाद संवत् १६०१ में किया था। रचना

सुल्लित भाषा में लिखी हुई है। तथा उत्तम संवादों से भरपूर है। नाटक में काम, क्रोध मोह आदि की पराजय करवा कर विवेक आदि गुणों की विजय करवायी गयी है।

३६. मेघराज

मुनि मेघराज द्वारा लिखित 'संयमप्रवहण गीत' एक सुन्दर रचना है। मुनिजी ने इसे संवत् १६६१ में समाप्त की थी। इसमें मुख्यतः 'राजचन्दसूरि' के साधु जीवन पर प्रकाश डाला गया है किन्तु राजचन्दसूरि के पूर्व आचार्यों—सोमरत्नसूरि, पासचन्दसूरि, तथा समरचन्दसूरि के भी माता पिता का नामोल्लेख, आचार्य बनने का समय एवं अन्य प्रकार से उनका वर्णन किया गया है। रचना वास्तव में ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर लिखी गयी है। वर्णन शैली काफी अच्छी है तथा कहीं कहीं अलंकारों का सुन्दर प्रयोग हुआ है।

४०. रघुनाथ

इनकी अब तक ५ रचनायें उपलब्ध हो चुकी हैं। रघुनाथ हिन्दी के अच्छे विद्वान् थे तथा जिनकी छन्द शास्त्र, रस एवं अलंकार प्रयोग में अच्छी गति थी। इनका गणभेद छन्द शास्त्र की रचना है। नित्यविहार शृंगार रस पर आश्रित है जिसमें राधा कृष्ण का वर्णन है। प्रसंगसार एवं ज्ञानसार सुभाषित, उपदेशात्मक एवं भक्तिरसात्मक हैं। ज्ञानसार को इन्होंने संवत् १७४३ में समाप्त किया था इससे पता चलता है कि कवि १७ वीं शताब्दी में पैदा हुये थे। कवि राजस्थानी विद्वान् थे लेकिन राजस्थान के किस प्रदेश को सुशोभित करते थे इसके सम्बन्ध में परिचय देने में इनकी रचनायें मौन हैं। इनकी सभी रचनायें शुद्ध हिन्दी में लिखी हुई हैं। ये जैनेतर विद्वान् थे।

४१. रूपचन्द

कविवर रूपचन्द १७ वीं शताब्दी के साहित्यिकों में उल्लेखनीय कवि हैं। ये आध्यात्मिक रस के कवि थे इसीलिये इनकी अधिकांश रचनायें आध्यात्मिक रस पर ही आधारित हैं। इनकी वर्णन शैली सजीव एवं आकर्षक है। पंच मंगल, परमार्थदोहाशतक, परमार्थगीत, गीतपरमार्थी, नेमिनाथरासो आदि कितनी ही रचनायें तो इनकी पहिले ही उपलब्ध हो चुकी हैं तथा प्रकाश में आ चुकी हैं किन्तु अभी जयपुर के ठोलियों के मन्दिर में अध्यात्म सर्वेच्या नामक एक रचना और प्राप्त हुई है। रचना आध्यात्मिक रस से ओतप्रोत है तथा बहुत ही सुन्दर रीति से लिखी हुई है। भाषा की दृष्टि से भी रचना उत्तम है। इन रचनाओं के अतिरिक्त कवि के कितने पद भी मिलते हैं वे भी सभी अच्छे हैं।

४२. लच्छीराम

लच्छीराम संवत् १८ वीं शताब्दी के हिन्दी कवि थे। इनका एक "करुणाभरणनाटक" अभी उपलब्ध हुआ है। नाटक में ६ अंक हैं जिनमें राधा अवस्था वर्णन, ब्रजवासी अवस्था वर्णन सत्यभामा

ईर्षा वर्णन, बलदाऊ मिलाप वर्णन आदि दिये हुये हैं। नाटक की भाषा साधारणतः अच्छी है। नाटककार जैनेतर विद्वान् थे।

४३. भट्टारक शुभचन्द्र

भट्टारक शुभचन्द्र १६-१७ वीं शताब्दी के महान् साहित्य सेवी थे। भट्टारक सकलकीर्ति की परम्परा में गुरु सकलकीर्ति के समान इन्होंने भी संस्कृत भाषा में कितने ही ग्रन्थों की रचना की थी जिनकी संख्या ४० से भी अधिक है। षट्भाषाचक्रवर्ति, त्रिविधविद्याधर आदि उपाधियों से भी आप विभूषित थे।

संस्कृत भाषा के ग्रन्थों के अतिरिक्त आपने हिन्दी में भी कुछ रचनायें लिखी थीं उनमें से २ रचनायें तो अभी प्रकाश में आयी हैं। इनमें से एक चतुर्विंशतिस्तुति तथा दूसरा तत्त्वसारदोहा है। तत्त्वसार दोहा में तत्त्ववर्णन है। इसकी भाषा गुजराती मिश्रित राजस्थानी है। इसमें ६१ पद्य हैं।

४४. सहजकीर्ति

सहजकीर्ति सांगानेर (जयपुर) के रहने वाले थे। ये १७ वीं शताब्दी के कवि थे। इनकी एक रचना प्राति छत्तीसो जयपुर के ठोलियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डार में ६७ वें गुटके में संग्रहीत है। यह संस्कृत १६८८ में समाप्त हुई थी। रचना में ३६ पद्य हैं जिसमें प्रातःकाल सबसे पहले भगवान का स्मरण करने के लिये कहा गया है। रचना साधारण है।

४५. सुखदेव

हिन्दी भाषा में अर्थशास्त्र से सम्बन्धित रचनायें बहुत कम हैं। अभी कुछ समय पूर्व जयपुर के बधीचन्दजी के मन्दिर में सुखदेव द्वारा निर्मित वणिकप्रिया की एक हस्तलिखित प्रति उपलब्ध हुई है। वणिकप्रिया का मुख्य विषय व्यापार से सम्बन्धित है।

सुखदेव गोलापूरवा जाति के थे। उनके पिता का नाम बिहारीदास था। रचना में ३२१ पद्य हैं जिनमें दोहा और चौपई प्रमुख हैं। कवि ने इसे संवत् १७१७ में लिखी थी। रचना की भाषा साधारणतः अच्छी है।

४६. सधारु कवि

अब तक उपलब्ध जैन हिन्दी साहित्य में १४ वीं शताब्दी में होने वाले कवियों में कवि सधारु का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इनकी यद्यपि एक ही रचना उपलब्ध हुई है लेकिन वही इनकी कृष्य शक्ति को प्रकट करने में पर्याप्त है। ये अग्रवाल जाति में उत्पन्न हुये थे जो अग्रोह नगर के नाम से प्रसिद्ध हुई थी। इनके पिता का नाम शाह महाराज एवं माता का नाम गुणवती था। कवि ने इस रचना को परछ नगर में समाप्त की थी जो कानपुर^१ झांसी रेलवे लाइन पर है।

कवि की रचना का नाम प्रद्युम्न चरित है जो संवत् १४११ में समाप्त हुई थी। इसमें ६८१ पद्य हैं किन्तु कामा उज्जैन आदि स्थानों में प्राप्त प्रति में ६८२ से अधिक पद्य हैं तथा जो भाव भाषा, अलंकार आदि सभी दृष्टियों से उत्तम है। कविने प्रद्युम्न का चरित्र बड़े ही सुन्दर ढंग से अंकित किया है। रचना अभी तक अप्रकाशित है तथा शीघ्र ही प्रकाश में आने वाली है।

४७. सुमतिकीर्ति

सुमतिकीर्ति भट्टारक सकलकीर्ति की परम्परा में होने वाले भट्टारक ज्ञानभूषण के शिष्य थे तथा उनके साथ रह कर साहित्य रचना किया करते थे। कर्मकाण्ड की संस्कृत टीका ज्ञानभूषण तथा सुमतिकीर्ति दोनों ने मिल कर बनायी थी। भट्टारक ज्ञानभूषण ने भी जिस तरह कितने ही ग्रन्थों की रचना की थी उसी प्रकार इन्होंने भी कितने ही रचनायें की हैं। त्रिलोकसार चौपई को इन्होंने संवत् १६२७ में समाप्त किया था। इसमें तीनलोकों पर चर्चा की गयी है। इस रचना के अतिरिक्त इनकी कुछ स्तुतियां अथवा पद भी मिलते हैं।

४८. स्वरूपचन्द विलाला

पं० स्वरूपचन्द जी जयपुर निवासी थे। ये खण्डेलवाल जाति में उत्पन्न हुये थे तथा विलाला इनका गोत्र था। पठन पाठन एवं स्वाध्याय ही इनके जीवन का प्रमुख उद्देश्य था। विलाला जी ने कितनी ही पूजाओं की रचना की थी जो आज भी बड़े चाव से नित्य मन्दिरों में पढ़ी जाती हैं। पूजाओं के अतिरिक्त इन्होंने मदनपराजय की भाषा टीका भी लिखी थी जो संवत् १६१८ में समाप्त हुई थी। इनकी रचनाओं के नाम मदनपराजय भाषा, चौऽठऽद्विपूजा, जिनसहस्रनाम पूजा तथा निर्वाणक्षेत्र पूजा आदि हैं।

४९. हरिकृष्ण पांडे

ये १८ वीं शताब्दी के कवि थे। इन्होंने अपने को विनयसागर का शिष्य लिखा है। जयपुर के बधीचन्दजी के मन्दिर के शास्त्र भण्डार में इनके द्वारा रचित चतुर्दशी-कथा प्राप्त हुई है जो संवत् १७६६ की रचना है। कथा में ३५ पद्य हैं। भाषा एवं दृष्टि से रचना साधारण है।

५०. हर्षकीर्ति

हर्षकीर्ति हिन्दी भाषा के अच्छे विद्वान् थे। इन्होंने हिन्दी में छोटी छोटी रचनायें लिखी हैं जो सभी उत्तम हैं। भाव, भाषा एवं वर्णन शैली की दृष्टि से कवि की रचनायें प्रथम श्रेणी की हैं। चतुर्गति बेलि को इन्होंने संवत् १६८३ में समाप्त किया था जिससे पता चलता है कि कवि १७ वीं शताब्दी के थे तथा कविवर बनारसीदासजी के समकालीन थे। चतुर्गति बेलि के अतिरिक्त नेमिनाथ-

राजुल गीत, नेमीश्वरगीत, मोरडा, कर्महिंडोलना पञ्चमर्गातिवेलि आदि अन्य रचनायें भी मिलती हैं। सभी रचनायें आध्यात्मिक हैं। कवि द्वारा लिखे हुये कितने ही पद भी हैं। जो अभी तक प्रकाश में नहीं आये हैं।

५१. हीरा कवि

ये बूंदी (राजस्थान) के रहने वाले थे। इन्होंने संवत् १८४८ में 'नेमिनाथ व्याहलो' नामक रचना को समाप्त किया था। व्याहलो में नेमिनाथ के विवाह के अवसर पर होने वाली घटनाओं का वर्णन किया गया है। रचना साधारणतः अच्छी है तथा इस पर हाडौती भाषा का प्रभाव झलकता है।

५२. पांडे हेमराज

प्राचीन हिन्दी गद्य लेखकों में हेमराज का नाम उल्लेखनीय है। इनका समय सत्रहवीं शताब्दी था तथा ये पांडे रूपचंद के शिष्य थे। इन्होंने प्राकृत एवं संस्कृत भाषा के ग्रन्थों का हिन्दी गद्य में अनुवाद करके हिन्दी के प्रचार में महत्त्वपूर्ण योग दिया था। इनकी अब तक १२ रचनायें प्राप्त हो चुकी हैं जिनमें नयचक्रभाषा, प्रवचनसारभाषा, कर्मकाण्डभाषा, पञ्चास्तिकायभाषा, परमात्मप्रकाश भाषा आदि प्रमुख हैं। प्रवचनसार को इन्होंने १७०६ में तथा नयचक्रभाषा को १७२४ में समाप्त किया था। अभी तीन रचनायें और मिली हैं जिनके नाम दोहाशतक, जखड़ी तथा गीत हैं। रचनाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि कवि का हिन्दी गद्य एवं पद्य दोनों में ही एकसा अधिकार था। भाव एवं भाषा की दृष्टि से इनकी सभी रचनायें अच्छी हैं। दोहा शतक जखड़ी एवं हिन्दी पद अभी तक अप्रकाशित हैं।

उक्त विद्वानों में से २७, ३५, ४०, ४२ तथा ४५ संख्या वाले विद्वान् जैनेतर विद्वान् हैं। इनके अतिरिक्त ५, ६, २४, ३०, ३३ एवं ३६ संख्या वाले श्वेताम्बर जैन एवं शेष सभी दिगम्बर जैन विद्वान् हैं। इनमें से बहुत से विद्वानों का परिचय तो अन्यत्र भी मिलता है इसलिये उनका अधिक परिचय नहीं दिया गया। किन्तु अजयराज, अमरपाल, उदैराम, केशरीसिंह, गोपालदास, चंपाराम भांवसा ब्रह्मज्ञानसागर, धानसिंह, बाबा दुलीचन्द, नन्द, नाथूलाल दोशी, पद्मनाभ, पन्नालाल चौधरी, मनराम, रघुनाथ आदि कुछ ऐसे विद्वान् हैं जिनका परिचय हमें अन्य किसी पुस्तक में देखने को नहीं मिला। इन कवियों का परिचय भी अधिक न मिलने के कारण उसे हम विस्तृत रूप से नहीं दे सके।

ग्रन्थ सूची के अन्त में ४ परिशिष्ट हैं। इनमें से ग्रन्थ प्रशस्ति एवं लेखक प्रशस्ति के सम्बन्ध में तो हम ऊपर कह चुके हैं। ग्रंथानुक्रमणिका में ग्रन्थ सूची में आये हुये अकारादि क्रम से सभी ग्रन्थों के नाम दे दिये गये हैं। इससे सूची में कौनसा ग्रन्थ किस पृष्ठ पर है यह ढूँढने में सुविधा रहेगी। इस परिशिष्ट के अनुसार ग्रन्थ सूची में १७८५ ग्रन्थों का विवरण दिया गया है। ग्रन्थ एवं ग्रन्थकार परिशिष्ट को भी हमने संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश एवं हिन्दी भाषाओं में विभक्त कर दिया है जिससे ग्रन्थ सूची में किसी एक विद्वान् के एक भाषा के कितने ग्रन्थों का उल्लेख आया है सरलता से जाना जा

सकता है। प्रस्तुत ग्रन्थ सूची में संस्कृत भाषा के १७३, प्राकृत के १४, अपभ्रंश के १६ तथा हिन्दी के २२२ विद्वानों के ग्रन्थों का परिचय मिलता है तथा इससे भाषा सम्बन्धी इतिहास लेखन में अधिक सहायता मिल सकती है।

ग्रन्थ सूची को उपयोगी बनाने का पूरा प्रयत्न किया गया है तथा यही प्रयास रहा है कि ग्रन्थ एवं ग्रन्थ कर्ता आदि के नामों में कोई अशुद्धि न रहे किन्तु फिर भी यदि कहीं कोई त्रुटि रह गयी हो तो विद्वान् पाठक हमें सूचित करने का कष्ट करें जिससे आगे प्रकाशित होने वाले संस्करणों में उसका परिमार्जन किया जा सके।

धन्यवाद समर्पण—

सर्व प्रथम हम क्षेत्र कमेटी के सदस्यों एवं विशेषतः मन्त्री महोदय को धन्यवाद देते हैं जो प्राचीन साहित्य के उद्धार जैसे पवित्र कार्य को क्षेत्र की ओर से करवा रहे हैं तथा भविष्य में इस कार्य में और भी अधिक व्यय किया जावेगा ऐसी हमें आशा है। इसके अतिरिक्त राजस्थान के प्रमुख जैन साहित्य सेवी श्री अगरबन्धजी नाहटा एवं वीर सेवा मन्दिर देहली के प्रमुख विद्वान् पं० परमानन्दजी शास्त्री के हम हृदय से आभारी हैं जिन्होंने सूची के अधिकांश भाग को देखकर आवश्यक सुझाव देने का कष्ट किया है तथा समय समय पर अपनी शुभ सम्मतियों से सूचित करते रहते हैं। अद्भ्य गुरुवर्य पं० चैनसुखदासजी सा० न्यायतीर्थ के प्रति भी हम कृतज्ञांजलियां अर्पित करते हैं जो हमें इसे पुनीत कार्य में समय समय पर प्रेरणा देते रहते हैं और जिनकी प्रेरणा मात्र से ही जयपुर में साहित्य प्रकाशन का थोड़ा बहुत कार्य हो रहा है। बधीचन्दजी के मन्दिर के प्रबन्धक बाबू सरदारमलजी आबूजी वाले तथा ठोलियों के मन्दिर के प्रबन्धक बाबू नरेन्द्र मोहनजी डंडिया तथा पं० सनत्कुमारजी बिलाला को भी हार्दिक धन्यवाद है जिन्होंने अपने यहाँ के शास्त्र भण्डारों की ग्रन्थ सूची बनाने की पूरी सुविधा प्रदान की है। अन्त में हमारे नवीन सहयोगी बाबू सुगनचन्दजी को भी धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकते जिन्होंने इस ग्रन्थ सूची के कार्य में हमारा पूरा हाथ बढ़ाया है।

कस्तूरचन्द कासलीवाल

अनूपचन्द जैन

श्री महावीराय नमः
राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों

की
ग्रन्थसूची

श्री दि० जैन मन्दिर बधीचन्दजी (जयपुर) के

ग्रन्थ

विषय—सिद्धान्त एवं चर्चा

अन्तर्गढदशाश्रो वृत्ति (अन्तर्गढदशाश्रुवृत्ति)—अभयदेवसूरि पत्र संख्या-७ । साइज-१०×४½ इंच ।
भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । रचनाकाल X । लेखनकाल X । पूर्ण । बेष्टन नं० २६० ।

विशेष—अन्तर्गढदशाश्रु १वे० जैन आगम का ८ वां अंग है ।

२. आश्रव त्रिभंगी—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र संख्या-१२ । साइज-११½×४½ इंच । भाषा—प्राकृत ।
विषय—सिद्धान्त । रचनाकाल X । लेखनकाल—सं० १६०८, द्वितीय मादवा सुदी ३ । पूर्ण । बेष्टन नं० ६७६ ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

३. इकवीस टाण्डा चर्चा—पत्र संख्या-६ । साइज-११×२ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—चर्चा ।
रचनाकाल X । लेखनकाल संवत् १८१३, फागुण सुदी १३ । पूर्ण । बेष्टन नं० १५४ ।

विशेष—पं० किशनदास ने प्रतिलिपि की थी ।

४. इक्कीस गिराणी का स्वरूप—पत्र संख्या-१३ । साइज-८½×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त ।
रचनाकाल X । लेखनकाल—सं० १८२६ । पूर्ण । बेष्टन नं० ३८६ ।

विशेष—संख्यात, असंख्यात और अनन्त इनके २१ श्रेणियों का वर्णन किया गया है ।

५. एक सौ गुणहत्तर जीव पाठ—लक्ष्मणदास । पत्र संख्या-७१ । साइज-११×७½ इंच । भाषा—
हिन्दी (पद्य) । विषय—चर्चा । रचनाकाल सं० १८८४ भाष सुदी ५ । लेखनकाल X । पूर्ण । बेष्टन नं० ४६८ ।

विशेष—प्रारम्भ—अथ लिखमण्यदास कृत पाठ लिख्यते । अथ एक सौ गुणहत्तर जीवों की संख्या पाठ लिख्यते ।

दोहा—वृषभ आदि चौबीस कौ नमौ नाम उरधार ।

कहुँ एक संख्या कहत हूँ उत्तम नर की सार ॥१॥

प्रथमहि जिन चौबीस के कहौ नाम सुखदाय ।

कोटि जनम के पाप ते वृषभ एक मै जाय ॥२॥

छंद—प्रथम वृषभ जिन देव, द्विजौ अस्मित प्रमानौ ।

तीजौ संभव नाथ अभिनंदन चउ जानौ ॥३॥

अन्तिम—इनका कथन वसेषतैं पूर्व नगरी आदि ।

प्रथं माहि तैं जानयौ जथा जोग अनवाद ॥६६॥

पाठ बदन के कारणैं कियौ नाहि मै भित ।

नाम साथ अनुराग बसि धारि कियौ हरि चित ॥७०॥

छन्द सुन्दरी—जैनमत के प्रथं लखाय कै । कहत हौं ये पाठ बनाय कै ।

नाम ए चित मै छु धरै नरा । होय मिथ्या जाल सबै परा ॥७१॥

मूल चूक जु होय सुधार्यौ । हांसि पंडित नाहि न फार्यौ ।

करि किमा मो गुण महि लीजियो । राम कह किरप तुम कीजियो ॥७२॥

दोहा—ठारासै चौरासिया बार सनीश्चर बार, पोस कृष्ण तिथि पंचमी कियो पाठ सुम चार ॥७३॥

“इति एक सौ घुणंतर जीव पाठ संपूरण” ॥१॥

निम्न पाठ और हैं:—

नाम	पत्र संख्या	पद्य संख्या	विशेष
(१) तीस चौबीसी पाठ	६ से २४ तक	२२७	
(२) वृषभ मुख्य पाठ	२४ से २५	१२	
(३) दसकरण पाठ	२५ से ३४	१२४	दस वृषभ मंद वर्णन रामचन्द्र की
(४) जयचन्द्र पचीसी	३४ से ३६	२६	
(५) आगति जागति पाठ	३६ से ४१	७५	सं० १८८४ मंगसिर बड़ी ११
(६) षट कारिक पाठ	४१ से ४२	१२	
(७) शिष्य शिक्षा बीसी पाठ	४२ से ४३	२७	
(८) सात प्रकार वनस्पति उत्पत्ति पाठ	४३ से ४४	१७	
(९) जीवमोक्ष बत्तीसी पाठ	४४ से ४६	३२	

नाम	पत्र संख्या	पद्य संख्या	विशेष
(१०) मोक्ष उत्कृष्टभित्त पचीसी	४६ से ४८	२६	
(११) प्रथम शुक्ल ध्यान पचीसी	४८ से ५०		
(१२) जंतर चोबनो	५० से ५१	८	
(१३) बंधवोश	५१	५	
(१४) इकबीस गिणती को पाठ	५१ से ६०	६३	
(१५) सम्यक चतुरदसी	६० से ६१	१४	
(१६) इक अक्षर आदि बचीसी	६१ से ६२	३३	
(१७) बागवत खंड कलादीप	६२ से ७१	५१	१८=४ साब सुदी ५ मंगलवार

६. कर्मप्रकृति—आचार्य नेमिचन्द्र । १५ संख्या—११ । साइज—१२×४½ इंच भाषा—प्राकृत । विषय—
सिद्धान्त । रचनाकाल—X । लेखन काल—X । पृथ । वेष्टन वं० १६ ।

विशेष—मूल मात्र हैं तथा गायार्थों की संख्या १६२ हैं ।

७. प्रति नं० २—पत्र संख्या—१६। सादर—१०×१६ इंच। लेखनकाल सं०—१०१६ आवश्यक सुदी १३। पूर्ण।
वेष्टन नं० १७।

विशेष—चंपाराम ने प्रतिलिपि की थी। इस प्रति में १६४ गाथाएँ हैं।

३. प्रति नं० ३—पत्र संख्या—१६ । सादर—१२४४६ दण । लेखकाल $\times$ । पूर्ण । वेष्टन नं० १= ।

विशेष—गाथाओं की संख्या—१६१ है ।

६. प्रति नं० ४—पत्र संख्या—१३ । साइज—११×४ $\frac{1}{2}$ इंच । लेखनकाल सं० १६०६ अषाढ सुदी १ ।
पूर्ण । वेष्टन नं० १६ । इसमें १६१ गाथायें हैं ।

विशेष—संस्कृत में कहीं २ दिग्गन्ध दिया हुआ है । लेखक प्रशस्ति विग्न प्रकार है—सं० १६०६ वर्षे आषाढ मासे शुक्लपक्षे प्रतिपदा तिथौ भोमवासरे श्रीमूलसंघे नंधाज्ञाये वल्लाहकारनये सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये थाचार्य भुवनेकीर्तिदेवा तत् शिष्यस्त्री व्या० मुक्तिश्री तत् शिष्या आ० कीर्तिश्री पठचार्य । कल्याणमस्तु । अमरसरमध्ये राध्यश्री मूर्जार्ज ।

१०. प्रति नं० ५—पत्र सख्या-५४ । साइन-५५/५६ इति । लेखनकाल सं०-१=११ भाद्रवा सुदी १३ ।
पूर्व । त्रेष्ठन नं० ५३ ।

विशेष—हरचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी । प्रथम मुद्रका सादृश्य में है । १६५ गद्यांश हैं ।

११. प्रति नं० ६—पत्र संख्या-२१ । ता.ज-१०^३/_४ X ४^३/_४ इञ्च । लेखनकाल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ६२ ।

विशेष—प्रति धनुः है । संस्कृत टीका सहित है । मूल गायत्री नहीं है । कर्म प्रकृति का सत्त्वस्थान भंग सहित शुद्धस्थान का वर्णन है ।

जिनदेवं प्रणम्याहं मुनिचन्द्रं जगत्प्रभुं ।

सकर्मप्रकृतिस्थानं संवृणीमि गङ्गागमं ॥१॥

णसिऊण वड्डमाणां कणयण्णिद देवसायपरिपुज्जं ।

पयडीणसत्तठ्ठाणं षोढे भवे समं वोढे ॥१॥

देवराजपरिपूज्यं कलकनिमं वद्धमानभगवद् अर्हद्महाराकं नत्वा कर्मप्रकृतीनां सत्त्वस्थानं भंगसहितं शुद्धस्थानेण वधा-
मीति संबंधः ।

१२. प्रति नं० ७—पत्र संख्या-३४ । सादृज ११-४५ इक्ष । लेखनकाल-१६७६मादवा सुदी १४ । पूर्ण ।
वेष्टन नं० २१ । प्रति सटीक है । अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है ।

विशेष—इति प्रायः श्री गोमटसारमूलात् टीकाश्च निष्काप्य क्रमेण एकीकृत्य लिखिता श्रीनेमिचन्द्र सैद्धान्तिक
विरचित-कर्मप्रकृतिग्रन्थस्य टीका समाप्ता ।

लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सं० १६७६ वर्षे मादपदभासे शुक्लपक्षे चतुर्दश्या तिथौ संभ्रामपुरवास्तव्ये महाराजाधिराजराजश्रीभावसिंह-
राज्ये श्रीमूलसंधे नद्याम्राये बलात्कासगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनन्दिदेवातत्पट्टे भट्टारक
शुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे म० श्री जिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रसाचन्द्रदेवा तत्पट्टे म० श्रीचन्द्रकीर्तिदेवा तत्पट्टे म० श्री
श्री श्री श्री देवेन्द्रकीर्तिजी । तदाभ्राये खंडेलवालान्वये मौसा गोत्रे सा० गंगा तदभार्या गौरादे तयोः पुत्र सा० धेष्ठा तद भार्या
धेलसिरि तयोः पुत्र पंच । प्रथम सा० ताल्लु तद भार्या लोडी तयोः पुत्री द्वौ प्र० सा० बाजू तद भार्ये द्वे० प्र० बालहंदे, द्वि०
प्रतापदे तत्पुत्री द्वौ प्र० पुत्र सा० सावल तद भार्या सहलालदे तयोः पुत्र चि० साहीमल, द्वि० पुत्र सा० साकर । साह ताल्लु
द्वि पुत्र सा० घडू तस्य भार्या गालदे । एतेषां मध्ये साह बाजू तद भार्या बालहंदे इदं शास्त्रं रत्नत्रयमत-उद्यापनार्थं भट्टारक श्री
श्री श्री देवेन्द्र कीर्ति तत् शिष्य आचार्य श्री रामकीर्तिये प्रदत्तं ।

१३. कर्मप्रकृति विधान—बनारसीदास । पत्र संख्या-११ । सादृज-१०^१/_२ ४५^१/_२ इक्ष । भाषा-हन्दी ।
विषय-सिद्धान्त । रचनाकाल-सं० १७०० । लेखककाल-१७६० । पूर्ण । वेष्टन नं० ८६२ ।

विशेष—यह रचना बनारसीदास में संगृहीत रचनाओं में से है ।

१४. प्रति नं० २—पत्र संख्या-५३ । सादृज-६४^१/_२ इक्ष । लेखनकाल-४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३६७ ।

विशेष—कर्मप्रकृतिविधानगुटके में है जिसमें निम्न पाठ और है—आनकों के १७ नियम, सिद्ध प्रकरण-
(बनारसीदास) और अनित्य पंचाशिका-(विभुवनचन्द्र) ।

१५. प्रति नं० ३—पत्र संख्या—१६ । साइज—६½×५ इंच । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० १६८ ।

१६. कर्मप्रकृतियों का व्योरा— (कर्मप्रकृति चर्चा) । पत्र संख्या—१७ । साइज—१७½×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ८३३ ।

विशेष—ग्रंथ बही खाते की साइज में है ।

१७. कर्मस्वरूपवर्णन—अभिनव वादिराज (पं० जगन्नाथ) । पत्र संख्या—४० । साइज—१७½×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—सं० १७०७ माघ बुदी २३ । लेखन काल—सं० १७०७ । श्रुण्य । वेष्टन नं० ६८४ ।

विशेष—१० से २३ तक के पत्र नहीं हैं । रचना का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ— कर्मव्यूहविनिर्मुक्ता, मुक्त्वान्ता विशुद्धितः ।
अन्यकर्मस्वरूपाख्यो वादिराजेन तन्यते ॥ १ ॥

अन्तिम पाठ—

इति निरवयविद्यामंडनमंडित पंडितमंडलीमंडित मटारक श्री नरेन्द्रकीर्तिजीकारुण्यशिष्यैः कविगमस्त्रिवादिवाग्वित्त्व
गुणगणभूषणैः कणादात्तपादप्रभाकरभट्टशिष्यसुगतचार्वकसारूपप्रमुखप्रवादिसंयोग्यस्तदूषणदूषणैस्त्रैविधविधाधिपैः पंडित
जगन्नाथैरपराख्ययाभिनववादिराजैर्विरचिते कर्मस्वरूपग्रंथे स्थित्यनुमागप्रदेशनिरूपणं नाम द्वितीय उल्लासः,

वर्षे तत्त्वजमो अ भूपरिमिते (१७०७) भासे मधौ सुन्दरे,

तत्पले च सितेतरेहनि तथा नाम्ना द्वितीयहृदये ।

श्रीसर्वलक्षणाबुजानति—गलद्व ज्ञानावृत्तिप्रामवा

स्त्रैविधेश्वरतागता व्यरचयन् श्रीवादिराजा इमं ॥ १ ॥

तावत्केवलमिदमसः कलिमसैर्मुक्ताः कलौ साधवः ।

तावज्जैनमतं चकारित विमलं तावच्चधर्मोत्सवः ।

तावत्पौडशभावनाभवभृता स्वर्गोपनर्गोक्तयो

भावच्छीपरमागमो विजयते गोमट्टसाराभिधः ॥ २ ॥

१८. काल और अन्तर का स्वरूप—..... । पत्र संख्या—१२ । साइज—११×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ८७३ ।

रचना का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

अथ काल अर अन्तर का स्वरूप निरूपय करिए है ॥ ५ ॥ त्रिणि विषे आठ सातर मार्गथा है तिनका स्वरूप

संख्या विधान निरूपण के अर्थ गाथा तीन करि कहै हैं । नाना जीवनि की अपेक्षा विवक्षित गुणस्थान वा मार्गस्थान नै ओहि अन्य कोई गुणस्थान वा मार्गस्थान नै प्राप्त होइ । बहुवि अस हो विवक्षित गुणस्थान वा मार्गस्थान को यावत्काल प्राप्त न हो इति सत्काल का नाम अंतर है ।

अन्तिम—विवक्षित मार्गस्थान के भेद का काल विषय विवक्षित गुणस्थान का अंतराल जेते कालि पाईए ताका वर्णन है । मार्गस्थान के भेद का पलटन मर । अथवा मार्गस्थान के भेद का सङ्भाव होतै विवक्षित गुणस्थान का अंतराल भया था ताकी बहुवि प्राप्ति मर विस अंतराल का अभाव होइ । ऐसे प्रसंग पाइ काल का अंतर कथन कीया है सो जानना ॥ इति संपूर्ण ॥

पीछी ज्ञान भाई की ।

१६. लवणासार टीका—माधवचन्द्र त्रैविद्यदेव । पत्र संख्या—६६ । साइज—१४×६ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ८७६ ।

विशेष—आचार्य नेमिचन्द्र कृत लवणासार की यह संस्कृत टीका है । मूल रचना प्राकृत भाषा में है ।

२०. गुणस्थान चर्चा— । पत्र संख्या—२२ । साइज—१२×७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—चर्चा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ८६२ ।

विशेष—चौदह गुणस्थानों पर विस्तृत चर्चा (संदष्टि) है ।

२१. प्रति नं० २—पत्र संख्या—३६ । साइज—१२×७ $\frac{1}{2}$ इंच । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ८६३ ।

२२. प्रति नं० ३—पत्र संख्या—२१ । साइज—१० $\frac{1}{2}$ ×६ इंच । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ८६४ ।

२३. गोमट्टसार—आ० नेमिचन्द्र । पत्र संख्या—७२६ । साइज—१४×६ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ८८६ ।

विशेष—७२६ से आगे पत्र नहीं है । प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

२४. प्रति नं० २—पत्र सं०—१६६ से ८४८ । साइज—१२ $\frac{1}{2}$ ×१ इंच । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ७८५ ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

२५. प्रति नं० ३—पत्र संख्या ३५ । साइज—११×५ इंच । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ६८७ ।

विशेष—जीवकारण मात्र है गाथाओं पर संस्कृत में पर्यायवाची शब्द हैं ।

२६. प्रति सं० ४—पत्र संख्या—१७२ । साइज—१३×८ इंच । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६६२ ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है । आगे के पत्र नहीं हैं ।

२७. प्रति सं० ५—पत्र संख्या—४० । साइज—१०×४ $\frac{1}{2}$ इंच । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६६४ ।

२८. प्रति सं० ६—पत्र संख्या—११ । साइज—११×४ $\frac{1}{2}$ इंच । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६६६ ।

विशेष—प्राति केवल उल्टा हीजा न देता है ।

२९. प्रति सं० ७—पत्र संख्या—२४ से ५६१ । साइज—२०×७ $\frac{1}{2}$ इंच । X । लेखन काल—सं० १७६६ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ६८५ ।

विशेष—२८६ पे २४३, ६७१ से ४८०, ४८८ से ५२८ तक पत्र नहीं हैं ।

प्राति नैथ सामर ने प्रतिलिपि की थी । सं० १७६६ में महाराजा जयसिंह के शासन काल में सवाई जयपुर में जोधराज पाटोदी द्वारा उस नि.सत्त (बनवाये हुए) कृष्णदेव चैत्रालय में गुलाबचन्द गोदीका ने प्रतिलिपि करवा कर इस ग्रंथ को भेंट किया था । केशववर्णि की कर्णाटक वृत्ति के आधार पर संस्कृत टोका दी हुई है ।

१.शक्ति—संवत्सरे नव-वारद-सुनिदुभिते १७६६ माद्रपदमासे शुक्लपक्षे पंचमोतिथौ सवाईजयपुरनामि नगरे महाराजाविराजप्रवाईजयासहस्राव्यप्रवर्तमाने पाटोदी गोपीच साह जोधराज कारित श्री कृष्णदेव चैत्रालय । श्री मूलसंघे नंदाभाये चलात्करभाणे सरस्वतीगण्ठे कुन्दकुन्दानार्थान्वये महारकाजिन् श्री जगन्कीर्तिदेवास्तपह्ने प्रमाणद्वयप्रदिक्ष प्रतिभाधारक महारकाजिन् श्री वैकुण्ठकोतिदेवा । तत्पट्टधारक कुमुदतिनिवारक केतुप्रमोदनिवारक भवभय-भञ्जक महारकाधिराजजिन् श्री महेन्द्रकीर्ति देवाभाये संखेलवाल वंशीधर भौवसा गोपाध्याय्य गोदीकेत नासा प्रसिद्धा श्रेष्ठीजित श्री लूणकराभ्यास्तपुत्र श्री मगवद्धर्म प्रकटनकरापर साह जी रूपचन्द जी कस्तपुत्रः राधानवितरणोपमितानादिमिथ्यावन्निकोण निरंजीयकित श्री गुलाब चन्देण इत्य गोमट्टमार शास्त्र लिखत्वाय महारक जिन् श्री महेन्द्र कीर्तिये प्रस्त ।

३०. गोमट्टसार भाषा—पं० टोडरमलजी (लखिधसार रूपगुप्तासार सहित) पत्र संख्या—१०५३ । साइज—१०×६ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—सं० १८१८ माघ सुदी ५ । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ७१२ ।

विशेष—कई प्रतियों का सम्मिश्रण है । बहुत से पत्र स्वयं पं० टोडरमलजी के हाथ के लिखे प्रतीत होते हैं । ग्रंथ का विस्तार ६,००० श्लोक प्रमाण है ।

३१. प्रति सं० ८—पत्र संख्या—११०४ । साइज—१४×७ इंच । लेखन काल—सं० १८६१ पौष सुदी १२ । अपूर्ण । वेष्टन नं० ७१६ ।

विशेष—संदर्भ के बलग पत्र हैं । ११८, १२३ तथा २०२ के पत्र नहीं हैं ।

३२. प्रति नं० ३—पत्र संख्या—१०३१ । साइज—१२ $\frac{1}{2}$ ×६ $\frac{1}{2}$ इंच । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ७१७ ।

३३. प्रति नं० ४—पत्र संख्या—३११ । साइज—१२ $\frac{1}{2}$ ×८ इंच । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ८११ ।

विशेष—केवल कर्मकाण्ड भाषा है ।

३४. प्रति नं० ५—पत्र संख्या—२२ । साइज—१४×६ $\frac{1}{2}$ इंच । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ८७६ ।

विशेष—जीवकाण्ड की भाषा मात्र है ।

३५. गोमट्टसार कर्मकाण्ड टीका—सुमति कीर्ति । पत्र संख्या—४५ । साइज—११×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० २० ।

३६. गोमट्टसार कर्मकाण्ड भाषा—पं० हेमराज । पत्र संख्या—३४ । साइज—११ $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १७०६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३६६ ।

विशेष—पं० सेवा ने सरोजपुर में प्रतिलिपि की थी । ग्रंथ का प्रारम्भ और अन्तिम भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ—पणामय सिरस णोमि गुण रयण विहसर्ष महावीरं ।

सम्मत्तरयनिलय पयडि समुत्कर्त्तण बोछे ॥ २ ॥

अर्थ—अहं नेमिचंद्राचार्यः प्रकृती समुत्कर्त्तनेन वक्ष्ये । अहं हूँ जो नेमिचंद्र ऐसे नाम आधार्य सो प्रकृतिसमुत्कर्त्तने प्रकृति हुंकार है समुत्कर्त्तनेन वक्ष्ये जिस विषे ऐसा जो ग्रंथ कर्मकाण्ड नामा तिसहि वक्ष्ये कहूंगा । किंकरा कहा करि सिरसा नेमि प्रणम्य सिरकरि श्री नेमिनाथ को नमस्कार करिकी । कैसे है नेमिनाथ गुणरत्न विभूषण—अनंत ज्ञानादिक जो गुण तेई हुवे रत्न तेई है विभूषण आभाष जिनके । बहुरि कैसे है महावीरं महासुमद है कर्म के नासकरण की । बहुरि कैसे है सम्यक् रत्न निलय । सम्यक् रूप जो है रत्न तिसके निजय स्थानक है ।

अन्तिम—अरु जिस काल यह जीव पूर्वोक्त प्रत्यनीक आदिक किया विषे प्रवर्त्त, तब जैसी कुछ उत्कृष्ट मध्यम जघन्य शुभाशुभ किया होई, तिस माफिक कर्म हूँ का बंध करै स्थिति अनुमाग की विशेषता करि । तिस तै समय समय बंध जो करै सुती स्थित अनुमाग की हीनता करि । अरु जो प्रत्यनीक आदिक पूर्वोक्त किया करि करै सुस्थित अनुमाग की विशेषता करि यह सिद्धान्त जाणना । इयं भाषा टीका पंडित हेमराजेन कृता स्वबुद्ध्यानुसारेण । इति कर्म काण्ड भाषा टीका सम्पूर्ण । इति संवत्सरे अस्मिन् विक्रमादित्यराजैसप्तदशसत सतषटीत्तर १७०६ अथ सरोजपुरे मंजिषे पुस्तक लिख्यतं पंडित सेवा स्वपठनार्थ ॥

३७. प्रति नं० २—पत्र संख्या—७६ । साइज—११×४ $\frac{1}{2}$ इंच । लेखन काल—सं० १८२५ आसोज सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन नं० ३६६ ।

विशेष—कोटा में प्रतिलिपि हुई थी ।

३८. चर्चाशतक—शानतराय । पत्र संख्या—५३ । साहज—१९४८ ईश्व । भाषा—हिन्दी (२५) ।

विषय—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १६२४ चैत सुदी ६ । पूर्ण । बेष्टन नं० ७८३ ।

विशेष—यह प्रति बधीनम्ह साहामिका के शिष्य हरजीमल पानीपत वाले श्री हिन्दी टक्का टीका सहित है ।

३९. प्रति नं० २—पत्र संख्या—४७ । १५३×१६३ ईश्व । लेखन काल—सं० १६३८ ज्येष्ठ शुदी ७ ।

पूर्ण । बेष्टन नं० ७८४ ।

विशेष—प्रति बहुत सुन्दर है—हिन्दी टक्का टीका सहित है । बीच २ में नक्शे आदि भी दिये हुए हैं ।

४०. प्रति नं० ३—पत्र संख्या—६३ । साहज—१२×१३ ईश्व । लेखन काल—सं० १६०६ भाद्र सुदी २ ।

पूर्ण । बेष्टन नं० ८०८ ।

विशेष—प्रत्येक पत्र पर ३ पंक्तियाँ हैं ।

४१. चर्चासमाधान—भूधरदास जी पत्र संख्या—७६ । साहज—१०३×५ ईश्व । भाषा—हिन्दी ।

विषय—चर्चा । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८८४ । पूर्ण । बेष्टन नं० ३६१ ।

४२. प्रति नं० २—पत्र संख्या—११३ । साहज—१०३×५ ईश्व । लेखन काल—सं० १८८३ । पूर्ण । बेष्टन

नं० ३६२ ।

४३. प्रति नं० ३—पत्र संख्या—६३ । साहज—११×१३ ईश्व । लेखन काल—सं० १८४८ । पूर्ण ।

बेष्टन—३६३ ।

४४. चर्चासंग्रह—पत्र संख्या—२७२ । साहज—१२×६ ईश्व । भाषा—हिन्दी । विषय—चर्चा । रचना-

काल—X । लेखन काल—X । अपूर्ण । बेष्टन नं० ३६६ ।

विशेष—गोमहसार विलोपसार, छपयासार आदि ग्रन्थों के आधार पर धार्मिक चर्चाओं को यहाँ संग्रह किया गया है । चर्चाओं के नाम निम्न प्रकार हैं चर्चा वर्णन, कर्मप्रकृति वर्णन, तीर्थकर वर्णन, मुनि वर्णन, नरक वर्णन, मध्यलोकवर्णन, अन्तरकालवर्णन समोसरमवर्णन श्रुतिज्ञानवर्णन । नरकनिगोदवर्णन । मोक्षमुखवर्णन, अन्तरसमाधिवर्णन, कृदेववर्णन आदि ।

४५. चौबीस ठाणा चर्चा—आ० नेमिचन्द्र । पत्र संख्या—५६ से १२७ । साहज—१२×६ ईश्व ।

भाषा प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—X । अपूर्ण । बेष्टन नं० ३२० ।

विशेष—संस्कृत में टीका दी हुई है ।

४६. प्रति नं० २—पत्र संख्या—१२६ । साहज—११३×४३ ईश्व । लेखन काल—सं० १७८३ । पूर्ण ।

बेष्टन नं० १६६ ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । टीकाकार बालनन्द राम है ।

४७. चौबीसठाणा चर्चा भाषा—पत्र संख्या—५२ । साइज—११×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—चर्चा । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८८५ माह बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३५६ ।

विशेष—भाषाटीका का नाम बाल बोध—चर्चा दिया हुआ है ।

४८. प्रति नं० २—पत्र संख्या—३० । साइज—६×५ इंच । लेखन काल—सं० १८२३ कार्तिक बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३५८ ।

विशेष—सुशालचंद ने प्रतिलिपि की थी ।

४९. चौबीसठाणा चर्चा—पत्र संख्या—३३ । साइज—१०×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—चर्चा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ८६१ ।

५०. चौबीसठाणा चर्चा—पत्र संख्या—६ । साइज—६ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—चर्चा । रचना काल—X । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ५४६ ।

५१. चौबीसठाणा चर्चा—पत्र संख्या—३८ । साइज—११ $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—चर्चा । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८२० । पूर्ण । वेष्टन नं० ५४५ ।

विशेष—हिडोली में प्रतिलिपि हुई थी ।

५२. चौबीसठाणा पीठिका—पत्र संख्या—८ । साइज—१३×३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—चर्चा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ११२७ ।

५३. चौबीसठाणा पीठिका—पत्र संख्या—४३ । साइज—११ $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—चर्चा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ५१६ ।

५४. जीवसमास वर्णन—आ० नेमिचन्द्र । पत्र संख्या—१४ । साइज—१२×२ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ३२१ ।

विशेष—गोमटसार जीवकाण्ड में से गायार्थों का संग्रह है ।

५५. प्रति नं० २—पत्र संख्या—४५ । साइज—११×५ इंच । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३२२ ।

विशेष—गायार्थों पर संस्कृत में अर्थ दिया हुआ है ।

५६. ज्ञानचर्चा—पत्र संख्या—४६ । साइज—६ $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—चर्चा । रचना काल—X । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ३५७ ।

विशेष—गोमटसार, त्रिलोकसार, जपसासार आदि मंत्रों के अनुसार भिन्न २ चर्चाओं का संग्रह है ।

५७. सत्यसार—देवसेन । पत्र संख्या—४ । साइज—१० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ७० ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

५८. तत्त्वार्थसूत्र—उमास्वामि । पत्र संख्या-२३ । साइज-२१×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८७३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ५१४ ।

विशेष—प्रारम्भ में भक्ताभर स्तोत्र तथा द्रव्य संग्रह की गायार्थें दी हुई हैं ।

५९. प्रति नं० २—पत्र संख्या-३३ । साइज-२० $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ५२४ ।

विशेष—पत्र लाल रंग के हैं तथा चारों ओर भेलें हैं ।

६०. प्रति नं० ३—पत्र सं०-११ । साइज-२१×५ $\frac{३}{४}$ इंच । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ५३१ ।

६१. प्रति नं० ४—पत्र संख्या-७ । साइज-२० $\frac{३}{४}$ ×७ इंच । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ५६८ ।

६२. प्रति नं० ५—पत्र संख्या-१४ । साइज-११ $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$ इंच । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन
नं० ५६६ ।

६३. प्रति नं० ६—पत्र संख्या-७ । साइज-२३ $\frac{३}{४}$ ×६ इंच । लेखन काल-१६३३ ^६ पूर्ण । वेष्टन
नं० ६०६ ।

६४. प्रति नं० ७—पत्र संख्या-३-१६ । साइज-२०×४ $\frac{३}{४}$ इंच । लेखन काल—X अपूर्ण । वेष्टन
नं० ६६६ ।

विशेष—एक पत्र में ४ पंक्तियाँ हैं ।

६५. प्रति नं० ८—पत्र संख्या-७ । साइज-२०×४ इंच । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०४१ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

६६. प्रति नं० ९—पत्र संख्या-७३ । साइज-७×५ $\frac{३}{४}$ इंच । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ६४८ ।

विशेष—भक्ताभर स्तोत्र तथा पूजाओं का भी संग्रह है ।

६७. प्रति नं० १०—पत्र संख्या-२० । साइज-११ $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$ इंच । लेखन काल—X पूर्ण । वेष्टन
नं० ६४२ ।

विशेष—तीन चौबौसी नाम तथा भक्ताभर स्तोत्र भी है ।

६८. प्रति नं० ११—पत्र संख्या-४६ । साइज-२० $\frac{३}{४}$ ×७ $\frac{३}{४}$ इंच । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन
नं० ८५३ ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

६९. प्रति नं० १२—पत्र संख्या-४७ । साइज-२० $\frac{३}{४}$ ×७ $\frac{३}{४}$ इंच । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन
नं० ८५१ ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

७०. प्रति नं० १३—पत्र संख्या-५२ । साइज-१० $\frac{1}{2}$ ×७ $\frac{1}{2}$ इंच । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० २१० ।

विशेष—हिन्दी टब्का टीका सहित है ।

७१. प्रति नं० १४—पत्र संख्या-१६ । साइज-११×५ $\frac{1}{2}$ इंच । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६० ।

७२. प्रति नं० १५—पत्र संख्या-१५ । साइज-१०×५ इंच । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३०४ ।

७३. प्रति नं० १६—पत्र संख्या-१३ । साइज-८×४ $\frac{1}{2}$ इंच । लेखन काल-सं० १=१२श्रावण सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३०५ ।

७४. प्रति नं० १७—पत्र संख्या-१० । साइज-८×४ $\frac{1}{2}$ इंच । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३०६ ।

७५. प्रति नं० १८—पत्र संख्या-६ । साइज-११ $\frac{1}{2}$ ×६ $\frac{1}{2}$ इंच X । लेखन काल-X । वेष्टन नं० ३०७ ।

विशेष—प्रत्येक पत्र के चारों ओर सुन्दर बेलें हैं ।

७६. प्रति नं० १९—पत्र संख्या-६६ । साइज-११×५ इंच । लेखन काल-X । पूर्ण । नं० ४८७ । वेष्टन नं० ४ ।

विशेष—सूत्रों पर संक्षिप्त हिन्दी अर्थ दिया हुआ है । अक्षर मोटे हैं । एक पत्र में तीन पंक्तियाँ हैं ।

७७. प्रति नं० २०—पत्र संख्या-६३ । साइज-१२×५ $\frac{1}{2}$ इंच । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन

विशेष—हिन्दी टब्का टीका सहित है प्रति प्राचीन है ।

७८. प्रति नं० २१—पत्र संख्या-८४ । साइज-११×५ इंच । लेखन काल-सं० १६४६ कार्तिक सुदी १५ ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है जिसमें प्रभाचन्द्र कृत लिखा हुआ है । लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।
कहा जाता है कि यह टीका दी हुई है ।

प्रशस्ति—संवत् १६४६ वर्षे शाके १५१४ कार्तिक सुदी १५ गुरुवारसे मालपुरा वास्तव्ये महाराजाधिराज श्री फंवर भाधोसिंह जी राज्य प्रवर्तमाने श्री मूलसंघे नंदाभाये बलात्कारणये सरस्वतीगच्छे श्री कुन्द कुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेव विरचिता । यह ग्रन्थ मीमंसा वैय ने मनोहर लोका से पढ़ने के लिये भेज दिया था ।

७९. तत्त्वार्थ सूत्र धृति—पत्र संख्या-२८ । साइज-१० $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १५४७ वैशाख सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६१ ।

विशेष—टीका में मूल सूत्र दिये हुए नहीं हैं । टीका संक्षिप्त है ।

प्रशस्ति—संवत् १५२७ वर्षे वैशाख सुदी ७ थी मूलसंघे बलाकारगणे सरस्वतीगण्डे कृन्दकुन्दाचार्यान्वये मंडलाचार्यं चन्द्रकीर्तिं शिष्येण य० रत्नेन लिखापितं ।

८० तत्त्वार्थसूत्र वृत्ति—योगदेव । पत्र संख्या—१११ । साइज—१०×४ १/२ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १६३८ ज्येष्ठ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६८ ।

विशेष—महारक प्रभाचन्द्र देव की आश्रय के धर्ममेरा गोवदाले साह सांगू व उनकी भार्या सुहागदे ने यह ग्रन्थ सं० १६३८ में लिखा कर षोडशकारण नतोषापन में मंडलाचार्यं चन्द्रकीर्ति को भेंट किया था ।

८१. तत्त्वार्थसूत्र—पत्र संख्या—१२३ । साइज—१२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ६७ ।

विशेष—संस्कृत तथा हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है तथा दोनों भाषाओं की टीकायें सरल हैं ।

८२. तत्त्वार्थसूत्र भाषा टीका—कनककीर्ति—पत्र संख्या—२७१ । साइज—८×५ १/२ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८३६ । वेष्टन नं० ८३४ ।

विशेष—नेण सागर ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी । पत्र १७१ से २७१ तक बाद में लिखे हुए हैं अथवा दूसरी प्रति के हैं ।

प्रारम्भ—भोव मार्गस्य नैतारं भेचारं कर्मभूयतां । ज्ञातारं विश्व तत्त्वानां वंदे तदगुण्य लब्धये ॥ १ ॥ टीका—आहं उमास्वामी मुनीश्वर भूल प्रथ कारक । श्री सर्वज्ञ बीतराग वंदे कहतां श्री सवेज्ञ बीतराग ने नमस्कार कर्क लू । किंसा इक छै श्री बीतराग सवेज्ञ देव, भोव (स्व) मार्गस्य नैतारं कहतां भोवमार्ग का प्रकासका परवा वाला छै । थीस किंसा इक छै सवेज्ञ देव कर्मभूयतां भेचारं कहतां ज्ञानावरणादिक आठ कर्म एह छपि पदत त्याह का मेदिना वाला छ ।

अन्तिम—कै इक जीव चारण रिधि करि सिध छै । कै इक जीव चारण बिना सिध छै । कै इक जीव घोर तप करि सिध छै । कै इक जीव अघोर तप करि सिध छै । कै इक जीव उरध सिध छै । कै इक मध्य सिध छै । कै इक जीव अधो सिध छै । इह भाति करि जग हो मेदा सो सिध हुआ छै । सो सिधांत स' समझि लीज्यो । इति तत्त्वार्थाधि गये मोक्ष शास्त्रे दसमीयां पोसतक लिखत नेण सागर का चोमनराम दोसी सवाई डैपुर में लिख्यो संवत् १८४६ में पुरी कियो ।

८३ प्रति नं० २—पत्र संख्या—१२२ । साइज ८×४ इंच । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ८२३ ।

विशेष—श्रुतसागरी टीका के प्रथम अध्याय की हिन्दी टीका है ।

८४. प्रति नं० ३—पत्रसंख्या—२१६ । साइज—१०×४ इंच । लेखन काल—सं० १८४० । पूर्ण । वेष्टन नं० ७३१ ।

विशेष—जैन सागर ने सांभर में लिपि की थी । प्रारम्भ के पत्र नहीं है यद्यपि संख्या १ से ही प्रारम्भ है ।

८५ प्रति नं० ४—पत्र संख्या—११२ । साइज—१२×४ १/२ इंच । लेखन काल—सं० १७३८ ज्येष्ठ सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७३८ ।

विशेष—दूसरे अध्याय से है । वेष्टन नं० ७४७ के समान है ।

८६. प्रति नं० ५—पत्र संख्या—८२ । साइज—११ $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{1}{2}$ इंच । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ७४७ । वेष्टन नं० ८३४ के समान है ।

८७. प्रति नं० ६—पत्र संख्या—१२१ । साइज—८ $\frac{1}{2}$ ×४ इंच । लेखन काल—वैशाख सुदी ५ सं० १७७६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ८२३ ।

विशेष—पापठदा में ग्रन्थ की प्रतिलिपि की गई थी । लिखित ऋषि ज्वीराजेण । सिद्धाभित श्री संघेन नगर पापठदा मन्थे । दूसरे अध्याय से लेकर २० वें अध्याय तक की टीका है । यह टीका उतनी विस्तृत नहीं है जितनी प्रथम अध्याय की है ।

८८. तत्त्वार्थसूत्र भाषा—जयचन्द्र छाबड़ा । पत्र संख्या—४४० । साइज—१०×७ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—सं० १८६५ चैत सुदी ५ । लेखन काल—सं० १८६५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७३२ ।

विशेष—महात्मा साधुचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

८९. तत्त्वार्थसूत्र भाषा—सदासुख कासलीवाल । पत्र संख्या—३३६ । साइज—११×७ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—सिद्धान्त । रचना काल सं० १६१४ वैशाख सुदी १० । लेखन काल—सं० १६३६ कार्तिक सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७२१ ।

विशेष—सदासुख जी कृत तत्त्वार्थ सूत्र की यह बृहद् टीका है । टीका का नाम 'अर्थ प्रकाशिका' है । ग्रन्थ की रचना सं० १६१२ में प्रारम्भ की गई थी ।

९०. तत्त्वार्थ सूत्र भाषा—सदासुख कासलीवाल । पत्र संख्या—१२३ । साइज—८×५ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—सं० १६१० फाल्गुण सुदी १० । लेखन काल—सं० १६१६ आषाढ सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७५२ ।

विशेष—सदासुखजी द्वारा रचित तत्त्वार्थ सूत्र की लघु भाषा वृत्ति है ।

९१. प्रति नं० २—पत्र संख्या—१२७ । साइज—११×५ इंच । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ७५३ ।

९२. तत्त्वार्थ सूत्र टीका भाषा—पत्र संख्या—१ से १०० । साइज—१५×७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ७८० ।

विशेष—१०० से आगेके पत्र नहीं हैं । प्रारम्भिक पत्र निम्न प्रकार हैं—

श्रीवृषमादि जिनेश वर, अंत नाम शुभ वीर ।

मनवचकायविशुद्ध करि, बंदों परम शरीर ॥ १ ॥

कर्म धराधर भेदि जिन, मरम चराचर पाय ।

धरम धरावर कर नमूँ, सुगुरु परापर पाय ॥ २ ॥

६३. तत्त्वार्थसूत्र भाषा—पत्र संख्या—३१ । साइज—१० १/२ × ७ १/२ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—X । अपूर्ण । बेष्टन नं० ७०३ ।

६४. तत्त्वार्थसूत्र भाषा—पत्र संख्या—७७ से १७८ । साइज—६ × ४ १/२ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—X । अपूर्ण । बेष्टन नं० ८३५ ।

६५. तत्त्वार्थबोध भाषा—बुधजन । पत्र संख्या—७७ । साइज—१० १/२ × ७ इंच । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—१८७६ कार्तिक सुदी ५ । लेखन काल—X । पूर्ण । बेष्टन नं० ७३३ ।

विशेष—२०२६ पद्य हैं । प्राप्त नवीन एवं शुद्ध हैं रचना का अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है—

अन्तिमपाठ —
एकस बसै जयपुर तहाँ, रूप जयसिंह महाराज ।
बुधजन कीनौ ग्रंथ तह दिज परहित के काम ॥ २०२७ ॥
संवत् ठारसै बिषै अधिक गुण्यासी बेस ।
क्रांतिक सुदि ससि पंचमी पूरन ग्रन्थ असेस ॥ २०२८ ॥
मंगल श्री अरहंत सिद्ध मंगल दायक सदा ।
मंगल साध भइत, मंगल जिनवर धर्मधर ॥ २०२९ ॥

६६. तत्त्वार्थरत्नप्रभाकर—प्रभाचन्द्र । पत्र संख्या—१२० । साइज—८ × ४ १/२ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १७७७ । पूर्ण । बेष्टन नं० २०३ ।

विशेष—तत्त्वार्थ सूत्र की यह टीका मुनि श्री धर्मचन्द्र के शिष्य प्रभाचन्द्र द्वारा विरचित है । मकसूदावाद में मठारक श्री दीपकीर्ति के प्रशिष्य एवं लालसागर के शिष्य रामजी ने प्रतिलिपि की थी । १०६ पत्र के छागे नेमिराजस गृहभासा तथा राजस पच्चीसी, शारदा स्तोत्र (भ० शुभचन्द्र) सरस्वती स्तोत्र मंत्र सहित स्तोत्र और दिया हुआ है ।

६७. तत्त्वार्थराजवार्तिक—भट्टकलंकदेव । पत्र संख्या—३ से ११७ । साइज—११ × ७ १/२ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—X । अपूर्ण । बेष्टन नं० ६६१ ।

६८. प्रसि नं० २—पत्र संख्या—१ से ५३ । साइज—१२ × ६ १/२ इंच । लेखन काल—X । अपूर्ण । बेष्टन नं० ६४७ ।

६९. तत्त्वार्थश्लोकवार्तिकालंकार—आचार्य विद्यानन्दि । पत्र संख्या—५३२ । साइज—१२ × ६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १७६५ भाद्रपद सुदी १ । पूर्ण । बेष्टन नं० १६४ ।

विशेष—ग्रन्थ लोक संख्या २००० प्रमाण है।

१००. तत्त्वार्थसार—पत्र संख्या—४। साइज—११×२ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—सिद्धान्त। रचना काल—X। लेखन काल। पूर्ण। वेष्टन नं० ६१३।

१०१. त्रिभंगी संग्रह—पत्र संख्या—४०। साइज—१०×२ इंच। भाषा—प्राकृत। विषय—सिद्धान्त। रचना काल—X। लेखन काल—सं० १७२२ आषाढ सुदी २१। पूर्ण। वेष्टन नं० ६१३।

विशेष—साहू बख्श दास के पुत्र साहू गंगाधर ने यह प्रति लिखवायी थी।

ग्रन्थ में निम्न त्रिमंथियों का संग्रह है—

बन्ध त्रिमंथी, उदयउदीरणा त्रिमंथी (नेमिचन्द्र), सत्ता त्रिमंथी, भाषात्रिमंथी तथा विशेष सत्ता त्रिमंथी।

१०२. त्रिभंगीसार—भुतमुनि। पत्र संख्या—३६। साइज—११×२ इंच। भाषा—प्राकृत। विषय—सिद्धान्त। रचना काल—X। लेखन काल—X। पूर्ण। वेष्टन नं० ३६३।

१०३. द्रव्यसंग्रह—आनेमिचन्द्र। पत्र संख्या—११। साइज—१०×२ इंच। भाषा—प्राकृत। विषय—सिद्धान्त। रचना काल—X। लेखन काल—सं० १८३३ आषाढ सुदी १५। पूर्ण। वेष्टन नं० ५६।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है।

१०४. प्रति नं० २—पत्र संख्या—१३। साइज—१२×२ इंच। लेखन काल—सं० १७३३ कार्तिक सुदी ८। पूर्ण। वेष्टन नं० ७६।

विशेष—संस्कृत तथा हिन्दी अर्थ सहित है।

१०५. प्रति नं० ३—पत्र संख्या—३६। साइज—१२×२ इंच। लेखन काल—सं० १७८६ सावन सुदी ११। पूर्ण। वेष्टन नं० ७७।

विशेष—पर्वतधर्माश्रित बालबोधिनी टीका सहित है। लालसाट में महे स्तनजी ने प्रतिलिपि की थी।

१०६. प्रति नं० ४—पत्र संख्या—३। साइज—८ इंच। लेखन काल—X। पूर्ण। वेष्टन नं० ७८।

१०७. प्रति नं० ५—पत्र संख्या—३। साइज—११×२ इंच। लेखन काल—X। पूर्ण। वेष्टन नं० ७९।

विशेष—पद्मनन्दि के शिष्य ब्रह्मरूप ने प्रतिलिपि की।

१०८. प्रति नं० ६—पत्र संख्या—३। साइज—१०×२ इंच। लेखन काल—X। पूर्ण। वेष्टन नं० ८०।

विशेष—इसी प्रकार की ७ प्रतियां और हैं। वेष्टन नं० ८१ से ८७ तक है।

१०६. प्रति नं० १५—पत्र संख्या-६ । साइज-१२×१६ इंच । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ८८ ।

विशेष—गायार्थों पर हिन्दी अर्थ दिया हुआ है ।

११०. प्रति नं० १६—पत्र संख्या-१२ । साइज-१०×१६ इंच । लेखन काल-सं० १८२२ अदिष्ठ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ८९ ।

विशेष—माधोपुर में पं० नगराज ने प्रतिलिपि की ।

१११. प्रति नं० १६—पत्र संख्या-६ । साइज-११×१६ इंच । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ९० ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति—शरदि पशुपतीहत्यासु गवस्वर्जाकिने पुण्य समय भासे अर्द्धनेतरपते तिसौ प्रयोदश्या भीम वासरे सवाईजयनगरे कामपासगजे वृषमचैत्यालय पंडितोत्तम विद्वद्वरजिष्णू रामकृष्णजितकच्छिष्य विद्वद्वरेण सकलगुण निधान जिष्णू नगराजे जितच्छिष्य बाल कृष्णेन स्वपठनार्थं लिखितं ।

प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

११२. प्रति नं० १७—पत्र संख्या-६२ । साइज-१०×१६ इंच । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ९१ ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुए हैं ।

११३. प्रति नं० १८—पत्र संख्या-७ । साइज-१०×१६ इंच । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ९६ ।

११४. प्रति नं० १९—पत्र संख्या-७ । साइज-१२×१६ इंच । लेखन काल-सं० १८२० । पूर्ण । वेष्टन नं० ९७ ।

विशेष—जीवराज छाजडा ने अपने पढ़ने को प्रतिलिपि कराई ।

११५. प्रति नं० २०—पत्र संख्या-७ । साइज-१२×१६ इंच । लेखन काल-सं० १८०६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ९८ ।

११६. द्रव्यसंग्रह धृति—ब्रह्मदेव । पत्र संख्या-१७० । साइज-१०×१६ इंच । भाषा-संस्कृत विषय-सिद्धान्त । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ७४६ ।

११७. द्रव्यसंग्रह भाषा—पर्वतधर्मार्थी । पत्र संख्या-२६ से ५६ । साइज-१०×१६ इंच । भाषा-गुजराती । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १७५८ कार्तिक सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७४७ ।

विशेष—बसुंधा में प्रति लिखी गई थी । अमरपाल ने लिखवायी थी ।

११८. प्रति नं० २—पत्र संख्या-३५ । साइज-११ $\frac{1}{2}$ ×११ इंच । लेखन काल-सं० १७६३ वीस बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन नं० ७४३ ।

विशेष—संभामपुर नगर में प्रतिलिपि हुई ।

११९. प्रति नं० ३—पत्र संख्या-३१ । साइज-११×६ इंच । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ७४४ ।

विशेष—प्रतियाँ वर्षा में भोगी हुई हैं ।

१२०. प्रति नं० ४—पत्र संख्या-४८ । साइज-१२×११ इंच । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ७४५ ।

१२१. द्रव्यसंग्रह भाषा—जयचन्दजी । पत्र संख्या-३७ । साइज-१० $\frac{1}{2}$ ×७ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८६५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७२८ ।

१२२. प्रति नं० २—पत्र संख्या-४६ । साइज-१० $\frac{1}{2}$ ×७ इंच । लेखन काल-सं० १८६४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७३० ।

१२३. प्रति नं० ३—पत्र संख्या-४८ । साइज-१० $\frac{1}{2}$ ×६ इंच । लेखन काल-सं० १८६८ भाद्रपद सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७४१ ।

विशेष—महात्मा देवकर्ण ने लवाण में प्रतिलिपि की । हुसराम ने प्रतिलिपि कराकर बबीचन्द के मन्दिर में स्थापित की । पहले तथा अन्तिम पत्र के चारों ओर साइनें स्वर्ण की रंगीन श्याही में हैं, अन्य पत्रों के चारों ओर बेलें तथा बूँटें अचले हैं । प्रति दर्शनीय है ।

१२४ द्रव्यसंग्रह भाषा—बंशीधर । पत्र संख्या-३० । साइज-१०×६ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८५७ ।

विशेष—प्रारंभ-जीवमजीवं दर्वं इत्यादि गायत्रि की निम्न हिन्दी टीका की हुई है ।

टीका—अहं कहिये मैं छु हो सिद्धांतचक्रवर्ति श्री नेमिचन्द्र नामा आचार्य सो तं कहिये आदिनाथ महाराज हैं ताहि सिरसा कहिये मस्तक करि सख्खा कहिये सर्वकाल विषे बंदे कहिये नमस्कार करूं हैं... ।

अंतिम—

टीका—मो मुखियादा कहिये हे मुन्यों के नाम हो जूयं कहिये तुम छु हो ते हणं दर्वं संगहे कहिये इहु द्रव्यसंग्रह ग्रन्थ है ताहि सोचयतु कहिये सौख्यो है मुनिनाथ हो तुम कैसाक हो..... ।

१२५. द्रव्यसंग्रह भाषा—पत्र संख्या—२६ । साइज—६×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ८४९ ।

विशेष—पहिले द्रव्य संग्रह की गायों की हुई हैं और उसके पश्चात् भाषा के प्रत्येक पद का अर्थ दिया हुआ है ।

१२६. द्रव्य का व्योरा—पत्र संख्या—१८ । साइज—४×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० १००७ ।

१२७. पंचास्तिकाय—आ० कुन्दकुन्द । पत्र संख्या—३३ । साइज—२०×५ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८०५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ११६ ।

विशेष—मूल भाषा है ।

१२८. पंचास्तिकाय टीका—अमृतचन्द्राचार्य । पत्र संख्या—४३ । साइज—१२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८७२ कालगुण बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ११४ ।

१२९. प्रति नं० २—पत्र संख्या—८० । साइज—१२×५ इंच । लेखन काल—सं० १८२५ आषाढ बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ११५ ।

विशेष—सवलसिंह की पुत्री बाई रूपा ने जयपुर में प्रतिलिपि कराई थी ।

१३०. पंचास्तिकाय प्रदीप—प्रभाचन्द्र । पत्र संख्या—२२ । साइज—१२×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ३०६ ।

विशेष—आ० कुन्दकुन्द कृत पञ्चास्तिकाय की टीका है । अन्तिम पाठ इस प्रकार है—

इति प्रभाचन्द्र विरचिते पञ्चास्तिक प्रदीपे मूलपदार्थ प्ररूपणाधिकार समाप्तः ॥

१३१. पञ्चास्तिकाय भाषा—पं० हेमराज । पत्र संख्या—१०४ । साइज—१२×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १७२१ आषाढ बुदी ८ । अपूर्ण । वेष्टन नं० ३२१ ।

विशेष—आमेर में शाह रिश्मदास ने प्रतिलिपि कराई थी । प्रति प्राचीन है । हेमराज ने पञ्चास्तिकाय का हिन्दी भाषा में अर्थ लिखकर जैन सिद्धान्त के अपूर्व ग्रन्थ का पठन पाठन का अत्यधिक प्रचार किया था । हेमराज ने रूपचन्द्र के प्रसाद से ग्रंथ रचना की थी ।

१३२. पञ्चास्तिकाय भाषा—बुधजन । पत्र संख्या—६५ । साइज—१२×५ इंच । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—सं० १८६२ । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३७५ ।

विशेष—संघी अमरचन्द्र दीवान की प्रेरणा से ग्रन्थ रचना की गयी थी । ग्रन्थ में ५८२ पद्य हैं । रचना का आदि अन्त निम्न प्रकार है—

संगलाचरण—

बंदू जिन जित कम अति इष्ट, वाक्य विशद त्रिभुवन हित सिष्ट :
अंतर हित धारक गुन वृन्द, ताके पद वेदत सत इंद ॥

अष्टमः श्लोक—

पराकरत कुन्दकुन्द बखानी, ताका रहित अमृतचन्द्र जानि ।
दोका रची सहस कृत वानी, हेमराज बचनिका आनी ॥ ५७७ ॥
करे सम्यक्त्व मिथ्यात्व हरे, भय सागर लील ते तरै ।
महिमा मुख ते कही न जाय, बुधजन बंदै मन बच कय ॥ ५७८ ॥
सांगही अमर चन्द दीवान, मोछू कही क्यावर खान ।
मुघालाल फुनि नेमिचन्द सहसकित ग्यायक गुन वृन्द ॥
शब्द अर्थ धन यौ में लखो, भाषा करन तथे उमगक्षो ॥ ५८० ॥
भक्ति प्रेरित रचना आनी, लिखो पदो नाचो भवि शानी ।
जो कहु यामै असुध निहारो, मुखमंथ लखि ताहि सुधारो ॥
रामसिंह नृप जयपुर बसै सुदि आसोज गुरु दिन दर्शै ।
उगणी सै में घटि है आठ ता दिक्स सै रचयो पाठ ॥ ५८२ ॥

१३३. भाव संग्रह—देवसेन । पत्र संख्या—२ से ३४ । साइज—१२×५ इंच । माषा—प्राकृत । विषय—
सिद्धान्त । रचना काल—५ । लेखन काल—सं० १६२१ फाल्गुण शुदी ४ । पृष्ठों । वेष्टन नं० १११ ।

लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

विशेष—अथ श्री संवत् १६२१ वर्षे फाल्गुण शुदी ७ भीमवासरे । अथ श्री काष्ठा रात्रि माथुराश्रये पुष्करग-
जिनाये, यमोत्कान्वये गौरल गोत्रे पंचमीव्रत उद्धारण बीर साह अगुरु तस्य भार्या देवहाही तस्य पुत्र सा० धुजोळा तस्य भार्या
बावहाही कतेहाबाद वास्तव्यं । तयो पुत्रा षट् प्रथम पुत्र.....।

१३४. प्रति नं० २—पत्र संख्या—६६ । साइज—१२×५ इंच । लेखन काल—सं० १६०६ भागसिर सुदी
१० । पृष्ठों । वेष्टन नं० ११२ ।

विशेष—शेरपुर निवासी पाटनी गोत्र बाले साह मस्तु ने यह शास्त्र लिखा था ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६०६ भागसिर १० शुक्ले रेवती नक्षत्रे श्री मूलसंज्ञे नंदाश्रये नारायणगणै सरस्वतीगणै श्री कुन्द-
कुन्दभार्याश्रये भट्टारक श्री पञ्चनन्दि देवाः तत्पट्टे म० श्री शुभचन्द्र देवाः तत्पट्टे म० श्री जितचन्द्र देवाः तत्पट्टे म०

श्री प्रमाचन्द्रदेवाः तत्शिष्य वसुधराचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवाः तदज्ञाये खंडेलवालान्वये शौरपुर वास्तव्ये पाटणी गोत्रे साह अबणा तदभार्या तेजी तयोः पुत्रौ द्वौ प्र० संघी चापा द्वितीय संघी दूल्हा । संघी भार्या तदभार्या शृंगारदे तयोः पुत्राश्च चत्वारः ।

प्रथम साह ऊखा द्वितीय साह दीपा तृतीय साह नेमा चतुर्थ साह मलू । साह ऊखा भार्या उधसिरि तत् पुत्र साह पर्वत तदभार्या पोसिरी । साह दीपा भार्या देवतदे । साह नेमा भार्या लाडमदे तयोः पुत्र नि० लाला । साह मलू भार्या महमादे । साहादूल्हा भार्या कुभी तयोः पुत्रास्त्रयः प्रथम संघी नानू द्वितीय संघी ठक्करसी तृतीय संघी गुणदत्त । संघी नानू भार्या नायकदे तयोः पुत्र नि० कौजू । संघी ठक्करदे भार्या पाटमदे तयोः पुत्रौ द्वौ प्रथम साह ईसर तद् भार्या अहंकारदे, द्वि० चि० सेवा । साह गुणदत्त भार्या भारवदे । तयोः पुत्रास्त्रयः प्रथम चि० गेगराज द्वि० चि० सुमतिदास तृ० चि० धर्मदास एतेषां सभ्ये साह मलू इदं शास्त्रं लिखाय पंचमीजतोद्योतनाय आचार्य श्री ललितकीर्ति आचार्य धनक राय दत्त ।

१३५. भावसंग्रह—श्रुतमुनि । पत्र संख्या-१ से १४ । साइज-११ $\frac{१}{२}$ ×५ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १५१० । पूर्ण । वेष्टन नं० ११० ।

विशेष—कहीं २ संस्कृत में टीका भी है । लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १५१० वर्षे आषाढ सुदि ६ शुक्ले गुरुजदेशे कल्पवल्ली शुभस्थाने श्री आदिनाथचैत्यालये श्रीमन् ब्रह्मासंघे नन्दीतटगच्छे विद्यागणे भट्टारक श्रीरामसेनान्वये भट्टारक श्री यश कीर्तिः तत्पट्टे भट्टारक श्री उदयसेन, आचार्य श्री जिनसेन पठनार्थ ।

१३६. लब्धिसार—आ० नेमिचन्द्र । पत्र संख्या-२६ । साइज-१२ $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १५५१ आषाढ सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०४ ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है । लेखक—प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

संवत् १५५१ वर्षे आषाढ सुदी १४ मंगलवासरे व्येष्टानगरे श्री भेदपाटे श्रीपुरनगरे श्री ब्रह्मचालुकवंशे श्रीराजाधिराज रायश्री भूर्यसेनराज्यप्रवर्तमाने श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे, श्री नंदिसंघे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये म० श्री पद्मनंदिदेवाः तत्पट्टे श्री शुभचन्द्र देवाः पत्पट्टे श्री जिनचन्द्र देवाः तन् शिष्य मुनि रत्नकीर्तिः तन् शिष्य मुनि लक्ष्मीचन्द्रः खंडेलवालान्वये श्री साह गोत्रे साह काल्हा भार्या रानादे तन् पुत्र साह वीष्मा, साह माधव, साह लाला, साह डूंगा । वीष्मा भार्या विजयश्री द्वितीय भार्या पूना । विजय श्री भार्या पुत्र जिणदास भार्या जौणदे, तन् पुत्र साह गंगा, साह सांगा शान सहसा, साह चौडा । सहसा पुत्र पासा साम्रमिदं लब्धिसारमिधानं निजज्ञानावरणी कर्म क्षयार्थं मुनि लक्ष्मीचन्द्राय पठनार्थं लिखापितं । लिखितं गंगा नाम्ना गौड क्षातीय ।

अथंत्यन्त्रहमर्हतः सिद्धाः सूर्युपदेशकाः ।

साधवो भव्यलोकस्य शरणोत्तम मंगलं ॥

श्री नागार्पणतनूजातशान्तिनाथोपरोधतः ।

वृत्तिर्मध्यप्रबोवाय लब्धिसारस्य कल्पते ॥

१३७. लब्धिसार टीका—माधवचन्द्र त्रैविशदेव । पत्र संख्या—६७ । साइज—१४×६ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ८७७ ।

विशेष—इस प्रति की सं० १५=३ वाली प्रति से प्रतिलिपी की गई थी ।

१३८. प्रति नं० २—पत्र संख्या—२४ । साइज—१४×६ $\frac{1}{2}$ इंच । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ८७८ ।

१३९. लब्धिसार भाषा—पं० टोडरमल । पत्र संख्या—१ से ४५ । साइज—१२ $\frac{1}{2}$ ×७ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६२० ।

१४०. षट् द्रव्य वर्णन—पत्र संख्या—११ । साइज—१२×६ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६२१ ।

१४१. सवार्थसिद्धि—पूज्यपाद । पत्र संख्या—१२२ । साइज—११ $\frac{1}{2}$ ×५ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १५२१ चैत सुदी ३ । पूर्ण वेष्टन नं० ४० ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति पूर्ण नहीं है । केवल संवत् मात्र है । प्रति शुद्ध है ।

१४२. सिद्धान्तसारदीपक—भ० सकलकीर्ति । पत्र संख्या—५ से २१ । साइज—१२×५ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन नं० १०७ ।

विशेष—तृतीय अधिकार तक है ।

१४३. प्रति नं० २—पत्र संख्या—५२ से ५० । साइज—१० $\frac{1}{2}$ ×६ $\frac{1}{2}$ इंच । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन नं० १०८ ।

१४४. प्रति नं० ३—पत्र संख्या—३८ से २७५ । साइज—१०×४ $\frac{1}{2}$ इंच । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन नं० २०० ।

१४५. सिद्धान्तसारदीपक भाषा—नथमल बिलाहा । पत्र संख्या—२४५ । साइज—१० $\frac{1}{2}$ ×७ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—सं० १८२४ । लेखन काल—सं० १८३५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३४५ ।



धर्म एवं आचार-शास्त्र

१४६. अनुभवप्रकाश—दीपचन्द्र । पत्र संख्या—२२ । साइज—१२ $\frac{1}{2}$ ×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । रचना काल—सं० १७८१ पौष सुदी ५ । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ८४५ ।

१४७. अरहन्त स्वरूप वर्णन—पत्र संख्या—२ । साइज—८×५ इंच । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । प्रपूर्ण । वेष्टन नं० ११४४ ।

१४८. आचारसार—वीरनन्दि । पत्र संख्या—८२ । साइज—११×५ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । रचना काल—X । लेखन काल—सं० २८११ वैशाख सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन नं० १७७ ।

विशेष—प्रति उत्तम है, क्लिष्ट शब्दों के संस्कृत में अर्थ भी दिये हुये हैं ।

१४९. आचारसारवृत्ति—वसुनन्दि । पत्र संख्या—११० । साइज—१२×५ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । रचना काल—X । लेखन काल—सं० २८२१ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३७ ।

विशेष—मूलकर्ता आ० बड़केर स्वामी हैं । मूल ग्रंथ प्राकृत भाषा में है ।

१५०. उपदेशरत्नमाला—सकलभूषण । पत्र संख्या—६० । साइज—१२×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । रचना काल—सं० १६२७ आषाढ सुदी ५ । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० १५६ ।

विशेष—रचना का दूसरा नाम षट्कर्मोपदेशरत्नमाला भी है । इस ग्रंथ की ४ प्रतियां और हैं वे सभी पूर्ण हैं ।

१५१. उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला—मंडारी नेमिचन्द्र । पत्र संख्या—११ । साइज—१० $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—सं० २८११ आषाढ सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० १५७ ।

विशेष—महात्मा सीताराम ने मोनदराम के पठनार्थ लिपि कराई थी ।

१५२. उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला भाषा । पत्र संख्या—१० । साइज—११ $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—धर्म । रचना काल—सं० १७७१ चैत्र सुदी १४ । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३७६ ।

विशेष—भाषाकार के मतानुसार उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला की रचना सर्वे प्रथम प्राकृत भाषा में धर्मदास गरि ने की थी । उसी ग्रंथ का संक्षिप्त सार लेकर मंडारी नेमिचन्द्र ने ग्रन्थ रचना की थी । भाषाकार ने मंडारी नेमिचन्द्र की रचना की ही हिन्दी की है ।

प्रारम्भ—शुद्ध देव अरहन्त गुरु, धर्म पंच नवकार ।

तसै निरंतर नासु हिय, धन्यकृती नर सार ॥१॥

पठइन गुणइन धानन देहि, तप आचार नहुं नाहि करेहि ।
जो हिय एक देव अरिहंत, ताप तप न आताप करंत ॥२॥

अन्तिम पाठ—

इस मंडारी नेमिचंद, रची कित्तीयक गाह ।
समन्वरक जे गति पावत, जिनहुं सिव तुज लाह ॥६१॥
यह उपदेश रतन माखा सुम, प्रथम रच्यो भमदासगणी,
ता सहि केतक गाह अनोपम नेमिचन्द मंडार मणी ।
जिनवर धरम प्रभावन काजह माष रच्यो अनुबुद्धि तणी ।
जाके पदत सुनत सबो धात आत्म हुह वर सिव रमणी ॥६२॥
सबत् सतरह सै सतरि अधिक दोष पय सेत ।
चेत मास चातुसदी, पुरन मयौ सु एत ॥६३॥

१५३. उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला—भागचन्द्र । पत्र संख्या—६२ । साइज—१०×४ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । रचना काल—सं० १६१२ आषाढ बुदी २ । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४०७ ।

१५४. उपासकदशा सूत्र विवरण—अभयदेव सुरि । पत्र संख्या—१८ । साइज—१० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० १७६ ।

विशेष—उपासक दशा सूत्र एवे० सम्प्रदाय का सातवां अंग है जो दश अध्यायों में विभक्त है । संस्कृत में यह विवरण अति संक्षिप्त है । विवरण का प्रथम पद्य निम्न प्रकार है—

श्रीवर्द्धमानमानभ्य व्याख्या काचिद विधीयते
उपासकदशादीनां प्रायो मंथान्तरेक्षिताः ॥१॥

१५५. उपासकाचार दोहा—लक्ष्मीचन्द्र । पत्र संख्या—२७ । साइज—१० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—अवध श (प्राचीन हिन्दी) । विषय—आचार शास्त्र । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८२१ वैशाख बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन नं० १७८ ।

विशेष—दोहों की संख्या २२४ है ।

१५६. कर्मचरित्र जाईसी—रामचन्द्र । पत्र संख्या—५ । साइज—६×६ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० १५७ ।

विशेष—३ पत्र से आगे दौलतशमजी के पद हैं ।

१५७. कियाकोश भाषा—किशनसिंह । पत्र संख्या—१६४ । साइज—१० $\frac{१}{२}$ ×५ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—हिन्दी

विषय—आचार शास्त्र । रचना काल—सं० १७८४ भाद्रपद सुदी १५ । लेखन काल—सं० १८०६ कार्तिक वृद्धी १३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७७० ।

विशेष—भण्डार में ग्रन्थ को ११ प्रतियाँ और है जो सभी पूर्ण है ।

१५८. गुणतीसो भावना—पत्र संख्या—२ । साइज—११½×३ इंच । भाषा—प्रोक्तः । विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०७६ ।

विशेष—हिन्दी गद्य में भाषाओं के ऊपर धर्म दिया हुआ है । भाषाओं की संख्या २५ है ।

१५९. गुरोपदेश आवकाचार—डालूराम । पत्र संख्या—१३३ । साइज—१२½×६½ इंच । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—आचार शास्त्र । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८६४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ८८० ।

विशेष—पचेवर में ग्रन्थ की प्रतिलिपि हुई थी ।

१६०. चारित्रसार (भावनासार संग्रह) चामुण्डराय । पत्र संख्या—११० । साइज—११½×१३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०५ ।

विशेष—प्रथम छन्द तक है तथा अंतिम प्रशस्ति अधूर्ण है ।

१६१. चारित्रसार पंजिका—पत्र संख्या—८ । साइज—११×१३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । चारित्रसार टिप्पण भी नाम दिया हुआ है । टिप्पण अति संक्षिप्त है ।

प्रारम्भिक मंगलाचारण निम्न प्रकार है—

नमो नंतमुखल्लानखवीर्याय जिनेश्वरिणे ।

संसारवासपारास्मिन्निमज्जजीवतापिने ॥१॥

चारित्रसारे श्रुतसारं संग्रहे यन्मदकुद्धे स्तमस्तानृत्तं पदं ।

अध्यक्षतये व्यवतपदप्रयोगतः प्रारम्भ्यते विद्वद्मीष्टपंजिका ॥२॥

१६२. चारित्रसार भाषा—मन्नालाल । पत्र संख्या—२३५ । साइज—१०½×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—आचार शास्त्र । रचना काल—सं० १८७९ । लेखन काल—सं० १८७६ । पूर्ण । वेष्टन नं० २५४ ।

आदि भाग (पद्य)— श्री जिनेन्द्र चन्द्राः । परम मंगलमादिशानु तराम् ।

दीहाः—परम धर्मरथ नेमि मम, नेमिचन्द्र जिनराय ।

मंगल अथ हर विमल, नमो सुमन-वच-काय ॥१॥

मन अथाह सागर परे, जगत जेतु दुख पात ।
करि गहि कादत तिनहि यह, जैन धर्म विख्यात ॥२॥
करत परम पद विदश सुख, भादत गुण विस्तार ।
नमो ताहि दित हारष धरि, कष्टामृत रस धार ॥३॥

मध्यभाग (मध्य):—(पत्र सं० ६४) मदिरा को पीबें तथा और हू मादिक वस्तु भक्षण करें तब प्रमाद के बधने हैं विवेक का नाश होय । ताके नाश होतैं हित अहित का विचार होता नाहीं । ऐसैं धर्म धर्म्य तथा कर्म इन दोऊन हुतैं भ्रष्ट होहि नातैं इस मध्यवत तथा मादिक वस्तु का सर्वथा प्रकार त्याग ही करना जोग्य हैं । ऐसा जानना ।

प्रभोत्पत्ति वर्णन-प्रशस्ति:—

सर्वाकाश अनन्त प्रमान । ताके बीच ठीक पहचान ॥
लोकाकाश असंख्य प्रदेश, ऊरिध मध्य अधो भूनेश ॥१॥
मध्यलोक में जेवू दीप । सो है सब द्वीपनि भवनीप ॥
ता मधि मेरु सुदर्शन जान । साद्रुं सुमि दंड है मान ॥२॥
ता दक्षिण दिश भरत सु नाम । तेव प्रकट सो है सुरधाम ॥
ताके मध्य ऊँटाइक देश । बहु शोभा छत लस अरोष ॥३॥
तहां सवाई जयपुर नाम । नगर लसत रचना अभिराम ॥
बहु जिन मंदिर सहित मनोग्य । सांनू सर गण बसने जोग्य ॥४॥
जगत सिंह राजा तसु जान । कंपत अरिगन करै प्रताप ॥
तेजवंत जसवंत विशाल । सीकत गुन गन करत निहाल ॥५॥
जहां बसे बहु जैनी लोग । सेवत धर्म बसै दुख रोग ॥
तिन मधि सरागा बंस विशाल । ओगिदास सुत मन्नालाल ॥६॥
बालपने ते संगति पाय । विद्याभ्यास कियो मन लाय ॥
जैन भेष देखे कुछ सार । जमचंद भंडाल उपकार ॥७॥
इस्तिनागपुर तीर्थ महान । तहि बंदन आयो सुख धाम ॥
इन्द्रप्रस्थ पुर शोभा होइ । देखै भयो अधिक मन मोइ ॥८॥
तहां राज अंगरेज करंत । हुकम कंपनी छत्र फिरंत ॥
नादस्याह अकबर सिर सेत । सेवक जननि व्रज्य बहु देत ॥९॥
हरसुख राय खजाना बंत । तिनके सो है धरम धरंत ॥
अगरनाल गोत्री गुण नाम । सुगनचन्द्र तसु पुत्र सुजान ॥१०॥
मंदिर तिनि नै रच्यो महंत । जिनवर तनो धूजा लहकंत ॥

बहु विधि रचना रही तसु माहि । शोभा बरनत पार न पाहि ॥११॥
 ताके दर्शन कर सुख राशि । प्राप्त भई रंक निधि भासि ॥
 कारन एक मयो तिहि ठाम । रहने को भावू तसु नाम ॥१२॥
 मंथी जगतसिंह को नाम । अमरचन्द्र नामा गुणधाम ॥
 रहै बहुत सखन सुखदाय । धर्म राग शोभित अधिकाय ॥१३॥
 मोतै अधिक प्रीति मन धरै । विनि अटकायो में हित खरै ॥
 ता कारण बिरता तिहि पाय । सुगनचंद्र के कहै सुभाय ॥१४॥
 चारित्रसार मंथ की भाष । वचन रूप यह कहै सुसाख ॥
 ठाकुरदास और इन्दराज । इन भाइन के बुद्धि समाज ॥१५॥
 मंदबुद्धितें अर्थ विशेष । तहि प्रतिभास्यो होय अशेष ॥
 सुधी ताहि नीकै ठानियो । पछिपात मत ना मानियो ॥१६॥
 अनेकत यह जैन सिधंत । नय समुद्र बर कहि विलसंत ॥
 गुरुवच पोत पाय मत्रि जीव । लही पार सुख कृत सदीन ॥१७॥
 जयवंती यह होउ दिनेश । चन्द्र नखत उडु बजावत शेष ॥
 पढो पढावो सब्य संसार । बढो धर्म जिनवर सुखकार ॥१८॥
 संवत एक सात अठ एक । माघ मास सित पंचमि नेक ॥
 मंगल दिन यह पूरण करी । मादो विरधो मुख गण भरी ॥१९॥
 दोहा:—सुम चितक छ लेखका दयार्चन यह जानि ।
 लिख्यो मंथ तिनि नै एहै बाचो पढो सुहसानि ॥

विशेष—मंथ की एक प्रति और है लेकिन अपूर्ण है ।

१६३. चिह्निलास-दीपचन्द्र—पत्र संख्या-५० । सारज-१२^१/_२ × ४^१/_२ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म ।
 रचना काल-सं० १७७६ फाल्गुण सुदी ५ । लेखन काल-सं० १७८४ वैशाख सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७३६ ।

१६४. चौरासी बोल—हेमराज । पत्र संख्या-१४ । सारज-१२^१/_२ × ४^१/_२ इंच । भाषा-हिन्दी ।
 विषय-धर्म । रचना काल-५ । लेखन काल-५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ८७१ ।

१६५. चौबीस दंडक—पत्र संख्या-२८ । सारज-७ × ४^३/_४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म ।
 रचना काल सं० १८५४ आषाढ सुदी ६ । लेखन काल-५ । पूर्ण वेष्टन नं० ६४७ ।

विशेष—१४ वें पत्र के आगे बारह भावना तथा बाईस परीषद का वर्णन है । दंडक में ११८ पद्य हैं ।

१६६. चौबीस दंडक—वैलतराम । पत्र संख्या—२ । साइज—७×२१ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ८८५ ।

१६७. जिनगुण पञ्चीसी—पत्र संख्या—२२ । साइज—११×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ८८५ ।

१६८. जीवों की संख्या वर्णन—पत्र संख्या—८ । साइज—७×७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ११३६ ।

१६९. ज्ञान चिन्तामणि—मनोहरदास । पत्र संख्या—१० । साइज—१० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । रचना काल—सं० १७२८ माह सुदी ८ । लेखन काल—सं० १८१६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ८८६ ।

१७०. ज्ञान मार्गणा—पत्र संख्या—६ । साइज—१० $\frac{१}{२}$ ×७ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३६४ ।

विशेष—मार्गणाओं का वर्णन संक्षेप में दिया हुआ है ।

१७१. ज्ञानानन्द आचकाचार—रायमल्ल । पत्र संख्या—१११ । साइज—११×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—आचार शास्त्र । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८२६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६४४ ।

१७२. डाल गण—सूरत । पत्र संख्या—६ । साइज—१० $\frac{१}{२}$ ×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—आचार शास्त्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ५०६ ।

१७३. अपेक्षितक्रियाविधि—पं० वैलतराम । पत्र संख्या—१०४ । साइज—११×६ इंच । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—आचार शास्त्र । रचना काल—सं० १७६६, भाद्रपद सुदी १२ । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ७७७ ।

विशेष—कवि ने यह रचना उदयपुर में समाप्त की थी ।

१७४. दशलक्षणधर्म वर्णन—पत्र संख्या—२६ । साइज—१२×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३७६ ।

विशेष—दश धर्मों का हिन्दी गद्य में संक्षिप्त वर्णन है ।

१७५. दर्शनपञ्चीसी—आरतराम । पत्र संख्या—११ । साइज—११ $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$ इंच । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०३ ।

विशेष—फुटकर सबैया भी हैं । एक प्रति खीर है जिसका वेष्टन नं० ५०६ है ।

१७६. देहव्याथाकथन—पत्र संख्या—१६ । साइज—१०×४ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ६३५ ।

विशेष—देह की किस २ प्रकार से व्यथा है इसका वर्णन किया हुआ है।

१७७. धर्म परीक्षा—आचार्य अमितगति । पत्र संख्या-८८ । साइज-११½×१ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—धर्म । रचना काल—सं० १०७७ । लेखन काल—सं० १७६२ पौष शुक्ला २ । पूर्ण । वेष्टन नं० १८७ ।

विशेष—वृन्दावती गढ़ (वृन्दावन) में प्रतिलिपि हुई थी । लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है । सं० १७६२ मिति पौषमासे शुक्लपक्षे द्वितीया दिवसे चार शुक्लवार लिखितं गढ़ वृन्दावती मध्ये श्री राव सुधर्सिंह राज्ये नेमिनाथचैत्यालये भट्टारक श्री जगतकीर्ति आचार्य श्री शुभचन्द्रेण शिष्य नानकरामेन शुभं भवतु ।

ग्रंथ की एक प्रति और है जो सं० १७२६ में लिखित है । वेष्टन नं० १८८ है ।

१७८. धर्म परीक्षा—मनोहरदास सोनी । पत्र संख्या-१२४ । साइज-१०½×१ इंच । भाषा—हिन्दी ।
(पद्य) विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १७६३ फागुण सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३६३ ।

विशेष—हिन्दी में प्रतिलिपि हुई थी ।

इसी ग्रंथ की पाँच प्रतियाँ और हैं जो सभी पूर्ण हैं तथा उत्तम हैं ।

१७९. धर्मविलास—द्यानतराय । पत्र संख्या-२१६ । साइज-१०½×१ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १६४२ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७२३ ।

विशेष—द्यानतरायजी की रचनाओं का संग्रह है ।

१८० धर्मरसायन—पद्मनन्दि । पत्र संख्या-१६ । साइज-११×१ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म ।
रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० २७ ।

विशेष—ग्रंथ की एक प्रति और है जो संवत् १८५४ में लिखी हुई है । वेष्टन नं० २८ है ।

१८१. धर्मसार चौपड़े—पं० शिरोमणिदास । पत्र संख्या-३६ । साइज-१०×१ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—धर्म । रचना काल—सं० १७३२ बैशाख सुदी ३ । लेखन काल—१८३६ भाद्र सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन नं० ८६६ ।

विशेष—प्रति सुन्दर है । इसमें हिन्दी के ७६३ छन्द हैं । रचना काल निम्न पंक्तियों से जाना जा सकता है ।

संवत् १७३२ बैशाख मास उज्ज्वल पुनि दीप्त ।

तृतीया अक्षय शनी समेत सबिजन को संगल सुख देत ॥

१८२. धर्मपरीक्षा भाषा—बा. दुलीचन्द । पत्र संख्या-२७२ । साइज-११×१ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—धर्म । रचना काल—सं० १८६८ । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ७८६ ।

विशेष—अंतिम पत्र नहीं है । मूल कर्ता आचार्य अमित गति हैं ।

१८३. धर्मप्रभोचारभावकाचार भाषा—चंपाराम । पत्र संख्या—१६० । साइज—१२×१३ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—आचार । रचना काल—सं० १८६८ भाद्रपद सुदी ५ । लेखन काल—सं० १८६० भाद्रपद सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७६० ।

विशेष—दीपचन्द के पौत्र तथा हीराशाल के पुत्र चम्पाराम ने भवाई माधोपुर में ग्रन्थ रचना की थी । विस्तृत प्रशस्ति दी हुई है ।

१८४. धर्मसंग्रह भावकाचार—पं० मेधावी । पत्र संख्या—४६ । साइज—११×१३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार । रचना काल—सं० १५४२ । लेखन काल—सं० १८३२ । पूर्ण । वेष्टन नं० १८६ ।

विशेष—सवाई जयपुर में मोपतिराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१८५. धर्मोपदेशभावकाचार—म० नेमिदत्त । पत्र संख्या—३० । साइज—१० $\frac{1}{2}$ ×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १६३३ कार्तिक सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन नं० १८२ ।

विशेष—चंपावती दुर्ग के आदिनाथ चैत्यालय में महाराजाधिराज श्री भगवंतदासजी के शासनकाल में प्रतिलिपि की गयी थी ।

१८६. प्रति सं० २—पत्र संख्या—१७ । साइज—११×१३ इंच । लेखन काल—सं० १६०६ भाद्र सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० १८३ ।

विशेष—टीका दुर्ग (टीढारायसिंह) में महाराजाधिराज श्री रामचन्द्र के शासनकाल में प्रतिलिपि हुई थी ।

१८७. नरक दुःख वर्णन—पत्र संख्या—३-६ । साइज—१२×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६१८ ।

१८८. नरक दुःख वर्णन—पत्र संख्या—३ । साइज—११ $\frac{1}{2}$ ×१३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन नं० १०४७ ।

१८९. नरक दुःख वर्णन—पत्र संख्या—६२ । साइज—६×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८१६ पौष सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०१६ ।

विशेष—भाषा हटारी है तथा उर्दू के शब्दों का भी कहीं २ प्रयोग हुआ है । नरकों के वर्णन के आगे अन्य वर्णन जैसे स्वर्ग, मार्गणार्थ तथा कालान्तर आदि का वर्णन भी दिया हुआ है ।

१९०. पद्मनन्दिपंचविंशति—पद्मनन्दि । पत्र संख्या—६२ । साइज—१० $\frac{1}{2}$ ×१ इंच । भाषा—प्राकृत—संस्कृत । विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

१६१. प्रति नं० २—पत्र संख्या—६६ । साइज—१० $\frac{1}{2}$ ×४ इंच । लेखन काल—सं० १६३२ फागुन सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन नं० ११ ।

विशेष—सं० १५३२ फागुन सुदी प्रतिपदा सांमवासरे उत्तराषाढा शुभनामजोगे श्री कुन्दकुन्दाचार्यन्वये सरस्वतीगच्छे बलारकागणे श्री भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवा तत्पट्टे शुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्र देवा तत्पट्टे भट्टारक श्री सिंह कीर्ति देवा तत् शिष्य प्रभाचन्द्र पठनाय दत्तं पुण्याय इत्थाकु वंशे अश्वपतिना दत्तं शुभं भवतु ।

१६२. पद्मनंदिपञ्चमी भाषा—मन्नालाल खिदूका । पत्र संख्या—२६८ । साइज—१० $\frac{1}{2}$ ×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । रचना काल—सं० १६१५ । लेखन काल—सं० १६३५ माघा सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३६ ।

१६३. परीषद् विवरण—पत्र संख्या—३ । साइज—१३×१३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०५५ ।

१६४. प्रसिद्धि—पत्र संख्या—५ । साइज—१० $\frac{1}{2}$ ×४ इंच । भाषा—प्राकृत—संस्कृत । विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६३ ।

१६५. प्रबोधसार—महा पं० यशःकीर्ति । पत्र संख्या—२८ । साइज—८×१३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १६२५ मंगसिर सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६ ।

विशेष—रचना में ४७८ पद्य हैं । प्रशस्ति अपूर्ण है जो निम्न प्रकार है—

संवत् १५२५ वर्षे मार्गसुदी १५ श्री भूलसंघे बलारकागणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० श्री जिनचन्द्र देवास्तत् शिष्य भ० श्री हेमकीर्ति देवाः तस्योपदेशात् जैसवालान्वये इत्थाकु वंशे सा०.....

१६६. प्रश्नोत्तरोपासकाचार—बुलाकीदास । पत्र संख्या—१४३ । साइज—१२×२ इंच । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—आचार शास्त्र । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १७८४ कार्तिक सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७६४ ।

विशेष—प० नरसिंह ने प्रतिलिपि की थी ।

१६७. प्रायश्चित्तसमुच्चय—नंदिशुक्ल । पत्र संख्या—१०० । साइज—१२×१३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८६६ श्रावण सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० २६ ।

१६८. प्रश्नोत्तरआवकाचार—सकलकीर्ति । पत्र संख्या—६२ । साइज—११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८६१ । पूर्ण । वेष्टन नं० १८४ ।

१६९. प्रति नं० २—पत्र संख्या—१०८ । साइज—१२×२ इंच । लेखन काल—सं० १६३२ भाद्र सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० १६० ।

लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

सर्वतरेस्मिन् विक्रमादित्य १६३२ वर्षे माघमासे शुक्लपक्षे पंचम्यां तिथौ शुक्रवातरे मालवदेशे चन्देरीभादुर्ये पार्ष्णाथ चैत्यालये श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कंदकृंदाचार्यान्वये तदाम्नाये महाबादवादीश्वर मंडलाचार्य श्री श्री देवेन्द्रकीर्तिदेव । तत्पट्टे मं० आचार्य श्री त्रिभुवनकीर्ति देव । तत्पट्टे मं० श्री सहस्रकीर्तिदेव । तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री पद्मनंदि देव । तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री यशःकीर्तिः । तत्पट्टे मं० श्री ललितकीर्ति लिखित पंडित रत्न पठनार्थ इदं उपासकाचार ग्रन्थ लिखितं ।

२००. प्रति नं० ४३—पत्र संख्या—१२२ । साइज—११×४ $\frac{1}{2}$ इंच । लेखन काल—सं० १६४८ वैशाख सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन नं० १६१ ।

विशेष—सहारनपुर नगर बादशाह श्री अकबर जलालुद्दीन के शासनकाल में प्रतिक्रिपि हुई थी ।

इस ग्रंथ की भण्डार में ५ प्रतियां और हैं जिनमें २ प्रतियां अपूर्ण हैं ।

२०१. प्रश्नोत्तरश्रावकाचार—सकलकीर्ति । पत्र संख्या—६२ । साइज—११ $\frac{1}{2}$ ×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८२१ । पूर्ण । वेष्टन नं० १८५ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है प्रथम पत्र नवीन है ।

२०२. प्रति नं० २—पत्र संख्या—७२ । साइज—११×४ इंच । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन नं० १८४ ।

२०३. पुरुषार्थसिद्धयुपाय—अमृतचन्द्राचार्य । पत्र संख्या—३८ । साइज—१४×८ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १६२७ वैशाख सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६३ ।

विशेष—इसका दूसरा नाम जिन प्रवचन रहस्य कोश भी है । प्रति संस्कृत टीका सहित है तथा टीका का नाम त्रिपाठी है । संस्कृत पद्यों पर टीका लिखी हुई है ।

२०४. पुरुषार्थसिद्धयुपाय—पंडित टोडरमलजी । पत्र संख्या—१११ । साइज—११×७ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । रचना काल—सं० १८२७ । लेखन काल—सं० १८३८ भाद्रपद सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३६६ ।

विशेष—ग्रंथ की २ प्रतियां और हैं लेकिन वे दोनों ही अपूर्ण हैं ।

२०५. ब्रह्मविलास—भगवतीदास । पत्र संख्या—११६ । साइज—१० $\frac{1}{2}$ ×७ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । रचना काल—१७५५ । लेखन काल—१८८६ । अपूर्ण । वेष्टन नं० ७२६ ।

विशेष—भैया भगवतीदास की रचनाओं का संग्रह है । विलास की एक प्रति और है वह अपूर्ण है ।

२०६. बाईस परीषद् वर्णन—पत्र संख्या—६ । साइज—१० $\frac{1}{2}$ ×६ $\frac{1}{2}$ इंच । रचनाकाल—X । लेखन काल—सं० १८६४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६६० ।

विशेष—ग्रंथ गुटका साइज है ।

२०७. भक्त्यती आरधना काव्य—सदासुख कासलीवाल । पत्र संख्या—५३४ । साइज—११×७ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—आचार शास्त्र । रचना काल—सं० १६०८ मादवा सुदी २ । लेखन काल—सं० १६०८ माघ सुदी २ । पूर्ण । बेष्टन नं० ३६७ ।

२०८. मालामहोत्सव—विनोदीलाल । पत्र संख्या—३ । साइज—११×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८६८ चैत्र सुदी १० । पूर्ण । बेष्टन नं० ५५६ ।

२०९. मूलाचार प्रदीपिका—भट्टारक सकलकीर्ति । पत्र संख्या—६१ । साइज—११ $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८०० ई । पूर्ण । बेष्टन नं० ३८ ।

विशेष—ग्रंथ में बारह अधिकार हैं । सालिगराम गोधा ने स्वपठनार्थ जयपुर में ग्रन्थ की प्रतिलिपि की थी ।

२१०. प्रति नं० २—पत्र संख्या—१३७ । साइज—१२×५ इंच । लेखन काल—सं० १६८१ पौष सुदी २ ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

स्वस्ति सं० १५=१ वर्षे पोषमासे द्वितीयायां तिथौ सोमवासरे अर्धेह बाजापुर वास्तव्ये भेदपाट हातीय व्योति श्री बलिराज सुत लीलाधर केन पुस्तिकां लिखितां । श्री मूलसंघे ब्रह्म श्री राजपाल तत् शिष्य न० कर्मश्री पठनार्थ ।

२११. मूलाचार भाषा टीका—ऋषभदास । पत्र संख्या—२२७ । साइज—१६×७ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—आचार शास्त्र । रचना काल—सं० १८८८ कार्तिक सुदी ७ । लेखन काल—X । पूर्ण । बेष्टन नं० ७८२ ।

विशेष—बड़ेकर स्वामी की मूल पर आधारित वसुनंदि की आचारवृत्ति ग्रंथ की टीका के अनुसार भाषा हुई है ।

प्रारम्भ—बंदी श्री जिन सिद्धपद आचारिज उक्ताय ।

साधु धर्म जिन भारती, जिन गृह चैत्य सहाय ॥१॥

बड़ेकर स्वामी प्रणमि, नमः वसुनंदि सुरि ।

मूलाचार विचार के माखी लखि गुण भूरि ॥२॥

अन्तिम पाठ—वसुनंदि सिद्धान्त चक्रवर्त्ति करि रची टीका है सो चिरकाल पर्यन्त पृथ्वी विषे तिष्ठहु । कैसी है टीका सर्व अर्थनि की है सिद्धि जाती । बहुरि कैसी है समस्त गुणनि की निधि । बहुरि प्रदण करि है नीति जानै ऐसी ओ आचारज कहिये मुनिनि का आचरण ताके सत्तम भावनि की है अनुवृत्ति कहिये प्रवृत्ति जाती । बहुरि विख्यात है अठारह दोष रक्ति प्रवृत्ति जाफी ऐसा जो जिनपति कहिये जिनेश्वर देव ताके निर्दोष बचनि करि प्रसिद्ध । बहुरि पाप रूप मल की दूर करण हारी । बहुरि सुन्दर ।

२१२. मोक्ष पैखी—बनारसीदास । पत्र संख्या—३ । साइज—१० $\frac{1}{2}$ ×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । बेष्टन नं० ५६४ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

२१३. मोक्षमार्ग प्रकाश—पं० टोडरमल । पत्र संख्या—१६० । साइज—१२ $\frac{३}{४}$ ×६ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—हिन्दी (कूँटारी) । विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० २ ।

विशेष—प्रति संशोधित की हुई है ।

२१४. प्रति नं० २—पत्र संख्या—२२७ । साइज—१०×१२ $\frac{३}{४}$ इंच । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ७११ ।

विशेष—यह प्रति स्वयं पं० टोडरमलजी के हाथ की लिखी हुई है । इसके अतिरिक्त ग्रंथ की २ प्रति और है लेकिन वे भी अपूर्ण हैं ।

२१५. मोक्षसुख वर्णन—पत्र संख्या—१३ । साइज—११×१ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ८७० ।

२१६. यत्याचार—वसुनंदि । पत्र संख्या—६७ से २०७ । साइज—१५×६ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८६१ चैत्र सुदी ६ । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६८६ ।

विशेष—अमरचन्द्र दीवान के पठनार्थ ग्रंथ की प्रतिलिपि की गयी थी ।

२१७. रत्नकरंडभावकाचार—आ० समंतभद्र । पत्र संख्या—१० । साइज—८ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १६०० भाद्रपद सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७१ ।

विशेष—जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी । भावकाचार की ३ प्रतियाँ और हैं ।

२१८. रत्नकरंडभावकाचार टीका—प्रभाचन्द्र । पत्र संख्या—५२ । साइज—१२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ७४० ।

विशेष—प्रारम्भ के २५ पत्र फिर से लिखवाये हुये हैं । टीका की एक प्रति और है ।

२१९. रत्नकरंडभावकाचार—सदासुख कासलीवाल । पत्र संख्या—४७६ । साइज—१२ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—हिन्दी । रचना काल—सं० १६२० चैत्र सुदी १४ । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ७७६ ।

विशेष—प्रति उत्तम है । ग्रंथ की २ प्रतियाँ और हैं । दोनों ही अपूर्ण हैं ।

२२०. अतोद्योतन भावकाचार—अभ्रदेव । पत्र संख्या—१७ । साइज—१२×५ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८३५ आषाढ सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ८६४ ।

२२१. बृहद् प्रतिक्रमण—पत्र संख्या—३७ । साइज—११ $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा—आकृत । विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १७४२ आश्विन सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन नं० १४७ ।

विशेष—पुनिभुवनभूषण ने बाली में प्रतिलिपि की थी ।

२२२. श्रद्धान निर्णय—पत्र संख्या-२८ । साइज-११×५ इंच । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-धर्म । रचना काल-५ । लेखन काल-५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३८४ ।

विशेष—स्नानाबाई ओसवाल कोठारी के पठनार्थ तेरह पंथियों के मंदिर में प्रतिलिपि की गई । धार्मिक चर्चाओं का संग्रह है । ग्रंथ की एक प्रति और है ।

२२३. आवकक्रियावर्णन—पत्र संख्या-१६ । साइज-११×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-५ । लेखन काल-५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ५५० ।

२२४. आवक-दिनकृत्य वर्णन—पत्र संख्या-३-८ । साइज-१० $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । रचना काल-५ । लेखन काल-५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४३२ ।

विशेष—प्रति दिन करने योग्य कार्यों पर प्रकाश डाला गया है ।

२२५. आवकधर्म वचनिका—पत्र संख्या-१ । साइज-७ $\frac{1}{2}$ ×३ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-५ । लेखन काल-५ । अपूर्ण । वेष्टन नं० ४८४ ।

विशेष—स्वामी कार्तिकेयानुप्रेता में से आवक धर्म का वर्णन है ।

२२६. आवक प्रतिक्रमण सूत्र (छाया युक्त)—पत्र संख्या-२ से ३३ । साइज-६ $\frac{1}{2}$ ×४ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । रचना काल-५ । लेखन काल-५ । अपूर्ण । वेष्टन नं० ४८२ ।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है संस्कृत में भी अर्थ दिया हुआ है ।

२२७. आवकाचार—स्वामी पूज्यपाद । पत्र संख्या-५ । साइज-११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-५ । लेखन काल-५ । पूर्ण । वेष्टन नं० १७१ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२२८. आवकाचार—वसुनन्दि । पत्र संख्या-३५ । साइज-११×५ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-५ । लेखन काल-सं० १६३० । चैत्र सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन नं० १७३ ।

विशेष—ग्रंथ की प्रतिलिपि भोजमाबाद (जयपुर) में हुई थी । ग्रंथ की एक प्रति और है वह अपूर्ण है ।

२२९. आवकाचार—पद्मानन्दि । पत्र संख्या-६६ । साइज-११×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-५ । लेखन काल-५ । पूर्ण । वेष्टन नं० १७२ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२३०. आवकाचार—पत्र संख्या-२७ । साइज-११ $\frac{1}{2}$ ×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार शास्त्र ।

रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १७५ ।

विशेष—ग्रंथ पर निम्न शब्द लिखे हुये हैं जो शायद बाद के हैं—ये आवकाचार उमास्वामि का बनाया हुआ नहीं है कोई जैन धर्म का द्रोही का बनाया हुआ है । भ्रष्टा होणा साधत है ।

२३१. आवकाचार—पत्र संख्या-११ । साइज-१० $\frac{1}{2}$ ×५ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १५३६ । पूर्ण । वेष्टन नं० १७४ ।

२३२. आवकाचार—अभिसंगति । पत्र संख्या-३० । साइज-११×५ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १६१८ । पूर्ण । वेष्टन नं० १७१ ।

२३३. आवकाचार—गुणभूषणाचार्य । पत्र संख्या-१२ । साइज-११×५ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १७४७ बैशाख बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन नं० १७० ।

२३४. षोडशकारण भावना वर्णन—पत्र संख्या-८० । साइज-२१×८ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० २७८ ।

विशेष—दशलक्षण धर्म का भी वर्णन है ।

२३५. सम्मेदशिल्लरमहात्म्य—दीक्षित देवदत्त । पत्र संख्या-७८ । साइज-८×५ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । रचना काल-सं० १७८५ । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३०२ ।

२३६. सम्मेदशिल्लरमहात्म्य—मनसुखसागर । पत्र संख्या-१६५ । साइज-११×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ५७८ ।

विशेष—लोहाचार्य विरचित 'तीर्थ महात्म्य' में से सम्मेदाचल महात्म्य की भाषा है । महात्म्य की एक प्रति और है जो अपूर्ण है ।

२३७. सम्यक्त्व पञ्चोत्तरी—भगवत्तोदास । पत्र संख्या-३ । साइज-८ $\frac{1}{2}$ ×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ६६५ ।

२३८. सम्यग्प्रकाश—डालूराम । पत्र संख्या-१ । साइज-११×८ इंच । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-धर्म । रचना काल-सं० १८७१ चैत्र सुदी १५ । लेखन काल-सं० ... बैशाख बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ८४४ ।

२३९. संबोधपंचासिका—रङ्गधू । पत्र संख्या-३ । साइज-११×६ इंच । भाषा-अपभ्रंश । विषय-धर्म । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १० ।

विशेष—गाथाओं की संख्या ४३ है । अन्तिम गाथा निम्न प्रकार है—

सावण मासम्भिकया, गाहा वंशेष विरहय सुगह ।

कहियं समुच्चयत्वं, पदविज्जन्तं च सुहोर्ह ॥४१॥

२४०. संबोधयंचासिका—द्यानतराय । पत्र संख्या—४ । साइज— $2 \times 6\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । बेष्टन नं० ६१५ ।

२४१. संबोध सत्तरी सार..... । पत्र संख्या—५ । साइज— $10\frac{1}{2} \times 8$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । रचनाकाल—X । लेखन काल—सं० १६३८ । पूर्ण । बेष्टन नं० २०६४ ।

विशेष—पत्र ४-५ में सम्यक्त्व कल वर्णित है । भाषा पुरानी हिन्दी है ।

सत्तरी में ७० पद्य हैं । अन्तिम पद निम्न प्रकार है—

जे नराः ध्यानज्ञानं च स्थिरचित्तोऽर्ष्यग्राहकाः ।

सीयते अष्टकर्माणि सारसंबोधसत्तरी ॥७०॥

२४२. सागारधर्मासृत—पं० आशाधर । पत्र संख्या—५१ । साइज— 11×2 इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याचार शास्त्र । रचना काल—सं० १२६६ पौष शुदी ७ । लेखन काल—सं० १६२५ कार्तिक सुदी ८ । पूर्ण । बेष्टन नं० १८० ।

२४३. सामायिक महात्म्य— पत्र संख्या—२ । साइज— $7\frac{1}{2} \times 2$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । बेष्टन नं० ६६५ ।

२४४. सारसमुच्चय—कुलभट्ट । पत्र संख्या—१६ । साइज— 10×8 इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १४४५ कार्तिक शुदी ४ । पूर्ण । बेष्टन नं० १०६ ।

विशेष—संधी श्री ब्वाजू अमवाल ने ग्रंथ लिखवाया था । तमा श्री मैरोबक्स ने प्रतिलिपि की थी ।

सारसमुच्चय का दूसरा नाम ग्रंथसार समुच्चय भी है । इसमें ३३० श्लोक हैं ।

प्रारम्भ—

देवदेवं जिनं नत्वा भवोदभवविनाशनं ।

वक्ष्येहं देशनां काचित् मतिहीनोऽपि भविततः ॥१॥

संसारे पर्यटन् जंतुर्बहुयोनि-समाकुलो ।

शरीरं मानसं दुःखं प्राप्नोतीति वारुणं ॥२॥

अन्तिम पाठ—

अयं तु कुलमद्रेण भवविच्छिन्ति-कारणं ।

दृष्टो बालस्वभावेन भयः सारसमुच्चयः ॥३२६॥

ये भक्त्या भावयिष्यन्ति, भवकारणनाशनं ।

अचिरेणैवकालेन, सुखं प्राप्स्यन्ति शाश्वतं ॥३२७॥

सारसमुच्चयमेतच्च पठेति समाहिताः ।

ते स्वल्पेनैव कालेन पदं यास्यंति नामयं ॥३२८॥

नमः परमसभ्यान् विघ्ननाशनहेतवे ।

महाकल्याणसंपत्ति कारिणोरिष्टनेमये ॥३२९॥

इति सारसमुच्चयाख्यो ग्रंथः समाप्तः ।

२४५. सारसमुच्चय—दौलतराम । पत्र संख्या—१८ । साइज—६ $\frac{३}{४}$ ×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० १००२ ।

विशेष—सारसमुच्चय के अतिरिक्त पूजाओं का संग्रह है । सार समुच्चय में १०४ पद्य हैं । अन्तिम पद्य निम्न प्रकार है—

सार समुच्चये रह कछो गुरु आशा परवान ।

आनंद सुत दौलति नैं सजि करि श्री मगवान ॥१०४॥

२४६. सुगुरु शतक—जिनदास गोधा । पत्र संख्या—७ । साइज—१×३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । रचनाकाल—सं० १८०० । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ५०२ ।

विशेष—१०१ पद्य हैं ।

विषय—अध्यात्म एवं योग शास्त्र

२४७. अध्यात्मकमल मार्चण्ड—राजमल्ल । पत्र संख्या—१२ । साइज—१० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १६३२ फाल्गुण सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन नं० २३ ।

विशेष—सं० १६८२ में नंदकीर्ति ने अर्गलपुर (आगरा) में प्रतिस्तिपि की थी । ग्रंथ ४ अध्यायों में पूर्ण होता है ।

२४८. अध्यात्म बारहखंडी—दौलतराम । पत्र संख्या—६७ । साइज—६ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—अध्यात्म । रचना काल—सं० १८६८ । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ३८७ ।

२४६. अष्टपाहुड—कुन्दकुन्दाचार्य । पत्र संख्या—६ से ५७ । साइज—१० $\frac{1}{2}$ ×५ इंच । भाषा—प्राकृत ।
विषय—अध्यात्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६३ ।

विशेष—ग्रंथ की ५ प्रतियाँ और हैं लेकिन वे दोनों ही अपूर्ण हैं ।

२४७. अष्टपाहुड भाषा—जयचन्द्र लखड़ । पत्र संख्या—८१ से १२३ । साइज—११×८ इंच । भाषा—
हिन्दी । विषय—अध्यात्म । रचना काल—सं० १=६७ । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ८१० ।

विशेष—ग्रंथ की एक प्रति और है लेकिन वह भी अपूर्ण है ।

२४८. आत्मसंजीवन काव्य—रङ्गू । पत्र संख्या—२८ । साइज—११×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—अपभ्रंश ।
विषय—अध्यात्म । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १५१६ ईस्वी आश्विन बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० २४ ।

विशेष—अलवर नगर में प्रतिलिपि हुई थी ।

२४९. आत्मानुशासन—आचार्य गुणभद्र । पत्र संख्या—२३ । साइज—१०×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—उत्तर ।
विषय—अध्यात्म । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १७७० भाद्रपद सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३४ ।

विशेष—साहू ईसर अजमेरा में खुन्दी नगर में प्रतिलिपि की थी । ग्रंथ की २ प्रतियाँ और हैं ।

२५०. आत्मानुशासन टीका—टीकाकार पं० प्रभाचन्द्र । पत्र संख्या—७१ । साइज—१०×४ $\frac{1}{2}$ इंच ।
भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । रचनाकाल—X । लेखन काल—सं० १५८१ चैत्र बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३३ ।

विशेष—पत्र ३८ तक फिर से प्रतिलिपि की हुई है, नवीन पत्र हैं । प्रशस्ति निम्न प्रकार है:—

सं० १५८१ वर्षे चैत्र बुदी ६ गुरुआसरे घटपालीनाम नगरे राउ श्री रामचन्द्रराज्यप्रवर्तमाने श्री मूलसंघे नद्या-
म्नाये वलात्कारगणे मरस्वती मन्त्रे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनंदि देवा तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्र देवा तत्पट्टे
भ० श्री भिमचन्द्र देवा तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्र देवा तदाभ्याये संवेलवालाभ्याये साहू गोत्रे चतुर्विधदानवितरण कल्पवृक्ष
साहू काविल तदभार्या कावलदे तयोः पुत्राः त्रयः प्रथम साहू गृजर, द्वितीय सा० राधै जिनचरणकमलचंचरीकान् दान पुत्रा
समुद्यतात् परोपकारनिरतान् प्रस्वस्थ चिन्त्यान् सम्यक्त्वं प्रतिपालकात् श्री सर्वज्ञोक्त धर्मरेजितर्जुतसान कुटुम्ब साधारकान्
रत्नव्यालंकृत दिव्य देहान् महाराभयशास्त्रदानसमुन्नितान् त्रयो साहू बच्छराज तदभार्या पतिव्रता पत्नी तरयाः पुत्र परम
श्रावक साहू पचाश्शु तदभार्या प्रतापदे तत्पुत्र साहू दूखह एतेषां मध्ये सा० बच्छराज इदं शास्त्रं लिखयितुं सत्पात्राथ मुनि श्री
भामनन्दिने दत्तं कर्मतयार्थं । भोरवंश सेठ श्री खेऊ तस्य पुत्र पदारथ लिखितं ।

२५४. आत्मानुशासन भाषा—पं० टोडरमल । पत्र संख्या—५६ । साइज—१०×७ इंच । भाषा—
हिन्दी गद्य । विषय—अध्यात्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ७१० ।

विशेष—प्रति स्वयं पं० टोडरमलजी के हाथ भी लिखी हुई है । इस प्रति के अतिरिक्त = प्रतियाँ और हैं ।

उनमें से तान प्रतिया अपूर्ण हैं ।

२५५. आत्मावलोकन—दीपचन्द्र कासलीवाल । पत्र संख्या—६४ । साइज—११×१२ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । रचना काल—सं० १७७७ । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ७६१ ।

२५६. आराधनासार—देवसेन । पत्र संख्या—१६ । साइज—१० $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—अध्यात्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३५ ।

विशेष—संस्कृत में संक्षिप्त टिप्पण दी हुई है । दो प्रतियाँ और हैं ।

२५७. चार ध्यान का वर्णन । पत्र संख्या—२३ । साइज—६×६ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—योग । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ५३७ ।

२५८. चौरासी आसन भेद । पत्र संख्या—११ । साइज—८×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—योग । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १७८८ । पूर्ण । वेष्टन नं० १३३ ।

विशेष—पं० लूणकरण के शिष्य पं० खीबसी ने प्रतिलिपि की ।

२५९. ज्ञानार्णव—आचार्य शुभचन्द्र । पत्र संख्या—१२८ । साइज—१० $\frac{1}{2}$ ×१२ । भाषा—संस्कृत । विषय—योग शास्त्र । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८१६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३० ।

विशेष—पं० श्री कृष्णदास ने प्रतिलिपि कराई थी । अंश की २ प्रतियाँ और हैं ।

२६०. ज्ञानार्णव भाषा—जयचन्द्र झावडा । पत्र संख्या—३६६ । साइज—१० $\frac{1}{2}$ ×१२ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—योग । रचना काल—सं० १८६६ । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४०० ।

२६१. ज्ञानार्णव भाषा । पत्र संख्या—१६ । साइज—१३×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—योग । रचना काल—X । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ५१३ ।

विशेष—प्रायागम प्रकरण का ही वर्णन है ।

२६२. द्वादशानुप्रेक्षा । पत्र संख्या—४४ । साइज—११×१२ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—अध्यात्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ८२८ ।

विशेष—प्राकृत भाषा में गाथा दी हुई है और फिर उन पर हिन्दी मध्य में अर्थ लिखा हुआ है ।

२६३. द्वादशानुप्रेक्षा । पत्र संख्या—१ से ५ । साइज—१२×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—अध्यात्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३३३ ।

२६४. द्वादशानुप्रेक्षा । पत्र संख्या—६ । साइज—११×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ६११ ।

२६५. परमात्मप्रकाश—योगीन्द्र देव । पत्र संख्या—२५१ । साइज—१० $\frac{३}{४}$ ×८ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—अध्यात्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । बेष्टन नं० ७६६ ।

विशेष—ब्रह्मदेव कृत संस्कृत टीका तथा दीलतराम कृत भाषा टीका सहित है ।

योगीन्द्रदेव कृत श्लोक संख्या—३४३, ब्रह्मदेव कृत संस्कृत टीका श्लोक संख्या ४१००, तथा दीलतराम कृत भाषा श्लोक संख्या ६८६० प्रमाण है । दो प्रतियों का मिश्रण है । अंतिम पन्नों वाली प्रति में कई जगह अक्षर काटे गये हैं ।

२६६. प्रति नं० २—पत्र संख्या—२४० । साइज—११×१ इंच । लेखन काल—X । पूर्ण । बेष्टन नं० ७६६

२६७. प्रति नं० ३—पत्र संख्या—२१४ । साइज—१० $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । लेखन काल—सं० १८६२ । पूर्ण । बेष्टन नं० ७६७ ।

२६७. प्रति नं० ४—पत्र संख्या—१७६ । साइज—११ $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—अपभ्रंश । लेखन काल—X । पूर्ण । बेष्टन नं० २०३ ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । टीका उत्तम है । टीकाकार का नामोलेख नहीं मिलता है । इन प्रतियों के अतिरिक्त ग्रंथ की ४ प्रतियाँ और हैं ।

२६८. परमात्मपुराण—दीपचन्द्र । पत्र संख्या—१ से ३६ । साइज—१०×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । अपूर्ण । बेष्टन नं० ७६८ ।

विशेष—ग्रंथ का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

आरम्भ—अथ परमात्म पुराण लिख्यते ।

दीर्घा—परम अखंडित ज्ञानमय गुण अनंत के घाम ।

अविनाशी आनंद अग लखत लहै निज डाम ॥१॥

गद्य—अचल अतुल अनंत महिम संबित अखंडित वैलोक्य शिखर परि विराजित अनोपम अवाधित शिव दीप है । तामें आत्म प्रदेश असंख्य देस है । सो एक एक देस अनंत गुण पुरुषन करि व्यापत है । जिन गुण पुरुषन के गुण परणति नारी है । तिस शिवदीप को परमात्म राजा है । तैसे चेतना परिणति राणी है । दरसन ज्ञान चरित्र ए तीन मंत्री हैं । सम्यक्त्व फौजदार है । सब देसका परणाम कोटवाल है । गुण सत्ता मन्दिर गुण पुरुषन के है । परमात्म राजा का परमात्म सत्ता महल बस्यो तहां चेतना परणति कामिनी सो केशि करते अतैंदिय अवाधित आनंद उपजै है ।

अन्त में (पृष्ठ ३६)—“परमात्म राजा एक है परणति शक्ति भाविकाण में प्रगट और और होने की है परिवर्तन बन काल में व्यक्त रूप परणति एक है सो ही वस राजा को स्मार्ते है । जो परणति वतमान की को राजा भोगवे है सो परणति समय मात्र आत्मीक अनंत सुख दे करि विलय जाय है । परमात्मा में लीन होय है ।

२६६. प्रवचनसार—कुन्दकुन्दाचार्य । पत्र संख्या—८ से ४४ । साइज—१६×७ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—
प्राकृत । विषय—अध्यात्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६८८ ।

२७०. प्रवचनसार भाषा—हेमराज । पत्र संख्या—३५ । साइज—१० $\frac{३}{४}$ ×२ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—हिन्दी
(पद्य) । विषय—अध्यात्म । रचना काल—सं० १७०६ । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ७१८ ।

विशेष—पद्य संख्या ४३८ है ।

२७१. प्रति नं० २—पत्र संख्या—११० । साइज—१२×८ इंच । रचना काल—सं० १७०६ माघ सुदी ५ ।
लेखन काल—सं० १७११ आसोज सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७२७ ।

विशेष—श्री नन्दलाल अमवाल ने प्रतिलिपि कराई थी ।

सं० १७११ वर्षे आश्विनि मासे शुक्ल पक्षे गुरुवासरे श्री अकबरवाद मध्ये पातशाह श्री शाहे जहान विजय
राज्ये श्वेताम्बर कासीदासेन अमवाल ह्यतीय साह श्री नन्दलाल पठनार्थ । सं० १७६२ साह लाजुराम नज के पठनार्थ
खरीदी थी ।

मंथ की ४ प्रतियाँ और हैं ।

२७२. प्रवचनसार भाषा—वृन्दावन । पत्र संख्या—१५३ । साइज—१३×७ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—हिन्दी
(पद्य) । विषय—अध्यात्म । रचना काल—सं० १६०५ वैशाख सुदी ३ । लेखन काल—सं० १६२७ । पूर्ण । वेष्टन
नं० ७२६ ।

विशेष—हीरालाल मंगवाल ने लखनऊ नगर में प्रतिलिपि कराई थी ।

२७३. मृत्युमहोत्सव भाषा—दुलीचन्द । पत्र संख्या—१५ । साइज—१२×७ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—अध्यात्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ५३८ ।

२७४. योगसार—योगीन्द्र देव । पत्र संख्या—१३ । साइज—११×५ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—अपभ्रंश ।
विषय—योग । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १६२१ ज्येष्ठ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन नं० ५६४ ।

२७५. प्रति नं० २—पत्र संख्या—१० । साइज—१० $\frac{३}{४}$ ×७ $\frac{१}{२}$ इंच । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ६१

विशेष—गाथाओं पर हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है । गाथा सं० १०८ । ४ प्रतियाँ और हैं ।

२७६. योगसार भाषा—बुधजन । पत्र संख्या—८ । साइज—१०×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
अध्यात्म । रचना काल—सं० १८६५ । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३८२ ।

२७७. योगीराम—माण्डे जिनदास । पत्र संख्या—३ । साइज—१३ $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—अध्यात्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ११२४ ।

२७८. वैराग्य पञ्चीसी—भैया भगवतीदास । पत्र संख्या-४ । साइज-७×१२ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-अध्यात्म । रचना काल-सं० १७५० । लेखन काल-५ । पूर्ण । बेष्टन नं० ५५६ ।

२७९. वैराग्य शतक..... । पत्र संख्या-२१ । साइज-१०×४ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-अध्यात्म । रचना काल-५ । लेखन काल-सं० १८१६ वैशाख सुदी ११ । अपूर्ण । बेष्टन नं० १४४ ।

विशेष—अजपुर में नाथूराम के शिष्य ने प्रतिलिपि की थी । गाथाओं पर हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है । १०३ गाथाएँ हैं ।

प्रारम्भिक गाथा निम्न प्रकार है—

संसारीम असारे याचि सुहं वाहि वेयथापडरे ।

जायंतो इह जीवो यऊयाइ जियदेसियं धम्मं ॥१॥

२८०. षट्पादुह—कुन्दकुन्दाचार्य । पत्र संख्या-६२ । साइज-६३/४×४ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-अध्यात्म । रचना काल-५ । लेखन काल-सं० १७२६ भाद्र शुदी ११ । पूर्ण । बेष्टन नं० ६२ ।

विशेष—साह काशीदास आगरे वाले ने स्वपठनार्थ जर्मपुरा में प्रतिलिपि की । अक्षर सुन्दर एवं मोटे हैं । एक पत्र में ४-४ पंक्तियाँ हैं ।

८१. प्रति नं० २—पत्र संख्या-३४ । साइज-११×१ इंच । लेखन काल-सं० १७४४ । पूर्ण । बेष्टन नं० ८१ ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । प्र'य की २ प्रतियाँ और हैं ।

२८२. समयसार कलशा—अमृतचन्द्राचार्य । पत्र संख्या-४५ । साइज-११३/४×२ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । रचना काल-५ । लेखन काल-सं० १६०२ भाद्र शुदी ३ । पूर्ण । बेष्टन नं० ४३ ।

विशेष—संस्कृत में कहीं २ संकेत दिये हुए हैं । प्र'य की दो प्रतियाँ और हैं ।

२८३. समयसार टीका—अमृतचन्द्राचार्य । पत्र संख्या-६४ । साइज-१२×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । रचना काल-५ । लेखन काल-सं० १७८८ भाद्र शुदी १४ । पूर्ण । बेष्टन नं० ४१ ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

प्रशस्ति—संवत्सरे वसुनागमुनीदुमिते १७८८ सादृषद मासे शुक्ल पक्षे चतुर्दशी तिथौ ईसरदा नगरे राज्ये श्री अजितसिंहजी राज्य प्रवर्तमाने श्री चन्द्रप्रभुचैत्यालये श्रीमूलसंघे बलात्कार गणे सरस्वती गण्डे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्मये अंबावत्याः भट्टारकजित श्रीसुरेन्द्रकीर्तिस्तरपट्टे म० श्रीजित् श्रीजगतकीर्तिं तत्पट्टस्थः स्वर्गाभोर्यसमायुक्तनिजितसागरेणादि पदार्थ स्वपञ्चातरिता-गमादीधे म० शिरोमणि भट्टारक जित श्री १०८ श्रीमद्देवेन्द्रकीर्तिस्तैनेयं समयसारटीका रवशिष्य मनोहर कथानार्थ पठनाय

तत्त्वबोधनी सुगम निजबुद्ध्या पूर्व टीकावलोक्य विहता । बुद्धिभाद्रः बोधनीया प्रमादात् अ। अल्पबुद्ध्या पत्रहीनाधिकं भव भवेत् तत् शोधनीयं पाचनेयं कृता मया किं बहुकथनेन वाचकानां पाठकानां मंगलादलीं समवो भवेत् श्री जिनप्रमथसत्ते ।

२८४. प्रति नं० २—पत्र संख्या-१२७ । साइज-१२×६ इंच । लेखन काल-सं० १८५३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४२ ।

विशेष—संघ ही दीवान श्योजीराम ने अपने पुत्र कुंवर अमरचन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि कराई थी । श्योजीराम दीवान के मन्दिर जयपुर में प्रतिलिपि हुई ।

२८५. प्रति नं० ३—पत्र संख्या-१६ । साइज-१२×७ इंच । लेखन काल-सं० १८६३ आसोज शुदी ४ पूर्ण । वेष्टन नं० ४५ ।

विशेष—संघही दीवान अमरचन्द पठनार्थ पिरगदास महुआ के ने प्रतिलिपि की ।

२८६. प्रति नं० ४—पत्र संख्या-१०० । साइज-१२×५ इंच । लेखन काल-शक सं० १८०० । पूर्ण । वेष्टन नं० ४७ ।

विशेष - सं० ख ख वसुधन्दुमिते वर्षे शाके माघ मासे शुक्ल पक्षे तिथी द्वितीयायां गुरुवारे अनेकवनवापांकृप-तद्वग जिन पैत्यालयादि विराजमाने बहुविख्याते सकलमगराज्य मठं वादीनां शेखरीभूते पाति साह थी सुहम्मदशाह तत् सेवक महाराजाधिराज महाराजा श्रीईश्वरसिंहराज्य प्रवर्तमाने सवाईजीपुरनामनगरे तत्र श्री पार्श्वनाथ चैत्रालये सोनी गोत्रे साह थी प्रागदास जी कारापिते । श्री मूलसंघे नंदाभाये बलात्कार गये सरस्वति गच्छे थी । कुन्दकु दाम्भार्यान्वये मटारकजित श्री १०८ श्री महेन्द्रकीर्तिजी तस्य शासनधारी ब्रह्म श्री अमरचन्दस्तत् शिष्य पं० श्री जयमल्लस्तत् शिष्य पं० मनोहरदास तत् शिष्य पं० श्री लीचमलस्तत् शिष्य पं० श्री हीरानन्दस्तत् शिष्य गुणगरिष्ठ बुद्धिवरिष्ठ सकलतर्क मीमांसा अष्टसहस्री प्रमुखादीगुणानां व्याख्याने निपुण पंडितोत्तम पंडित जितश्रीबीरचन्द्रजीकस्य शिष्य पुस्तकभोग स्वरायेन स्वपठनार्थं ज्ञानावस्थानीकर्मसमर्थ लिपिकृता ।

२८७. प्रति नं० ५—पत्र संख्या-३६ । साइज-१०×४ इंच । लेखन काल-सं० १७२१ पौष सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४८ ।

विशेष—सा० जोधराज ने प्रतिलिपि करवाई थी ।

२८८. समयसार नाटक—बनारसीदास । पत्र संख्या-१०० । साइज-१०×४ इंच । माप-हिन्दी । विषय—अध्यात्म । रचना काल-सं० १६६३ । लेखन काल-सं० १८६७ श्रावण शुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७४८ ।

२८९. प्रति नं० २—पत्र संख्या-१६४ । साइज-८×५ इंच । लेखन काल-सं० १७०० कार्तिक सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७५६ ।

विशेष—श्रीमानुसात्म पठनार्थ लिखित । आमेर में प्रतिलिपि हुई । १४२ पत्र के आगे बनारसीदास कृत अन्य पाठ हैं । (गुटका)

२६०. प्रति नं० ३—पत्र संख्या—७६ । साइज—११ $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$ इंच । लेखन काल—सं० १७०३ सावन सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७६७ ।

विशेष—संवत् १७०३ वर्षे आश्विनसित्तुर्दशीतिथी श्रीमूलसंधे चलाकरगणे सरस्वतीगण्डे कुन्दकुन्दाचार्य न्यये भ० श्री चंद्रकीर्तिजी भ० श्री नरेन्द्रकीर्तिजी तदाम्नाये सेव्या गोये साहू भइस मार्या धर्मा तथा इदं समयसार नाम नाटकं लिख्य आचार्य श्री सकलकीर्तिये प्रदत्त ।

विशेष—समयसार नाटक की भण्डार में १६ प्रतियां थीं हैं ।

२६१. समयसार भाषा—राजमल्ल । पत्र संख्या—२६६ । साइज—११×११ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—अध्यात्म । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १७४३ पौष सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७६४ ।

विशेष—इति श्री समयसार टीका राजमल्ल भाषा सभास्तेयं ।

२६२ प्रति नं० २—पत्र संख्या—२७५ । साइज—११×४ इंच । लेखन काल—सं० १७६८ अषाढ सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७६६ ।

२६३. प्रति नं० ३—पत्र संख्या—२०२ । साइज—१२×६ इंच । लेखन काल—सं० १८२० । पूर्ण । वेष्टन नं० ८१३ ।

विशेष—नैणसागर ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी । पृष्ठों पर बहुत सुन्दर बेल चूटे हैं ।

२६४. समयसार भाषा—जयचन्द्र छाबड़ा । पत्र संख्या—३२० । साइज—१० $\frac{१}{२}$ ×७ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । रचना काल—सं० १८६४ । लेखन काल—सं० १८७६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७२० ।

२६५. समाधितंत्र भाषा—पर्वतधर्मार्थी । पत्र संख्या—५२० । साइज—१२×१ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—गुजराती । विषय—योग । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १७६३ कार्तिक सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७८६ ।

विशेष—६ प्रतियां थीं हैं । ग्रंथ की लिपि देवनागरी है ।

२६६. समाधितंत्र भाषा । पत्र संख्या—१७२ । साइज—११×७ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—योग । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८३३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ८४६ ।

विशेष—चाकमू में लिपि हुई थी ।

२६७. समाधितंत्र भाषा । पत्र संख्या—२० । साइज—११×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—योग । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८३६ फागुण सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७६६ ।

२६८. समाधिमरण । पत्र संख्या—२८ । साइज—८×७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ११३४ ।

२९९. समाधिमरण । पत्र संख्या-१६ । साइज-११×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-अध्यात्म । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ७८७ ।

३००. समाधिमरण भाषा । पत्र संख्या-२० । साइज-१२×४½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-अध्यात्म । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १८३४ आसीज सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७८८ ।

३०१. समाधिमरण भाषा । पत्र संख्या-१६ । साइज-११×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-अध्यात्म । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ८७५ ।

३०२. समाधिशतक—आ० समन्तभद्र । पत्र संख्या-१३ । साइज-१२½×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-योग । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १४६ ।

विशेष—हिन्दी में पद्यों पर अर्थ दिया हुआ है ।

३०३. स्वामीकार्तिकेयानुप्रेक्षा—स्वामीकार्तिकेय । पत्र संख्या-२८७ । साइज-१२×५½ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-अध्यात्म । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४८ ।

विशेष—प्रति म० शुभचन्द्रकृत टीका सहित है । टीका संस्कृत में है । मंथ की ३ प्रतियाँ और हैं ।

३०४. स्वामीकार्तिकेयानुप्रेक्षा भाषा—जयचन्द्र व्यासका । पत्र संख्या-१२० । साइज-११×५ इंच । विषय-अध्यात्म । रचना काल-सं० १८८३ आषाढ सुदी ३ । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४०३ ।

३०५. प्रति नं० २—पत्र संख्या-११६ । साइज-१०×७½ इंच । लेखन काल-सं० १८६३ आषाढ सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४०४ ।

विषय-न्याय एवं दर्शन शास्त्र

३०६. अष्टसहस्री—आचार्य विद्यानन्दि । पत्र संख्या-२६७ । साइज-११½×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय शास्त्र । रचनाकाल-X । लेखन काल-सं० १६२७ चैत्र सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन नं० ११३ ।

विशेष—जयपुर में घासीलाल शर्मा ने प्रतिलिपि की थी ।

३०७. तर्कसंग्रह—अग्रभट्ट । पत्र संख्या-५ । साइज-११×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय शास्त्र । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १८२६ । पूर्ण । वेष्टन नं० १५१ ।

विशेष—संगानेर में पं० नगराज ने प्रतिलिपि की थी । ग्रन्थ की एक प्रति और है ।

३०८. देवागमस्तोत्र—समंतभद्र । पत्र संख्या—११ । साइज—४ $\frac{1}{2}$ ×२ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय शास्त्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० २८७ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

३०९. देवागमस्तोत्र भाषा—जयचन्द्र छात्रडा । पत्र संख्या—८४ । साइज—११×५ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—न्याय शास्त्र । रचना काल—सं० १८६६ चैत्र सुदी १४ । लेखन काल—सं० १९८४ पौष सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६१ ।

३१०. नयचक्र भाषा—हेमराज । पत्र संख्या—१७ । साइज—१० $\frac{3}{4}$ ×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—दर्शन शास्त्र । रचना काल—सं० १७२६ । लेखन काल—सं० १८६३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३८३ ।

३११. न्यायदीपिका—यति धर्म भूषण । पत्र संख्या—३७ । साइज—११×५ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय शास्त्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० २०१ ।

विशेष—ग्रन्थ की एक प्रति और है ।

३१२. न्यायदीपिका भाषा—पन्नालाल । पत्र संख्या—१०३ । साइज—१२×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—न्याय शास्त्र । रचनाकाल—सं० १९३५ मंगसिर सुदी २ । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३६८ ।

विशेष—ग्रन्थ प्रशस्ति का अन्तिम भाग निम्न प्रकार है:—

अन्तिम पाठ—

आर्यं क्षेत्र मधि दूँदाहृदु में जयपुर अद्भुत नगर महा ।
ताके अधिपति नीति लुप्य अति रामसिंह नृप नाम कहा ॥
मंत्री पद में रायबहादुर जीवनसिंह सुनाम लहा ।
ताको गृह मति संची भावह पन्नालाल सु धर्म चहा ॥
आवक धर्मी उत्तम कर्मा, है महीं जिन वचनन के ।
नाम सदासुख नाशित सब दुख दीष मिटावन के ॥
तास निकट जिन भूत निति प्रति सुनत सुनत मन समता पाय ।
न्याय शास्त्र को रहिस ग्रहण हित न्यायदीपिका हमें पदाय ॥
तास वचनिका विशद करन कौं आनंद हृदय पदायो है ।
करी वीनती त्रिभुवन गुरु हैं अर्थ समस्त लखायो है ॥
कतेलाल जित पंडित अर अति धर्म प्रीति को धारक है ।
रामदागम तै तथा न्याय तै अर्थ समर्थन कारक है ॥

तिनके निकट विशद फुनि कीनी, अर्थ विकल्प निवारन की ।
 करी वचनिका स्व पर हित की पढ़ी मव्य ब्रह्म टारन की ॥
 विक्रम नृप के उगथीसै पर तीस पांच सत चीना है ।
 मंगसिर शुक्ला नवमी शशि दिन ग्रन्थ सम्पूरन कीना है ॥

चौपई—श्री जिन सिद्ध सूरि उवभाय सर्व साधु हे भंगलदाय ।
 तिनके चरण कमल उरलाय, नमन करै निति शीश नवाय ॥

३१३. परोक्षामुख—आचार्य माणिक्यनन्दि । पत्र संख्या—७ । साइज—१०×३ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत ।
 विषय—दर्शन । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३४ ।

३१४. परोक्षामुख भाषा—जयचन्द छाबड़ा । पत्र संख्या—११७ । साइज—१० $\frac{1}{2}$ ×७ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—
 हिन्दी । विषय—दर्शन । रचना काल—सं० १६२७ आश्वय सुदी २ । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३४६ ।

३१५. प्रमेयरत्नमाला—अनन्तवीर्य । पत्र संख्या ८५ । साइज—११×८ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
 दर्शन शास्त्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ८ ।

विशेष—माणिक्यनन्दि कृत परोक्षामुख की टीका है ।

३१६. मितिभाषिणीटीका—शिवादित्य । पत्र संख्या—१७ । साइज—१०×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत ।
 विषय—न्याय शास्त्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण वेष्टन नं० १५३ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

प्रारम्भ का दूसरा पत्रः—

बिहेशादीन् नमस्कृत्य साध्वारय सरस्वती ।

शिवादित्यकृतैः टीकां करोति धितभाषिणि ॥२॥

३१७. सप्तपदार्थी—श्रीभावविद्येश्वर । पत्र संख्या—८ । साइज १० $\frac{1}{2}$ ×४ । भाषा—संस्कृत । विषय—
 न्याय । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १६८३ कागुण सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० १८३ ।

विशेष—पं० हर्ष ने स्व पठनार्थ प्रतिलिपि की थी । अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

अन्तिम—यमनियमस्वाध्यायध्यानासमाधिधोरणी मथानमनभासुपताचार्य श्री भावविद्येश्वरविरचिता वाग्विद्या
 विलासविनिववाद्यत्वस्वार्थपराशंचमत्कारन्याश्वयेमना परापरन्यायवैशेषिकमहाशास्त्रसमुद्धरणशीलिन विरचिता सप्तपदार्थी
 समाप्ता ॥

३१८. स्याद्वादमंजरी—मल्लिदेण । पत्र संख्या—३४ । साइज—१३×५ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
 दर्शन शास्त्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३४० ।

३१६. स्याद्वादसंज्ञरी—मल्लिवेण । पत्र संख्या-५६ । साइज-१०×४ $\frac{३}{४}$ । भाषा-संस्कृत । विषय-दर्शन शास्त्र । टीका काल-शक सं० १२१४ । लेखन काल-सं० १७६७ भाद्र सुदी १ । पूर्ण । बेष्टन नं० २७१ ।

विशेष—उदयपुर में प्रतिलिपि हुई । मल्लिवेण उदयप्रमसूरी के शिष्य थे ।

विषय—पूजा एवं प्रतिष्ठादि अन्य विधान

३२०. अकृत्रिम चैत्यालयपूजा—चैनसुख । पत्र संख्या-६४ । साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-सं० १६३० । लेखन काल-सं० १६३१ । पूर्ण । बेष्टन नं० ४७८ ।

विशेष—पूजा की एक प्रति और है ।

३२१. अकृत्रिमचैत्यालयपूजा—पं० जिनदास । पत्र संख्या-३६ । साइज-८ $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा-संस्कृत । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १८२२ । पूर्ण । बेष्टन नं० ८८६ ।

विशेष—लक्ष्मीसागर के शिष्य पं० जिनदास ने रचना की थी ।

३२२. अकृत्रिमचैत्यालयपूजा..... । पत्र संख्या-१२३ । साइज-१२ $\frac{३}{४}$ ×८ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा-हिन्दी । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । बेष्टन नं० ४७२ ।

३२३. अढाईद्वीपपूजा—ढालूराम । पत्र संख्या-१२४ । साइज-१२×८ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-सं० १८५६ । लेखन काल-सं० १८८७ । पूर्ण । बेष्टन नं० ४७३ ।

विशेष—ग्रंथ का मूल्य पंद्रह रुपया साढ़े पांच आना लिखा हुआ है ।

३२४. अढाईद्वीपपूजा..... । पत्र संख्या-३१६ । साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा-संस्कृत । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १८५२ । काष्ठण सुदी ५ । पूर्ण । बेष्टन नं० ३२७ ।

विशेष—ग्रंथ के पृष्ठों पर १२ तीर्थंकरों के चिन्हों के चित्र हैं । चित्र सुन्दर हैं ।

३२५. अढाईद्वीपपूजा—विश्वभूषण । पत्र संख्या-१०६ । साइज-१०×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १६०६ आषाढ सुदी ७ । पूर्ण । बेष्टन नं० ३१५ ।

३२६. अंकुरारोपणविधि—इन्द्रसन्दि । पत्र संख्या-६१ । साइज-११×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । बेष्टन नं० ६८१ ।

३२७. अभिषेकपाठ..... । पत्र संख्या-३१ । साइज-११×१ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विभिन्न विधान । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ८८८ ।

३२८. अष्टाहिकापूजा..... । पत्र संख्या-२५ । साइज १२×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४७२ ।

३२९. अष्टाहिकापूजा—गानतराय । पत्र संख्या-२३ से ३० । साइज-११½×१½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १३० ।

विशेष—१—२२ तक के पत्र नहीं हैं ।

३३०. अष्टाहिकाव्रतोद्यापनपूजा..... । पत्र संख्या-१८ । साइज-११×१ । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३३६ ।

३३१. आदिनाथपूजा—रामचन्द्र । पत्र संख्या-६ । साइज-१०½×१½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १४८ ।

विशेष—प्रारम्भ में हिन्दी में दर्शन पाठ है ।

३३२. आदिनाथपूजा—पत्र संख्या-७ । साइज-७×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ११३३ ।

३३३. इन्द्रध्वजपूजा—भ० विश्वभूषण । पत्र संख्या-२४ । साइज-१०½×१ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ३२५ ।

विशेष—रुचिकगिरि उत्तर दिग्मूर्तियालय की पूजा तक पाठ है ।

३३४. कमलचन्द्रायणव्रतपूजा..... । पत्र संख्या-३ । साइज-१३×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४५६ ।

३३५. कर्मदहनपूजा..... । पत्र संख्या-११ । साइज-६×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०५६ ।

३३६. कर्मदहनपूजा..... । पत्र संख्या-२० । साइज-८½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०७ ।

३३७. कर्मदहनपूजा..... । पत्र संख्या-१२ । साइज-१३×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४७४ ।

३३८. कर्मदहनपूजा—टेकचन्द । पत्र संख्या-२७ । साइज-११×१½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-

पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १६३२ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६० ।

विशेष—इस पूजा की ५ प्रतियाँ और हैं ।

३३६. कर्मदहनपूजा..... । पत्र संख्या—१६ । साइज—१०X५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३५० ।

३४०. कर्मदहनव्रतपूजा..... । पत्र संख्या—११ । साइज—१० $\frac{1}{2}$ X५ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १६३४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६२ ।

विशेष—पूजा मन्त्र सहित है । एक प्रति और है ।

३४१. कर्मदहनव्रतपूजा..... । पत्र संख्या—१० । साइज—१० $\frac{1}{2}$ X५ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १६३५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६१ ।

३४२. गणधरवल्लभपूजा—सकलकीर्ति । पत्र संख्या—६ । साइज—१० $\frac{1}{2}$ X५ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३२४ ।

३४३. गिरनारक्षेत्रपूजा..... । पत्र संख्या—४६ । साइज—१० $\frac{1}{2}$ X= इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १६३८ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६६ ।

विशेष—प्रतिलिपि कराने में तीन रुपये साठे पाँच आने लगे थे ऐसा लिखा हुआ है ।

३४४. चतुर्विंशतिजिनपूजा..... । पत्र संख्या—११३ । साइज—११X५ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—
हिन्दी । विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४४० ।

३४५. चतुर्विंशतिजिनकल्याणकपूजा—जयकीर्ति । पत्र संख्या—४३ । साइज—१०X४ $\frac{1}{2}$ इंच ।
भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १६८४ चैत्र सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३४१ ।

विशेष—सं० १६८४ वर्षे चैत्र सुदी ७ सोमे बहली नगरे श्री आदिनाथचैत्यालये श्रीमत्काष्ठासंघे नंदीतटगच्छे
विद्यामणे महारक श्री रामसेनान्वये तत्पुत्रकर्मण भ० भुवनकीर्ति तत्पुत्रे भ० श्री रत्नमुष्ण, भ० श्री जयकीर्ति, आचार्य श्री
नरेन्द्रकीर्ति, उपाध्याय श्री नेमकीर्ति, ब० श्री कृष्णदास, पूरकमल स्वामी श्री हरिजी ब० बद्धमान, ब० वीरजी, पं० रहीदास लिखित

३४६. चतुर्विंशतिजिनपूजा—वृन्दावन । पत्र संख्या—६६ । साइज—११X= इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १६३६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४१८ ।

विशेष—२ प्रतियाँ और हैं ।

३४७. चतुर्विंशतिजिनपूजा—सेवाराज । पत्र संख्या—६३ । साइज—१० $\frac{1}{2}$ X५ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—पूजा । रचना काल—सं० १८२४ । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ४१६ ।

विशेष—अन्तिमपत्र नहीं है । २ प्रतियाँ और हैं ।

३४८. चतुर्विंशतिजिनपूजा—रामचन्द्र । पत्र संख्या—६६ । साइज—१२×६ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४२० ।

विशेष—तीन प्रतियाँ और हैं ।

३४९. चतुर्विंशतितीर्थकरपूजा..... । पत्र संख्या—४५ । साइज—१० $\frac{१}{२}$ ×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३३८ ।

३५०. चन्दनवल्लीव्रतपूजा..... । पत्र संख्या—४ । साइज—१२×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० २७७ ।

३५१. चतुर्विधसिद्धचक्रपूजा—भानुकीर्ति । पत्र संख्या—२१९ । साइज—७ $\frac{१}{२}$ ×६ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—

संस्कृत । विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १६३० । पूर्ण । वेष्टन नं० ६३२ ।

विशेष—बृहद् पूजा है । मन्थकार तथा लेखक दोनों की प्रशस्ति है ।

भ० भानुकीर्ति ने साधु तिहुणपाल के निमित्त पूजा की रचना की थी । साधु तिहुणपाल ने ही इस पूजा की प्रतिलिपि करवायी थी ।

३५२. आरित्रशुद्धिविधान—भ० शुभचन्द्र । पत्र संख्या—६४ । साइज—११ $\frac{१}{२}$ ×५ । भाषा—संस्कृत ।

विषय—विधि विधान । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० २६२ ।

विशेष—‘१२३४ व्रतों का विधान’ यह भी इस रचना का नाम है ।

३५३. प्रति नं० २ । पत्र संख्या—२ से ३६ । साइज—१० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$ इंच । लेखन काल—सं० १६८४ कार्तिक

शुदी ८ । अपूर्ण । वेष्टन नं० ५९० ।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है । आप्य दिये हुए हैं ।

प्रशस्ति—संवत् १६८४ वर्षे कार्तिक शुदी अष्टमी बृहस्पतिवार लिखित पं० गोपाल कर्मकरायाम् वागी (कृष्ण) सुखिकावर्दे सोना पद्मा इदं दत्तं श्री पार्श्वनाथचैर्यालये दुःखलायापत्तने ।

३५४. चौबीसतीर्थकरजयमाला—पत्र संख्या—८ । साइज—१३×५ । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।

रचना काल—X । लेखन काल—सं० १९५७ वैशाख सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ११४६ ।

३५५. चौसठऋद्धिपूजा—स्वरूपचन्द्र । पत्र संख्या—३३ । साइज—१२×८ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—पूजा । रचना काल—सं० १९१० आषाढ सुदी ७ । लेखन काल—सं० १९६९ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४१२ ।

विशेष—२ प्रतियाँ और हैं ।

३५६. जलगालनकिया—ब्रह्म गुलाल । पत्र संख्या-५ । साइज-८×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-विधान । रचना काल-५ । लेखन काल-सं० १८१६ वैशाख शुदी । पूर्ण । वेष्टन नं० १००६ ।

विशेष—रुडमल सौसा ने गारनील में प्रतिलिपि की थी ।

३५७ जिनसहस्रनामपूजा—धर्मभूषण । पत्र संख्या-६३ । साइज-११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-५ । लेखन काल-५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३२१ ।

३५८. जिनसहस्रनामपूजा भाषा—स्वरूपचन्द बिलास । पत्र संख्या-८२ । साइज-११×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-सं० १८१६ । लेखन काल-५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३८१ ।

३५९. जिनसंहिता—पत्र संख्या-७ । साइज-१०^१/_४×४^३/_४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । रचना काल-५ । लेखन काल-सं० १५६० सावन सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० २६५ ।

विशेष—संवत् १५६० वर्षे श्रावण सुदी ५ श्री मूलसंघे चलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये महारक्ष श्री पद्मनन्दिदेवाः तत्पट्टे भ० शुभचन्द्रदेवाः तत्पट्टे भ० जिनचन्द्रदेवाः तत् शिष्य मुनि श्री रत्नकीर्ति मुनि श्री हेमचन्द्र तदाभाये लंडेलवालान्वये सेठी भोत्रे सा० सारह मार्या पर्दा तत्पुत्र साह जीव्हा मार्या सुहागिणि इदं शास्त्रं सत्पात्राय दत्तं । इति जिन संहितायां विमानहोम शान्तिहोम गृहहोम विधि समाप्तमिति ।

नवीन गृह प्रवेश आदि के अवसर पर होम विधि आदि दो हुई हैं ।

३६०. तीनलोक पूजा—टेकचन्द । पत्र संख्या-४०४ । साइज-१२×११^१/_२ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-५ । लेखन काल-सं० १८२८ सावन सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६८ ।

विशेष—ग्रन्थ का मुख्य २७) लिखा है ।

३६१. तीसचौबीसीपूजा भाषा—बृन्दावन । पत्र संख्या-८५ । साइज-१२^१/_२×८^१/_२ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-सं० १८७६ भाद्र सुदी ५ । लेखन काल-५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४१२ ।

३६२. तीसचौबीसीपूजा भाषा—..... । पत्र संख्या-५ । साइज-१२×८ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-सं० १८०८ । लेखन काल-५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४१० ।

विशेष—लघु पूजा है ।

३६३. तेरहद्वीपपूजा । पत्र संख्या-४२ । साइज-११^१/_२×८ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-५ । लेखन काल-सं० १८३६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४१७ ।

३६४. दशलक्षजयमाल—रङ्गू । पत्र संख्या-८ । साइज-११^१/_२×५ इंच । भाषा-अपभ्रंश । विषय-पूजा । रचना काल-५ । लेखन काल-५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७ ।

विशेष—संस्कृत में धर्म दिया हुआ है । तीन प्रतियाँ और हैं ।

३६५. दशलक्षजयमाला... .. । पत्र संख्या-५ । साइज-१२X५ इंच । भाषा-प्राकृत ।
विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३४५ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

३६६. दशलक्षजयमाला... .. । पत्र संख्या-२ । साइज-११ $\frac{१}{२}$ X५ इंच । भाषा-संस्कृत ।
विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४८१ ।

३६७. दशलक्षपूजा—सुमतिसागर । पत्र संख्या-११ । साइज-१२X५ इंच । भाषा-संस्कृत ।
विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १७१६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३४७ ।

३६८. दशलक्षपूजा... .. । पत्र संख्या-१४ । साइज-११ $\frac{१}{२}$ X६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-
पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४३० ।

विशेष—पूजा में केवल जल चढ़ाने का मंत्र प्रत्येक स्थान पर दिया है । अन्त में ब्रह्मचर्य धर्म वर्णन की जयमाला में आचार्यों का नाम भी दिया गया है ।

३६९. दशलक्षजयतोद्यापन पूजा... .. । पत्र संख्या-३७ । साइज-११X६ इंच । भाषा-हिन्दी ।
विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १४२६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६४८ ।

३७०. द्वादशांगपूजा... .. । पत्र संख्या-६ । साइज-७X६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा ।
रचना काल-X । लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ११४३ ।

३७१. देवगुरुपूजा... .. । पत्र संख्या-३ । साइज-१२X४ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-
पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ११४७ ।

३७२. देवपूजा... .. । पत्र संख्या-७ । साइज-१० $\frac{१}{२}$ X६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा ।
रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४८४ ।

३७३. देवपूजा... .. । पत्र संख्या-२ से १४ । साइज-११X५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-
पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ६५२ ।

३७४. देवपूजा... .. । पत्र संख्या-८ । साइज-१२X५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा ।
रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ८३६ ।

३७५. देवपूजा... .. । पत्र संख्या-५ । साइज-११ $\frac{१}{२}$ X४ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा ।
रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ८८२ ।

३७६. देवपूजा.....। पत्र संख्या-७। साइज-१० $\frac{1}{2}$ ×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-५। लेखन काल-५। पूर्ण। वेष्टन नं० ८८३।

३७७. देवपूजा.....। पत्र संख्या-५। साइज-६×४ $\frac{1}{2}$ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-५। लेखन काल-५। पूर्ण। वेष्टन नं० ८८४।

३७८. धर्मपूजा-गोविंदः। पत्र संख्या-२३। साइज-१० $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{1}{2}$ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-५। लेखन काल-५। पूर्ण। वेष्टन नं० ३२६।

विशेष—पं० सुशालचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी।

३७९. नन्दीश्वरपूजा.....। पत्र संख्या-३। साइज-११×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-५। लेखन काल-५। पूर्ण। वेष्टन नं० १०४२।

विशेष—जयमाला प्राकृत भाषा में है।

३८०. नन्दीश्वर उद्यापन पूजा.....। पत्र संख्या-६। साइज-११ $\frac{1}{2}$ ×७ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-५। लेखन काल-सं० १८३४ अष्टम सुदी ४। पूर्ण। वेष्टन नं० ३४३।

विशेष—पत्रों के चारों ओर सुन्दर बेलें हैं।

३८१. नन्दीश्वरजयमाला टीका.....। पत्र संख्या-१६। साइज-६×४ $\frac{1}{2}$ इंच। भाषा-प्राकृत हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-५। लेखन काल-सं० १८४१ अष्टम सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन नं० १४६।

विशेष—श्री अमीचन्द्र ने जीवनेर के मन्दिर में प्रतिलिपि की थी।

३८२. नन्दीश्वरविधान.....। पत्र संख्या-२३। साइज-१०×७ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-५। लेखन काल-सं० १९०६ अष्टम सुदी १५। पूर्ण। वेष्टन नं० ६०४।

विशेष—विजैलाल लुहाडिया ने प्रतिलिपि कर बभीचन्दजी के मन्दिर चढ़ाई थी।

३८३. नन्दीश्वरव्रतविधान.....। पत्र संख्या-५०। साइज-११ $\frac{1}{2}$ ×१२ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-५। लेखन काल-सं० १९२६। पूर्ण। वेष्टन नं० ५००।

विशेष—पूजा का नाम पञ्चमेरु पूजा भी है।

३८४. नवमहनिवारणजिनपूजा.....। पत्र संख्या-७। साइज-७ $\frac{1}{2}$ ×७ $\frac{1}{2}$ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-५। लेखन काल-५। पूर्ण। वेष्टन नं० ८६७।

३८५. नांदीमंगलविधान.....। पत्र संख्या-२। साइज-११×६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-विभिन्न विधान। रचना काल-५। लेखन काल-५। पूर्ण। वेष्टन नं० १०६६।

३८६. नित्यपूजासंग्रह । पत्र संख्या-११८ । साइज-११ $\frac{१}{२}$ ×५ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-५ । लेखन काल-५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६२१ ।

विशेष—नित्य प्रतिदिन पूजाओं का संग्रह है ।

३८७. नित्यपूजा । पत्र संख्या-४१ । साइज-१०×१ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-५ । लेखन काल-सं० १८७४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७०६ ।

३८८. नित्यपूजा । पत्र संख्या-३७ । साइज-१० $\frac{१}{२}$ ×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-५ । लेखन काल-सं० १८७४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७०७ ।

विशेष—प्रतिदिन की जाने वाली पूजाओं का संग्रह है ।

३८९. नित्यपूजा । पत्र संख्या-२१ । साइज-१३×५ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । रचना काल-५ । लेखन काल-५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ५३५ ।

३९०. नित्यपूजापाठ । पत्र संख्या-३० । साइज-६ $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-५ । लेखन काल-सं० १९१६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ५७० ।

३९१. नित्यपूजासंग्रह । पत्र संख्या-३३ । साइज-११ $\frac{१}{२}$ ×५ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-५ । लेखन काल-५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४५९ ।

३९२. निर्वाणपूजा । पत्र संख्या-२ । साइज-८×७ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-५ । लेखन काल-५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ११२८ ।

३९३. निर्वाणक्षेत्रपूजा । पत्र संख्या-२२ । साइज-१२ $\frac{१}{२}$ ×८ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-५ । लेखन काल-५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४४५ ।

३९४. निर्वाणक्षेत्रपूजा-स्वरूपचन्द्र । पत्र संख्या-३३ । साइज-१२ $\frac{१}{२}$ ×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-सं० १९१६ कार्तिक शुद्ध १३ । लेखन काल-५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ८४६ ।

विशेष—२ प्रतियाँ थीर हैं ।

३९५. पद्मावतीपूजा । पत्र संख्या-८ । साइज-१०×३ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-५ । लेखन काल-५ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०५० ।

३९६. पंचकल्याणकपूजा—पं० जिनदास । पत्र संख्या-५३ । साइज-१२×५ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-सं० १९४२ फागुण सुदी ५ । लेखन काल-५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३४० ।

३९७. पंचकल्याणकपूजा—सुधासागर । पत्र संख्या-२६ । साइज-११×५ इंच । भाषा-संस्कृत ।

विषय-पूजा । रचना काल-५ । लेखन काल-५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३४२ ।

३६८. पंचकल्याणकपूजा—पत्र संख्या-३६ । साइज-११×५ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-सं० १६३८ । लेखन काल-५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६७ ।

३६९. पंचकुमारपूजा—जवाहरलाल । पत्र संख्या-३ । साइज-१० $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-५ । लेखन काल-५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६४ ।

४००. पंचपरमेष्ठीपूजा—यशोनन्दि । पत्र संख्या ११४ । साइज-६×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-५ । लेखन काल-५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३५१ ।

विशेष—तीन प्रतियाँ थीर हैं ।

४०१. पंचपरमेष्ठीपूजा—डालूराम । पत्र संख्या-३५ । साइज-१०×५ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-सं० १८६० । लेखन काल-५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४५३ ।

विशेष—महात्मा सदाशुखजी ने माधोराजपुरा में प्रतिलिपि की थी । पूजा की ६ प्रतियाँ थीर हैं ।

४०२. पंचमंगलपूजा—टेकचन्द । पत्र संख्या-२१ । साइज-११×५ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-५ । लेखन काल-सं० १६३४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४५८ ।

४०३. पंचमेरूपूजा—टेकचन्द । पत्र संख्या-४३ । साइज-११×५ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-सं० १६१० । लेखन काल-५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४७७ ।

४०४. पंचमेरूपूजा—भूधरदास । पत्र संख्या-४ । साइज-११×५ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-५ । लेखन काल-५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६६६ ।

विशेष—धानतराय कृत यष्टाष्टिका पूजा भी है ।

४०५. प्रतिष्ठासार संग्रह—वसुनन्दि । पत्र संख्या-१३५ । साइज-११×५ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । रचना काल-५ । लेखन काल-५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३१६ ।

विशेष—हिन्दी अर्घ्य सहित है । अर्घ्य का प्रारम्भिक भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ —विद्यातुवादसन्सूत्राद्वाग्देवीकल्पतस्तथा ।

चन्द्रप्रसप्तिसंज्ञाच्च सूर्यप्रसप्तिसंज्ञतः ॥४॥

तथा महापुराणार्थो ह्यायकाव्ययनश्रुतान् ।

सारं संगृह्य ऋग्येहं प्रतिष्ठासारं संग्रहे ॥५॥

हं वसुनन्दि नामा आचार्य हं सो प्रतिष्ठासार संग्रह नामा जो अर्घ्य ताहि कहूँगो—कहा करियै सिद्ध अरिहंत

शेख जो चङ्कमान पर्यन्त जिन प्रवचन कहता शास्त्र गुरु कहता सर्व साधु यार्ते नमस्कार करि कै कैसे छद्म वे सिद्ध, सिद्ध भयो है आत्म स्वरूप जिनके.....।

४०६. पत्न्यविधानपूजा—रत्ननंदि । पत्र संख्या-६ । साइज-१२×६½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-५ । लेखन काल-५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४३१ ।

विशेष—पूजा की एक प्रति और है ।

४०७. पार्ष्वनाथ पूजा..... । पत्र संख्या-३ । साइज-१२×५½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-५ । लेखन काल-५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ११४१ ।

४०८. पुष्पांजलिप्रतोद्यापन..... । पत्र संख्या-११ । साइज-६×६½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-५ । लेखन काल-५ । पूर्ण । वेष्टन नं० १४२ ।

विशेष—बृहत् पूजा है ।

४०९. पूजनक्रियावर्णन—बाबा दुर्लोकचन्द्र । पत्र संख्या-३० । साइज-१२×७½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-५ । लेखन काल-५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ५१८ ।

४१०. पूजासंग्रह..... । पत्र संख्या-१०० । साइज-७½×५½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-५ । लेखन काल-५ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६६ ।

विशेष—चतुर्विंशति तथा अन्य नित्य नैमित्तिक पूजाओं का संग्रह है । पूजा संग्रह की तीन प्रतियाँ और हैं ।

४११. पूजासंग्रह..... । पत्र संख्या-३८ । साइज-१२×६½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-५ । लेखन काल-५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६०२ ।

विशेष—इसमें देश पूजा तथा सरस्वती पूजा है ।

४१२. पूजासंग्रह..... । पत्र संख्या-६ । साइज-१२×८ इंच । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-५ । लेखन काल-५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ८१४ ।

विशेष—नित्य नियम पूजा, दशलक्षण, रत्नत्रय, सोलहकारण, पंचमेख तथा नन्दीश्वर द्वीप पूजाएँ हैं । पूजा संग्रह की ४ प्रतियाँ और हैं ।

४१३. पूजासंग्रह..... । पत्र संख्या-२७१ । साइज-६×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-५ । लेखन काल-५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३१७ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक ३७ पूजाएँ तथा निम्न पाठ हैं—

(१) तत्त्वार्थ सूत्र (२) स्वयम्भू स्तोत्र (३) सहस्रनामस्तोत्र ।

४१४. पूजासंग्रह..... । पत्र संख्या-३३ । साइज-१२×६ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४३२ ।

विशेष—इसमें पर्वविधान, सोलहकारण, कंजिका व्रतोद्यापन आदि पूजाये हैं ।

४१५. पूजासंग्रह..... । पत्र संख्या-२६ । साइज-११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३३७ ।

सुखसंपत्तिपूजा, जिनगुणसंपत्तिपूजा, सधुमुक्तावलीपूजा का संग्रह है ।

४१६. ४ कामरूपजा—उद्यापन—श्री भूषण । पत्र संख्या-२४ । साइज-११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १८७८ वैशाख सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३४६ ।

४१७. रत्नत्रयजनमाला..... । पत्र संख्या-२ । साइज-१२×६ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ८८७ ।

४१८. रत्नत्रयजयमाला..... । पत्र संख्या-३ । साइज-६×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ८६८ ।

४१९. रत्नत्रयपूजा..... । पत्र संख्या-१० । साइज-११×६ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४२१ ।

४२०. रत्नत्रयपूजा..... । पत्र संख्या-५ । साइज-१०×४ इंच । भाषा-संस्कृत । रचना काल-X । लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन नं० १०४३ ।

४२१. रत्नत्रयपूजा भाषा—धानतराय । पत्र संख्या-२२ । साइज-११×६ $\frac{१}{२}$ । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ४३६ ।

४२२. रत्नत्रयपूजा भाषा..... । पत्र संख्या-३६ । साइज-११×७ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १६३७ भाद्रपद सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४१४ ।

४२३. रत्नत्रयपूजा भाषा—पत्र संख्या-३ से ५४ । साइज १०×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १६३७ कार्तिक सुदी ११ । अपूर्ण । वेष्टन नं० ४२५ ।

विशेष—प्रारम्भ के २ पत्र नहीं हैं । एक प्रति और है किंतु वह भी अपूर्ण है ।

४२४. रोहिणीव्रतोद्यापन—कृष्णसेन तथा केसवसेन । पत्र संख्या-३१ । साइज-१०×४ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० २६३ ।

४२५. लब्धिविधानउद्यापनपूजा..... पत्र संख्या-७ । साइज-८×६ इंच । भाषा-संस्कृत ।
रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ५३४ ।

४२६. बृहत्शांतिकविधान..... पत्र संख्या-१३ । साइज-१० $\frac{१}{२}$ ×५ इंच । भाषा-संस्कृत ।
विषय-विधान । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १६११ । पूर्ण । वेष्टन नं० ५४० ।

विशेष—मुन्नालाल ने प्रतिलिपि की थी ।

४२७. विद्यमान बीस तीर्थंकर पूजा..... पत्र संख्या-७ । साइज-१० $\frac{१}{२}$ ×५ इंच । भाषा-
हिन्दी । रचना काल-X । लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ८६८ ।

४२८. विद्यमान बीस तीर्थंकर पूजा—जौहरीलाल । पत्र संख्या-४६ । साइज-१४ $\frac{३}{४}$ ×८ $\frac{३}{४}$ इंच ।
भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-सं० १६४६ श्रावण सुदी १४ । लेखन काल-सं० १६७१ । पूर्ण । वेष्टन
नं० ४०८ ।

४२९. विमलनाथपूजा..... पत्र संख्या-१ । साइज-८×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-
पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६२ ।

४३०. विमलनाथपूजा..... पत्र संख्या-११ । साइज-१० $\frac{१}{२}$ ×६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-
पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६८ ।

४३१. शांतिचक्रपूजा..... पत्र संख्या-३ । साइज-१३×४ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-
पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४८१ ।

४३२. शास्त्रपूजा—द्यानतराय । पत्र संख्या-३ । साइज-१३×५ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-
पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ५६२ ।

४३३. श्रुतोद्यापनपूजा..... पत्र संख्या-८ । साइज-१० $\frac{१}{२}$ ×७ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-
पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४१५ ।

विशेष—लिपि बहुत सुन्दर है ।

४३४. षोडशकारणमंडलपूजा—आचार्य कैसवसेन । पत्र संख्या-५० । साइज-११×५ इंच ।
विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १८७८ अश्वि सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३२३ ।

४३५. षोडशकारणश्रुतोद्यापनपूजा—अ० ह्यानसागर । पत्र संख्या-३२ । साइज-१०×४ $\frac{१}{२}$ इंच ।
भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३३४ ।

४३६. षोडशकारणजयमाला..... पत्र संख्या-१०८ । साइज-११×७ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा-हिन्दी ।

विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३७७ ।

विशेष—रत्नत्रयजयमाल (नममल) तथा दशलक्षणजयमाल भी हैं ।

४३७. षोडशकारणजयमाल—रङ्गू । पत्र संख्या—२२ । साइज—११X५ इंच । भाषा—प्राकृत ।

विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८७६ सादवा सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ५ ।

विशेष—महात्मा लालचन्द्र ने इसी मन्दिर में प्रतिलिपि की थी । गाथाओं पर संस्कृत में उल्था दिया हुआ है ।
एक प्रति और है ।

४३८. षोडशकारणजयमाल । पत्र संख्या—७ । साइज—१० $\frac{1}{2}$ X५ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४३४ ।

विशेष—रत्नत्रय तथा दशलक्षण जयमाल भी हैं ।

४३९. षोडशकारणजयमाल । पत्र संख्या—२० । साइज—१० $\frac{1}{2}$ X४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३३० ।

विशेष—दो प्रतियाँ और हैं ।

४४०. षोडशकारणपूजा । पत्र संख्या—१६ । साइज—११X७ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३३६ ।

४४१. षोडशकारणपूजा । पत्र संख्या—२ । साइज—११ $\frac{1}{2}$ X५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४८२ ।

विशेष—प्रति एक और है ।

४४२. सम्भेदशिखरपूजा—रामचन्द्र । पत्र संख्या—७ । साइज—११ $\frac{1}{2}$ X५ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ६७१ ।

४४३. सम्भेदशिखरपूजा । पत्र संख्या—३१ । साइज—८ $\frac{1}{2}$ X६ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—

पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १६२४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४४२ ।

४४४. सरस्वतीपूजा । पत्र संख्या—१० । साइज—६X१० इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।

रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ११२३ ।

विशेष—अन्य पूजाएँ भी हैं ।

४४५. सरस्वतीपूजा भाषा—पञ्जाबी । पत्र संख्या—६ । साइज—१४X८ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय-पूजा । रचना काल-सं० १६२१ अश्वि सुदी ६ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४०६ ।

४४६. सहस्रगुणपूजा — भ० धर्मकीर्ति । पत्र संख्या-७३ । साइज-१२ $\frac{१}{२}$ ×५ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा-संस्कृत ।
विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १७६५ वैशाख सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३४८ ।

विशेष—सर्वाङ्ग अंगुर में अतिलिपि हुई है ।

४४७. सदस्रनामगुणितपूजा—भ० शुभचन्द्र । पत्र संख्या-१०४ । साइज-८×५ इंच । भाषा-संस्कृत ।
विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १७१० कार्तिक सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३२८ ।

४४८. सिद्धचक्रपूजा—द्यानतराय । पत्र संख्या-६ । साइज-१२×५ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा ।
रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५३२ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

४४९. सुगन्धदशमीपूजा । पत्र संख्या-८ । साइज-१२×६ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा ।
रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६२६ ।

४५०. सोलहकारणपूजा—टेकचन्द्र । पत्र संख्या-७० । साइज-१२×५ इंच । भाषा-हिन्दी ।
विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८३५ भाद्रपद सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन नं० ११५८ ।

विशेष—दो प्रतियाँ और हैं ।

४५१. सोलहकारणपूजा । पत्र संख्या-१३ । साइज-११×५ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा-हिन्दी ।
विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४३५ ।

विशेष—द्यानतराय कृते स्तनत्रय, दशलक्षण, पंचमेक तथा अट्ठाई द्वीप की पूजा भी है ।

४५२. सोलहकारणपूजा—द्यानतराय । पत्र संख्या-५ । साइज-६×६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा ।
रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४३६ ।

विशेष—दशलक्षण पूजा भी है ।

४५३. सोलहकारण भावना । पत्र संख्या-१४ । साइज-११×५ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा-हिन्दी (पद्य) ।
विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८२७ ।

४५४. सोलहकारण जयमाला । पत्र संख्या-२ । साइज-८×७ इंच । भाषा-प्राकृत ।
विषय-पूजा । रचनाकाल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११५७ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

४५५. सोलहकारण विशेष पूजा पत्र संख्या-१२ । साइज-११×५ इंच । भाषा-
प्रकृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० २३५ ।

४५६. सौख्यव्रतोद्यापन—अक्षयरास । पत्र संख्या-१४ । साइज-६×५ इंच । भाषा-संस्कृत ।
विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १८८६ । पूर्ण । वेष्टन नं० २७४ ।

विशेष—जयपुर में श्योजीलालजी दीवान ने प्रतिलिपि कराई ।

विषय-पुराण साहित्य

४५७. आदिपुराण—जिनसेनाचार्य । पत्र संख्या-३४६ । साइज-१२×५ इंच । भाषा-संस्कृत ।
विषय-पुराण । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १७८६ मंगसिर सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन नं० १३३ ।

विशेष—तीन तरह की प्रतियों का मिश्रण है । आचार्य पद्मकीर्ति के शिष्य छात्र ने प्रतिलिपि की थी ।
एक प्रति और है लेकिन वह अपूर्ण है ।

४५८. आदिपुराण—भ० सकलकीर्ति । पत्र संख्या-२०६ । साइज-११×५ इंच । भाषा-संस्कृत ।
विषय-पुराण । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १८६० आसोज शुदी १ । पूर्ण । वेष्टन नं० ११२ ।

विशेष—श्री मोतीराम लुहाडिया ने प्रतिलिपि कराई थी । १ से १३१ तक के पत्र किसी प्राचीन प्रति के हैं ।
एक प्रति और है ।

४५९. प्रति नं० २ । पत्र संख्या-२४२ । साइज-११×६ इंच । लेखन काल-सं० १६७६ चैत सुदी ५ ।
पूर्ण । वेष्टन नं० २४३ ।

विशेष—चंपावती (चाक्यू) में प्रतिलिपि हुई थी ।

४६०. आदिपुराण भाषा—दौलतराम । पत्र संख्या-६०६ । साइज-१२×७ इंच । भाषा-हिन्दी
गद्य । रचना काल-सं० १८२४ । लेखन काल-सं० १८५५ मंगसिर सुदी २४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६५६ ।

विशेष—४ प्रतियाँ और हैं लेकिन वे अपूर्ण हैं ।

४६१. प्रति नं० २ । पत्र संख्या-२०१ से १३१० । साइज-१० ३/४×७ इंच । लेखन काल-सं० १८१४
आसोज शुदी ११ । अपूर्ण । वेष्टन नं० ७१३ ।

विशेष—प्रति स्वयं ग्रन्थकार के हाथ की लिखी हुई प्रतीति होती है, मगद मगद संशोधन हो रहा है ।

४६२. उत्तरपुराण—मुख्यमन्त्राचार्य । पत्र संख्या—३२४ । साइज—१२×७ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पुराण । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० २५८ ।

विशेष—२ प्रतियाँ और हैं ।

४६३. उत्तरपुराण—सुशालचन्द्र । पत्र संख्या—४४४ । साइज—१२ $\frac{1}{2}$ ×६ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—पुराण । रचना काल—सं० १७६४ । लेखन काल—सं० १८१३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६४२ ।

विशेष—दूसरी २ प्रतियाँ और हैं और वे दोनों ही पूर्ण हैं ।

४६४. नेमिन्यपुराण—ब्रह्मनेमिदत्त । पत्र संख्या—१७४ । साइज—११×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पुराण । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १६४४ मादवा सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० १२८ ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है । ३ प्रतियाँ और हैं । ग्रन्थ का दूसरा नाम हरिवंश पुराण भी है ।

४६५. पद्मपुराण भाषा—सुशालचन्द्र । पत्र संख्या—३४४ । साइज—१० $\frac{1}{2}$ ×५ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—पुराण । रचना काल—सं० १७८३ । लेखन काल—सं० १८५२ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६६३ ।

विशेष—एक प्रति और है लेकिन वह अपूर्ण है ।

४६६. पद्मपुराण भाषा—पं० दौलतराम । पत्र संख्या—२ से ४१७ । साइज—१५×६ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—हिन्दी ।
रचना काल—सं० १८२३ । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६४० ।

विशेष—२ प्रतियाँ और हैं लेकिन वे भी अपूर्ण हैं ।

४६७. पारङ्गवपुराण—बुलाकीदास । पत्र संख्या—२०२ । साइज—११×६ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—पुराण । रचना काल—सं० १७५४ । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ६४४ ।

विशेष—एक प्रति और लेकिन वह अपूर्ण है ।

४६८. पारङ्गवपुराण—भ० शुभचन्द्र । पत्र संख्या—२६५ । साइज—११ $\frac{1}{2}$ ×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पुराण । रचना काल—सं० १६०८ । लेखन काल—सं० १७१७ वैशाख सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ११८ ।

विशेष—इस राज खंडेलवाल की स्त्री लाड़ी ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवाकर पं० गोरधनदास को भेंट की थी ।

४६९. पुराणसारसंग्रह—भ० सकलकीर्ति । पत्र संख्या—२११ । साइज—१२×५ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पुराण । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८२३ चैत सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन नं० २५६ ।

४७०. भरतराज दिग्विजय वर्णन भाषा—पत्र संख्या—५६ । साइज—१२×५ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—पुराण । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १७३८ आसोज सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६८० ।

विशेष—जिनसेनानार्य प्रणीत आदि पुराण के २६ वें पर्व का हिन्दी गद्य है । गद्य का उदाहरण निम्न प्रकार है ।

हे देव तुम्हारा विहार कै समय जायुं कर्म रूप बैरी को तर्जना कहतां डर करतो संतो ऐसी महा उद्धत सबद करि
दिसां का मुख पूरणा है । जानै ऐसी पलगद नगारा को टंकार सबद भगवान के विहार समय पग पग के विषै हो रहै ।
(पत्र संख्या ३३)

४७१. बद्धमानपुराण भाषा—पं० केशरीसिंह । पत्र संख्या—२०३ । साइज—११ $\frac{१}{२}$ ×१२ $\frac{१}{२}$ इंच ।
भाषा—हिन्दी । विषय—पुराण । रचना काल—सं० १८७२ कायस्थ सुदी १२ । लेखन काल—सं० १८७४ चैत बदी १४ ।
अपूर्ण । बेहल नं० ६७८ ।

विशेष—७५ से ६४ तक पत्र नहीं हैं । अन्ध का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ—जिनेशं विश्वनाथाय अनन्तशुणसिधवे ।

धमचक्रभृते मूर्द्धा श्रीमहावीरस्वामिने नमः ॥१॥

श्री बद्धमान स्वामी कूँ हमारी नमस्कार हौ । कैसेक है बद्धमान स्वामी गणधरादिक कै ईस है, अर संसार के
नाथ हैं अर अनन्त शुषन के समुद्र है, अर धम चक्र के धारक है ।

गद्य का उदाहरण—

अहो या लोक विषै ते पुरुष धन्य है ज्यां पुरुष न का ध्यान विषै तिम्रताचित्त उपसर्ग के सैकंछेन करिहू किंचित्
मात्र ही विक्रिया कूँ नहीं प्राप्ति होय है ॥७॥ तहां पीछे वह रुद्र जिनराज कूँ अचक्षुक्ति जाणि करि लब्जायमान भयायका
आप ही या प्रकार जिनराज की स्तुति करिने कूँ उद्यमो होता भया ।

अन्तिम प्रशस्ति—

नगर सवाई जयपुर जानि ताकी महिमा अधिक प्रबानि ।

जगतसिंह जहां राज करेह गोत कुल्लाहा सुन्दर देह ॥६॥

देभ देस के आवे तहां, माति माति की बस्ती तहां ।

जहां सरावग बसै अनेक कैईक के घट माही विवेक ॥७॥

तिन में गोत आवका माहि, बाखचंद दीवान कहांहि ।

ताके पुत्र पांच गुणवान, तिन में दीय विख्यात महान् ॥८॥

जयचंद रायचंद है नाम स्वामी भर्भवती कीने काम ।

राजकाज में परम प्रवीन, सधर्म ध्यान में बुद्धि सुचीन ॥९॥

संघ चलाय प्रतिष्ठा करी, सब जग में कीर्ति विस्तरी ।

और अधिक उत्सव करि कहा रामचंद संगही पद लहा ॥१०॥

त दीवान जयचंद के पांच, सबकी धरम करम में सांच ।

तब रुचि लगती यह मन माहि, वीर चरित की भाषा नाहि ॥१२॥

जो याकी अब भाषा होय, तौ यामै समुझै सहु कोय ।

यह विचार लाखकै बुधिवान, पंडित केशरीसिंह महान ॥१३॥

तिन प्रति यह प्रार्थना करी, याकी करी वचनिका खरी ।

तब तिन अर्थ कियो विस्तार, ग्रंथ संस्कृत के अनुसारी ॥१४॥

यह खसडो कीनी तब तिनै, ताकी महिमा को कवि मनै ।

पुनि व्याकरण बोध बुधिवान, नसतपाल साहवडा जान ॥१५॥

तामै याको सोधन कीन, मूलग्रंथ अनुसारि सुवीन ।

बुधि अनुसारि वचनिका भयी, ताकु हरजन हसियो नहीं ॥१६॥

× × × × ×

दोहा—संवत् अष्टादश सतक, और तहसारि जानि ।

सकल पत्र फागुण मली, पुण्य नक्षत्र महान ॥१७॥

सुक्रवार शुभ द्वादसी, पूरण भयी पुराण ।

बाचै सुनै छ मध्यजन, पानै छुण अमलान ॥१८॥

इति श्री महारक सकलकीर्ति विरचिते “श्री वर्द्धमान पुराण संस्कृत ग्रंथ की देस भाषा मय की वचनिका पंडित केशरीसिंह कृत संपूर्ण” । मिस्री चैत बुदी १४ शनिवार सं० १=७४ का मैं ग्रंथ लिख्यौ ।

४७२. वर्द्धमानपुराणसूचनिका..... । पत्र संख्या-१० । साइज-१०×५ इंच । भाषा-हिन्दी ।
विषय-पुराण । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६७६ ।

४७३. वर्द्धमानपुराण भाषा..... । पत्र संख्या-७ । साइज-११×७½ इंच । भाषा-हिन्दी ।
विषय-पुराण । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ७४६ ।

४७४. शान्तिनाथपुराण—अशग । पत्र संख्या-८८ । साइज-१०×४½ इंच । भाषा-संस्कृत ।
विषय-पुराण । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १=३४ अथाद सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन नं० १२२ ।

४७५. शान्तिनाथपुराण—सकलकीर्ति । पत्र संख्या-१६४ । साइज-११×५ इंच । भाषा-संस्कृत ।
विषय-पुराण । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १३० ।

विशेष—ग्रन्थ संख्या श्लोक प्रमाण ४३७५ है । एक प्रति थीर है ।

४७६. हरिवंशपुराण—जिनसेनाभार्य । पत्र संख्या-३५५ । साइज-११½×५½ इंच । भाषा-संस्कृत ।
विषय-पुराण । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११६ ।

विशेष—प्रति नवीन है । ३ प्रतियां थीर हैं ।

४७७. हरिवंशपुराण—पं० दौलतराम । पत्र संख्या—५३० । साइज—११×६ १/२ इंच । भाषा—हिन्दी ।
रचना काल—सं० १=२६ । लेखन काल—सं० १=३४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६६४ ।

विशेष—रूपचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी । दो प्रतियाँ और हैं ।

४७८. हरिवंशपुराण—सुशाक्तचन्द्र । पत्र संख्या—१६१ । साइज—११ १/२×५ १/२ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—पुराण । रचना काल—सं० १७=० बैशाख सुदी ३ । लेखन काल—सं० १८=११ फागुण सुदी २१ । पूर्ण । वेष्टन
नं० ६४५ ।

विशेष—तीन प्रतियाँ और हैं ।

विषय—काव्य एवं चरित्र

४७९. उत्तरपुराण—महाकवि पुष्पदंत । पत्र संख्या—३२४ से ८३८ । साइज—१२×५ १/२ इंच ।
भाषा—अपभ्रंश । विषय—काव्य । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १५५७ कार्तिक सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ११७ ।

विशेष—३२४ से पूर्व आदि पुराण है ।

प्रशस्ति—सं० १५५७ कार्तिकमासे शुक्लपक्षे पूर्वमास्यां तिथौ शुरुदिने श्रद्धो श्री धनोधिन्द्रो श्री चन्द्रप्रभ
सैत्यालयो श्री मूलसंधे भारतीगण्यो बलात्कारगण्यो श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वयो महारक श्री पञ्चनन्दिदेवाः तत्पट्टे म० श्री देवेन्द्रकीर्ति
देवाः तत्पट्टे म० श्री विद्यानन्दिदेवा तत्पट्टे म० श्री मल्लिभूषण देवाः तस्य शिष्य म० महेन्द्रदत्त, नेमिदत्त तैः महारक
श्री मल्लिभूषणाय महापुराण पुस्तकं प्रदत्त ।

४८०. कलावतीचरित्र—भुवनकीर्ति । पत्र संख्या—४ । साइज—१० १/२×४ १/२ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—चरित्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६५ ।

४८१. गौतमस्वामीचरित्र—आचार्य धर्मचन्द्र । पत्र संख्या—३२ । साइज—१२×६ १/२ इंच । भाषा—
संस्कृत । विषय—चरित्र । रचना काल—सं० १६२१ । लेखन काल—सं० १८०२ ज्येष्ठ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन नं० २१३ ।

४८२. चन्द्रप्रभचरित्र—कवि दामोदर । पत्र संख्या—१२३ । साइज—११×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—चरित्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० १३१ ।

विशेष—१२३ से आगे के पत्र नहीं हैं । प्रति नवीन है । ग्रन्थ की पुष्पिका निम्न प्रकार है ।

इति मंडलसूरिप्रभूषण तत्पट्टे गच्छे मट्टारक श्री धर्मचन्द्र शिष्य कवि रामोदर विरचिते श्री चन्द्रप्रभचरित्रे
चन्द्रप्रभकेवलगतोत्पत्ति वर्णनो नाम द्वाविंशतितमः सर्गः ।

४८३. चन्द्रप्रभचरित्र—वीरनंदि । पत्र संख्या—११२ । साइज—११×१ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८६६ माघ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन नं० २३० ।

विशेष—फतेहलाल साह ने अतिलिपि कराई थी । काव्य की १ प्रति और है ।

४८४. चेतनकर्मचरित्र—भैया भगवतोदास । पत्र संख्या—१४ । साइज—१०×१ इंच । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—चरित्र । रचना काल—सं० १७३२ ज्येष्ठ सुदी ७ । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३७ ।

विशेष—ग्रन्थ की ३ प्रतियाँ और हैं ।

४८५. जम्बूस्वामीचरित्र—महाकवि वीर । पत्र संख्या—११४ । साइज—१२×४ इंच । भाषा—अपभ्रंश । विषय—काव्य । रचना काल—सं० १७७६ माघ सुदी १० । लेखन काल—सं० १६०१ असाढ़ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ९२६ ।

विशेष—ग्रन्थकार एवं लेखक प्रशस्ति दीनों पूर्ण है । राजाधिराज श्री रामचन्द्रजी के शासनकाल में टोडागढ़ में आदिनाथ चैत्यालय में लिपि की गई थी ।

खंडेलवाल वंशीत्यम्न साह गोत्र वाले सा० हेमा भार्या हमीर दे ने अतिलिपि करवाकर मंडलाचार्य धर्मचन्द्र को प्रदान की थी । लेखक प्रशस्ति निम्न है ।

संवत् १६०१ वर्षे अषाढ सुदी १३ भौषवासरे टोडागढवास्तव्ये राजाधिराजरावश्रीरामचन्द्रविजयराव्ये श्री आदिनाथचैत्यालये श्री मूलसंघे मंघाम्नाये बलात्कारण्ये सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाचार्यन्वये मट्टारक श्री पद्मनन्दि देवास्तत्पट्टे म० शुभचन्द्रदेवाः तत्पट्टे म० श्री जिनचन्द्र देवास्तत्पट्टे म० प्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्य मंडल श्री धर्मचन्द्रदेवाः तदाम्नाये खंडेलवालान्वये साह गोत्रे जिनपूजापुरन्दरान गुणश्रेयोत्पत्तिः साह महसा तद् भार्या सुहागदे तत्पुत्र साह मेधचन्द्र द्वि० कौजू । साह मेधचन्द्र भार्या मायाकदे द्वितीय नवलादे । तत्पुत्र साह हेमा द्वि० साह हीरा तृतीय साह छाजू । साह हेमा भार्या हमीर दे तत्पुत्र चि० भीखा । साह हीरा भार्या हीरादे । साह कौजू भार्या कौतुकदे तत्पुत्र साह पदारथ द्वि० खीवा । सा० पदारथ भार्या पारमदे तत्पुत्र सा० धनपाल । साह खीवा भार्या खिचसिरी तत्पुत्र हंगरसी एतेषा मध्ये सा० हेमा भार्या हमीर दे एतत् जम्बूस्वामीचरित्रं लिखाप्य रौहिर्गामित उद्योतनार्थं मंडलाचार्या श्री धर्मचन्द्राय प्रदत्तं ।

४८६. जम्बूस्वामीचरित्र—ब्र० जिनदास । पत्र संख्या—२१ । साइज—११ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० २२७ ।

विशेष—प्रशस्ति अपूर्ण है । एक प्रति और है ।

४८७. जम्बूस्थामीचरित्र - पांडे जिनदास । पत्र संख्या-३० । साइज-१० १/२ x ५ १/२ इंच । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-चरित्र । रचना काल-सं० १६४२ भाद्रपद शुदी ५ । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १८० ।

विशेष—अकबर के शासनकाल में रचना की गई थी । दो तरह की लिपि है ।

४८८. जितदत्तचरित्र - गुणभद्राचार्य । पत्र संख्या-४८ । साइज-१० १/२ x ४ १/२ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १८२५ । पूर्ण । वेष्टन नं० २२० ।

विशेष—पं० नगराज ने प्रतिलिपि की थी । २ प्रतियां और हैं ।

४८९. जिणयत्तचरित्त (जितदत्तचरित्र)—पं० लाखू । पत्र संख्या-१८० । साइज-११ १/२ x ५ १/२ इंच । भाषा-अपभ्रंश । विषय-चरित्र । रचना काल-सं० १२७५ । लेखन काल-सं० १६०६ मंगसिर सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० २२१ ।

विशेष—सं० १६०६ मंगसिर सुदी ५ आदित्यवार को रणथंभौर महाद्वर्ग में शान्तिनाथ जिन चैत्यालय में सलेमशाह ब्राह्मण के शासन के अन्तर्गत खिदिरखान के राज्य में पाटनी भोत्र वाले साह श्री दूलहा ने प्रतिलिपि करवाकर आचार्य ललित कौंसि को भेंट की थी ।

४९०. गायकुमारचरित्र (नागकुमारचरित्र)—महाकवि पुष्पदन्त । पत्र संख्या-६६ । साइज-८ १/२ x ४ १/२ इंच । भाषा-अपभ्रंश । विषय-काव्य । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १५१७ वैशाख सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० २१२ ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सं० १५१७ वर्षे वैशाख सुदी ५ श्री मूलसंधे बलात्कारण्ये सरस्वतीगच्छे महारक श्री पद्मनन्दिदेवा तत्पट्टे महारक श्री शुभचन्द्र देवा तत्पट्टालंकार महारक श्री जिनचन्द्र देवा । शिष्यी बाई मानी निमित्ते नागकुमार पंचमी कथा लिखाय कर्मस्य निमित्ते प्रदत्त ।

४९१ प्रति सं० २ । पत्र संख्या-६० । साइज-१० १/२ x ५ १/२ इंच । लेखन काल-सं० १५२८ आषाढ शुदी १ । पूर्ण । वेष्टन नं० २२४ ।

प्रशस्ति—संवत् १५२८ वर्षे आषाढ शुदि १ बुधे अवगणक्षत्रे सुभवासाम्योगे श्री नयनवाह पत्तने सुरप्राण अलाव-दीनराज्यप्रवर्धमाने श्री मूलसंधे बलात्कारण्ये सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्दकुन्दाचार्याम्बये महारक श्री पद्मनन्दि देवा तत्पट्टे म० श्री शुभचन्द्र देवा तत्पट्टे महारक जिनचन्द्रदेवा तत् शिष्य जैनन्दि अत्तम कर्म लघार्थ निमित्ते इदं गायकुमार पंचमी लिखा-पितं । खंडेलवाल बंशोत्पन्न पहाड्या गोत्र वाले अरजन भार्या कैलूर् ने प्रतिलिपि कराई ।

४९२. द्विसंधानकाव्य सटीक—मूलकर्त्ता-धनंजय, टीकाकार नेमिचन्द्र । पत्र संख्या-१६६ । साइज-१४ x ६ १/२ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १४ ।

अंतिम पुष्पिका—इति निरवयविषयामंडनमंडितपंडितमंडलीमंडितस्य षट्पञ्चककर्तिनः श्रीमत्विनयचन्द्र-
पंडितस्य गुरोरतिवासिनो देवनंदिनाभः शिष्येण सकलकलोज्ज्वलाकृततुरीचंद्रिकाचक्रेण नेमिचन्द्रेण विरचितायादिसंधान
कविधर्मनंजयस्य राघव पांडवीयापरानमकाव्यस्य पदकौमुदीनां दधानायां टीकायां श्रीरामज्यावर्यं नाम अष्टादश सर्गः ।

टीका का नाम पदकौमुदी है ।

४६३. धन्यकुमार चरित्र—सकलकीर्ति । पत्र संख्या-४३ । साइज-११½×४½ इंच । भाषा-संस्कृत ।
विषय-काव्य । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १६५६ । पूर्ण । वेष्टन नं० २३७ ।

प्रशस्ति—संवत् १६५६ वर्षे कार्तिक बुदी ७ रविवारे भी मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलारकारगणे श्री कुन्दकुन्दा-
चार्यान्वये महारक जशकीर्तिदेवा तत्पुत्रे महारक श्री ललितकीर्तिदेवा तत् शिष्य “ब्र०” श्रीवास स्वयं पठनार्थं गृहीत । लिखितं
चन्देरीगढ़दुर्गे वास्तव्य अफसर पातिसाहि राज्ये प्रवर्तते ।

४६४. धन्यकुमार चरित्र--ब्र०नेमिदत्त । पत्र संख्या-३० । साइज-१०½×२ इंच । भाषा-संस्कृत ।
विषय-चरित्र । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० २३८ ।

विशेष—प्रारम्भ के पत्र जीयं हैं ।

४६५. धन्यकुमार चरित्र—सुशालचन्द्र । पत्र संख्या-५० । साइज-१०×५ इंच । भाषा-हिन्दी
(पद्य) । विषय-चरित्र । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ६१६ ।

विशेषा—तीन प्रतियाँ थीं हैं ।

४६६. प्रद्युम्नचरित्र—पत्र संख्या-११० । साइज-६×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । रचना
काल-X । लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ११११ ।

४६७. प्रद्युम्नचरित्र — पत्र संख्या—३४ । साइज-११½×५½ इंच । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-चरित्र ।
रचना काल-सं० १४११ भाद्रवा बुदी ५ । लेखन काल-सं० १६०५ आसोज बुदी ३ मंगलवार । पूर्ण । वेष्टन नं० ६१२ ।

विशेष—प्रद्युम्न चरित्र की रचना किसी अग्रवाल बन्धुने की थी । रचना की भाषा एवं शैली अच्छी है । रचना का
आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

प्रारंभ—सारद विष्णु मति कवितु न होई, सरु आसक यवि बूझई कीई ।

सीस धार पणमई सरसती, तिहिं कहुँ बुधि होइ कठ दुती ॥१॥

सबु की सारद सारद करै, तिस कउ अंतु न कोऊ लहई ।

जियवर मुखइ रुणि गाय वाणि, सा सारद पणबहु परियाणि ॥२॥

अठदस कमल सरौबर वास, कासमीर पुरस (हु) निकास ।

इंस चदीकर लेखणि बैर, कवि सभार सरसई पभखेई ॥३॥

सैत वस्त्र पदसवतीण, करहं अलाषणि आजहि वीण ।
 आगम जाणि देहु बहुमती पुणु दुइ जे पयनई सरस्वती ॥४॥
 पदमावती दंड कर खेइ, जालामुखी चकेसरी देह ।
 अंभमाइ रोहिणी जो साक, सासण देवी नवइ सधारु ॥५॥
 जिणसांखण जो विघन हरेइ, हाथ लकुदि लै ऊभो होइ ।
 भविष्यहु दुरिउ हरइ असराहु-अगिवाणीउं पणउ खिचपाल ॥६॥
 चउवीसउ स्वामी दुख हरण, चउवीस के जर मरण ।
 जिण चउवीस नउ वरि मोउ, फउ कवितु जइ होइ पसाउ ॥७॥
 रिणभु अजितु संभउ तहि मयउ, अमिनंदनु नउत्तणउ वलंयउ ।
 समति पदमु प्रभु अवह सुपासु, चंदणउ आठमउ निकामु ॥८॥
 सुविधु नवउ सीतलु दस भयउ, अरु धेयंसु ग्यारह जयउ ।
 वासुपुत्र अरु विमल अनतु, धनु सति सोलहउं पद पदु ॥९॥
 कुंभु सतारह अरु सु अत्थार, भल्लिनाथ पुणुपासी भार ।
 पुष्टिप्रभव नमिनेमि नावीस, पासु बीरु बहुदेहि असीस ॥१०॥
 सरस कषा रसु उपजई प्रयाउ, निसुणहु चरित पजूसह तथउ ।
 संवतु बीरहसौ हुइ गये, ऊपर अधिक ग्यारह भये ।
 सादव दिन पंचह सो ठारु, स्वाति नवउ सनीश्वर वार ॥१२॥

मध्यभाग—प्रद्युम्न रुक्मणी के यहाँ आ पहुँचे हैं किन्तु यह प्रकट न हो पाया कि रुक्मणी का पुत्र आगया ।
 पुत्र आगमन के पूर्व कहे हुए सारे संकेत भिल गये हैं किन्तु माता पुत्र को देखने के लिये अधीर हो रही है —

कण वरा रूपिणि चंदइ अवास, वरा वरा सो जोवइ चोपास ।
 मोस्यो नारद कक्षउ निरुत्त, आज तोहि घर आवह पूत ॥३८४॥
 जे मुनि वयण कहे प्रमाणा, ते सबई पूरे सहिनाया ।
 ब्यारि आवते बीठे फले, अरुआचल दीठे पीयरे ॥३८५॥
 सुकी वापी मरी सुनीर अपय जगल मरि आये बीर ।
 सउ रूपिणि मन विमउ मयउ, पूती ब्रह्मचारि तहां गयउ ॥३८६॥
 नमस्कार तव रूपिणि करइ, धरम विरहि सुख उचरइ ।
 करे आदर सो विनउ करेइ, कषय सिवासणु दैसण देहु ॥३८७॥
 समाधान पूछई समुझइ, वह सुखउ २ मिललाई ।
 सखी बूलाइ जयाइ सार, जैवण करहु म लानहु वार ॥३८८॥

जीवण करण उठी तंखिणी, सुइरी मयथ अमी बंभीणी ।
नाखु न भुइ चूळि धुंधाह, वाह भूखउ र चिल्लाह ॥३८६॥

अंतिम—महसामी कउ कीयउ बलाणु, तुम पञ्चन पायउ निस्वाणु ।
अगाबाल की मेरी जात, पुर अगरो ए मुहि उतपाति ॥६७५॥
सअणु जणणी गुणवह उर धरिउ सा महाराज घरह अवतरिउ ।
एरछ नगर बसते जानि, सुपिउ चरित मइ रचिउ पुराया ॥६७६॥
सावय लोय बसहि पुर माहि, दह लहया ते बर्म क॥६॥
दस रिस मानइ दुतीया भेउ भावहिं चितहं जीणेसर देउ ॥६७७॥
एहु चरितु जो वांचइ कोइ, सो नर स्वर्ग देवता होइ ।
हलु वह अउरी साइ सो देह, सुखी धर्म पद पावइ हरि ॥६७८॥
जो कृणिसुयाइ मनह धरि भाउ, असुभ कर्म ते दूरिहि जाइ ।
जो र बसाणइ माणुमु अयणु, ताहि कहु तू सह देव परदमणु ॥६७९॥
अठ लिखि जो रि रियाकइ साणु, सो सुर होइ महा गुणरमु ।
जो र पदावइ गुण किउ निलउ, सो वर पावइ कंचण भलउ ॥६८०॥
भहु चरितु पुन भडारु, जो वर पदइ सु नर महसार ।
ताहि परदमणु तुही फल देइ, संपति पुत्र अवरु जसु होइ ॥६८१॥
हउ बुधि हीणु न जणौ केम्भु, अचर मातह गुणउ न भेउ ।
बडित जणइ नमूं कर जोडि होया अधिक जया लावहु सोडि ॥६८२॥

॥ इति परदमया चरित समाप्तः ॥

४६८. पार्श्वपुराण—भूधरदास । पत्र संख्या—२०६ । साइज—१०^३/_४ × ५ इंच । भाषा—हिन्दी (पद्य) ।
विषय—काव्य । रचना काल—सं० १७८६ । लेखन काल—सं० १८६३ । पूर्ण । केप्टन नं० ६४७ ।

विशेष—१६ प्रतियां और हैं ।

४६९. प्रीतिकरचरित्र—म० नेमिदत्त । पत्र संख्या—२६ । साइज—१०^३/_४ × ५ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—चरित्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । अपूर्ण । केप्टन नं० २१० ।

विशेष—अन्ध प्रशस्ति अपूर्ण है ।

४७०. बाहुबलिदेव चरिए (बाहुबलि देव चरित्र)—पं० धनपाल । पत्र संख्या—२६७ । साइज—
११^३/_४ × ४^३/_४ इंच । भाषा—अपभ्रंश । विषय—चरित्र । रचना काल—सं० १८५४ बैशाख सुदी १३ । लेखन काल—सं० १८०६
अषाढ सुदी ६ । पूर्ण । केप्टन नं० २५२ ।

विशेष—ग्रंथकार व लेखक प्रशस्ति पूर्ण है । लेखक प्रशस्ति का अन्तिम भाग इस प्रकार है—

..... एतेषां मध्ये द्वांदाहड देशे कहुवाहा राज्यप्रवर्तमाने अमरसर नगरेतिनामस्थिते धनधान्य चैत्यचैत्यालयादि सोमार्द्धकृत सत्रैव राज्य पदाश्रितो राजश्री सृजा उधरणयो राज्ये वसन संपही लब्धा तेनेर्द काहुनसि चरित्रं लिखाय्व ज्ञानपात्र आचार्य धर्मायदत्त ।

५०१. भद्रबाहुचरित्र—आचार्य रत्ननंदि । पत्र संख्या—४३ । साहज—१०५४ ई इच्छ भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १७२० । पूर्ण । वेष्टन नं० २४० ।

विशेष—एक प्रति और है ।

५०२. भद्रबाहुचरित्रभाषा—किशनसिंह । पत्र संख्या—२०२ । साहज—११५४ ई इच्छ । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । रचना काल—सं० १७०० । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ६०० ।

विशेष—पत्र १५ के बाद निम्न पाठों का संग्रह है जो सभी किशनसिंह द्वारा रचित हैं—

विषय-सूची	कर्ता	रचना संवत्
एकावली व्रत कथा	किशनसिंह	X
आवक मुनि गुण वर्णन गीत	"	X
चौबीस दंडक	"	१७६४
चतुर्विंशति स्तुति	"	X
शमोकर रास	"	१७६०
जिनमक्ति गीत	"	X
चेतन गीत	"	X
गुरुमक्ति गीत	"	X
निर्वाण कांड भाषा	"	१७८३ संग्रामपुर में रचना की
चेतन खीरो	"	X
नाचखी कथा (रात्रि भोजन त्याग कथा)	"	१७७३
लक्ष्मि त्रिधान कथा	"	१७८२ आगरे में रचना की गयी थी

५०३. भविसप्तपंचमीकहा—धनपाल । पत्र संख्या—१३१ । साहज—११५४ ई इच्छ । भाषा—अपभ्रंश । विषय—चरित्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० २१७ ।

श्लोक संख्या ३३०० ।

विशेष—ग्रन्थ की ३ प्रतियाँ और हैं । दो प्राचीन प्रतियाँ हैं ।

५०४. भविसयत्तचरिय—(भविष्यत्तचरित्र) श्रीधर । पत्र संख्या—१४४ । साइज—११ $\frac{१}{२}$ ×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १६६१ चैत्र सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन नं० २१४ ।

विशेष—राजमहल नगर में प्रतिलिपि हुई थी । ग्रंथ श्लोक संख्या १५०७ प्रमाण है ।

५०५. प्रति नं० २. पत्र संख्या—२१ । साइज—११×५ इंच । लेखन काल—सं० १६४६ चैत्र सुदी ११ पूर्ण । वेष्टन नं० २१५ ।

प्रशस्ति—संवत् १६४६ वर्षे चैत्र सुदी ११ मंगलवार अंबावती नगरे नेमिनाथ चैत्यालये श्री मूलराघे नंधान्नाये बलात्कारागणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये म० श्री पद्मनन्ददेवा, तत्पट्टे मठारक श्री शुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे म० श्री जिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे म० श्री प्रभाचन्द्रदेवा तत्पट्टे म० श्री धर्मचन्द्रदेवा, तत्पट्टे मठारक ललितश्रीर्तिदेवाः समस्त गोवि अंबावती खंडेलवालान्वये मावसा गोत्रे इदं शास्त्रं घटापितं ।

५०६. प्रति नं० ३—पत्र संख्या—७७ । साइज—११×५ इंच । लेखन काल—सं० १६०६ । पूर्ण । वेष्टन नं० २१६ ।

विशेष—यहाँ २ कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हुए हैं ।

प्रशस्ति—संवत् १६०६ वर्षे वैशाख मासे कृष्ण पक्षे द्वादशी तिथौ बुद्ध-वासरे अलुराधा नक्षत्रे श्री मूलसंघे गढ़ रणस्तंभ शाखागरे सेरपुर नाम्नि पातिशाह मल्लेण साहि राज्य प्रवर्तमाने श्री शान्तिनाथ जिण चैत्यालये श्री लसंघे नंधान्नाये बलात्कारागणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये म० श्री पद्मनन्द देवा तत्पट्टे म० श्री शुभचन्द्र देवा, तत्पट्टे मठारक जिनचन्द्र देवा, तत्पट्टे म० प्रभाचन्द्र देवा तत् शिष्य म० श्री धर्मचन्द्र देवास्तदाभाये खंडेलवालान्वये पाटोदी गोत्रे सा० बेला वडार्या सारी एतेषां मध्ये सा० बोहिष माया लाली इदं शास्त्रं लिखाम्ये म० श्री धर्मचन्द्राय घटापितं कल्याण व्रतोपापनार्थं ।

५०७. भोजचरित्र—पाठक राजवल्लभ । पत्र संख्या—३८ । साइज—११×४ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १६०७ । पूर्ण । वेष्टन नं० २१५ ।

विशेष—ग्रंथ की अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

श्री धर्मघोषगच्छे श्री धर्मसूरि सन्ताने स्वाध्वी पट्टे श्री महीतिलक सूरि शिष्य पाठक राजवल्लभ कृते भोज चरित्रे समाप्तं । सं० १६०७ वर्षे फागुण मासे शुक्ल पक्षे सप्तम्या तिथौ शुक्रवासरे अखवरगढ़ मध्ये लिखितं ।

५०८. महीपालचरित्र—मुनिचारित्र भूषण । पत्र संख्या—५४ । साइज—१० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । रचनाकाल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० २१६ ।

विशेष—श्लोक संख्या—६६५ प्रमाण ग्रंथ है ।

५०९. यशस्तिलकचम्पू—सोमदेव । पत्र संख्या—५६ । साइज—१२ $\frac{१}{२}$ ×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । रचना काल—X । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६६३ ।

विशेष—= पेज तक टीका दे रखी है ।

५१०. यशोधरचरित्र—सोमकीर्ति । पत्र संख्या-१७ । साइज-११×४ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत ।

विषय-चरित्र । रचना काल-X । लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन नं० २४२ ।

विशेष—१७ से आगे पत्र नहीं है ।

५११. यशोधरचरित्र—ज्ञानकीर्ति । पत्र संख्या-६६ । साइज-१४×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत ।

विषय-चरित्र । रचना काल-सं० १६६६ भाद्र सुदी ६ । लेखन काल-सं० १६६४ वैशाख शुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन नं० २४३ ।

विशेष—महाराजा मदनसिंहजी के शासन काल में मौजमावाद में प्रतिलिपि हुई थी ।

५१२. यशोधरचरित्र—वासवसेन । पत्र संख्या-२-३५ । साइज-११ $\frac{1}{2}$ ×५ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत ।

विषय-चरित्र । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १७५६ भाद्रमा सुदी १ । अपूर्ण । वेष्टन नं० २४० ।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है । सं० पेमराज ने प्रतिलिपि की थी ।

५१३. यशोधरचरित्र—भ० सकलकीर्ति । पत्र संख्या-६४ । साइज-१२×५ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत ।

विषय-चरित्र । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० २३६ ।

विशेष—चार प्रतिभों और हैं ।

५१४. यशोधरचरित्र—परिहानन्द । पत्र संख्या-३४ । साइज-११×६ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) ।

विषय-चरित्र । रचना काल-सं० १६७० । लेखन काल-सं० १८३२ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६१८ ।

विशेष—आदि अत भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ—सुमर देव अरहंत महंत, मुख अति अगम छहैं को अंतु ।

जाकै माया मोह न मान, लोकांतिक प्रकासक ज्ञान ॥

जाकै राग न मोह न खेद, चित्रिपति रंक न जाके भेद ।

राधे हरष न बिरचै बक्कु, सुमरत नाम हरै अच चक्कु ॥

अलख अगोवर अन्तुक अंतु, मंगलधारि मुक्ति को कन्तु ।

युग आरिध मो रसना एक, अलप बुद्धि घर तुच्छ विवेक ॥

हैं कर जोडि नऊ सरस्वती, बढे बुद्धि उपजै शुभ मती ।

जिन बानी मानी जिन आनि, तिनको बचन चढ्यो परवान ॥

बिबुध विहंगम नश्र बन वारि, कवि कुल केलि सरोवर मार ।

भय सागर तू तारन भाव, कुनय कुरंग सिधनी भाव ॥

बे नर सुन्दर ते नर बली, जिनका पुहसि क्या बहुत चली ।

जिनकी हैं सारद वर दीर्घी, सुखसुरितासु अमल जल पोथी ॥
 सुमरि सुमार गुण ज्ञान मंसीर, बटै सुमति अघ घटहि सरीर ।
 जिनमुद्रा जे धारण धीर, भव आताप बुभावन नीर ॥
 तिनके चरण चित्त महि धरै, धिर अनुसार कवित उचरै ।
 गुरु गणधर सुमरो मन माहि, विचन हरन करि करि नुं छांदि ॥३॥
 नगर आगरो बसै सुवासु, जिहपुर नाना भोग विलास ।
 बसीह साहु बहू धनी असंखि, तनजवि वसतः सागर निजनि ॥
 सुखी लोग हत्तीसी कुरी, मथुरा मंडल उत्तम पुरी ।
 और बहुत को करै सखाउ, एक जीभ की नाही दाउ ।
 नृपति नूरदीसाह सुजान, अरि तम तेज हर नमो मान ॥

मध्य भाग—सुनिरी माह कहीं हो एह, जो नर पावै उत्तम देह ।
 सत पंडित सज्जन सुखदाह, सब हित करहि न कोपै राह ॥
 जो बोलै सो होइ प्रमान, जह बैठे तह पावै मान ।
 दैर मात्र मन धरै न कोइ, जो देखै ताकी सुख होइ ॥४॥
 यह सब जाहि दया को अंग, उत्तम कुल अरु रूप अनंग ।
 दोरघ यात्र परै ता तनी, सेवहि चरन कमल बहू शुनी ॥५॥

अन्तिम भाग—संवत् सोलह सै अधिक सत्तरि सावण मास ।
 सुकल सोम दिन सप्तमी कही कथा पृदु भास ॥
 अमवाल वर वंस गोसना गांव को ।
 सोयल मोत प्रसिद्ध चिह्न ता ठांव को ॥
 माता चंदा नाम, पिता मौरु मन्यौ ।
 परिहानंद कही मनमोद अंग न गुन ना गन्यौ ॥६॥
 इति श्री यशोधर चौपई समाप्ता ।

संवत् १=३१ का मैं घटती पाना पुरी कियौ पुस्तक पड़ेली लिखी है । पुस्तक लूटि में आयी सो यौ निहरावलि देर यौ गाजो का बाणा का पंचा बाचै पछै त्याह भव्य जीवानी पुन्य होयसी ।

५१५. यशोधरचरित्र—सुशालचन्द्र । पत्र संख्या-४१ । सादज-४ ३/४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । रचना काल-सं० १७=१ । लेखन काल-X । पूर्ण । वेस्टन नं० ६१४ ।

विशेष—२ प्रतियां और हैं ।

५१६. यशोधरचरित्र टिप्पण्य..... पत्र संख्या-२६ । साहज-११×४^१/_२ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६० ।

विशेष—श्रुति प्राचीन एवं जीर्ण है, पत्र गल गये हैं । चतुर्थे संधि तक है ।

५१७. यशोधर चौपई—अजयराज । पत्र संख्या १२ से ४१ । साहज-६^१/_२×६^१/_२ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-चारित्र्य । रचना काल-सं० १७६२ कार्तिक वृद्धी २ । लेखन काल-सं० १८०० चैत वृद्धी ११ । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६६६ ।

विशेष—चूड़मल पाटनी बस्ती वाले ने आमेर में प्रतिलिपि कराई थी ।

५१८. बड्डमाणकहा (बड्डमान कथा)—नरसेन । पत्र संख्या-२७ । साहज-६×४ इञ्च । भाषा-अप्रभंश । विषय-चरित्र । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १५८४ । पूर्ण । वेष्टन नं० २६१ ।

विशेष प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १५८४ वर्षे चैत्र सुदी १४ शनिवारे पूर्वानक्षत्रे श्री चंपावतीकोटे राणा श्री श्री श्री संग्रामस्य राज्ये, राह श्री रामचन्द्र राज्ये, श्री मूलसंधे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवा तत्पट्टे महारक श्री शुभचन्द्र देवा तत्पट्टे भट्टारक श्रीजिनचन्द्र देवा, प्रसाचन्द्रदेवा ॥ श्री खंडेलवालाव्यये अजमेरा गोत्र साह लोल्हा मार्या अनपव तस्य पुत्र साह व्यौराज मार्या रतना तस्य पुत्र शान्तु तस्य मार्या सातिवी तस्य पुत्र स्यौन् द्वितीय साह चापा मार्या संज्ञा तस्य साह होला तस्य मार्या

५१९. बड्डमाणकव्य (बड्डमानकाव्य)—पं० जयमित्रहल । पत्र संख्या-२ से ५६ । साहज-६^१/_२×४ इञ्च । भाषा-अप्रभंश । विषय-काव्य । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १५५० वैशाख सुदी ३ । अपूर्ण । वेष्टन नं० १३८ ।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है । प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १५५० वर्षे वैशाख सुदी ३ गेहिणी शुभनाम योगे श्री गैणोली पत्तने राजाधिराजः अरिमानमर्दनराजश्री चामादेव राज्यप्रवर्तमाने श्री मूलसंधे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये म० श्री पद्मनन्दिदेवाः तत्पट्टे म० शुभचन्द्र देवा तत्पट्टे म० जिनचन्द्र देवा तत् शिष्य गुनि श्री रत्नकीर्ति देव

५२०. बड्डमानचरित्र—सकलकीर्ति । पत्र संख्या-१२० । साहज-११×४^१/_२ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १२६ ।

५२१. वरांगचरित्र—बड्डमान भट्टारक देव । पत्र संख्या-६० । साहज-११^१/_२×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १६३१ काशुण्य सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० २४७ ।

विशेष—सांगानेर में महाराजाधिराज भगवतसिंहजी के शासनकाल में खंडेलवालवंशोत्पन्न भौसा गोत्र वाले साह

नानग आदि ने प्रतिलिपि कराई थी ।

विशेष—२ प्रतियाँ और हैं ।

५२२. विदग्धमुखमण्डन—धर्मदास । पत्र संख्या—२२ । साइज—१० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—काव्य । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८२६ चैत्र सुदी ३ सोमवार । पूर्ण । वेष्टन नं० १५२ ।

विशेष—नगराज ने प्रतिलिपि की थी ।

५२३. षट्कर्मोपदेशमाला—अमरकीर्ति । पत्र संख्या—८६ । साइज—१० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—अपभ्रंश ।
विषय—काव्य । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १६५६ । पूर्ण । वेष्टन नं० १६८ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है—

लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६५६ वर्षे चैत्र शुदी १३ शनिवासरे शतमिस्त्रानवत्ये राजाधिराज श्रीमाणविजयराज्ये भीलोदा ग्रामे श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालये श्री मूलहाषि बलात्कारगणे सरस्वतीगण्ये श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे म० श्री जिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे म० सिंघकीर्ति देवास्तत् शिष्य ब्रह्मचारी रामचन्द्राय हूँ ब्रह्म जातीय श्रीष्टी हारा भार्या ईजा सुत श्रुतश्रीष्टी देवात भ्रातृ श्रीष्टी नाना भार्या इकी द्वतीय भार्या रूपी तयोः सुत श्रुतश्रीष्टी लाला भार्या बानू तत् भ्रातृ श्रीष्टी वेला भार्या वीली षट्कर्मोपदेश शास्त्र लिखाय प्रदत्त ।

५२४. शालिभद्र चौपई—जिनराज सूरि । पत्र संख्या—१४ । साइज—१०×४ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—चरित्र । रचना काल—सं० १६१८ । लेखन काल—सं० १७६४ मादवा सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०७५ ।

५२५. श्रीपालचरित्र—ज० नेमिदत्त । पत्र संख्या—५५ । साइज—१२×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—चरित्र । रचना काल—सं० १५८६ आषाढ सुदी ५ । लेखन काल—सं० १८२१ सावन शुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन नं० २२५ ।

विशेष—मालवा देश में पूर्णशा नगर में आदिनाथजी के मन्दिर में अ-अ रचना हुई थी ।

छाजूलालजी साह के पिता शिवजीलालजी साह ने ज्ञानावरणीचयार्थ श्रीपाल चरित्र की प्रतिलिपि कराई थी । एक प्रति और है ।

५२६. श्रीपालचरित्र—कवि दामोदर । पत्र संख्या—५७ । साइज—११×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—अपभ्रंश ।
विषय—चरित्र । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १६०६ आषाढ शुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० २२४ ।

५२७. श्रीपालचरित्र—दौलतराम । पत्र संख्या—४६ । साइज—८ $\frac{३}{४}$ ×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १६०७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ५२० ।

विशेष—आराधना कथा कोष में से कथा ली गई है ।

५२८. श्रेणिकचरित्र—भ० विजयकीर्ति । पत्र संख्या—२५० । साइज—१० १/२ × ७ १/२ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—चरित्र । रचना काल—सं० १८२० । लेखन काल—सं० १८८० । पूर्ण । वेष्टन नं० ६१५ ।

५२९. श्रेणिकचरित्र—जयमित्रहल । पत्र संख्या—६० । साइज—१० १/२ × ५ १/२ इंच । भाषा—अपभ्रंश ।
विषय—चरित्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन नं० २३६ ।

५३०. श्रीपालचरित्र—परिमल्ल । पत्र संख्या—१३६ । साइज—१० १/२ × ५ १/२ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—चरित्र । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८८० । पूर्ण । वेष्टन नं० ६०४ ।

विशेष—४ प्रतियाँ और हैं ।

५३१. श्रीपालचरित्र..... । पत्र संख्या—३५ । साइज—१३ × ६ १/२ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य ।
विषय—चरित्र । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८५६ आषाढ़ जुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६२७ ।

विशेष—ग्रन्थ के मूलकर्ता भ० सकलकीर्ति थे । २ प्रतियाँ और हैं ।

५३२. सीताचरित्र—कवि बालक । पत्र संख्या—१६१ । साइज—८ १/२ × ५ १/२ इंच । भाषा—हिन्दी (पद्य) ।
विषय—चरित्र । रचना काल—सं० १७१३ । लेखन काल—सं० १८६५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६२३ ।

विशेष—चंपावती (चाकलू) में प्रतिलिपि हुई थी । सीता चरित्र की मण्डार में १ प्रतियाँ और हैं ।

५३३. सिद्धचक्रकथा—नरसेनदेव । पत्र संख्या—३८ । साइज—१० × ४ १/२ इंच । भाषा—अपभ्रंश ।
विषय—कथा । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १५१५ । पूर्ण । वेष्टन नं० २७८ ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १५१५ वर्षे ज्येष्ठ सुदी १५ रवी नैयावाहपत्तने सुखाय अलावदीन राज्ये श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगण्ये श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारके श्री पञ्चनन्दिदेवाः तत्पट्टे त्रिनचन्द्रदेवा तस्य शिष्ये पुनि धर्मतवृत्ति लंबकंधुका-
श्वये जदवंसे काकलिभरस्वगोत्रे साह सीधे भार्या दीपा तस्य पुत्र साह साम्हरि भार्या जसंवस्वरूप नारायण लघु आता कन्ह एतेषु
मध्ये नारायण पठनार्थं लिखापितं ।

५३४. सुदर्शनचरित्र—भ० सकलकीर्ति । पत्र संख्या—३८ । साइज—११ × ५ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—चरित्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० २३२ ।

५३५. सुदर्शनचरित्र—विद्यानंदि । पत्र संख्या—५० । साइज—११ × ५ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—चरित्र । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १६०५ । पूर्ण । वेष्टन नं० २६३ ।

विशेष—टोंक निवासी गंगवाल भोज वाले सा० राजा ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

५३६. हरिवंशपुराण—सहाकवि स्वयंभू । पत्र संख्या—१ से ४०६ । साइज—१३ × ५ इंच । भाषा—
अपभ्रंश । विषय—काव्य । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १५८२ फागुण जुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन नं० १२३ ।

विशेष—प्रति का जीर्णोद्धार हुआ है । पुराण की अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है —

इय रिदुखोमचरिय भवतइयासिय सयभुएवउच्चरए तिहुयणसयभुए समाणियं वन्हकिचि हहरिबंसं ॥ गुरुपव्ववा-
समयं सुयसणागुक्कर्म जहाजायासयेमिक्कदइदइयाइयं संधियो परिसम्मतिथो ॥६॥ तथि १११२ ॥ इति हरिबंसं पुराण समाप्तं ॥६॥
अथ संख्या सहस्र १८००० पूर्वोक्तं ॥ ६ ॥

प्रशस्ति निम्न प्रकार है —

संवत् ११८२ वर्षे फाल्गुण सुदी १३ त्रयोदशीदिवसे शुक्लासरे भवणनक्षत्रे शुभजामे चंपावतीगढ़नगरे महाराज श्री रामचन्द्रराज्ये श्री पार्वनाथ चैत्यालये श्री मूलसंघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्योन्मये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवा तत्पट्टे माह्वरक श्री शुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवा तदाभाये खडेलवालान्वये साहगोत्रि जिनपूजाप्रदत्तान् बहुशस्त्रपरिमलिन सन्दरो, जिनचरणारविन्द पद्मपद्मीतिशास्त्रपरिगत, विशदजिनशासन-समुद्धरणधीर, पंचाणुधतपालनैकधीर, सम्यक्त्वार्लंकृतशरीराभेदाभेदरत्नधराधकाविर्पचासक्रियःप्रतिपालक शंकाघघदीधरहितं संवेगाद्यगुणयुक्षि दुरितजनविश्राम, परम श्रावक साह कार्ष्णि, भार्या कावलदेव्याः पुत्राः । द्वितीय पुत्र जिनचरणकमलचंचरीकान्, दानपूजाश्रयान् इव समुद्यतान् परोपकारनिरतान् प्रशस्तचित्तान् सम्यक्त्वगुणप्रतिपालकान् श्री सर्वज्ञोक्तधर्मोन्नतचित्तैतान् कुटुंबभारधुरंधरान् रत्नव्यालंकृतदिव्यदेहान् आहारमैषजशास्त्रदानभदाकिनीयः पूरितचित्तान् श्रावकाचारप्रतिपालननिरतान् सा राक्षो साधी (साध्वी) भार्या रैनदे तस्य चतुर्थ पुत्रः द्वितीय पुत्रः जिधर्विकचैत्यविहारउद्धरणधीरान् चतुर्विधसंघमनोष्यपूर्णान्, विन्तामणि गुण..... सीगुणान् बहुलशृणुलक्षितदिव्यदेहान् स्वजनानन्दकारी देवशास्त्रगुरुया (या) भक्तिवंतान् त्रिकालसामायिकपूत प्रतिपालकान् परमाश्रयधुरन्दर, निजकुलगगनद्योतनादिवाकर मृतनियमसंजमरत्नचयरत्नाकर कृष्णावलिप्रस्तरन्तमूलखंडन चतुर्विध-मुखखंडन, निजकुलकमलविकासनैकमार्त्तण्डान्, मार्गस्थकल्पवृक्षान् सरस्वतिकंठाभरणान् त्रैपनक्रियाप्रतिपालकान् एतान् गुणसंयुक्तान् परम श्रावक विनयवंतं साधु सा० हाथु भार्या श्रीमती इव साध्वी हरिदं दे तस्य द्वौ पुत्रौ प्रथम पुत्र जिणशासन-उद्धरणधीर राजप्रागभारवितरणप्रवीण सा० पासा भार्या द्वौ प्रथम लक्ष्मी द्वितीय बाली तस्य पुत्र चिरंजीव बालधवल सा० हरराज । सा० हाथु द्वितीय पुत्र देवगुरुशास्त्रशासनविनयवंत सा० आशा भार्या हंकारदे । सा० राक्षो-तृतीय पुत्र सा० दासा भार्या सिंदूरी तस्य द्वौ पुत्रौ प्रथम पुत्र सा० भविली भार्याभावलदे द्वितीय पुत्र सा० जानू सा० फादू । सा० दासा तस्य द्वितीय पुत्र सा० धर्मसा भार्या दारादे । सा० राक्षो चतुर्थ पुत्र सा० घाटं तस्य भार्या राणी..... घाटं पुत्र द्वौ, सा० हेमराज..... मुन्तमाघसंदाय दत्तम् ।

२३७. होलिकाचरित्र—छीतर टोलिया । पत्र संख्या—२ । साइज—१०×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । रचना काल—सं० १६६० फाल्गुण सुदी १५ । लेखन काल—सं० १८७५ । पूर्ण । बेष्टन नं० २७२ ।

२३८. होलीरेणुकाचरित्र—जिनदास । पत्र संख्या—३१ । साइज—११½×५½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १७५६ । पूर्ण । बेष्टन नं० १०८ ।

विशेष—पांडे जस। ने स्वयं प्रतिलिपि की थी ।

विषय—कथा एवं रासा साहित्य

५३६. अष्टाहिकाकथा—भ० शुभचन्द्र । पत्र संख्या—१० । साइज—१० $\frac{३}{४}$ ×६ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—कथा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । बेष्टन नं० २७२ ।

विशेष—कथा की रचना जालक की प्रेरणा से हुई थी । कथा की तीन प्रतियाँ और हैं ।

५४०. आदित्यवारकथा—भाऊ कृषि । पत्र संख्या—१७ । साइज—१० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—कथा । रचनाकाल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । बेष्टन नं० १०६६ ।

५४१. आदित्यवारकथा—सुरेन्द्रकीर्ति । पत्र संख्या—४४ । साइज—११ $\frac{३}{४}$ ×४ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—कथा । रचना काल—सं० १७४४ । लेखन काल—सं० १८४६ । पूर्ण । बेष्टन नं० ६६६ ।

विशेष—कामा में प्रतिलिपि हुई थी । पत्र २० से सूरत की ग्राहखुशी दी हुई है ।

५४२. कवलचन्द्रायणव्रतकथा । पत्र संख्या—६ । साइज—१० $\frac{३}{४}$ ×४ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—कथा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । बेष्टन नं० ५६७ ।

५४३. कर्मविपाकरास—ब्र० जिनदास । पत्र संख्या—१७ । साइज—१० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—रासा साहित्य । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १७७६ कार्तिक सुदी ११ । पूर्ण । बेष्टन नं० ३६६ ।

विशेष—भाषा में गुजराती का बाहुल्य है । लेखक प्रशस्ति लिप्ता प्रकार है—

संवत् १७७६ वर्षे कार्तिक मासे कृष्ण पक्षे एकादशी गुरुवासरे श्री रत्नाकर तटे श्री खंभातनंदरे गौसाई कान्हव-
गिरेण लिखितेभिर्दं पुस्तकं ब्र० सुमतिसागर पठनार्थं ।

५४४. गौतमपृच्छा । पत्र संख्या—३५ । साइज—१०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

कथा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । बेष्टन नं० १०४८ ।

विशेष—

प्रारम्भ—वीरजिनं प्रणम्यादौ बालानां सुखबोधका ।

श्रीमद् गौतमपृच्छायाः क्रियते वृत्तिमदमुता ॥१॥

नमि ऊष् तित्थनाहं जायंतो तहय गोयमो भयवं ।

अबुहाय बोहयत्थं धम्माधम्मफलं तुब्बे ॥२॥

नत्वा तीर्थनाथं जाणन् तथा गौतमः भयवं ।

अबोयान् बोधनार्थं धम्मोधम्मफलं उपपे ॥३॥

अन्तिम पाठ — पाठक पद संयुक्तै कृता चैयं कथानिका ।

श्रीमद् गौतमपृच्छा सुखमासुखबोधका ॥

लिखतं चेला हर्षात्र विजयः ।

इति गौतमपृच्छा संपूर्णः ।

५४५. चन्द्रनवमिषतकथा—विजयकीर्ति । पत्र संख्या-६ । साइज-११ $\frac{३}{४}$ ×८ $\frac{३}{४}$ इय । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । रचना काल-५ । लेखन काल-सं० १६६० । पूर्ण । बेष्टन नं० ६०१ ।

विशेष—ईश्वरलाल चादवाङ ने प्रतिलिपि कराई थी ।

५४६. चन्द्रहंसकथा—टीकम । पत्र संख्या-४४ । साइज-११ $\frac{३}{४}$ ×४ इय । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । रचना काल-सं० १७०० । लेखन काल-सं० १८१२ । पूर्ण । बेष्टन नं० ५७३ ।

विशेष—रचना के पद्यों की संख्या ४५० है । रचना का प्रारम्भ और अन्तिम पाठ निम्न प्रकार हैं ।

प्रारम्भ—ओंकार अपार गुण, सब ही अक्षर आदि ।

सिद्ध होय ताको जग्या, आखिर एह सनादि ।

जिन वाणी मुख उचरे, ओं सबद सरूप ।

पंडित होय भति बीसरो, आखिर एह अनूप ॥२॥

अन्तिम पाठ—सांभरि स्थौ दश कोसा गांव, पूर्व दिशा कालख है ठाम ॥४४॥

ता माहै व्यापारी रहै, धर्म कर्म सो नीति को कहै ।

देव जिनालय है तिहां भली, आवग तिहां क्या सांभली ॥४४१॥

विधि सौ पूजा करै जिन तनी, मन में प्रीति सु राखे घणी ।

भगइ तहांतणी हुजदार, बंस लुहाज्या में सिरदार ॥४४२॥

भोज राज साहिब को नाव, देई बढाई सौव्यों गात्र ।

सब सौ प्रति चलावै साह, दोष न करै अद्वै मन माहि ॥४४३॥

पुत्र दोह ताकै घरि भला छजाणि, पिता हुकम करै परवान ।

कालु और नराईनदास, ईहगातणीय जोव आस ॥४४४॥

माई बंसु कुटुंब परिवार, बिधि सौ करै सबन को सार ।

साहमी तणी बिनी अति फरे, सति वचन मुख उचरै ॥४४५॥

जितो भलाई है तिहि माहि, एक जीम बरथन नहो जाई ।

सब ही को दिख लीया हाथि, जिमै बैठि आपनै साथि ॥ ४४६॥

बैसी जगति खैचियो भार, जाणै ताको सब संसार ।

संवत आठ सतरासै वर्ष, कृता चौपई हुवो हर्ष ॥ ४४७ ॥

पंक्ति हीं हंसो मति कोई, बुरा मला आखरु जो होइ ।
 जेठमास अर पाख अंधियार, जायै दोईज अररविवार ॥ ४४६ ॥
 टीकम तणी बीनती एहु, लघु दीरघु संबारै छ लेह ।
 सुणत कथा होई जे पास, हो तिन कै चरण को दास ॥
 मनधर कृपा एह जो कहै, चन्द्र हंस जोमि सुख लहै ॥
 रोग विजोग न व्यापै कोई, मनधा कथा सुनै जै सोई ॥ ४४७ ॥

॥ इति चन्द्रहंस कथा संपूर्ण ॥

संवत् १८१२ वर्षे शाके १६७७ आषाढकृष्ण तिथी ६ बुधवासरे लिपि कृत ॥ जोसी रंगीजीराम ॥
 लिखपितं धर्ममूरति धरमात्मा साह जी श्री डालूरामा ॥

५४७. चित्रसेनपद्मावतीकथा—पाठक राजवल्लभ । पत्र संख्या-१९ । साइज-८ १/४ × ४ १/४ इंच ।
 भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । रचना काल-५ । लेखन काल-सं० १७६१ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०७४ ।

५४८. दर्शनकथा—भारामल्ल । पत्र संख्या-६८ । साइज-८ १/४ × ४ १/४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-
 कथा । रचना काल-५ । लेखन काल-सं० १९२७ आषाढ बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन नं० ४८४ ।

विशेष — एक प्रति और है ।

५४९. दानकथा—भारामल्ल । पत्र संख्या-३६ । साइज-११ × ६ १/४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-
 कथा । रचना काल-५ । लेखन काल-५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ५४८ ।

विशेष—मूल्य १।।) लिखा हुआ है ।

५५०. नागश्रीकथा (रात्रिभोजनत्यागकथा)—ज० नेमिदत्त । पत्र संख्या-२८ । साइज-११ × ४ १/४ इंच ।
 भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । रचना काल-५ । लेखन काल-सं० १६७० फाल्गुन बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन नं० १६८ ।

विशेष — चारै तैजथी वैजवाड में प्रतिलिपि कराई । पहला पत्र बाद का लिखा हुआ है । एक प्रति और है ।

५५१. नागश्रीकथा (रात्रि भोजन त्याग कथा)—किशनसिंह । पत्र संख्या-२० । साइज-११ × ४ १/४ इंच ।
 भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । रचना काल-सं० १७५३ सावन सुदी ६ । लेखन काल-५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ५६० ।

विशेष—३ प्रतियां और हैं ।

५५२. नागकुमारचरित्र—नथमल विलास । पत्र संख्या-१०३ । साइज-११ १/४ × ४ १/४ इंच । भाषा-
 हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । रचना काल-सं० १८३७ भाद्र शुद्धी ५ । लेखन काल-५ । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६१३ ।

विशेष — अन्तिम पत्र नहीं है ।

५५३. निशिभोजनत्यागकथा—भारामल्ल । पत्र संख्या—२० । साङ्ग—८५६ ईश्व । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—कथा । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १६२७ आषाढ बुद्धी ११ । पूर्ण । वेष्टन नं० ५८५ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

५५४. नेमिव्याहलो—हीरा । पत्र संख्या—११ । साङ्ग—१६५४ इन्द्र । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । रचना काल—सं० १८४८ । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ११५० ।

विशेष—इसमें नेमिनाथ के विनायक की घटना का विस्तृत वर्णन है—परिचय निम्न प्रकार है—

साल अठारसै परमाथ, तापर अढतालीस वस्त्राय । पोष कृपा पाँचै तिथि आधि, वारवहस्पति मन में आय ॥८०॥
बूंदी को छै महासुषान, ती मै नेम जिनालय जान । ती मध्ये पाँचत बर माग, रहै कवीश्वर उपमा गाय ॥८१॥
ताकी नाउ जिनय की वास, महा बिचरण रहत उदास । सखि हीरो छै ताको नाम, ती कर्या नेम गुण गाना ॥८२॥
इति श्री नेमि व्याहलो संपूर्ण । लिखत—चम्पाराम । छन्द संख्या = २ है ।

पत्र ५ से आगे नीनती सम्भ्राय, रतन साङ्ग, ज्ञानचौपडसम्भ्राय, माणकचन्द कृत, धूलोट के श्रद्धम देव का पद—तथा पेमराज कृत राजकुल पञ्चीषी—और है ।

५५५. नेमिनाथ के दश भव । पत्र संख्या—४ । साङ्ग—१०६५ ईश्व । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८७४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ५७५ ।

५५६. पुरथाप्रवकथाकोष—दौलतराम । पत्र संख्या—२६६ । साङ्ग—११५६ ईश्व । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । रचना काल—सं० १७७७ मादवा बुद्धी ५ । लेखन काल—सं० १८८८ । पूर्ण । वेष्टन नं० ५६३ ।

विशेष—श्लोक संख्या = ००० है । अंग महात्मा हरदेव लेखक से लिया आ । ४ प्रतिष्ठा और है ।

५५७. पुरन्दर चौपई—अ० मालदेव । पत्र संख्या—१४ । साङ्ग—६६५४ ईश्व । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ८६८ ।

विशेष—

अन्तिम पद्य—सील बढी सवि धर्म मै अत पाली रे ।

अनुभव कोठ प्रधान । सी०

रतनागरी कछु पाईये । चित्त रतन समान । सी० ॥ ७३ ॥

माव देव सूरि गुण नीली । अ० । बड गङ्ग कमल दिगद ॥ सी० ॥

तासु सीस हम कहइ । अ० । मालदेव आणंद ॥ सी० ॥ ७४ ॥

अगर्वा मील तो जे कशी । अ० अनुमोदीजै तेय । सी०

ओ विरुद्ध किपी कशी अ० । मोछा दुक्कड तेय । सी० ॥ ७५ ॥

५५८. राजाचन्द्र की चौपट्टी । पत्र संख्या-५१ । साइज-१४×१० इंच । भाषा-हिन्दी ।
विषय-कथा । रचना काल-४ । लेखन काल-सं० १=१२ आक्थ जुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन नं० १६८ ।

विशेष—प्रारम्भ के पत्र नहीं हैं । पत्र ३५ से फुटकर पद्य हैं ।

५५९. राजुलपन्चीसी । पत्र संख्या-७ । साइज-६×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-
कथा रचना काल-४ । लेखन काल-४ । अपूर्ण । वेष्टन नं० १३६ ।

विशेष—७ से आगे पत्र नहीं हैं ।

५६०. व्रतकथाकोशभाषा—सुशालचन्द्र । पत्र संख्या-६७ । साइज-१२½×६ इंच । भाषा-
हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । रचना काल-सं० १७=३ । लेखन काल-४ । अपूर्ण । वेष्टन नं० १६२ ।

विशेष—निम्न कथायें हैं ।

(१) जेष्ठजिनव्रतकथा (२) आदित्यवारव्रतकथा (३) सप्तपरमस्थानव्रतकथा (४) मुकुट सप्तमीव्रतकथा
(५) अक्षयनिधिव्रतकथा (६) षोडशकारणव्रतकथा (७) मेघमालाव्रतकथा (८) चन्दनषष्ठीव्रतकथा (९) लब्धि-
विधानव्रतकथा (१०) पुरन्दरकथा (११) दशलक्ष्यव्रतकथा (१२) पुष्पाजिह्वितकथा (१३) आकाशपंचमीव्रतकथा (१४)
मुक्तावलीव्रतकथा (१५) निर्दोषसप्तमीव्रतकथा (१६) सुगंधदशमीव्रतकथा ।

५६१. रोहिणी कथा । पत्र संख्या-६ । साइज-५½×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा ।
रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०५१ ।

५६२. बैताल पन्चीसी । पत्र संख्या-६-६२ । साइज-७×६ इंच । भाषा-हिन्दी (गद्य) ।
विषय-कथा । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । अपूर्ण । वेष्टन नं० १७५ ।

विशेष—अधस्ता जीर्ण है । आदि तथा अन्तिम पृष्ठ नहीं हैं । छठी कथा का प्रारम्भ निम्न प्रकार है ।

अथ छठी बाराता लिखंत ॥ तब राजा वीर विक्रमादीत फेरि जाये सीन्धु के रुख जाये चदयो अर अतग ने उतारि
फरि ले नल्यौ ॥ तब राह में अतग बैताल बोल्हो ॥ हे राजा रात्रि की सभौ राह दुरि ॥ पैहौ कटे नही ॥ कथा बाराता कह्योस्या
राह कटे सो हं येक कथा कहैं छू ॥ तु सुणि ॥

५६३. शनिश्चरदेव की कथा । पत्र संख्या-१३ । साइज-६½×५½ इंच । भाषा-हिन्दी ।
विषय-कथा । रचना काल-४ । लेखन काल-सं० १८५२ माघ सुदी २ । अपूर्ण । वेष्टन नं० १०३६ ।

विशेष—सेवाराव के पठनार्थ नन्दलाल ने प्रतिलिपि कारवाई की ।

५६४. शीलकथा—भारामल्ल । पत्र संख्या-३३ । साइज-७×६ इंच । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-
कथा । रचना काल-४ । लेखन काल-१६८५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६०० ।

विशेष—सं० १८८६ की प्रति की नकल है । कापी साइज है । दो प्रति और हैं ।

५६५. शीलतरंगिनीकथा—अखैराम लुहाडिया । पत्र संख्या—८२ । साइज—६×६ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—कथा । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८२५ भाद्र शुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६०१ ।

विशेष—आतराम मंगवाल ने प्रति लिपि की थी ।

५६६. समपरमस्थान विधान कथा—श्रुतसागर । पत्र संख्या—६ । साइज—१२×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८३० वैशाख शुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६८ ।

विशेष—पं० गुलाबचन्द ने प्रतिलिपि की । संस्कृत में कठिन शब्दों के अर्थ भी हैं । एक प्रति और है ।

५६७. समव्यसन कथा—आ० सोमकीर्ति । पत्र संख्या—७६ । साइज—१० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । रचना काल—सं० १९२६ भाद्र शुदी १ । लेखन काल—सं० १७८१ । पूर्ण । वेष्टन नं० १६७ ।

५६८. सम्यक्त्वकौमुदी—मुनिधर्मकीर्ति । पत्र संख्या—१२ से ६२ । साइज—११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । रचनाकाल—X । लेखन काल—सं० १६०३ आषाढ शुदी ५ । अपूर्ण । वेष्टन नं० १३६ ।

विशेष—किशनदास अग्रवाल ने प्रतिलिपि कराई थी । शंकरदास ने प्रतिलिपि की थी ।

५६९. सम्यक्त्वकौमुदी कथा भाषा—..... । पत्र संख्या—४० । साइज—१ $\frac{१}{२}$ ×६ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—कथा । रचना काल—X । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन नं० १८३ ।

विशेष—४० से आगे पत्र नहीं है ।

५७०. सम्यक्त्वकौमुदी कथा—जोधराज गोदीका । पत्र संख्या—५६ । साइज—१०×६ इंच । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—कथा । रचना काल—सं० १७२४ फाल्गुन शुदी १३ । लेखन काल—सं० १८३० कार्तिक शुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ५८२ ।

विशेष—हरीसिंह टोंग्या ने चन्द्रावती के रामपुरा में प्रति लिपि की । एक प्रति और है ।

५७१. सम्यग्दर्शन के आठ अंगों की कथा—..... । पत्र संख्या—६ । साइज—१०×४ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० २८० ।

५७२. सुगन्धदशमीव्रत कथा—नयनानन्द । पत्र संख्या—८ । साइज—१०×४ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—वपमंश । विषय—कथा । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १५२४ भाद्र शुदी ६ आदिवार । पूर्ण । वेष्टन नं० ५८१ ।

विशेष—इति सुगन्धदशमी दुजिय संधि समाप्ता ।

५७३. सिद्धचक्रव्रत कथा—नथमल । पत्र संख्या—११ । साइज—१२×७ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय-कथा । रचना काल-५ । लेखन काल-५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ५२१ ।

५७४. हनुमंत कथा—ब्र० रायमल्ल । पत्र संख्या-७३ । साइज-११×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-हिन्दी ।

विषय-कथा । रचना काल-सं० १६१६ । लेखन काल-५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६०६ ।

विशेष—२ प्रतियाँ और हैं ।



विषय-व्याकरण शास्त्र

५७५. जैनेन्द्र व्याकरण—देवनन्दि । पत्र संख्या-४६६ । साइज-११×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-संस्कृत ।

विषय-व्याकरण । रचना काल-५ । लेखन काल-५ । अपूर्ण । वेष्टन नं० २०८ ।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है । प्रारम्भ के ३० पत्र जीर्ण हैं । एक प्रति और है वह भी अपूर्ण है ।

५७६. प्रक्रियारूपावली—पं० रामरत्न शर्मा । पत्र संख्या-८६ । साइज-११×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-५ । लेखन काल-५ । पूर्ण । वेष्टन नं० १६ ।

५७७. महीभट्टी—भट्टी । पत्र संख्या-२ से २८ । साइज-१०×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-५ । लेखन काल-५ । अपूर्ण । वेष्टन नं० ७०० ।

५७८. शब्दरूपावली । पत्र संख्या-५६ । साइज-११×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-५ । लेखन काल-५ । अपूर्ण । वेष्टन नं० ७०४ ।

५७९. सारस्वतप्रक्रिया—अनुभूति स्वरूपाचार्य । पत्र संख्या-४६ । साइज-१० $\frac{1}{2}$ ×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-५ । लेखन काल-सं० १६६६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ८०३ ।

विशेष—एक प्रति और है ।



विषय—कोश एवं छन्द शास्त्र

५८०. अमरकोश—अमरसिंह । पत्र संख्या—२५ । साइज—११×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । रचना काल—X । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन नं० १३४ ।

५८१. एकाक्षर नाममाला—सुधाकलश । पत्र संख्या—४८ । साइज—११×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० १३६ ।

५८२. छन्दरत्नावली—हरिराम । पत्र संख्या—२४ । साइज—११×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—छन्द शास्त्र । रचना काल—सं० १७०८ । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० १११ ।

विशेष—कुल २११ पद्य हैं—

अंतिम—अंश छंद रत्नावली सारथ याको नाम ।

बूझन भरती तैं मयों कहै दाश हरिराम ॥२११॥

इति श्री छंद रत्नावली संपूर्ण ।

रागनभनिधीचंद कर सो समत सुमजानि ।

काष्ठण बुद्धी नयोदरी मांहुकिछी सो जानि ॥

५८३. छन्दशतक—कवि बृन्दावन । पत्र संख्या—३५ । साइज—८½×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—छन्द शास्त्र । रचना काल—सं० १८८८ माघ बुद्धी २ । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०३ ।

५८४. नाममाला—धनंजय । पत्र संख्या—१६ । साइज—१०×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८३१ चैत बुद्धी १४ । पूर्ण । वेष्टन नं० १३७ ।

विशेष—स्त्रीवसिंह के शिष्य खुशालचन्द्र के प्रठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

५८५. रूपद्वीपपिगल—जैकुण्ठ । पत्र संख्या—१० । साइज—१०×३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—छन्दशास्त्र । रचना काल—सं० १७७६ भाद्रपद सुद्धी २ । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ५७३ ।

विशेष—रचन का आदि अन्त माग निम्न प्रकार है—

प्रार्थन—सारव माता तुम बड़ी बुद्धि देहि दर हाल ।

पिगल की छाया लिये बनू आवन चाल ॥१॥

गुरु गणेश के चरण गहि द्विये धारके बिष्णु ।

कुंदर भवानीदास का छगत करै जै किष्ण ॥२॥

रूप दीप परगट करूँ भाषा बुद्धि समान ।
 बालक तूँ सुख होत है उपजै अक्षर ज्ञान ॥३॥
 प्राकृत की बानी कठिन भाषा सुगम प्रतिल ।
 कृपाराम की कृपा तूँ कंठ करै सब शिष्य ॥४॥
 पिगल सागर सम कछो बंदा भेद अपार ।
 लघु दीरघ गण अगण का भरनूँ सुद्धि विचार ॥५॥

अंतिम— दीहा—शुण चतुराई बुद्धि लहै मला कहै सब कोइ ।
 रूप दीप हिरदै धरै सो अक्षर कवि होय ॥
 सोरठा—निज पुढकरण न्यात तिस में मोत कटारिया ।
 सुनि प्राकृत सों बात तैसे ही भाषा करी ॥
 दीहा—पापन परयो चाल सब, जैसा उपजै बुद्धि ।
 मूल भेद जाको कछो, कछो कबीश्वर सुद्ध ॥
 संवत सत्रहसै बरसे और बहत्तर पाय ।
 मादौ सुदी दुतिया गुरु मगो ग्रंथ सुखदाय ॥६॥

॥ इति रूपदीप पिगल समाप्त ॥

५८६. श्रुतबोध—कालिदास । पत्र संख्या—५ । साइज—६×५ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—छन्द शास्त्र । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८६८ । पूर्ण । प्रेस नं० ६०१ ।

विषय—नाटक

५८७. ज्ञानसूर्योदय नाटक—वादिचन्द्रसूरि । पत्र संख्या—२२ । साइज—११×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—नाटक । रचना काल—सं० १६४८ भाव सुदी ८ । लेखन काल—सं० १६८८ जेष्ठ सुदी ६ । पूर्ण । प्रेस नं० १६५ ।

विशेष—मधुक नगर में ग्रंथ रचना हुई । जोशी राधो ने मौजमाबाद में प्रति लिपि की ।

५८८. ज्ञान सूर्योदय नाटक भाषा—पारसदास निगोत्या । पत्र संख्या—४४ । साइज—१० १/२ × ७ १/२ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—नाटक । रचना काल—सं० १६१७ । लेखन काल—सं० १६३६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४०२ ।

५८९. प्रबोधचन्द्रोदय—मल्ल काव । पत्र संख्या—२५ । साइज—८ × ६ । भाषा—हिन्दी । विषय—नाटक । रचना काल—सं० १६०१ । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ८६६ ।

विशेष—इस नाटक में ६ अंक हैं तथा मोह विवेक युद्ध कराया गया है । अन्त में विवेक की जीत है । बनारसी-दास जी के मोह विवेक युद्ध के समान है । रचना का आदि अन्त भाग इस प्रकार है—

प्रारंभिक पाठ—अमिनंदन परमारथ कीयो, अह हूँ गलित ज्ञान रस पीयो ।

नाटिक नागर चित मैं बस्यौ, ताहि देख तन मन हुलस्यौ ॥१॥

कृष्ण भट्ट करता है जहाँ, गंगा सागर मेटे तहाँ ।

अनुमै को घर जानें सोइ, ता सम नाहि विवेकी कोई ॥२॥

तिन प्रबोधचन्द्रोदय कीयो, जानौ दीपक हाथ ले दीयो ।

अर्थ सूर उगारि स्वाद, कायर ओइ करे प्रतिवाद ॥३॥

इन्द्रो उदर परायन होइ, कबहु पै नहीं सीझी सोइ ।

पंच तत्व अवगति मन धास्यो, तिहि साधनाटिक विस्तारयो ॥४॥

काम उवाच—जो रति तू बूझति है मोहि, व्यौरो समै सुनाऊं तोहि ।

वै विमात मैया है मेरे, ते सब सुजन लागैं तेरे ॥

पिता एक माता द्वै गाऊँ, यह व्यौरो आगे समझाऊं ।

ब्यो राधो अरु लंकपति राज, यो हम ऊन भयो जूझ को पाऊ ॥

विवेक—

श्री विवेक सैन्याह कराई, महाबली मनि कही न जाई ।

न्याय शास्त्र बेगि पुलाया, तासौं कहीबसीठ पठाया ॥

तब वह गयो मोह के पास, बोलन लागै बचन उदासा ।

भयुरादासनि रति जो कीजै, मागैं ते विरला सो जीजै ।

राइ विवेक कही समझाई, ए व्यौहार तुम छोड़ो माई ।

तीरथ नदी देहुरे जेतै, महापुरुष के निरखे ते ते ॥

या रतुम न सतावै काही, पश्चिम खुरासान को जाही ।

न्याय विचार कही यो चाता, अतिमै ओष न अंग समाता ॥

अंतिम पाठ—

पुरुष उवाच—तब आकास भयो जैकाश, और समै मिटि गयौ विचार ।
 पुरुष प्रकट परमेश्वर आहि, तिसौ विवेक जानियो ताहि ॥
 अब प्रभु भयो मोक्षि तन धरिया, चन्द्र प्रबोध उदै तब करीदा ।
 सुमति विवेक सरधा साति, काम देव कारन कीं काति ॥
 इनकी कृपा प्रसन्न मन भयो, जोहो आदि सोइ फिरि हुवो ।
 विष्णु मक्ति तेरे पर सारा, कृत कृत भयो मिथ्यो अनुवारा ॥
 अब तिह संभ रहैगो पृथी, हौं भयो ब्रह्म विसरीयो देही ।
 विष्णु भक्ति तू पहुँची आह, कीयो अनन्द जु सदा सहाइ ॥
 अब चिरकाल के मनोरथ पूजे, गयो शत्रु साल है दूजे ।
 जो निरवधि वासना होइ, तातैं प्यारा औरन कोइ ॥
 अर्द्ध त राज अभैम पदलथो, अचिंतै चितवत अचित भयो ।
 जा सिर ऊपर सनक सनंदा, अरु वसिष्ठ वेदै ताहि वंदा ।
 कृष्ण भट्ट सोइ रस गायन, सधुसाधसे सारु सोई वाता ॥
 वंदे गुरु गोविन्द के पाइ, मति उनमान कया सो गाइ ।

इति श्री मङ्गलकवि विश्विचते प्रबोधचन्द्रोदय नाटके षष्ठमां अंक समाप्त ।

५६०. मदनपराजय भाषा—स्वरूपचन्द्र बिलाला । पत्र संख्या—६३ । साङ्ग—११×७ १/२ इंच ।
 भाषा—हिन्दी । विषय—नाटक । रचना काल—सं० १६१८ संवत्सिर सुदी ७ । लेखन काल—सं० १६१८ । अष्टाद सुदी ७ ।
 पूर्ण । वेष्टन नं० ४०१ ।

विशेष—संवत् शत उगणीस अरु अधिक अठारा माहि ।

मार्गशीर्ष सुदी सप्तमी दीतवार सुखदाहि ॥

तादिन यह पूरण काथो देश वचनिका माहि ।

सकल संभ भंगल करो ऋद्धि वृद्धि सुख दाय ॥

इति मदनपराजय ग्रंथ की वचनिका संपूर्ण । सं० १६१८ का मित्ती अष्टाद सुदी ७ शुक्रवार संपूर्ण ।

लेखन काल संभवतः सही नहीं है ।

५६१. मदनपराजय नाटक—जिनदेव । पत्र संख्या—४१ । साङ्ग—१२ १/२×८ १/२ इंच । भाषा—संस्कृत ।
 विषय—नाटक । रचना काल—४१ । लेखन काल—सं० १७८१ । माह सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन नं० २५ ।

विशेष—असवा नगर में आचार्य ज्ञानकोर्ति तथा पं० त्रिलोकचन्द्र ने मिलकर प्रतिलिपि की ।

५६२. मोहविवेक युद्ध—बनारसीदास । पत्र संख्या-६ । साइज-१०×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-नाटक । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ८७२ ।

विषय-लोक विज्ञान

५६३. अकृत्रिम चैत्यालयों की रचना..... पत्र संख्या-१० । साइज-११×७ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-लोक विज्ञान । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६६ ।

५६४. त्रिलोकसार बंध चौपई—सुमतिकीर्ति । पत्र संख्या-२० । साइज-१० $\frac{१}{२}$ ×५ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-लोक विज्ञान । रचना काल-४ । लेखन काल-सं० १८१३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ८०७ ।

विशेष—

अंतिम —अतीत अमागत वर्तमान, सिद्ध अनन्ता गुणना धाम ।

मागे भगति समर सदा, सुमति कीरति कहति अथतह कदा ॥३०॥

मूलसंघ गुरु लक्ष्मीचंद मुनीदत्त सपादि भीरजचंद ।

मुनिन्द ज्ञानभूषण तल पाठि चंग प्रभाचन्द बंदो मलरंगि ॥३१॥

सुमति कीरति सूरि घर कहिसार त्रैलोक्य सार धर्म ध्यान विचार ।

जे भणि गणि ते सुखिया पाय प्यशा रूपधरी सुमति जाय ॥३४॥

५६५. त्रिलोक वर्णन कथा—लखसेन । पत्र संख्या-२१८ । साइज-८ $\frac{१}{२}$ ×६ इंच । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-लोक विज्ञान । रचना काल-सं० १७१६ । लेखन काल-सं० १८२३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३७४ ।

विशेष—यह प्रति संवत् १७३६ की प्रति से लिपि की गई है ।

५६६. त्रिलोकसार—आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र संख्या-१८७ । साइज-१० $\frac{१}{२}$ ×५ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-लोक विज्ञान । रचना काल-४ । लेखन काल-सं० १६४६ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०२ ।

विशेष—टीकाकार माधवचन्द्र त्रैविद्याचार्य है । जयपुर में प्रतिलिपि हुई ।

एक प्रति और है ।

५६७. त्रिलोकसार भाषा.....। पत्र संख्या-२ से १० । साइज-११ $\frac{1}{2}$ ×६ इंच । भाषा-हिन्दी ।
विषय-लोक विज्ञान । रचना काल-५ । लेखन काल-५ । अपूर्ण । बेष्टन नं० ६३१ ।

५६८. त्रिलोकसार भाषा—उत्तमचन्द्र । पत्र संख्या-२२५ । साइज-१४ $\frac{1}{2}$ ×७ इंच । भाषा-हिन्दी ।
विषय-लोक विज्ञान । रचना काल-सं० १=४१ ज्येष्ठ जुदी १२ । पूर्ण । बेष्टन नं० ७८१ ।

विशेष --दीवान श्योजीरामजी की प्रेरणा से ग्रंथ रचना की गयी थी जैसा कि ग्रंथ कर्ता ने लिखा है—

अंतिम दोहा—सबन् अष्टादश सत इकतालीस अविकारि ।

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष द्वादशी विचारे परमानि ॥

त्रिलोकसार भाषा लिख्यो उत्तमचन्द्र विचारि ।

भूखो होऊं तो कलु खीन्खो सुकवि सुधारि ॥

दीवान श्योजीराम यह कियो हृदय में ज्ञान ।

पुस्तक लिखाय अवस्था सुगुं राखो निस दिन ध्यान ॥

॥ इति ॥

ग्रंथ— प्रथम पत्र—“तहा कहिहू है ।” मेरा ज्ञान स्वभाव है सो ज्ञानावरण के निमित्त तैं हीन होय मति श्रुत
पर्याय रूप भया है तहा मति ज्ञान करि शास्त्र के अक्षरनि का जानना भया । बहुरि श्रुतज्ञान का अक्षर अर्थ के वाच्य वाचक
सम्बन्ध है । ताका स्मरणतैं तिनके अर्थ का जानना भया । बहुरि मोह के उदयतैं मेरे उपाधिक भाव रागादिक पाइये हैं ।

५६९ त्रैलोक्यदर्पण.....। पत्र संख्या-२६ । साइज-११ $\frac{1}{2}$ ×६ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-संस्कृत ।
विषय-लोक विज्ञान । रचना काल-५ । लेखन काल-५ । अपूर्ण । बेष्टन नं० ६७८ ।

विशेष—भीच २ में धियों के लिए बगड़ छोड़ी हुई है ।

६००. त्रैलोक्यदीपक—वामदेव । पत्र संख्या-८६ । साइज-११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय—
लोक विज्ञान । रचना काल-५ । लेखन काल-सं० १=१२ भाद्र जुदी ५ । पूर्ण । बेष्टन नं० १०० ।

विशेष—पं० छुशालचन्द्र ने सातसीट में प्रतिलिपि की ।

६०१. प्रत नं० २ । पत्र संख्या-६५ । साइज-११×५ $\frac{1}{2}$ इंच । लेखन काल-सं० १६१६ अषाढ सुदी ५ ।
पूर्ण । बेष्टन नं० १०१ ।

विशेष—पत्र सं० २७ तक नवीन पत्र है इससे आगे प्राचीन पत्र है । प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

स्वस्ति सं० १५१६ वर्षे अषाढ सुदी ६ भीमवासरे कुंभुगुं शुभ स्थाने शाकीभूपति प्रजाप्रतिपालक सम्-
सत्त्वान्विजयराज्ये ॥ श्रीमूलान्वये बलाकारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुन्दकुन्दचार्यान्वये स० पद्मनाद देवा स्तुत्यते स० श्री शुभ-

चन्द्र देवास्तद् पञ्चालकाय पदतर्कचूडामणि महारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तद् शिष्य मुनि सहस्रकीर्तिः तत्शिष्य न० तिरुणा
खडेलवालान्त्रये ओष्टि गोत्रे सं भोरना भार्या माहुस्तत्पुत्र सं० भारथोरैव संघवी पदमानंद भ्राता कल्हाण्यः सं० पदमा भार्या
पद्म श्रीः पुत्राः त्रयाः हेमा, गूजर, महिराज । कल्हा भार्या जाजी पुत्र घोराज पुत्रपाल एतौ पंचमी उद्यापन निमित्तं ईदं
प्रेक्षोक्पदीनकं नामा कमचय निमित्तं सद्वस्त्रे प्रदत्तं ।



विषय—सुभाषित एवं नीति शास्त्र

६०२. उपदेशशतक—वनारसीदास । पत्र संख्या—३५ । साइज—८×४ $\frac{1}{2}$ । भाषा—हिन्दी । विषय—
सुभाषित । रचना काल—सं०—X । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ५५३ ।

६०३. गुलालपञ्चमीसी—ब्रह्म गुलाल । पत्र संख्या—४ । साइज—१०×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
सुभाषित । रचना काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ५७४ ।

६०४. जैनशतक—भूधरदास । पत्र संख्या—२० । साइज—८×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
सुभाषित । रचना काल—सं० १७०१ । पौष शुद्धी १३ लेखन काल—सं० १८१४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ५११ ।

विशेष—उत्तमचन्द्र मुशरफ़ श्री भार्या ने चढ़ाया ।

६०५. नन्दवत्तीसो—मुनि विमलकीर्ति । पत्र संख्या—११ । साइज—१०×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—हिन्दी ।
(पद्य) । विषय—नीति शास्त्र । रचना काल—सं० १७०८ । लेखन काल—सं० १७५० । पूर्ण । वेष्टन नं० ५१२ ।

विशेष—३२ प्रकाश तथा ३०१ पद्य हैं ।

६०६. नीतिशतक—चाणक्य । पत्र संख्या—२१ । साइज—६×६ । भाषा—संस्कृत । विषय—नीति शास्त्र ।
रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ११३० ।

६०७. बुधजन सतसई—बुधजन । पत्र संख्या—११ । साइज—८ $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
सुभाषित । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ५४३ ।

६०८. भावनावर्णन—..... पत्र संख्या—३ । साइज—१३×६ । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—सुभाषित । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ११३३ ।

विशेष—हेमराज ने प्रतिलिपि की थी

६०९. रेखता—बन्नीराम । पत्र संख्या—६ । साइज—६×३½ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ११४२ ।

विशेष—स्फुट रचनाएँ हैं ।

६१०. सद्भाषितावली भाषा—..... पत्र संख्या—३० । साइज—१२½×४½ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ७०६ ।

विशेष—लेखक का मूल प्रती हो है, अंत अंगीकृत है । पत्र संख्या १०५ है । मंष के मूल कर्ता भ० सक्शर्कीर्ति हैं ।

६११. सुबुद्धप्रकाश—धानसिंह । पत्र संख्या—१४६ । साइज—१०½×६½ इंच । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—सुभाषित । रचना काल—सं० १=४७ फागुण बुद्धी ६ । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० =३० ।

रचना का आदि अन्त म.म निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ केवल ज्ञानानंद भय परम पूज्य अरहंत ।

समोत्तरण लक्ष्मी सहित राजे नमूँ महंत ॥१॥

अष्ट कर्म अरि निष्ट कर अष्ट महागुण पाय ।

सिष्टि इष्ट अष्ट धरा लही सिद्ध पद जाय ॥२॥

पंचसार आचार सुलि-गुण छत्तीस निवास ।

सिखा दिक्षा देत है आचारज शिव वास ॥३॥

अन्तिम पाठ—श्रीमति साति उनाथ जी साति करी निति आप ।

विघन हरी मंगल करौ तुम त्रिभुवन के बाप ॥६०३॥

साति सुमुद्रा राखी साति चिस करि तोड़ि ।

पूजौ बंदौ माव सौ खेम कुसल करि भीति ॥६०४॥

देस प्रजा भूपति सकल ईत मीत करि दूर ।

सुख संपति धन धाम जस किया भाव रख पूर ॥६०५॥

कागुन बदि षष्ठी सुगुर ठारासत सैताल ।

पूरथ ग्रैव सुसांत रख विषै कियो गुनमाल ॥६०६॥

पटिगी सुनिसी वांचसी करसी चरवा सार ।

मन अछित फल पायसी तिनकी करौ जहार ॥६०७॥

इति श्री सद्बुद्धि प्रकाश भाषा श्रव्य जिनसेवक चानसिंह विरचित संपूर्ण ।

कवि अवस्था वर्णन—मरत जेय में देस हूँदारि । तामै बन उपवागि रसाल ॥

नदी बावडी कूप तडाग । ताकौ देखत उपजै रान ॥

कुक्कुट उडि बैठे जिहि ठाम । यो समवरती तामै गाम ॥

धन फल गोधन पूगत लोग । तपसी चौमासे दे ओग ॥

ता मधि अंबावति पुरसार । चौगिरदा परवत अधिकार ॥

बस्ती तल उपरि सांचनी । ज्यो दाडिम बांजन तै बनी ॥

ताकौ जैसिध नामा भूप । सूरज वंस निषै हूँ अनूप ।

व्याथवंत बुधिवंत बिसाल । परजापालक दीन दयाल ॥

दाता सूर तेज जिम मान । ससि अहस्ता दीज्यो जसरवानि ॥

हय गय रथ सिवकादि अपार । अत मंत्री प्रोहित परिवार ॥

हदि सौ बिमौ कुबेर मंडार । बंदु समूह तिगा बहुवार ॥

पं बत कदि भाटादि विसेख । षट दरमन सबही कौ भेष ॥

अपनै अपनै धर्म सूचलै । कोऊ काहू पै नही मिलै ॥४३॥

पणि सिव धर्मो भूपति जान । मंत्री जैनी सुखि अधिकारि ॥

जैनी सिव के धाम उर्तंग । सिखर धुजा हत कलस सुचंग ॥

राग दोष आपस में नाहि । सबकै प्रीति माय अधिकारि ॥

सब हो भूपन मै सिरदार । छत्रपती बलि इन अनुसार ॥

दुर्तिग पुरी सांगावति जानि । दक्षिण दिसि षट कोस प्रमान ॥

पुरी तले सरिता मनुहार । नाम सुरक्षती सुख जलधार ॥४४॥

नगर लोक धनधान अनार । विविध माति करि है व्योहार ॥

ऊचे सिखर कलस धुज जहां । पंच जैन मन्दिर हैं तहां ॥

धर्म दया सज्जन गुन खीन । जैनी बहौत बसौ परवीन ॥

वंस खखेखखल मम गीत । ठेल्या बहु परिवारी गीत ॥

न्यारी वास हमारी सही । हेमराज दादो मम कही ॥

पुनि अनुसारि सकल घर मध्य । सामग्री बीबै सब रिद्धि ॥

दोहा—बडौ मलूक सुचंद सुत, दूजौ मोहन राम ।

सूर्यकर्ण तीजौ कसौ चौबौ साहिब राम ॥

सबकै सुत पुत्री घना मोहन राम सुतात ।

मेरौ जन्म सांगावति मांहे मयौ अवदात ॥

अबावति सागावति नगर बीच जै भूष ।
 आप बसायौ चाहि करि जैपुर नाम अनूप ॥
 सूत बंध सबही किये हाट सुघट बाजार ।
 मिंदर कोटि सुकंभरे दरवाजे अधिकार ॥
 सतखंभौ खु बनादयो, अपनै रहनै काज ।
 बिब महल रचना करी, धाग ताल महाराज ॥
 साहूकार बुलाइया लेख भेज बहु देख ।
 हासिल बांध्यौ ग्याय जुत लोभ अधिक नहि लेख ॥
 सुखी भये सबही जहां अधिक चल्नौ ध्यौपार ।
 सागावती आवावती उजरी तब निरवार ॥६४॥
 आय बसै जैपुर विनै कोन्है घर अरु हाटि ।
 निज पुनि के अनुसार तैं सुखित भयौ सब ठाठ ॥६५॥
 षोडश संवत्सर भयौ सब ही कौ सुख बात ।
 जैसिह लोकंतर भयो पिछली सुनि अब बात ॥
 सब ईसर सुख भूपती ईसर सिद्ध सु नाम ।
 अति उदार प्रायस बड़ी सब ही कौ आराम ॥
 ग्यायबंत सबही सुखी डड मूल कछु नहि ।
 काहु' कौ दोन्है नहीं चुगलाचार न रहाय ॥
 काल दोष तैं नाच जन संमराखि बछनारि ।
 तीन वर्ण के ऊंच जन तिनकौ मानधराय ॥
 आप हठी काहु' तनी मानी नाहीं बात ।
 पिल्ले मंत्र अकी जिके कियो भूप को घात ॥

अडिगल —

दस्त्रिया लियो बुलाय गांव बाहिर रहे ।
 मिल कै जाहि दिवान दाम देने कहे ॥
 लधु धाता माधन कू' बेगि मिलाय कै ।
 लेख भोजिया राज करौ तुम आय कै ॥
 माधन आगै सिव धरसी मुसिया भयो ।
 जैन्यासौं करि दोह वच में लै लियो ॥
 देव धर्म गुरु श्रुत कौ विनय विचारियो ।
 कीयो नाहि विचारि पाप विस्तारियो ॥

- बोहा— भूप अरथ समझ्यो नहीं मंत्री के बसि होय ।
 बंद सहर में नाखियो दुखी मये सब लोय ॥
 बिक्रिध भाति धन घटि गयी पायौ बहुत कलेस ।
 दुखी होय पुर को तजो तब ताको पर देस ॥
- सारथ— मरघपुर में आय कछु काल बैठे रहे ।
 पुनि जयपुर में जाय विणज गणि रहवो करै ॥
 माधव के दरबार विणज कियो सुख सौ रहे ।
 आगे सुनि चित धारि माधो की जो वारता ॥६६॥
- अधिरथ— दुखी रोग धन हीन होय परगति गयी ।
 जस पुत्र पृथ्वी हरि राजा पद गयी ॥
 हंसा करि लघु आपे वृत्ति छु लैगयी ।
 अनुजराज परतापसिंह पीछे मयी ॥
 सिवमत जिनमत देवधन विप्र अतिथि जो कोय ।
 मह्य कियो बसि लौम ते पाप पुण्य नहि जोय ॥
 ई' अन्याय के जोग ती दुखी लौम हम जोय ।
 हरे उदस पुर छौं बियो मुख इ' छ'या उर होय ॥
- सोरठा— जादौ बंस विमल नगर करोरी को पती ।
 नाम मूप गोपाल, विणज हमारी को सदा ॥
 पीछे तुरखमपाल बैठ्यो वास इहां कर-थो ।
 राख्यो मान विमल, हाटि सुघट उद्यम कियो ।
 मानिकपाल नरेम तुरसमपाल सुपद लयौ ।
 मंद कषाय महेस, राग दोस मध्य रत है ॥
 जाके शत्रु न कोय, सबसी मिलि राज छु करै ।
 रैत सुसी कछु जोय, भिरता पातै इन करी ॥
 पिता रखी इहि ध्यान, हम जैपुर में ही रहे ।
 लघु आता सुत जानि, तिन व्योपार कियो धनौ ॥
 नैन सुख है नाम, नानिग राम छु तनुज है ।
 बहु स्यानौ अभिराम, राजदुकार में प्रगट है ॥
 मर्यांतर में तात, गयी छु टीकौ करण की ।

आये तब तैं आत, इहां रहे बिरता की ॥७२॥
 देवल साधरमी जहां पूजा धर्मक आन ।
 परायन खान सुपान की, धिति संगति बिद्वान ॥
 औसी अंकुश रूप जो कीजे सुबुधि प्रकाश ।
 माधामय घर बहु रहति रहैसि थामैं मासि ॥७३॥
 नैना को लघु आत, नाम गुलाब सु जासु को ।
 श्रुत सुनि के हरषात, सुबुधि दैन को श्रुत ल्यौ ॥

६१२. सुभाषित । पत्र संख्या-६ । साइज-४×५ इंच । विषय-सुभाषित । रचना काल-X ।
 लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ११५४ ।

६१३. सुभाषितरत्नावलि—भ० सकलकीर्ति । पत्र संख्या-१८ । साइज-१०×४½ इंच । भाषा-
 संस्कृत । विषय-सुभाषित । रचनाकाल-X । लेखन काल सं० १६८० वैशाख सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० १२० ।

बीच २ में नये पत्र भी लगे हैं ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है —

विशेष—संवत् १५८० वर्षे वैशाख सुदी ६ गुरौ श्री टोडानग्रमण्ये राजाधिराजमुकुटमणिमूर्त्यसेनराज्ये श्री
 सोलंकी धंशे श्री प्रभाचन्द्र देवा तदाभाये खंडेलवालान्वये बाकुलीवालगोत्रे साह नेमदास तस्य भार्या सिंगारदे तत्पुत्र
 पासा तस्य भार्या दुतिय पुत्र साह जैला तस्य भार्या गौरादे तत्पुत्र गिराज । इदं शास्त्र लिखापितं बाई माता
 कर्म कथनिमित्तं ।

विशेष—सात प्रतियाँ और हैं । सभी प्रतियाँ प्राचीन हैं ।

६१४. सुभाषितार्णव । पत्र संख्या-१ से ४८ । साइज-१२×५ इंच । भाषा-संस्कृत ।
 विषय-सुभाषित । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ५० ।

विशेष — प्रति प्राचीन है । संस्कृत में संकेत भी दिये हुए हैं । पत्र २३ वां भाद का लिखा हुआ है ।

६१५. सुभाषितावलि भाषा । पत्र संख्या-७८ । साइज-२½×३½ इंच । भाषा-हिन्दी ।
 विषय-सुभाषित । रचनाकाल-X । लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन नं० १०२४ ।

विशेष—६७६ पद्यों की भाषा है अन्तिम पत्र नहीं है ।

प्रारम्भ—

श्री सरवत्त बम् जितलाय, गुरु सुगुरु निरग्रंथ सुमाय ।

जिन बाणी प्याउं निरकार, सदा सदाई भवि गण तार ॥१॥

ग्रन्थ सुभाषित जिन वरणयौ, ताको अरथ कहूँ एक लगौ ।
निज पर हित कारणि गुण खानि, माखूँ माया सुगह ब्रजान ॥
सीख एक सदगुरु की सार, सुणि धारौ निज निचमभारि ।
मनुषि जनम सुख कारण पाय, एसी क्रिया करहु मन लाय ॥३॥

६१६. सूक्तिमुक्तावली - सोमप्रभसूरि । पत्र संख्या-१८ । साइज-१०×४^१/_२ इंच । भाषा-संस्कृत ।
विषय-सुभाषित । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३०० ।

विशेष - = प्रतियाँ और हैं ।

६१७ सूक्ति संग्रह । पत्र संख्या-२० । साइज-११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-
सुभाषित । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १४५ ।

विशेष—जैनेतर ग्रन्थों में से सूक्तियों का संग्रह है ।

६१८. हितोपदेशवत्तीसी—बालचन्द्र । पत्र संख्या-३ । साइज-८×४^१/_२ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-
सुभाषित । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५६३ ।

विषय-स्तोत्र

६१९. अकलंक स्तोत्र । पत्र संख्या-५ । साइज-८^३/_४×४^१/_२ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-
स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६२६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६६६ ।

६२० अकलंककण्टक भाषा—सदासुख कामलीवाल । पत्र संख्या-१६ । साइज-११×५^१/_२ इंच ।
भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । रचना काल-सं० १६१५ आवण सुदी २ । लेखन काल-सं० १६३५ भाष बुदी ७ । पूर्ण ।
वेष्टन नं० ५०५ ।

६२१. आराधना स्तवन—वाचक विनय सूरि । पत्र संख्या-५ । साइज-१०^१/_२×४^१/_२ इंच । भाषा-
हिन्दी । विषय-स्तोत्र । रचना काल-सं० १७२६ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६०४ ।

विशेष—ग्रन्थ प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

श्री विजयदेव सूरिंद पटधर, तीरथ जग मङ्ग इथि जगि ।
तप गच्छपति श्री विजयप्रसूरि सूरि तेजइ भगमगइ ॥२॥
श्री हीर विजय सूरि सीस वाचक श्री कीर्तिविजय सूरि गुरु समो ।
तस सीस वाचक विनय विणयइ, धरयो जिन चोरीस मो ॥३॥
सइ सत्तर संवत् उगणसीयइ रही राते रचउ मास ए ।
विजय दसमी विजय आरया कीउ गुण अम्यासए ॥४॥
नरमव अराधना सिद्धि साधन सुकृत सीखा बिलासए ।
निर्जरा हेत इठवन रचिउ नामइ पुण्य प्रकासए ॥५॥

६२२. आलोचना पाठ । पत्र संख्या—६ से १२ । साइज—१० $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—प्राकृत ।

विषय—स्तव । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । बेस्टन नं० ६१ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । एक एक प्रति और है ।

६२३. इष्टछत्तीसी । पत्र संख्या—८ । साइज—१० $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

स्तोत्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । बेस्टन नं० १०६३ ।

६२४. इष्टछत्तीसी—बुधजन । पत्र संख्या—६ । साइज—१२×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र ।

रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । बेस्टन नं० ५२३ ।

६२५. ऋषिमंडलस्तोत्र—गौतम गणधर । पत्र संख्या—७ । साइज—८×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत ।

रचना काल—X । लेखन काल—सं० १६२५ । पूर्ण । बेस्टन नं० ६६० ।

विशेष—एक प्रति और है ।

६२६. एक सौ आठ (१०८) नामों की गुणमाला—द्यानत । पत्र संख्या—३ । साइज—८×४ $\frac{1}{2}$ इंच ।

भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १६२५ । पूर्ण । बेस्टन नं० ४६८ ।

६२७. एकीभावस्तोत्र—वादिराज । पत्र संख्या—६ । साइज—१०×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—स्तोत्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । बेस्टन नं० २६४ ।

विशेष—संक्षिप्त संस्कृत टीका सहित है । ५ प्रतियाँ और हैं ।

६२८. कल्याणमन्दिरस्तोत्र—कुमुदचन्द्राचार्य । पत्र संख्या—६ । साइज—११×६ इंच । भाषा—

संस्कृत । विषय—स्तोत्र । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८६४ । पूर्ण । बेस्टन नं० ४६७ ।

विशेष—टोक में प्रतिलिपि हुई थी । अन्त में शान्तिनाथ स्तोत्र भी है । ७ प्रतियाँ और हैं ।

६२६. कल्याणमन्दिरस्तोत्र भाषा—बनारसीदास । पत्र संख्या ११ से २६ । साइज— $10\frac{1}{2} \times 8\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८८० बंयेछ बुदी १३ । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६८० ।

विशेष—नानूलाब बज ने प्रतिलिपि की १६ से २६ तक पत्र नहीं हैं । २७ से २३ तक सोलह कारण पूजा जयमाल है ।

६२७. कल्याणमन्दिरस्तोत्र भाषा—अखयराज । पत्र संख्या—७ से २६ । साइज $10\frac{1}{2} \times 8\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—स्तोत्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ११०५ ।

६२८. चौबीस महाराज को चिन्तती—रामचन्द्र । पत्र संख्या—७ । साइज— $10\frac{1}{2} \times 8\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ८०५ ।

६२९. ज्वालामालिनी स्तोत्र । पत्र संख्या—= । साइज— $10\frac{1}{2} \times 8\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ८१७ ।

६३०. जिन दर्शन । पत्र संख्या—३ । साइज— $10\frac{1}{2} \times 8\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—स्तोत्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ५२७ ।

विशेष—प्रति हिन्दी अर्थ सहित है ।

६३१. जिनपंजरस्तोत्र—कमलप्रभ । पत्र संख्या—३ । साइज— $10\frac{1}{2} \times 8\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १६२५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ८५६ ।

६३२. जिनसहस्रनाम—जिनसेनाचार्य । पत्र संख्या—१२ । साइज— $11\frac{1}{2} \times 8\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४७६ ।

विशेष—लक्ष्मीस्तोत्र भी दिया हुआ है । दो प्रतियाँ और हैं ।

६३३. जिनसहस्रनाम—पं० आशाधर । पत्र संख्या—= । साइज— $10\frac{1}{2} \times 8\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८४६ । पूर्ण । वेष्टन नं० २८६ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

६३४. जिनसहस्रनाम टीका—पं० आशाधर (मूल कर्त्ता) टीकाकार श्रुतसागर सूरि । पत्र संख्या—१२१ । साइज— $12\frac{1}{2} \times 8\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८०४ पीष बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन नं० १२ ।

विशेष—प्रति सुन्दर एवं शुद्ध है ।

६३८. जिनसखनाम भाषा—जनारसोदास । पत्र संख्या—७ । साइज—११×११ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । रचना काल—सं० १३६८, लेखन काल—सं० १६७४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ५६० ।

६३९. जिन स्तुति । पत्र संख्या—४ । साइज—१२×११ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—स्तवन । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १६३७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ८८५ ।

६४०. दर्शन दशक—चैतनसुख । पत्र संख्या—२ । साइज—११×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ५६२ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

६४१. दर्शन पाठ । पत्र संख्या—४ । साइज—११×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ५७७ ।

विशेष—दर्शन विधि भी दी है ।

६४२. निर्वाणकाण्ड गाथा । पत्र संख्या—१२ । साइज—४×४ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—स्तोत्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ६० ।

विशेष—शुद्ध साइज है । तीन प्रतियाँ और हैं ।

६४३. निर्वाणकाण्ड भाषा—भैया भगवतीदास । पत्र संख्या—२ । साइज—८×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८२८ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०४६ ।

६४४. पद व भजन संग्रह । पत्र संख्या—७६ । साइज—१२×७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६३ ।

विशेष—जैन कवियों के पदों का संग्रह है ।

६४५. पद व भजन संग्रह । पत्र संख्या—२०६ । साइज—१२×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पद संग्रह । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६२ ।

विशेष—निम्न रागिनियों के भजन हैं—

राग भैरव,	सैरवी,	रागकली,	ललित,	सारंग,	निशाधर,	टोडी,
पत्र — १-६	१६-२२	२३-४०	४१-४६	४७-७१	७२-१०६	१०६-११४
पूरवी,	मल्हार,	ईमण,	सोढ,	भासावरी,		
११५-११८	११९-१३१	१३२-१४०	१४१-२०४	२०५		

इनके अतिरिक्त नेमिदरामवर्णन भी दिया हुआ है ।

६४६. पद संग्रह..... पत्र संख्या-४ । साइज-८×४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-इद (स्तवन) ।
रचना काल-X । लेखन काल-सं० १८४४ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०५४ ।

६४७. पद संग्रह..... पत्र संख्या-४७ । साइज-७×६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन ।
रचना काल-X । लेखन काल-सं० १७२८ । पूर्ण । वेष्टन नं० ११३ ।

६४८. पद संग्रह..... पत्र संख्या-१ से ६ । साइज-१० $\frac{१}{२}$ ×६ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-
स्तवन । रचना काल-X । लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन नं० १३३ ।

६४९. पद संग्रह..... पत्र संख्या-१ (लंबा पत्र) । साइज-१५ $\frac{१}{२}$ ×६ इंच । भाषा-हिन्दी ।
विषय-स्तवन । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ६८२ ।

विशेष—किशनदास तथा धानतराय के पद हैं ।

६५०. पद संग्रह—ब्रह्माद्याल । पत्र संख्या-२ । साइज-४ $\frac{१}{२}$ ×६ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-
स्तवन । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १११ ।

६५१. पद संग्रह..... पत्र संख्या-१ । साइज-१४×२७ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन ।
रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १३७ ।

विशेष—लंबा पत्र है ।

६५२. पद संग्रह..... पत्र संख्या-१७ । साइज-६ $\frac{१}{२}$ ×६ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन ।
रचना काल-X । लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ११८ ।

६५३. पद संग्रह..... पत्र संख्या-३५ । साइज-५×४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन ।
लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ११२७ ।

६५४. पद संग्रह..... पत्र संख्या-१४ । साइज-६×४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन ।
लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ११२४ ।

६५५. पद्मावती षष्ठक वृत्ति..... पत्र संख्या-१६ । साइज-१२×५ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा-संस्कृत ।
विषय-स्तोत्र । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ८६३ ।

विशेष—स्तोत्र संस्कृत टीका सहित है ।

६५६. पद्मावतीस्तोत्र..... पत्र संख्या-६ । साइज-८ $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-
स्तोत्र । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ६५४ ।

६५७. पद्मावतीस्तोत्र पत्र संख्या-४ । साइज-५० $\frac{१}{२}$ ×६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १७०७ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६७ ।

६५८. पंचमंगल—रूपचन्द्र । पत्र संख्या-२ से १२ । साइज-६ $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६८ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

६५९. पार्श्वनाथ स्तोत्र पत्र संख्या-१० । साइज-८×४ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ५५४ ।

६६०. पार्श्व लघु पाठ पत्र संख्या-३ । साइज-१०×४ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०५९ ।

६६१. बड़ा दर्शन पत्र संख्या-८ । साइज-२१ $\frac{१}{२}$ ×२ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ५०७ ।

विशेष—पत्र ३ से आगे रूपचन्द्र कृत पंच मंगल पाठ है ।

६६२. विनती संग्रह पत्र संख्या-५ । साइज-६×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ११३५ ।

६६३. विनती—किशनसिंह । पत्र संख्या-१ । साइज-६×६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०११ ।

६६४. भक्तामर स्तोत्र—मानतुंगाचार्य । पत्र संख्या-१२ । साइज-१०×४ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १६७४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४८६ ।

विशेष—१० प्रतियाँ और हैं ।

६६५. भक्तामरस्तोत्र भाषा—हेमराज । पत्र संख्या-१० । साइज-१० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ५२५ ।

६६६. भक्तामर स्तोत्र सटीक—मानतुंगाचार्य टीकाकार । पत्र संख्या-४ । साइज-११ $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचनाकाल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० २६६ ।

विशेष—श्रेताम्बरीय टीका है, ४४ पृष्ठ हैं तथा टीका हिन्दी में है ।

एक प्रति और है जिसमें मंत्र आदि भी दिये हुए हैं ।

६६७. भक्तामर स्तोत्र टीका। पत्र संख्या-१२। साइज-८ $\frac{1}{2}$ X ६ $\frac{3}{4}$ इंच। भाषा-संस्कृत।
विषय-स्तोत्र। रचना काल-X। लेखन काल-X। पूर्ण। वेष्टन नं० १,४६।

विशेष—१२ से आगे पत्र नहीं हैं।

६६८. भक्तामरस्तोत्रवृत्ति—प्रहारायमल्ल। पत्र संख्या-४५। साइज-१० X ४ $\frac{1}{2}$ इंच। भाषा-
संस्कृत। विषय-स्तोत्र। रचना काल-सं० १६६७ अषाढ़ सुदी ५। लेखन काल-सं० १६८२। पूर्ण। वेष्टन नं० ६५।

विशेष—आचार्य भुवनेश्वरी के लिए वाराणसी में लालचन्द ने यह पुस्तक प्रदान की।

६६९. भूपालचतुर्विंशति—भूपाल कवि। पत्र संख्या-६। साइज-१० X ४ इंच। भाषा-संस्कृत।
विषय-स्तोत्र। रचना काल-X। लेखन काल-X। पूर्ण। वेष्टन नं० २८२।

विशेष—१ प्रति और है।

६७०. मंगलाष्टक। पत्र संख्या-२। साइज-१३ X ४ $\frac{1}{2}$ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-
स्तोत्र। रचना काल-X। लेखन काल-X। पूर्ण। वेष्टन नं० ११४५।

६७१. लघु सामायिक पाठ। पत्र संख्या-१। साइज-१० X ५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-
स्तोत्र। रचना काल-X। लेखन काल-X। पूर्ण। वेष्टन नं० १०४४।

६७२. लक्ष्मीस्तोत्र—पद्मानंदि। पत्र संख्या-२। साइज-६ X २ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र।
रचना काल-X। लेखन काल-X। पूर्ण। वेष्टन नं० १२२१।

६७३. विषापहारस्तोत्र—धर्मजय। पत्र संख्या-६। साइज-१० X ४ $\frac{1}{2}$ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-
स्तोत्र। रचना काल-X। लेखन काल-X। पूर्ण। वेष्टन नं० २६६।

विशेष—तीन प्रतियाँ और हैं, जिनमें एक संस्कृत टीका सहित है।

६७४. विषापहारस्तोत्र भाषा—अचलकीर्ति। पत्र संख्या-५। साइज-८ X ४ $\frac{1}{2}$ इंच। भाषा-
हिन्दी। विषय-स्तोत्र। रचना काल-X। लेखन काल-X। पूर्ण। वेष्टन नं० ५४४।

६७५. बृहद्शान्ति स्तोत्र। पत्र संख्या-१४। साइज-१० X ४ इंच। भाषा-संस्कृत प्राकृत।
विषय-स्तोत्र। रचना काल-X। लेखन काल-X। पूर्ण। वेष्टन नं० ३०१।

विशेष—प्राग्भ में मयहार स्तोत्र, अजित शान्ति स्तोत्र, व भक्तामर स्तोत्र हैं।

६७६. वीरतपसज्जाय। पत्र संख्या-२। साइज-१० X ४ $\frac{1}{2}$ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-
स्तोत्र। रचना काल-X। लेखन काल-X। पूर्ण। वेष्टन नं० १०५८।

भाषा गुजराती है । ६४ पद्य है

प्रारम्भ में ३४ पद्य में कुमति निवर्तिन श्रीमंथर जिनस्तवन है ।

६७७. शान्तिस्तवनस्तोत्र । पत्र संख्या-३ । साइज- $11\frac{1}{2} \times 8\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ६५३ ।

६७८. सरस्वतीस्तोत्र—विरंचि । पत्र संख्या-२ । साइज- $10\frac{1}{2} \times 8\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ६२६ ।

विशेष—सारस्वत स्तोत्र नाम दिया हुआ है । ब्रह्मांड पुराण के उत्तर खंड का पाठ है ।

६७९. स्तोत्र पाठ संग्रह । पत्र संख्या-४० । साइज- $11\frac{1}{2} \times 8\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३०० ।

विशेष—निम्न स्तोत्रों का संग्रह है—

(१) निर्वाण काण्ड	—
(२) तत्त्वार्थ सूत्र	उमास्वाति
(३) भक्ततामर स्तोत्र	मानतुंगाचार्य
(४) लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मभद्रदेव
(५) जिनसहस्रनाम	जिनसेनाचार्य
(६) मृत्यु महोत्सव	—
(७) द्रव्य संग्रह गाथा	नेमिचन्द्राचार्य
(८) विषाणहार स्तोत्र	धनंजय

६८०. स्तोत्र संग्रह । पत्र संख्या-२१ से ६५ । साइज- $11\frac{1}{2} \times 8\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-स्तोत्र । लेखन काल-सं० १६२६ । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६२४ ।

६ स्तोत्रों का संग्रह है ।

६८१. स्तोत्र । पत्र संख्या-८ । साइज- $11\frac{1}{2} \times 8\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०७२ ।

विशेष—अक्षर भीटे हैं तथा प्रति प्राचीन है ।

६८२. स्वयंभूस्तोत्र—समंतभद्र । पत्र संख्या-४ । साइज- $11\frac{1}{2} \times 8\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० २६७ ।

विशेष—विसर्जन पाठ भी है । दो प्रतिया और हैं ।

६८३. समंतभद्रस्तुति (वृहद् स्वयंभू स्तोत्र) — समंतभद्र । पत्र संख्या-१४ । साइज-११½X५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० २६४ ।

६८४ साधु बंइता पत्र संख्या-४ । साइज-१०½X४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १७६१ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०७३ ।

६८५. सामायिक पाठ पत्र संख्या-२६ । साइज-७X५ इंच । भाषा-प्राकृत-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १४ ।

विशेष—गुटका साइज है तथा निम्न संग्रह और है:

निरंजन स्तोत्र—पत्र संख्या ३

सामायिक—पत्र संख्या

चौबीस तीर्थंकर स्तुति—पत्र संख्या-२४ से २५

निर्वाण काण्ड गाथा—पत्र संख्या-२५ से २६

६८६. सामायिक पाठ पत्र संख्या-६१ । साइज-११X४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-X । लेखन काल-पौष वदी २ । पूर्ण । वेष्टन नं० १४८ ।

विशेष—जोशी श्रीपति ने प्रतिलिपि की थी ।

६८७. सामायिक पाठ भाषा-त्रिलोकेन्द्रकीर्ति । पत्र संख्या-६४ । साइज-८X५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । रचना काल-सं० १८३२ बैशाख सुदी १४ । लेखन काल-सं० १८४४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ८२२ ।

प्रारम्भ—श्री जिन बंदों भाव धरि जा प्रसाद शिव बोध ।

जिन वाणी धरु जैन गुह बंदो मान निरीध ॥

सामायिक टीका करी प्रभाचन्द मुनिराज ।

संस्कृत वाणी जो निपुण ताहि के वो काज ॥२॥

जो व्याकरण बिना लहे सामायिक को अर्थ ।

सो भाषा टीका करुं अल्पमती जन अर्थ ॥३॥

अन्तिम—अठरासै और बचीस संवत् जाणो बिसवा बीस ।

मास भली बैसाख बखाण किसन पल चोदसि तिथि जाण ॥

शुक्रवार शुभ बेला गोग पुर अजमेर बसै भवि लोग ।

मूल संघ नंथाम्नाय बलात्कार गण है सुखदाय ॥

गच्छ सारदा अगवयसार कुन्दकुन्द मुनिराज विचार ।

श्री भट्टारक कीर्ति निधान विजयकीर्ति नामै शुभ स्थान ॥

तिन इह भाषा टीका करी प्रभावन्द टीका अनुसरी ।

दीहा—संस्कृत शब्द नहीं लिख्यो सब आनक इय भाहि ।

किहा किहा लिखियो काठन घणी बजाई नाहि ॥

यूँ मानारम सूचिनी इह टीका को नाम ।

जाणों नाचो उर धरी ज्यूँ सीमै शिव काम ॥

प्रमानन्द की मति कहाँ किहा हमारी बुद्धि ।

रवि की कान्ति किहौ किहा अर दीपक की शुद्धि ॥

पै हम मति माफिक करी इय में अर्थ विरुद्ध ।

जो प्रमाद वास होय सो सुमति कीजिये शुद्ध ॥

सीरठा—भाषा टीका यह कोई जिनेसर मक्ति बसि ।

जो चाहो शिव गेह इय को पाठ करो सदा ॥१॥

इति श्रीमद्भट्टारक श्री त्रिलोकेन्द्रकीर्ति विरचिता सामायिक टीका भाग्यार्थसूचिनी नाम्नी सिद्धिमयम् ।

गद्य का उदाहरण—मलो है पार्श्व कहता सामधि जैह को औसा हे सुपाश्वनाथ भगवन् साथ जय जय कहता बार बार जयवंता रहो ।

आपनै म्हारौ बारबार नमस्कार होवो । (पत्र ३८)

६८८. सामायिक वचनिका—जयचन्द छाबड़ा । पत्र संख्या—५० । साइज—१२×१५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । बेस्टन नं० ४०५ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

६८९. सिद्धिप्रियस्तोत्र—वैद्यनन्दि । पत्र संख्या—३ । साइज—११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । बेस्टन नं० ५११ ।

विशेष—तीन प्रतियाँ और हैं जिसमें एक हिन्दी टीका सहित है ।



विषय-संग्रह

६६०. गुटका नं० १। पत्र संख्या-१६६। साइज-१०×७ इंच। भाषा-प्राकृत-संस्कृत। लेखन काल-५। पूर्ण। वेष्टन नं० ३१८।

मुख्यतया निम्न पाठों का संग्रह है—

विषय सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
षट्पाहुड	कुन्दकुन्दाचार्य	प्राकृत	—
धाराधनासार	देवसेन	"	—
तत्त्वसार	देवसेन	"	—
समाधि शतक	पूज्यपाद	संस्कृत	—
त्रिमंजीसार	नेमिचन्द्र	प्राकृत	—
श्रावकाचार दोहा	लक्ष्मीचन्द्र	"	—

६६१. गुटका नं० २। पत्र संख्या-१२६। साइज-८ १/२×६ इंच। भाषा-प्राकृत-संस्कृत। लेखन काल-सं० १८१६ भाष सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन नं० ३१६।

विशेष—पूजा पाठ तथा सिंदूरप्रकरण आदि का संग्रह है। करौली में पाठ संग्रह किये गये थे। श्री राजाराम के पुत्र मौजीराम लुहाडिया ने प्रति लिखवाई थी।

६६२. गुटका नं० ३। पत्र संख्या-६८। साइज-६×६ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-चर्चा। लेखन काल-५। पूर्ण। वेष्टन नं० ३६०।

विशेष - धार्मिक चर्चाओं का संग्रह है।

६६३. गुटका नं० ४। पत्र संख्या-१६६। साइज-८ १/२×६ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-सिद्धान्त। लेखन काल-५। अपूर्ण। वेष्टन नं० ३७३।

विशेष—अष्टकर्म-प्रकृति वर्णन तथा तीसलोक वर्णन है।

६६४. गुटका नं० ५। पत्र संख्या-१८१। साइज-१० १/२×७ इंच। भाषा-हिन्दी-संस्कृत। लेखन काल-सं० १८६६। पूर्ण। वेष्टन नं० ४३३।

निम्न पाठों का संग्रह है—

विषय सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
पार्श्व पुराण	भूधरदास	हिन्दी	पृ. १-७२
चौबीस तीर्थों का पूजा	रामचन्द्र	"	७२-१२६
देवसिद्धपूजा एवं	—	हिन्दी	१२६-१८१
सन्धि पाठ संग्रह	—	"	

६६२. गुटका नं० ६ । पत्र संख्या-११२ । साइज-७×६ ३/४ इंच । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । रचना काल-X ।
लेखन काल-X । पूर्ण । बेष्टन नं० ४३७ ।

निम्न पाठों का संग्रह है—

विषय सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
चाणक्य नीति शास्त्र	चाणक्य	संस्कृत	X
चन्द्रबिनोद सतसई	चन्द्र	हिन्दी	७१० पृ. है ।
विहारी सतसई	विहारी	हिन्दी	७०६ पृ. है ।
फोकसार	आनंद कवि	हिन्दी	४४४ पृ. है ।

६६६. गुटका नं० ७ । पत्र संख्या-११२ । साइज-८ ३/४×६ ३/४ इंच । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन
काल-सं० १७६६ । पूर्ण । बेष्टन नं० ४४७ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

भक्तमर आदि पञ्च स्तोत्र	—	संस्कृत
तत्त्वार्थ सूत्र	उभास्वाति	"
सुदर्शनरास	महाराधमल्ल	हिन्दी
भविष्यदत्त चौपई	"	"

६६७. गुटका नं० ८ । पत्र संख्या-१८७ । साइज-८ ३/४×६ ३/४ इंच । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन
काल-सं० १७२७ आसोज सुदी १४ । पूर्ण । बेष्टन नं० ४४८ ।

विशेष—निम्न मुख्य पाठों का संग्रह है—

प्रवचनसार भाषा	हेमराज	हिन्दी	
पद	रूपचन्द्र	"	
परमाथे दोहा शतक	"	"	लेखन काल १७२६
पञ्च मंगल	"	"	

भक्तामर स्तोत्र भाषा	हेमराज	"	
चिन्तामणि मान बावनी	मनोहर कवि	"	२० पद्य हैं । अपूर्ण
कलियुग चरित	—	"	१० पद्य हैं ।

६६८. गुटका नं० ६ । पत्र संख्या-१३८ । साइज-६×६ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-सं० १८१२ पूर्ण । बेष्टन नं० ४४६ ।

विशेष—सामायिक पाठ हिन्दी टीका सहित तथा अन्य पार्तों का संग्रह है ।

६६९. गुटका नं० १० । पत्र संख्या-४४ । साइज-६×४ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-सं० १८८४ अषाढ सुदी ८ । अपूर्ण । बेष्टन नं० ४५० ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

७००. गुटका नं० ११ । पत्र संख्या-२६४ । साइज-६×६ इंच । भाषा-संस्कृत-हिन्दी-प्राकृत । लेखन काल-४१ पूर्ण । बेष्टन नं० ४५१ ।

विषय-सूची	कर्ता	भाषा	विशेष
भक्तामर स्तोत्र	मानदुर्ग	संस्कृत	—
कल्याणमंदिर स्तोत्र	कुमुदचन्द्र	"	—
कर्मकाण्ड गाथा	नेमिचन्द्र	प्राकृत	—
द्रव्यसंग्रह गाथा	"	"	—
तत्वाद्योत्र	उमास्वामि	संस्कृत	—
नाम माला	—	"	—
चौरासी बोध	हेमराज	हिन्दी	—
निर्वाण काण्ड	—	प्राकृत	—
स्वयम् स्तोत्र	समंतभद्र	संस्कृत	—
परमानन्द स्तोत्र	—	"	—
हरान पाठ	—	"	—
कल्याणक	—	"	—
पार्श्वस्तोत्र	पद्मप्रमदेव	"	—
पार्श्वस्तोत्र	—	"	—
चौबीस तीर्थकर पूजा	रामचन्द्र	हिन्दी	—
पूजा संग्रह	—	" संस्कृत	—

स्तुति

हिन्दी

पदसंग्रह—सचचन्द्र, दीपचन्द्र, टेकचन्द्र, हर्षचन्द्र, शमदास, सुधरदास और बनारसीदास आदि कवियों के हैं।

७०१. गुटका नं० १२। पत्र संख्या-७२। साइज-१०×७ $\frac{1}{2}$ इंच। भाषा-हिन्दी। रचना काल-५। लेखन काल-५। अपूर्ण। वेष्टन नं० ४८६।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है।

७०२. गुटका नं० १३। पत्र संख्या-६४। साइज-६×६ $\frac{1}{2}$ इंच। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-सं० १८४२। पूर्ण। वेष्टन नं० ५८८।

विशेष—

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
चौबीस ठाणा चर्चा	—	हिन्दी	
कुदेब स्वरूप वर्णन	—	"	
मोक्षपैटी	बनारसीदास	"	

७०३. गुटका नं० १४। पत्र संख्या-७३। साइज-१०×७ $\frac{1}{2}$ इंच। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-५। अपूर्ण। वेष्टन नं० ५८६।

विशेष—पूजा संग्रह, कल्याणमन्दिर स्तोत्र समयसार नाटक भाषा-(बनारसीदास) आदि पाठों का संग्रह है।

७०४. गुटका नं० १५। पत्र संख्या-२६२। साइज-८×६ इंच। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-सं० १७५१। पूर्ण। वेष्टन नं० ६३५।

सूची	कर्ता का नाम	पत्र	भाषा	विशेष
भीपालरास	मङ्गलरायमल्ल	१-२६	हिन्दी	रचनाकाल १६३० आषाढ सुदी १३
मधुस्नरास	"	२६-४४	"	१६२८ भाद्रपद सुदी २
मेसीश्वररास	"	४४-५६	"	१६१५ आषाढ सुदी १३
सुदर्शनरास	"	५६-७६	"	१६२६ वैशाख सुदी ७
शीलरास	विजयदेव सूरि	७६-८८	"	—
अठारह नाला का वर्णन लोहट		८८-९२	"	—
धर्मरास	—	९२-११४	"	—
रविवार की कथा	भाऊ कवि	१०४-११३	"	—
अभ्यात्म दोहा	रूपचन्द्र	११३-११७	"	१०३ दोहे हैं।

सीताचरित्र	कविबालक	११७-२३७	"	—
पुनर्नर चौपई	मालदेव सूरि	२३७-२५६	"	लेखनकाल १७५६
योगसार	योगचन्द्र	२५७-२६२	"	—

७०५. गुटका नं० १६ । पत्र संख्या-३७६ । साइज-६×४½ इंच । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । लेखन काल-X । पूर्ण । बेष्टन नं० ६३१ ।

निम्न पाठों का संग्रह है—

जिनसहस्रनाम पूजा	शर्मभूषण	संस्कृत	पत्र १-१५६
समवशरण पूजा	लालचन्द		
	विनीदीलाल	हिन्दी	११७-३७६
			रचना काल-१=३४

७०६. गुटका नं० १७ । पत्र संख्या-६० से ४१० । साइज-६×६ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X । अपूर्ण । बेष्टन नं० ६३६ ।

मुख्य पाठों का संग्रह निम्न प्रकार है—

रचना का नाम	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
पंथोगीत	झीहल	हिन्दी	—
परमात्म प्रकाश	योगीन्द्रदेव	अपभ्रंश	—
बनारसी विलास के कुछ अंश	बनारसीदास	हिन्दी	—
सीताचरित्र	कवि बालक	"	रचना काल १७१३
पद संग्रह	—	"	विभिन्न कवियों के पदों का संग्रह है
मांगी तु गीतीर्य वर्णन	परिवाराम	"	—
दोहा शतक	हेमराज	"	अध्यात्म, १० का० सं० १७२५ कार्तिक सुदी ६, १०१ पद्य हैं ।
दोहा शतक	रूपचन्द्र	"	अध्यात्म १०१ पद्य हैं ।
सिन्दूर प्रकरण	बनारसीदास	"	—
भक्तामर स्तोत्र टीका	अखयराज श्रीभाल	"	स्तोत्र अंतिम पद्य हेमराज कृत है ।
संक्षेप पंचासिका	त्रिभुवनचन्द	"	—
अष्टमृत की जलदी	—	"	—
अकृत्रिम चैत्यालय की जयमाला	—	"	—
पद—चेतन यो घर नहीं तेरो	मनराम	"	—

पद—त्रिय तैं नर भवि यों ही खोयो मरणा

हिन्दी

रोगापहार स्तोत्र

”

”

पद—सुख घड़ी कब आवली नहीं हो हर्षकीर्ति
संसार मभार—

”

१२ अंतरे है ।

७०७. गुटका नं० १८ । पत्र संख्या—१६० । साइज—७×६ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—X ।
पूर्ण । वेष्टन नं० ६३७ ।

विषय—सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
कल्याणमन्दिरस्तोत्र भाषा	बनारसीदास	हिन्दी	—
भक्तामर भाषा	हेमराज	”	—
कर्म भक्तीसी	अचलकीर्ति	”	१० का० १७७७
पाका नगर में रचना की गयी थी ।			
ज्ञान पञ्चीसी	बनारसीदास	”	—
मेघ कुमार गीत	पूनी	”	—
सिन्दूर प्रकरण	बनारसीदास	”	—
बनारसी विलास के पद पूर्ण पाठ	”	”	—
अम्बुस्वामी पूजा	पांडे जिनराय	”	ले० का० १७४६
			पौष सुदी १०

विशेष—जबलपुर में प्रतिलिपि की गई थी ।

विशेष—१२० पत्र से आगे की लिपि पटने में नहीं आती ।

७०८. गुटका नं० १६ । पत्र संख्या—२२ । साइज—२×४½ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—X । पूर्ण ।
वेष्टन नं० ८०४ ।

विशेष—जोषों की संख्या का वर्णन है ।

७०९. गुटका नं० २० । पत्र संख्या—१३२ । साइज—६½×१० इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—सं० १७८८ ।
पूर्ण । वेष्टन नं० ८३८ ।

निम्न पाठों का संग्रह है —

समयसार नाटक	बनारसीदास	हिन्दी	रचना काल सं० १६६१
बनारसी विलास	”	”	—
कर्म प्रकृति वर्णन	”	”	—

७१०. गुटका नं० २१ । पत्र संख्या-२४१ । साइज ४×६ इंच । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन काल-सं० १८१७ साध सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ८५८ ।

निम्न पाठों का संग्रह है ।

चौदह मार्गणा चर्चा	—	हिन्दी	विशेष
स्वर्ग नर्क और मोक्ष का वर्णन	—	"	
अन्तर काल का वर्णन	—	"	
जिन सहस्रनाम	जिनसेनाचार्य	संस्कृत	

७११. गुटका नं० २२ । पत्र संख्या-३१ । साइज-६ $\frac{१}{२}$ ×७ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ८६५ ।

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है ।

७१२. गुटका नं० २३ । पत्र संख्या-१२ । साइज-८×५ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ८६४ ।

विशेष—सम्भेद शिखर पूजा एवं रामचन्द्र कृत समुच्चय चौबीसी पूजा संग्रह है ।

७१३. गुटका नं० २४ । पत्र संख्या-३४ । साइज-६ $\frac{१}{२}$ ×८ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ८७० ।

विशेष—

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा
दशलक्षण जयमाल	—	हिन्दी
मोक्ष पैदी	बनासीदास	"
संबोध पंचासिका	धानस	"
पंचमंगल	रूपचन्द्र	"
पद	परमानन्द	"
योगसार	योगीन्द्र देव	अपभ्रंश

७१४. गुटका नं० २५ । पत्र संख्या-२५३ । साइज-६×५ इंच । भाषा-हिन्दी-संस्कृत-प्राकृत । विषय-संग्रह । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ८७१ ।

विशेष—गुटके में लगभग २३ से अधिक पाठों का संग्रह है जिनमें मुख्य निम्न पाठ हैं—

नाम ग्रंथ	कर्ता	भाषा	विशेष
नेमीश्वर जयमाल	मठारी नेमचंद	अपभ्रंश	पृ १५
गीत	बूचा	हिन्दी	पृ ४
नेमीश्वर गीत	वीन्हव	हिंदी	पृ २०
शान्तिनय स्तोत्र	गुरुमद	संस्कृत	साल गरकृत में है।
{ गुरुज की जगह गुरुमद भी नाम मिलता है। स्तोत्र सुन्दर है।			
जिनवरस्वामी श्रीमती	सुमतिश्रीति	हिन्दी	
भुंनएवतानुप्रेषा	पं० योगदेव	अपभ्रंश	
हंसा भावना	बक्ष अजित	हिन्दी	पृ ११० तक कुल ३७ पृ ६
मेव कुमार गीत	पूनी	हिन्दी	पृ २२४
जोगीरसा	जिणदास	"	"
ग्यारह प्रतिमावर्णन	नि कनकामर	"	२१६
पद—रेमान काहे की मूलि रखी	न्दीहल	"	२१६
विषया बस भारी			४ पृ ६
नेमिराजमति बेलि	ठक्कुरसी	"	२२४
जिण लाइ गीत	भक्षराइमल	"	२२४
पचेन्द्रिय बोल	ठक्कुरसी	"	२२७
सार भनोरषमाला	साह अचल	"	२२३
निज्जुवर अणुपेक्षा	—	अपभ्रंश	२१०
भरतेश्वर वैराग्य	—	"	२४१
रोष (क्रोध) वर्णन	योगम	"	२४२
आदित्यवार कथा	भाऊ	हिन्दी	—
पट्टावलि भद्रबाहु से पञ्चदेदि तक	—	संस्कृत	—

७१५. गुटका नं० २६। पृ १ संख्या—२०५। साक्ष—७५ इव। भाषा—हिन्दी। लेखन काल—
 सं० १७०४। पूर्ण। वेष्टन नं० ६७२।

विषय सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
पंचमगातिबेलि	दुर्भीकीति	हिन्दी	रचना काल—सं० १६०३। लेखन काल सं० १७०४। मधुपुरा में चूहइमल ने प्रतिलिपि की थी। अंत में इसका नाम चहुँगातिबेलि भी दिया है।

समयसार नाटक

बनारसीदास

हिन्दी

रचना काल सं० १७८३ । ले० का० सं० १७८४ ।

कृष्ण रुक्मणी बोल

गृध्रीराज राठीव

हिन्दी

रचना काल सं० १७८४ ।

ले० काल सं० १७८४ ।

विशेष—हिन्दी टीका सहित है ।

३ मुसल्ले

हिन्दी

(१) 'शलाजस्त' शुद्ध करने की विधि ।

(२) फोड़े फुंसियों की औषध ।

(३) घोड़ा के 'जहवाद' रोग की औषध ।

सिंदूरप्रकरण

बनारसीदास

हिन्दी रचना काल सं० १७८१

लेखन सं० १७८२ ।

विशेष—राजसिंह ने मधुपुरा में प्रतिलिपि को थी ।

७१६. गुटका नं० २५ । पत्र संख्या—२४६ । प्रकाश—१९४६ ई. भाषा—हिन्दी प्राकृत । पूर्ण । प्रेस
नं० ६७३ ।

विषय—सूची	करी	भाषा	विशेष
आरधनासार	ब्रसेन	प्राकृत	११५ गाय है ।
संशोधनवाचिका	"	"	१० "
परमात्मप्रकाश दोहा	योगीन्द्रदेव	अपभ्रंश	३४२ "
योगसार	"	"	१०८ पद्य है ।
सुष्य दोहा	—	प्राकृत	७६ "
आदशालुप्रेक्षा	सदमी वंद	"	४७ "
मेयमाल (ग्रह)	—	"	—
समयसार	बनारसीदास	हिन्दी	—
बनारसीविलास	"	"	ले० का० सं० १७०१ । संगतिर बुदी ६
अलोकसार चौपाई	सुमतिगति	"	रचनाकाल सं० १६२०

प्रारम्भ—सुमतिगाय पंचमी दिनराय । सरसति सदगुर सेवकाय ॥

अलोकसार चौपाई कहु । तेहि विचार सुखी तम्हें सहु ॥ १ ॥

अलौकाकास माहि कै लोक । अघोमध्य उर्द्ध छै थोक ॥

स द्ये मयो लोककास । अलोक माहि केवल आकास ॥ २ ॥

धन धनोदधि तसु आधार । बातें वेधै त्रिणि प्रकार ॥

बाल वेधौ तर थर जेम । लोकाकास कहै छै जेम ॥३॥

भातिम—श्री मूलसंघ गुरु लक्ष्मीचन्द । सास पाटि बीरनन्द मुण्डि ॥

ज्ञानसूषण तसु पाटि चंग । प्रसाचंद वादी मनरंग ॥४॥

सुमतिकीर्ति जरीर चहिसार । त्रिलोकसार धर्म ज्ञान दिवार ॥

जे मर्यै गुणै ते सुखिय गाय । रथण सुपथ धरि सुगति जार्ह ॥५॥

धीर वदन विनिगेत बाक । पुण्यता पावि संसार नाक ॥

भावक जन भांन अथी जोग । सुमतिकीर्ति पुल तामर होय ॥६॥

सिंहपुरी बंसी शृंगार । दान सोल तप भावन अपार ॥

साहता माह सिद्धाधिपसार । कुशरजी कुंभेर अर दातार ॥७॥

संवत सोलनि सशात्रीस । भाष शुक्ल नै बारस दिस ॥

कोदादी रचये छ सार । सवि भगत आवो भाषार ॥८॥

इति श्री त्रिलोकसार भ्रमभ्यान विचार लउपई वद्ध संता समाप्ता ।

भास आवनी	मनोहर	हिन्दी	१३ पद्य हैं ।
राघु भावनी	"	"	"
जोगी रासो	जिणदास	"	४० पद्य हैं ।
द्वादशानुप्रेक्षा	—	"	—
निर्वाण काठ गाथा	—	भाकूत	—
द्वादशानुप्रेक्षा	श्रीधू	हिन्दी	—
चेतन गीत	जिणदास	"	५ पद्य हैं ।
उदर गीत	छीहल	"	४ पद्य हैं ।
पेशी गीत	"	"	६ पद्य हैं ।
पंचेन्द्रिय बेलि	ठकुरसी	"	रचना काल सं० १५८५ कार्तिक सुदी १३
धिरचर जखडी	जिणदास	"	
गुण गाथा गीत	मह वद्धमान	"	१७ पद्य
जखडी	रूपचन्द	"	—
परमार्थ गीत	"	"	—
जखडी	दरिगह	"	—
धोहा शतक	रूपचन्द	"	१०१ पद्य हैं ।

सुदर्शन जयमाल	—	प्राकृत	—
दशरथ जयमाल	—	"	—
मेघकुमार गीत	पूनी	हिन्दी	२१ पद्य
पंच कल्याणक पाठ	रूपचन्द्र	"	—
द्वादशातुम्रेता	—	"	—

७१७. गुटका नं० २८ । पत्र संख्या-२८२ । साइज-६ $\frac{1}{2}$ X ६ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-सं० १८२३ वैशाख सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६७४ ।

विशेष—पूजाओं तथा पदों का वृहद संग्रह है । बनारसीदास कृत माझा भी है जो अज्ञात रचना है ।

७१८. गुटका नं० २९ । पत्र संख्या-२७ । साइज ६ $\frac{1}{2}$ X ५ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-सं० १८४१ । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६७६ ।

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा
पद	जगजोवन	हिन्दी
नेमिनाथ का व्याख्या	नाथ	"
निर्वाण काण्ड भाषा	भगवतीदास	"
पद्य	मनराम	"
साधुओं के आहार के समय ४६ दोषों का वर्णन	भगवतीदास	रचना काल सं० १७१०

विशेष संतोष राम अजमेरा सांगानेर वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

७१९. गुटका नं० ३० । पत्र संख्या-२५१ । साइज-८ X ६ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ६७७ ।

निम्न पाठों का संग्रह है—

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
समयसार	बनारसीदास	हिन्दी	
बनारसी विलास	"	"	
पंचसंगल	रूपचन्द्र	"	
योगी रासी	जिणदास	"	

७२०. गुटका नं० ३१ । पत्र संख्या-७५ । साइज-१० $\frac{1}{2}$ X ७ इंच । भाषा-हिन्दी (पद्य) । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ६८६ ।

विषय—सूची	कर्ता का नाम	पत्र संख्या
वाणिक प्रिया	कवि सुखदेव	१-१७ रचना काल सं० १७६० लेखन काल सं० १८६५

विशेष—इसमें ३२१ पद्य हैं । व्यापार सम्बन्धी बातों का वर्णन किया गया है ।

रनेहवागर लीला	बच्ची हंसराज	१८ से ७०

विशेष—वाणिक प्रिया का यादि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

प्रारंभ—सिध थी गनेसाय नमः श्री सकसते नमः जानुकी बलमाह नमः अथा लिखते वनक प्रिया ।।

चौपई—गुर गने [स] कहै सुखदेव, श्री सरसुती बतायो सेव ।

वनिक प्रिया वनिक नानासौ, दिया डलियस हाथ है दणौ ॥१॥

दोहा—गोला पूरव पच विले वारि विहारीदास ।

तिनके सुत सुखदेव कहि, वनिक प्रिया प्रकास ॥२॥

वनिकनि को वनिक प्रिया, मखसारि कौ हेत ॥

आदि अंत ओता सुनो, मतो मंत्र सौ देत ॥३॥

माह मास कातक करे, संवतु सौधे साठ ।

मते याह के जो चले कबहु न आवै घाट ॥४॥

चौपई—आयुन देव बलछ आइयौ सकल वस्तु सुरपति चाह्यौ ।।

चार मास इहिरेहैं आइ पुन पताल सूता हो जाइ ॥५॥

मध्य भाग—अथा जेठ वस्तु लांघे को विचार ।

दोहा—तीन लोक दसऊ दिसा, सुरनर एक विचार ।

जेठै वस्तु विकत है पावस की दरकार ॥६॥

घटै घटी सौ घटि गई, वस्तु बैच पतकार ।

विक्री कौ दिन बाहरौ कीजे वाच विचार ॥७॥

जेठी विक्री जेठ की सब जेठन मिल माख ।

सकख अस्तु पानी भई जौ पानी लौ राख ॥८॥

चौपई—ग्रीष्म ऋतु वरसै लालिमी बैच वस्तु न आवै कमी ।

यहि मत्त जौ न मान है कोइ, वीर्य सारै व्याज गये सीइ ॥९॥

जेठै वस्तु न बरिये धाइ, अपने होइ सौ बेची जाइ ।

साहु सम्हारै रहियौ बाकी, जलके वरसै दुलभ गइकी ॥१०॥

अन्तिम भाग—

दोहा—देखी सुनी तो मैं कहौ, मंत्री जो मति मान ।

जानौ जाति औ न सब को आगै की जान ॥३१७॥

चौपई - मतौ हथियाक हाथ लै जोर, साहु सुभकरन करत कहु मोर ।

मारगहान हर मन मानियो, दिल कुसाद हरष न आनियो ॥३१८॥

कवि सोवे संवत्सर साठ, इह मत चलै परै नहि घाट ।

इहि मति अन्तु पेट भर खाई, एही चीरन को पहराई ॥३१९॥

दोहा—वनक प्रिया मैं सुम असुम सगही गयो बताइ ।

जिहि जैसी नीकी लगै तैसी की जो जाइ ॥३२०॥

सत्रह सै सत्रह बरस संवत्सर के नाम ।

कवि करता सुखदेव कह लेखक मायाराम ॥३२१॥

इति वनिक प्रिया संपूर्ण समाप्ता ।

मादौ सुदी १२ शुक्रवासरै सं० १८६५ मुकाम खिरारी लिखत लाला उदैतखिब राजमान खिरारी बारे जो बाचै बाको राम राम ।

दोहा—लिखी जथा प्रत देखके कहि उदैत प्रधान ।

जो बाचै अवननि सुनै ताको भोर अनाम ॥

७२१. गुटका नं० ३२ । पत्र संख्या—१६८ । साइज—६ $\frac{1}{2}$ X ४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—हिन्दी—संस्कृत—प्राकृत ।
लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ६८७ ।

विषय—सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
शत्रु सहस्रनाम	—	संस्कृत	पूर्ण
योगीरसो	जियदास	हिन्दी	"
कल्याणमन्दिर स्तोत्र	कुमुदचन्द्र	संस्कृत	"
" भाषा	—	हिन्दी	अपूर्ण
वैराग्य गीत	देवीदास नन्दन गण्डि	"	पूर्ण
पद संग्रह	जियदास	"	" जेठ बदी १३
			सं० १६७१ में लाहौर में रचना तथा लिपि हुई ।
द्रव्य संग्रह	आ० मेमिचन्द्र	प्राकृत	"
			लेखन काल सं० १६६६
द्वादशाष्टश्लोका	—	प्राचीन हिन्दी	

धर्मतरुणित	जिणदत्त	हिन्दी	पूर्ण
(भव तरु सींचे हो मालिया)			
१२२	रूपचन्द्र	हिन्दी	"
(जिय पर सौ कत प्रीति करीरे)			
पद संग्रह			
छादिनामजी की आत्मी	बालचन्द्र	हिन्दी	"
			लेखन काल १७६६
नेमिनाथ संग्रह	—	हिन्दी	"
बीस तीर्थकरों की जयमाला	—	"	"

विशेष—“पद संग्रह जिणदत्त” का नाम “जिणदत्त विकास” भी दिया है ।

७२२. गुटका नं० ३३ । पत्र संख्या—४१ । साइज—३×३ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—X ।
पूर्ण । वेष्टन नं० ६८८ ।

विषय—सूची	कर्ता का नाम	भाषा
जिनदर्शन	—	संस्कृत
संबोध पंचासिका	बानंतराय	हिन्दी
पंच मंगल	रूपचन्द्र	"

७२३. गुटका नं० ३४ । पत्र संख्या—७ । साइज—४×६ इंच । भाषा—संस्कृत । लेखन काल—X ।
अपूर्ण । वेष्टन नं० ६८९ ।

विशेष—नित्य पूजा का संग्रह है ।

७२४. गुटका नं० ३५ । पत्र संख्या—२१ । साइज—६×४ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—X ।
अपूर्ण । वेष्टन नं० ६९० ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

७२५. गुटका नं० ३६ । पत्र संख्या—४६ । साइज—४×४ इंच । भाषा—हिन्दी—संस्कृत । लेखन काल—
सं० १७३६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६९१ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

संबोध पंचासिका	गीतम स्वामी	प्राकृत	संस्कृत टीका सहित है ।
एकेश्वर स्तोत्र	बादिराज	संस्कृत	"

७२६. गुटका नं० ३७ । पत्र संख्या-१८८ । साइज-८×६ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X ।
अपूर्ण । वेष्टन नं० १००१ ।

विशेष—केवल पूजाओं का संग्रह है ।

७२७. गुटका नं० ३८ । पत्र संख्या-४४० । [साइज-७½×६½ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-
सं० १८२३ । पूर्ण । वेष्टन नं० १००२ ।

ग्रन्थ-नाम	कर्ता का नाम	भाषा	र० का० सं०	ले० का०	विशेष
यशोधर चरित्र भाषा	सुरालचन्द	हिन्दी	१७६१	सं० १८२३	
विशेष—छीतरमल सेठी ने प्रतिलिपि की ।					
चौबीस तीर्थकरों के नांव गाँव वर्णन	—	हिन्दी	—	सं० १८२३	
विशेष—नरहेड़ा में प्रतिलिपि हुई ।					
षट् द्रव्य चर्चा	—	हिन्दी	—	सं० १८२३	
विशेष—छीतरमल सेठी ने नरहेड़ा में प्रतिलिपि की ।					
तीन लोक के चैत्यालयों का वर्णन	—	हिन्दी	—	—	
निश्चय व्यवहार दर्शन	—	"	—	सं० १८२३	
विशेष—छीतरमल सेठी दासी लूथूटका ने लाडखान्यों के रामगढ़ में खेतसी काला की पुस्तक से उतारी ।					
कवित्त पृथ्वीराज चौहाण का	—	हिन्दी	—	—	

महाराज प्रणीराज लेख परधान पठायो ।

लेख काजि लाखीक बडम चवाण सवायो ॥

दाहिमैक बासि लाख अस्तु मालिन लीना ।

देखि स्थंघ गाडरी कोट का आरम्भ कीना ॥

ग्यारा सौ पदरोत्तरै गढ़ नागौर अजीत गिर ।

धुम लगन तीज बैसाख सुदि नीव देय भायो नगर ॥

ऐसी अष्ट उपासना खान पान पैरान ।

ऐसा जो मिलिबो सही तो मिलिन वो प्रमाण ॥

विद्यापहार भाषा	अचलकीर्ति	हिन्दी	रचना काल १७१५ नारनौल में रचना हुई ।
भक्तामर भाषा	—	"	
द्व्याण मन्दिर भाषा	बनास्सीदास	"	सं० १८२३

विशेष—छोतरमल सेठी ने लिखा ।

पाशाकेवली (भवजद केवली)	—	हिन्दी	—
पुरयाधनकथाकोश	किशनसिंह	”	रचनाकाल सं० १७७३
सम्यक्त्वकौमुदीकथा	जोधराज गोदीका	”	—

७२८. गुटका नं० ३६ । पत्र संख्या—५१ । साइज—६×६ १/२ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—X । पूर्ण । बेष्टन नं० १००३ ।

विशेष—पत्र २६ तक रूपचन्द के पदों का संग्रह है इसके आगे जगताराम तथा रूपचन्द दोनों के पद हैं । करीब २०० पद एवं भजनों का संग्रह है ।

७२९. गुटका नं० ४७ । पत्र संख्या—५६ । साइज—६×६ १/२ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—सं० १८२३ ज्येष्ठ सुदी २ । पूर्ण । बेष्टन नं० १००४ ।

विशेष—मृगीसंवाद वर्णन है । २६७ पत्र संख्या है । रचना का आदि अन्त माग निम्न प्रकार है—

आदि पाठ—सकल देव सारथ नमो प्रणमो गौत्रम पाय ।

कथा करूँ रसियामणी तदगुरु तथौ पसाथ ॥१॥

जन्म द्वीप सुहामण्यौ, महिधर मेर कतंग ।

अहिथे दक्षिण दिसि सली, सरत जेन्म छचंग ॥२॥

अन्तिम पाठ—एण्य समै आयौ केवली, वंशा वरख वचन मुनि भणी ।

तीनि प्रदरुणया दोधी सार, भरम जपदेस सुख्यौ तिण वार ॥३५॥

दोहा—दोह मेर धरमा तथा मुनी आबक करि हैत ।

मन वच काथा पालता, दोह लोक सुख देत ॥३७॥

इति श्री मृगीसंवाद चौपह कथा संपूर्ण । लिखित सेकाराम राघौदास ख्यौभूका । पोथी पांडित रायचन्दजी । ६ सिख पं० चोखचन्दजी वासी टोंक का श्री मू देठरा ख्यौभूका मये । मितो जेठ सुदी २ सोमवार संवत् १८२३ का ।

७३०. गुटका नं० ४१ । पत्र संख्या—२३४ । साइज—६×५ । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—X । पूर्ण । बेष्टन नं० १००५ ।

विशेष—मुख्य २ पाठों का संग्रह निम्न प्रकार है ।

विषय सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
नवतल वर्णन	—	प्राकृत	हिन्दी अर्थ दिया हुआ है ।

पद संग्रह	—	हिन्दी	र जैन कवियों के पद हैं ।
ज्ञान सुखडी	शोभचन्द्र	"	रचनाकाल सं० १७६७
भक्तामरस्तोत्र	मानतुंगराय	संस्कृत	—
कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	"	—
ब्रमा बलीली	समयसुन्दर	हिन्दी	—
राजुंनयोद्धार	पं० मानुमेक का शिष्य नवसुन्दर	"	सं० १७७० बैशाख सुदी ६

७३१. गुटका नं० ४२ । पत्र संख्या—६० । साइज ६×११ १/२ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—X ।
पूर्ण । केहन नं० १००७ ।

विषय—सूची	कर्ता का नाम	भाषा
पद	धानतराय	हिन्दी
पद	रूपचन्द्र	"
पद	रामदास	"
जुलुखी	रूपचन्द्र	"
भक्तामरस्तोत्र भाषा	गंगाराम पाण्डे	"

निर्देश—इसमें संस्कृत की ४८ वीं काव्य का ४७ वें पद्य में निम्न प्रकार अनुवाद है ।

हे जिन तुम्हारे गुण क्यन पहूप माल,
भक्ति प्रतीति भावधरि कै बनारि है ।
प्रेम की सुकवि नाना वान सुगन धरि,
गुणगण उत्तम अनेक सुखदारि है ॥
जेई भव्य जन कंठ चारि ह उछाह करि,
कुलकि अंग हूँ कै आनंद सो मारि है ॥
तेई मानतुंग करि मुक्ति बंधु सो हेत,
गुगन छरित राम सोमा सुख कारि है ॥

हुक्का निवेध	भूधरमल्ल	हिन्दी
बिनती (प्रभु पाइ लाई करु' सेव जारी)	जगताराम	गुजराती, सिपि हिन्दी ।
विषादहारस्तोत्र भाषा	अचलकीर्ति	हिन्दी रचना काल सं० १७१५
		मारनोस
पद—मै पायो दुख अपार बसि संसार में—	धानतराय	हिन्दी

पद	दीपचन्द्र	हिन्दी
पद	हरीतिह	"
पद—बोरी से लगावो जी	नाथू	"
प्रभुजी के नांव सु		
अक्षरमाला	मनराम	"
दश बेरों की चौबीसी के नाम	—	"
१५ प्रकार के पात्र वर्णन	—	"
पद	किशोरदास	"

७३२. गुटका सं० ४३ । पत्र संख्या-४२० । साइज-८ १/४ x ८ १/४ । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-
१०१७८२ । पूर्ण । बेस्टन नं० १००८ ।

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
श्रेष्ठिक चरित्र की कथा	—	हिन्दी गद्य	अपूर्व
प्रीत्यंकर चौपई	नेमिचन्द्र	हिन्दी गद्य	लेखनकाल सं० १७८२ पूर्ण

विशेष—तुलसीराम चांदबाब ने पंडित रूपचन्द्र की पुस्तक से सं० १७८२ सावन सुदी १५ में पलवल में प्रतिलिपि की । पोथी बिजैराम मौसा की ।

मेसीश्वररास (हरखंडा पुराण) नेमिचन्द्र ॥ १ का. सं. १७६६ ले. का. सं. १७८९

विशेष—सं० १७७६ की प्रति से बिजैराम मौसा ने प्रतिलिपि की थी । १३०८ पद्य है । मंथ प्रशस्ति
विस्तृत है :

चन्द्रराजा की चौपई — १ का. सं० १६०१ कलाम सुदी २ ले. का. सं० १७८२

विशेष—आमानपुरी (गिरनार के पश्चिम दिशा में) के राजा चन्द्र की कथा है । बिजैराम मौसा ने मथुरा में प्रतिलिपि की थी । इसका दूसरा नाम चंदन मखियागिरि कथा भी है । कथा बड़ी है ।

—चंद राजा की चौपई का आदि अंत भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ—दीक्षा—सिद्धि सुमुखि दातार तुव गौरी नंद कुमार । चंद कथा आरम्भ किय सुमति देहि अपार ॥१॥

ब्रह्म सुता सरस्वती तुव हंस चढ़ी अति रुद । तुव पसाय बाणों विमल होय मया मति भूद ॥२॥

चौपई—प्रथम समरौहु सरजन हार, वी जिन बंम रथ्यौ गढ गोरनार ।

मेरु समी दीसै सिरधार, तिहुँ लोक तिदि की बीसतार ॥३॥

समरी संकर दीय कर जोकि, हमरी सुर तेजीसी कोटि ।
 सदगुर कैहू लागी पाय, मुली अखिर घौ समुझाय ॥४॥
 सोलासर तीखीतरै जाणि, चंद कभा उयो चढ़ै परमाणी ।
 मै म्हारी मति साब कहू, अखिर मात्र पदा सो लहु ॥५॥

दीक्षा—फागुण मास वसंत रिति, द्वितिया सुख गुण सीति ।

चंद कभा आरम्भ कर्यौ धूरी बुझि सुरंत ॥६॥

आमानपुरी अवि दिति पछिम दिसा गिरनारी ।

बेह संजोग असौ रच्यौ चंद परमला नारी ॥७॥

अन्तिम—अरु रैखो अचपला जोगि । तीजी और परमला भोग ।

याकै सत्य सारथा सब काज, निलसै चंद आपणौ राज ॥

॥ इति श्री राजा कंद चौपई संपूर्ण ॥

बीस विरहमान तथा तीस बीबीसों के नाम	—	हिन्दी	पूर्ण
तीन लोक कथन	—	"	पत्र सं० २२२ से २६५ तक
बेलि के विषे कथन (चतुर्गति की बेलि)	हर्षकीर्ति	"	पूर्ण
कम हिंदोलना	—	"	—
विशेष—इस गुटके की प्रतिलिपि महाराज चाटसू काते की पुस्तक से जैपुर में सं० १७२४ में हुई थी ।			
सम्यक्त्व के आठ अंगों का कथा सहित वर्णन	—	" गद्य	—
चेतनशिक्षा की	—	" पद्य	—
पद—उठु तेरो मुख देखूँ नामि जिनंद	टोकर	"	—

७३३. गुटका नं० ४४ । पत्र संख्या—२५ । साइज—४×२ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—X ।
 पूर्ण । वेष्टन नं० ००६ ।

विशेष—नरक दोहा एवं पद संग्रह है ।

७३४. गुटका नं० ४५ । पत्र संख्या—२५ । साइज—४½×४½ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—X ।
 पूर्ण । वेष्टन नं० १०१० ।

विशेष—विनती संग्रह है।

७३५. गुटका नं० ४६। पत्र संख्या-२४। साइज-११×५ १/२ इंच। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-५०। पूर्ण। वेष्टन नं० १०११।

विशेष—शिवर विलास, निर्वाणकांड एवं आदिनाथ पूजा है।

७३६. गुटका नं० ४७। पत्र संख्या-३८। साइज-११×६ इंच। भाषा-संस्कृत। लेखन काल-५०। पूर्ण। वेष्टन नं० १०१२ (क)।

विशेष—पूजा संग्रह है।

७३७. गुटका नं० ४८। पत्र संख्या-१८६। साइज-११×६ इंच। भाषा-हिन्दी संस्कृत-प्राकृत। लेखन काल-५०। पूर्ण। वेष्टन नं० १०१३ (ख)।

विशेष—पूजाओं, यशोधरचरित्र रास (सोमदत्तवृत्ति) तथा स्तोत्रों का संग्रह है।

७३८. गुटका नं० ४९। पत्र संख्या-१६७। साइज-११×६ इंच। भाषा-संस्कृत हिन्दी। लेखन काल-५०। पूर्ण। वेष्टन नं० १०१४ (ग)।

विशेष—मुख्यतः ज्ञान नैधिरिक पूजाओं का संग्रह है।

७३९. गुटका नं० ५०। पत्र संख्या-२०२। साइज-११×६ इंच। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। लेखन काल-५०। पूर्ण। वेष्टन नं० १०१५।

विशेष—कन्याय मन्दिर स्तोत्र को सिद्धसेन दिवाकर कृत लिखा है। स्तोत्र एवं पूजाओं का संग्रह है। अजयराज पाटवी कृत पत्र १३१ पर एक रचना संवत् १७८३ की है जो एक शास्त्र सम्बन्ध है। रचना का आदि अंत भाग निम्न प्रकार है।

शरंग—श्री जिनजी को कई रसोई। ताको सुषत बहुत सुख होइ ॥

तुम रसो मत मेरे चमना। खेती बहुविधि घरके अगना ॥

देव अनेक नहीत लिखावै। माता देखि बहुत सुख पावै ॥१॥

मध्यमें—क्षिप्तक चणा किया थात मला। हलद मिरच दे घृत में तला ॥

मेसी रोटी अधिक चढ़ाई। आरोगी त्रिभुवन पति राई ॥२॥

अंतिम—अजैराज इह कियो नखाय। मूल चूक मति हसी सुजाय ॥

संवत् सत्रासै प्रेषावै। जेठ मास पूषा हथी ॥३॥

जिनजी की रसीई में सब प्रकार के व्यंजनों एवं मोजनों के नाम गनाये हैं। भगवान की बाल लीला का अच्छा वर्णन किया है। मोहन के बाद वन विहार आदि का वर्णन भी है।

रसीई वर्णन दो जगह दिया हुआ है। एक में २६ पद्य हैं वह अपूर्ण हैं। दूसरे में ४२ पद्य हैं तथा पूर्ण है।

पद—सेवग वा महर करो जिनराह	अजयराज	१२ अंतरे है। पद्य १०५-११३
मेघ कुमार गत	रूनी	२१ पद्य हैं।
शांतिनाथ जयमाल	अजयराज	६ पद्य हैं।
पद—प्रभु हस्तनागपुर जनम जाय		
१) श्री जिनपूज सुहावनी	"	१४ पद्य हैं।
२) मन मनरकट चनेक आतस जपवादे।	"	१५ पद्य हैं।
धीबोस तीर्थकर स्तुति	"	२० पद्य हैं।
अहो लिवभामी खेरी हो गुनजन राचि सुख राजम फाग सुहावनी	"	७ पद्य
बाल्य वर्णन	"	४ पद्य
श्री लिरिवास सकल गुण धार	"	८ पद्य
नंदीश्वर पूजा	"	६ पद्य
आदिनाथ पूजा	"	— पूर्ण
पशुविराति तीर्थकर पूजा	"	—
पार्वनाथजी का सातेहा	"	रचना सं० १७६३ ज्येष्ठ सुदी १५
पंचमेरु पूजा	"	—
महावीर, नेमीश्वर आदि सभी	"	—
तीर्थकरों के पद्य	"	—
सिद्ध स्तुति	"	—
कीसतीर्थकरों की जयमाल	"	—
ईदना	"	—

७४०. गुटका न० ४१। पद्य संख्या—२१६। साइज—६ १/२ X ३ इंच। भाषा—हिन्दी—संस्कृत। लेखन काल—सं० १०२३ कार्तिक सुदी ७। पूर्ण। केहन नं० १०१७।

विषय—सूची	कृती का नाम	भाषा	विशेष
आयुर्वेद के नुसखे	—	हिन्दी (पद्य)	—
८८ शिक्षा की बातें	—	"	—
पंचम गति की बेलि	हर्षकिर्ति	" (पद्य)	रचना काल सं० १६८३

चेतन शिखा गीत	किशनसिंह	हिन्दी	—
शमोकार सिद्ध	अजयराज	"	—
पद	शिवमनाथ	"	—
(मोहि त्वारो जी सरखे तूम आश्यो)			
बधोना	—	"	—
(जहाँ जन्मे हो स्वाभी नामकुमार)			
राहुल पञ्चाली	कालचंद विनोदीलाल	"	—
पद	विश्व भूषण	"	—
(जिब जपि जिब नवि जीयदा)			
विनती	पूनी	हिन्दी	—
सहेलीगीत	सुंदर	"	—
विनती	कनककीर्ति	"	—
मंगल	विनोदीलाल	"	—
ज्ञान चिन्तामणि	मनोहरदास	"	कुल १२८ पद्य है ।
पंच परमेष्ठि गुण	—	हिन्दी गद्य	—
सूतक भेद	—	"	—
जोगी रासा	जिषदास	" पद्य	४१ पद्य है ।
धर्मरासा	—	"	—
सुदर्शन शील रासो	म० रायमल्ल	"	—
जम्बूस्थानी चौपई	जिषदास	"	—
विशेष—जिषदास का पूर्ण परिचय दिया हुआ है । जयचंद साह ने लिपि की थी ।			
श्रीपाल रासो	म० रायमल्ल	"	—
विशेष—जयचंद साह ने लाकमू में सं० १८३२ में प्रतिलिपि की ।			
विक्रमपहार भाषा	अचलकीर्ति	हिन्दी	—

७४१. गुटका नं० ५२ । पत्र संख्या—१८८ । साइज—६×६ इंच । भाषा—माकत अपभ्रंश । लेखन काल—सं० १३०० । पूर्ण । बेस्टन नं० १०१८ ।

ग्रन्थ-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
मुनिसुश्रुतानुप्रेक्षा	पं० योगदेव	अपभ्रंश	१५८६ वी० शुदी २३
योगसार बोहा	योगीन्द्रदेव	"	

उपासकाचार	पुन्यपाद	संस्कृत	
परमात्मप्रकाश बोधा	योगीन्द्रदेव	अपभ्रंश	
बटपाहुब सटीक	कुन्दकुन्दाचार्य	प्रकृत	
धाराधनासार	देवसेन	"	टीका सहित है ।
समयसार गाथा	कुन्दकुन्दाचार्य	"	"
ज्ञानसार गाथा	—	"	

७४३. गुटका नं० ५३ । पत्र संख्या-११३ । साइज-६ $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०२० ।

विशेष—प्रथम संस्कृत में पंच स्तोत्र आदि हैं फिर उनकी भाषा की गई हैं ।

७४४. गुटका नं० ५४ । पत्र संख्या-३२ । साइज-६×४ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०२२ ।

विशेष—देवनाग कृत विनती संग्रह है ।

७४५. गुटका नं० ५५ । पत्र संख्या-६८ । साइज-६×४ इंच । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०२१ ।

विशेष—स्तोत्र एवं पूजा पाठों का संग्रह है ।

७४६. गुटका नं० ५६ । पत्र संख्या-५३ । साइज-६ $\frac{1}{2}$ ×६ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०२३ ।

विशेष—चारों गति दुःख वर्णन, राजल पञ्चीसी, जोगी रासो, अठारह नाता व चोदाल्या के अतिरिक्त वृन्द, दीपवन्द, विश्वमूर्ख, पृनो, रामदास, अजगराम, मूर्खदास के पद भी हैं ।

७४७. गुटका नं० ५७ । पत्र संख्या-१६० । साइज-७×५ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखनकाल-सं० १७६० ज्येष्ठ कुदी = । पूर्ण । वेष्टन नं० १०२५ ।

विशेष—महारक जगन्नाथकीर्ति के शिष्य बालूराम ने प्रतिलिपि की थी ।

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
शुद्ध भक्त रासो	म० रायमन्त्र	हिंदी	रचना, सं० १६२८
नेमिकुमार रासो	"	"	" १६१५
सुदर्शन रासो	"	"	" १६३३
इन्दुमंत कथा	"	"	" १६१६

७४८. गुटका नं० ५८ । पत्र संख्या-५८ । साइज-६ ३/४ × ४ १/२ इंच । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०२६ ।

विषय-सूची	कर्ता का नाम ।	भाषा .
तीर्थमाला स्तोत्र	—	संस्कृत
जैन नायकी	—	"
पार्श्वनाथ स्तोत्र	—	प्राचीन हिन्दी
पद	अक्षयराम	हिन्दी
श्रवका इत्सीसी	"	"
पद रामह	"	"
सिन्दूर प्रकरण	धनारसीदास	"
परमानन्द स्तोत्र	—	संस्कृत

७४९. गुटका नं० ५९ । पत्र संख्या-५९ । साइज-५ × ४ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०२७ ।

विषय-सूची ।	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
नैराग्य पञ्चीसी	महावतीदास	हिन्दी	—
चेतन कर्म चरित्र	"	"	रचनाकाल सं० १७३६
ब्रजदन्त चक्रवर्ति की भाषना	—	"	
शुद्ध पद	—	"	—

७५०. गुटका नं० ६० । पत्र संख्या २०० । साइज-६ × ४ इंच । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०२८ ।

विशेष—मुख्यतः पूजाओं का संग्रह है ।

७५१. गुटका नं० ६१ । पत्र संख्या-२१९ । साइज-६ × ४ १/२ इंच । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन नं० १०२९ ।

विशेष—मुख्यतः पूजा संग्रह है । कुछ जगताराम वृत्त पद संग्रह भी है ।

७५२. गुटका नं० ६२ । पत्र संख्या-३४ । साइज-६ × ४ १/२ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०३० ।

विशेष—स्तोत्र संग्रह भाषा पूर्व निर्वाणकाण्ड भाषा आदि हैं ।

७२३. गुटका नं० ६३। पत्र संख्या-३०। साइज-४×४ $\frac{1}{2}$ इंच। भाषा हिन्दी। लेखन काल-सं० १८१६। पूर्ण। वेष्टन नं० १०३१।

विशेष - रानिधर देव की कथा है।

७२४. गुटका नं० ६४। पत्र संख्या-२७। साइज-४×४ $\frac{1}{2}$ इंच। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-X। पूर्ण। वेष्टन नं० १०३२।

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
चरवाशतक	धानतराय	हिन्दी	
दाल गण	—	११	६२ पृष्ठ
स्तुति	धानतराय	११	

७२५. गुटका नं० ६५। पत्र संख्या-२१२। साइज-६×४ $\frac{1}{2}$ इंच। भाषा-प्राकृत-संस्कृत। लेखन काल-X। पूर्ण। वेष्टन नं० १०३३।

विशेष—बहुभक्ति पाठ, आराधनासार, जिनसहस्रनाम स्तवन आशाधर कृत, तथा अन्य स्तोत्र संग्रह है।

७२६. गुटका नं० ६६। पत्र संख्या-७४। साइज-४ $\frac{1}{2}$ ×४ इंच। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-सं० १८८० आषाढ सुदी १। पूर्ण। वेष्टन नं० १०३४।

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
जैनशतक	भुवरास	हिन्दी	रचना काल सं० १७८१
धर्मविलास	धानतराय	११	—

७२७. गुटका नं० ६७। पत्र संख्या-११२। साइज-४ $\frac{1}{2}$ ×४ इंच। भाषा-हिन्दी-संस्कृत। लेखन काल-X। पूर्ण। वेष्टन नं० १०३५।

विशेष—स्तोत्र संग्रह है।

७२८. गुटका नं० ६८। पत्र संख्या-४६ से १४३। साइज-७ $\frac{1}{2}$ ×२ $\frac{3}{4}$ इंच। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-सं० १८१२ मगसिर सुदी १५। अपूर्ण। वेष्टन नं० १०३७।

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
बिहारी सतसई	बिहारीलाल	हिन्दी	अपूर्ण
नागदेसन कथा	—	११	पूर्ण

आदि अंत भाग निम्न प्रकार है—

भारुम—वहतो सारद वरणउ, सारद फ़रे पलाय ।
 पवाडी पन्नग तणौ जादुपति कीर्छो जाय ॥
 प्रसु आणये पाडीया देत बडा चादन्त ।
 केइ पालण पौढीया केई पय पान करंत ॥
 अन्तिम—सुखौँ सुखी समवाद नद नंदन अहि नारी ।
 समझा पार संभार हूषी द्रोपत अनहारी ॥

अनंत अनंत के ससु अह वधाई रमीयो स्वरत राधा रमण दहं कर भुज काली दवया ।
 त्रिभुवन सुखण महि रख तन गमण तास आओ गमण ॥

७५६. गुटका नं० ६६ । पत्र संख्या-४२ । साइज-६×४ इंच । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-X ।
 पूर्ण । वेष्टन नं० १०३८ ।

विशेष—मत्तामर स्तोत्र एवं तत्त्वार्थ सूत्र है ।

७६०. गुटका नं० ७० । पत्र संख्या-६४ । साइज-७½×६ इंच । भाषा-प्राकृत-संस्कृत । लेखन
 काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०३६ ।

विशेष—कर्म प्रकृति भाषा-नेमिचन्द्राचार्य कृत एवं द्रव्य संग्रह तथा स्तोत्र संग्रह है ।

७६१. गुटका नं० ७१ । पत्र संख्या-७२ । साइज-५½×४½ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-सं०
 १८३४ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०४० ।

विशेष—पद संग्रह, मत्तामर स्तोत्र भाषा चौपई बंध ऋद्धि मंत्र मूलमंत्र गुण संयुक्त षट् विधान सहित है ।

७६२. गुटका नं० ७२ । पत्र संख्या-२०६ । साइज-६×५ इंच । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन काल-X ।
 पूर्ण । वेष्टन नं० १०७६ ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है अवस्था जीर्ण है ।

७६३. गुटका नं० ७३ । पत्र संख्या-६३ । साइज-६½×५½ इंच । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन
 काल-X । अपूर्ण । वेष्टन नं० १०७७ ।

विशेष—पूजा पाठों का संग्रह है । कोई उल्लेखनीय पाठ नहीं है ।

७६४. गुटका नं० ७४ । पत्र संख्या-१० । साइज-६×५ इंच । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन काल-X ।
 अपूर्ण । वेष्टन नं० १०७८ ।

विशेष—पूजा तथा पद संग्रह है ।

७६५. गुटका नं० ७५ । पत्र संख्या-३५ । साइज-६ १/४ X ४ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X ।
पटन नं० १०८० ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

७६६. गुटका नं० ७६ । पत्र संख्या-६२ । साइज-६ १/४ X ४ इंच । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । लेखन
काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०८१ ।

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
चतुर्विंशति त्रिन स्तुति	पद्मनाभ	संस्कृत	
बहुचरि जिनेन्द्र जयमाल	—	"	
स्वयंभू स्तोत्र	आ० समन्तभद्र	"	
द्रव्य संग्रह	—	प्राकृत हिन्दी	
तपोधोतन अधिकार सत्तावली	—	संस्कृत	

७६७. गुटका नं० ७७ । पत्र संख्या-६० । साइज-५ X ४ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X ।
पूर्ण । वेष्टन नं० १०८३ ।

विशेष—आयुर्वेदिक तुलसी का संग्रह है ।

७६८. गुटका नं० ७८ । पत्र संख्या-६४ । साइज-६ X ४ १/२ इंच । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । विषय-संग्रह ।
लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन नं० १०८४ ।

कुटकर कवित्त	—	हिन्दी	अपूर्ण
कवित्त	कवि पृथ्वीराज	"	गणित संबंधी कवित्त है ।
कवित्त	गिरधर	"	—
कवित्त छुणस (कमी)	—	"	६ कवित्त है ।
और खुशी के			
सर्वसुखजी के पुत्र अमयचन्द्रजी	—	"	जन्म सं० १६१०
की पुत्री-की जन्म पत्री (चांदबाई)			
चिड्डी चांदबाई की सर्वसुखजी आदि की		"	सं० १६१६
दसोत्तरा (पहेलियां)	—	"	२५ पहेलियां उत्तर संग्रह है ।
पहेलियां	—	"	" "
दोहे	बुन्द	"	अपूर्ण
कुंदलियां (गणित प्रश्नोत्तर)	—	"	पूर्ण

कृष्ण दोहे तथा कुंडलिया	मिश्रदास	हिन्दी	अपूर्ण
चविरा	सेमदास	"	
भावों का कथन	—	"	अपूर्ण
छह दासा	धानतराय	"	लेखनकाल सं० १८१६
			बंदों के पठनार्थ ने लिखा गया था ।
मध्यमलोक चैत्यालय वचन	—	"	—
बधाई	बालक-अमी नन्द	"	पूर्ण
जखड़ी	भूवरदा।	"	"
उपदेश जखड़ी	रामकृष्ण	"	"

७६६. गुटका नं० ७६ । पत्र संख्या-८६ । साइज-१०×८ इंच । भाषा-संस्कृत प्रोक्त । लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन नं० १०८५ ।

विशेष—शुद्धस्थान चर्चा, कर्म प्रकृति वर्णन, तथा तीर्थंकरों के कल्याणकों के दिनों का वर्णन है । कल्याणक वर्णन अष्टांश में है । रचनाकार मनसुख है ।

७७०. गुटका नं० ८० । पत्र संख्या-३१ । साइज-८×६ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०८६ ।

विशेष—नवलराम, जगताराम, हरीसिंह, भूधरदास, धानतराय, मलजी, बखतराम, जोधा आदि के पदों का संग्रह है ।

७७१. गुटका नं० ८१ । पत्र संख्या-६६ । साइज-८½×६½ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०८७ ।

विशेष—पदों का संग्रह है । इसके अतिरिक्त परमाण्वे जखड़ी तथा जोगी रासा भी हैं । भूधरदास, जगताराम, धानतर, नवलराम, बुधजन आदि के पद हैं ।

७७२. गुटका नं० ८२ । पत्र संख्या-६० । साइज-६×४½ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०८८ ।

विशेष—जिन सहस्र नाम माया, प्रश्नोत्तर माला, कविच, एवं बनारसी विलास आदि हैं ।

७७३. गुटका नं० ८३ । पत्र संख्या-६० । साइज-६×४½ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०८९ ।

विशेष—पदों का संग्रह है ।

७७४. गुटका नं० ८४ । पत्र संख्या-३४ । साइज-८ १/२ X ५ १/२ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६० ।

विशेष—बट दण्ड आदि की चर्चा, नरक दुःख वर्णन, द्वादशानुश्रव आदि हैं ।

७७५. गुटका नं० ८५ । पत्र संख्या-१४ से १४६ । साइज-६ X ५ इंच । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन नं० १०६१ ।

विशेष—सामान्य पाठों के अतिरिक्त कुछ नहीं है । बीच के बहुत से पत्र नहीं हैं ।

७७६. गुटका नं० ८६ । पत्र संख्या-१३१ । साइज-६ X ४ इंच । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६२ ।

विशेष—स्तोत्र पूर्व पाठों का संग्रह है ।

७७७. गुटका नं० ८७ । पत्र संख्या-११ । साइज-१० १/२ X ४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-संग्रह । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६३ ।

विशेष—किसी चर्चाओं का संग्रह है ।

७७८. गुटका नं० ८८ । पत्र संख्या-१८ । साइज-६ X ४ १/२ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-संग्रह । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६४ ।

विषय-सूची	कर्तों	भाषा	विशेष
दीतवार कथा	भाऊ	हिन्दी	१५७ पृष्ठ
रानीश्चर देव की कथा	—	" (गण)	ले० का० सं० १०६५ कैल सुदी २
सारातबील की धार्त्ता	—	"	—
पार्श्वनाथ स्तवन	—	"	—
बिनती	—	"	—
नेमशील वर्णन. पद	—	"	ले० का० सं० १०६६

७७९. गुटका नं० ८९ । पत्र संख्या-६९ । साइज-६ X ५ इंच । भाषा-संस्कृत हिन्दी । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६५ ।

विशेष—गुटके में पूजा संग्रह तथा स्वर्ग नरक का वर्णन दिया हुआ है ।

७८०. गुटका नं० ९० । पत्र संख्या-११० । साइज-६ X ५ १/२ इंच । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६६ ।

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
अवबद केवली	—	हिन्दी	
महाभारत स्तोत्र	मानसु गोचार्य	संस्कृत	
॥ भाषा	हेमराज	हिन्दी	
कल्याणमन्दिर स्तोत्र	कुमदचन्द्र	संस्कृत	
अध्यात्म फाग	—	हिन्दी	
साधु वेदना	बनारसीदास	॥	
बारहभावना	—	॥	
संक्षेपपञ्चासिका	—	प्राकृत	
स्तोत्रसंग्रह	—	संस्कृत	

७८२. गुटका नं० ६१ । पत्र संख्या-२०४ । साइज-६×४ १/२ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-सं० १७८६ । अपूर्ण । वेष्टन नं० १०६८ ।

निम्न पाठों का संग्रह है—

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
कंसलीला	—	हिन्दी	४६ पद्य है ।
मोरचञ्जलीला	—	॥	६३ पद्य है ।
महादेव का व्याहृतो	—	॥	लेखनकाल १७८७
भक्तमाल	—	॥	
सुदामा चरित	—	॥	॥ १७८७
गंगायात्रा वर्णन	—	॥	
कन्नवाहा राजाओं की वंशावली	—	॥	
तारातनोष की वार्ता	—	॥	
नासिकेतोपाख्यान	नंददास	॥	॥ १७८६
महामारत कथा	खालिदास	॥	
देहली के राजाओं की वंशावली	—	॥	॥ १७८८
१ चरित	—	॥	

७८२. गुटका नं० ६२ । पत्र संख्या-१३१ । साइज-८×६ इंच । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । विषय-संग्रह । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६८ ।

विषय-सूची	कर्ता	भाषा	विशेष
अजितरात्रि स्तोत्र	उपाध्याय मेहनंदन	हिन्दी	३२ पद्य
सीमंधरस्वामी स्तवन	उपाध्याय भगतिशाम	"	१८ पद्य
पार्श्वनाथस्तोत्र	जिनराज सूरि	संस्कृत	—
विघ्नहरस्तोत्र	—	प्राकृत	१४ गाथा
सप्तशतस्तोत्र	गान्धुंग	संस्कृत	—
शनिश्चरस्तोत्र	दशरथ महाराज	"	—
पार्श्वनाथ जिनस्तवन	—	"	ले० का० सं० १७१६ पौष बदी २
जिनकुशल सूरि का सुन्दर चित्र है और चित्रकार जग जीवन है ।			
धर्मण पार्श्वनाथ स्तवन	कुशलशाम	हिन्दी	राजरंगरायि ने लिखि की थी । १८ पद्य
चिंतामणि पार्श्वनाथ स्तवन	जिनरंग	"	१६ पद्य
राहुल का भारह मासा	पदमराज	"	४ पद्य अपूर्ण
श्री जिनकुशल सूरि स्तुति उपाध्याय जयसागर		"	१५ पद्य पूर्ण
पार्श्वनाथ स्तवन	रंगनस्थल	"	६
आदिनाथ स्तवन	भजय, तिलक	"	२१ पद्य
श्री अजितरात्रि स्तोत्र	—	प्राकृत	३६ गाथा
मयहर पार्श्वनाथ स्तोत्र	—	"	२१ गाथा पूर्ण
सर्वाभिधायक स्तोत्र	—	"	२६ गाथा
कोकसार	आनंद कवि	हिन्दी	
नैयसी (नैनसिंहजी)	—	"	सं० १७२६
के व्यापार का प्रमाण			
पार्श्वनाथ स्तोत्र	कमल लाम	"	७ पद्य
" खडुस्तोत्र	कमलराज	"	पूर्ण
संक्षेपश्वर पार्श्वनाथ स्तवन	—	"	
चिंतामणि पार्श्वनाथस्तोत्र	मुचनकीर्ति	"	
पार्श्वनाथ स्तोत्र	सनरंग	"	
"	जिनरंग	"	
अष्टभदेव स्तवन	—	"	रचनाकाल सं० १७००
कस्तनधी पार्श्वनाथ स्तवन	पदमराज	"	लेखनकाल सं० १७२०

पार्ष्णनाथ स्तवन	विजयकोटि	हिन्दी	पूर्वा
महावीरस्तवन	जिनवत्सल	संस्कृत	पूर्वा ३० श्लोक
प्रतिमास्तवन	राजसमुद्र	हिन्दी	
चतुर्विंशति जिनस्तोत्र	जिनरंगमूरि	"	
भीम विरहमान स्तुति	मेमराज	"	
पंचपरमेष्ठि ग्रंथ स्तवन	"	"	
सीमहसती स्तवन	"	"	
प्रबोध नावनी	जिनरंग	"	रचना सं० १७३१, ५४ पृष्ठ है ।
दानशील संवाद	समयसुन्दर	"	पूर्वा
प्रस्ताविक दोहा	जिनरंगमूरि	"	

इसका दूसरा नाम 'दुहा-बंध बहुचारी' भी है । ७२ दोहा है । लेखनकाल सं० १७४३ । बापना नयनसो के पठनार्थ कृष्णभट्ट में प्रतिलिपि हुई थी ।

अक्षयराम नाफना के पुत्र की कुंडली — " सं० १७७२

७८३. गुटका नं० ६३ । पत्र संख्या—८ से ५० तक । साइज—१६×२३ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—५ । अपूर्ण । बेष्टन नं० १०६३ ।

विषय-सूची	कर्ता	भाषा	विशेष
जैन रासो	—	हिन्दी	लेखनकाल सं० १७६८ जेठ सुदी १५

विशेष — दौलतराम पाटनी ने कस्बा मनोहरपुर में लिखा था । ग्राम्य के २८ पत्र नहीं हैं ।

सिद्धिप्रिय स्तोत्र	देवनंदि	संस्कृत २६ पत्र, इसे लघु स्वयम्भू स्तोत्र भी कह
सीफैर नीनती	कल्याणकीर्ति	हिन्दी रचनाकाल सं० १७२३ चैत सुदी ३
१६	विश्वभूषण	"
पंच मंगल	रूपचन्द	"

विशेष—ग्राम्य के ७ पत्र तथा ६, १० और १२ वां पत्र नहीं हैं । ५४ में छाने पत्र खाली हैं ।

७८४. गुटका नं० ६४ । पत्र संख्या—२६ । साइज—१५×७ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—५ । पूर्ण । बेष्टन नं० ११०० ।

विशेष—

कमलसुखी-	सूत	हिन्दी	पत्र सं० १ से १६
बाईस परीषद्	—	"	१७-२६ अपूर्ण

७८५. गुटका नं० ६५ । पत्र संख्या-२६ । साइज-१५७ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-५ । अपूर्ण ।
वेष्टन नं० ११०१ ।

विशेष—कोई उल्लेखनीय पाठ नहीं है ।

७८६. गुटका नं० ६६ । पत्र संख्या-२६४ । साइज-१५४ इंच । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-५ ।
पूर्ण । वेष्टन नं० ११०२ ।

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
आवकनी सञ्ज्ञाय	जिनहरी	हिन्दी	—
अमृतशक्ति स्तवन	—	"	—
पंचमी स्तुति	—	संस्कृत	—
चतुर्विंशतिस्तुति	समयसुन्दर	हिन्दी	—
गौडीपार्श्वस्तवन	—	हिन्दी	—
बारहखड़ी	—	—	अपूर्ण
वैराग्य शतक	मनृ हरि	संस्कृत	लेखनकाल सं० १७७३

विशेष—संग्रामपुर में प्रतिलिपि हुई थी । प्रति हिन्दी टीका सहित है, टीकाकार इन्द्रजित है ।

अंतिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—इति श्री सकलमौलिर्मन्त्रमन्त्रिणीमधुकरनृपतितनुज श्रीमदिन्द्रजीतविरचितायां
त्रिवेददीपकायां वैराग्यशतं समाप्तम् ।

नाकौख पार्श्वनाथ स्तवन	समयसुन्दर	हिन्दी	पूर्ण
पद (अलिया आज पवित्र भई मेरी)	मनराम	हिन्दी	—

७८७. गुटका नं० ६७ । पत्र संख्या-३० । साइज-१५४ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-५ ।
पूर्ण । वेष्टन नं० ११०३ ।

विशेष—पद, चन्द्र गुप्त के सोलह स्वप्न (भावमद्र) जलखी, सोलह कारण भावना (कनककीर्ति) संग्रह है ।

७८८. गुटका नं० ६८ । पत्र संख्या-६४ । साइज-१५५ इंच । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन
काल-५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ११०४ ।

विशेष—स्तीव एवं पूजा संग्रह है ।

७८९. गुटका नं० ६९ । पत्र संख्या-६५ । साइज-१५६ इंच । भाषा-संस्कृत । लेखनकाल-५ ।
पूर्ण । वेष्टन नं० ११०५ ।

विशेष—नित्य पाठ पूजा आदि का संग्रह है।

७६०. गुटका नं० १०० । पत्र संख्या-१८ । साइज-६×४ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ११०७ ।

विशेष—पद व स्तोत्रसंग्रह है।

७६१. गुटका नं० १०१ । पत्र संख्या-२०० । साइज-६×४ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ११०८ ।

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
आदित्यवार कथा	भाऊ	हिन्दी	
चतुर्विंशति स्तुति	शुभचन्द्र	"	
श्रीपाल स्तोत्र	—	"	
पद संग्रह	—	"	
ऐसठ शलाका पुरुषों का वर्णन	म० कामराज	"	कामराज का परिचय दिया हुआ है।
श्रीपाल स्तुति	कनककाशी	"	
भोजित जिननाथ की विनती (मोई प्यारी लामैजी)	चन्द्र	"	पूर्ण

७६२. गुटका नं० १०२ । पत्र संख्या-१७७ । साइज-६×४ इंच । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ११०९ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा पाठों के अतिरिक्त मुख्य निष्पन्न पाठ है—

नाम	कर्ता	भाषा	विशेष
आदित्यवार कथा	भाऊ	हिन्दी	—
श्रीपाल दर्शन	—	"	—
षट्मास वर्णन	श्रुतलामर	"	पूर्ण

प्रारंभ—दोहा—प्रथम जिनेसुर बंद करि भगति भाव उर लाय ।

कस वर्णन षट्मास कहुँ ।

चौपाई—एक समै श्री बीर जियाँद, श्रीपालल आये गुण प्रद ।

बी जिनजी के अतिसै माय, सब जीवन को नैर पलाय ।

घटस्थित वन ते कल कुलत मये, माखी लक्षि वचन लहये ।
समोसरण कि महमा भाल, ऐसे मन चितवै बनपाल ।

अंतिम—१ घटमाल वरण महान, पुरिष वरन कियो गुणधाम ।
तिन वाणि सुणि वरणन कियो, और व्याकरण नहि देखियो ।
तैसे बर्ज कणि भोत्री विधियो सुतसिखलता पै गम कियो ।
तैसे बुधि जन वाणि भाल वरण कियो भाषा गुण माल ॥

बोहा—देस काठहड विरजि में वदनसुख राजान ।
ताकै पुत्र है भलो सूरिजमल गुणधाम ॥
तेज पुंज रवि है भलो, न्याय नीति गुणवान ।
ताको पुजस है जगत में, तपै दूसरो मान ॥
तिनह नगर छु बसाइयो, नाम भरतपुर तास ।
सा राजा समकटिष्टि है भला, परवि थ्यारि उपवास ॥
जिन मंदिर तह नयन है, जिन महमा प्रकास ।
इन्द्र पुरि अभिराम है सोमा सुरग निवास ॥
ताहा नगर को चौधरि, त्रिवह्रि बेखदास ।
तिनकै मंदर उपरो, श्री जिन मंदिर अवास ॥
श्री जिन सेवक है भलो श्री जिनहि को दास ।
बाह के बार गोत्र है भलो, हम मया जिखदास ॥
बाहि समिषै आय करि बर्ण कियो हर निलास ।
वासि लागनेर को जाति छु समवाल ॥
मुगिल गोत उदोत है संगही रामसंघ को बाल ।
उतर दिसम बैराठि है नम मली, काहलो करु बलान ॥
पांडव से पुनिमान नर बिसो काटियो धान ।
ताहि नगर को बाधिफवर संगही पदारथ जानि ॥
वाकै पैसो खानि को पै दोष जिये आनि ।
माहबन्ध भटारा मलो सुरचंद्र कै पाट ॥
कासटासंगा गच्छ में वत अन्धा थडाट ।
निज गुरु सु विनति करि, पाप हरण के काजि ॥
स्वामी तुम उपदेश दीइ, तारै धर्म जिहाज ।

सब गुरुमुख बाधि खिरी, सुयो बात गुणवान ॥
 सिध बेग बंदन करो, पुरि बर्स - टान ।
 तब बुद्ध के उपदेश तै चतुरविधि संग रहवे ॥
 सजन आता संग ले आये उजंत मिलान ।
 जिन बार्हस भी पूजि करि, भली भगति वर आनि ।
 अष्ट द्रव्य ले निरमला हरे करम वसु स्थानि ।
 चतुर संग निज आहार दे अंग प्रभावना सार ॥
 सर्व संग की भगति सुं भयो सुं जै जै कार ।
 सब आता निज हेत करि, धरी ज संगहि नाम ॥
 तातै संगहि कहत सब नहि कियो पतेसटा धाम ॥
 संवत अठारा सै भला ऊपरि एकाइस जानि ।
 जेठ सुक्ल पंचमि भली श्रुतसागर बसायि ॥
 सुवाति नविन है भली व्रत ही रविवार ।
 फकिचंद उपदेश तै रच्यो माल विस्तार ॥
 हमारो मित्र है सही जाति सु पलियाल ।
 वह बसतु है हीडोण में बने रहै मरतपुर रसाल ॥
 तिनसु हम मेलो भयो शुभ उदै कै काल ।
 उनहि का संजोग तै करि साषा षटमाल ॥

इति षटमाल वर्णन संपूर्ण.....बिलास अमवाल बाबै तीने छहार बंन्या ।

७६३. गुटका नं० १०४ । पत्र संख्या-६४ । साइज-५X४^१/_२ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १११२ ।

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है ।

७६४. गुटका नं० १०५ । पत्र संख्या-१३ से १० । साइज-६X४^१/_२ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन नं० १११३ ।

७६५. गुटका नं० १०६ । पत्र संख्या-११६ । साइज-६X४ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १११४ ।

विशेष—पद संग्रह है ।

७६६. गुटका नं० १०७ । पत्र संख्या-४५ । साइज-६X४ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-सं० १८०१ । पूर्ण । वेष्टन नं० १११५ ।

७६७. गुटका नं० १०८ । पत्र संख्या-१६० । साइज-६×४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-संग्रह ।
लेखन काल-X । अर्घ्य । वेष्टन नं० १११८ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठ हैं—

श्रीपाल की स्तुति		हिन्दी	पूर्ण
राष्ट्रपक्षीसी	सतचचंद विनोदीशाल	"	"
उपदेश पक्षीसी	बनारसीदास	"	"
कर्मघटावलि	कनककीर्ति	"	"
पद तथा बालीखना पाठ	—	"	"
पद	हरीसिंह	"	"
पंचमंगल	रूपचंद	"	अर्घ्य
विनती-बंदू श्री जिनराई	कनककीर्ति	"	" ले० का० १७८०
कल्याणमंदिर भाषा	बनारसीदास	"	आर्यदा वादवाड ने प्रतिलिपि की । पूर्ण
भस्त्रही	—	"	"
रविवार कमा	—	"	"

७६८. गुटका नं० १०९ । पत्र संख्या-२४० । साइज-८×६ इंच । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन
काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १११९ ।

विशेष—स्तोत्र तथा पदों का संग्रह है । अक्षर बहुत मोटे हैं । एक पत्र में तीन तथा चार पंक्तियां हैं ।

७६९. गुटका नं० ११० । पत्र संख्या-७२ । साइज-६×४ इंच । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन
काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ११२० ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

सामायिक पाठ	—	संस्कृत
रजस्वला स्त्री के दोष	—	"
मृतक वर्णन	—	"
स्तोत्र संग्रह	—	"

८००. गुटका नं० १११ । पत्र संख्या-१३ । साइज-६×४ इंच । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । लेखन
काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ११२१ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

८०१. गुटका नं० ११२ । पत्र संख्या-८ । साइज-७×६ । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ११२६ ।

विशेष—दर्शन तथा पार्श्वनाम स्तोत्र आदि हैं ।

८०२. गुटका नं० ११३ । पत्र संख्या-४ । साइज-१४×८ । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ११४० ।

विशेष—सिद्धाष्टक, १२ अनुप्रेक्षा-बालराम कृत, वैवाहक, पद्म-बालराम, गुरु अष्टक आदि हैं ।

८०३. गुटका नं० ११४ । पत्र संख्या-१० । साइज-४×४ । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ११४८ ।

विशेष—दर्शन शास्त्र पर संग्रह है ।

८०४. गुटका नं० ११५ । पत्र संख्या-५ । साइज-५×४ । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ११४६ ।

विशेष—बीस तीर्थंकर नाम व निर्वाण काल है ।

८०५. गुटका नं० ११६ । पत्र संख्या-२०८ । साइज-६×४ । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ११४५ ।

विषय—सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
चैत्री विधि	अमरमणिक	हिन्दी	—
पार्श्व भजन	सहजकीर्ति	"	
पंचमी स्तवन	समयसुन्दर	"	
पोसा पञ्चिकम्पण उठावना विधि	—	"	
चतुर्वीस जिनराधधर वर्णन	सहजकीर्ति	"	
बीस तीर्थंकर स्तुति	"	"	
नन्दीश्वर जयमाल	—	"	
पार्श्व जिन स्थान वर्णन	सहजक ति	"	
सीमंधर स्तवन	—	"	
नेमिराजमति गीत	जिनहर्ष	"	
चौबीस तीर्थंकर स्तुति	—	"	
सिद्धचक्र स्तवन	जिनहर्ष	"	

शुद्ध विनती	—	हिन्दि
सुधादु रवि संधि	मासिक सूरि	"
अंगोपांग फुरकन वर्णन	—	"
नक्षत्रचर्य नव साहि वर्णन	पुण्यसागर	"
सुषु स्नपन विधि	—	"
अष्टाहिका स्नपन विधि	—	"
सुनि माता	—	"
चेन्नपाल का गीत	—	"

८०६. गुटका नं० ११७ । पत्र संख्या-२० से ३६ । साइज-१०×४ $\frac{३}{४}$ । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X
अपूर्ण । प्रेक्षण नं० ११८४ ।

विषय-सूची	कर्ता	भाषा	विशेष
नूरकी शकुनावली	नूर	हिन्दी	अपूर्ण
आयुर्वेद के नुसखे	—	"	"
बायगोला का मंत्र तथा अन्नक भक्षण विधि	—	"	"
नूरकी शकुनावली	नूर	"	"

विशेष—मार्गद्वंद में लिखा है ।

मातृका पाठ	—	"
मंत्र स्तोत्र	—	"
आयुर्वेद के नुसखे	—	"

८०७. गुटका नं० ११८ । पत्र संख्या-२३ से ८६ । साइज-६×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा-प्राकृत-हिन्दी ।
लेखन काल-X । अपूर्ण । प्रेक्षण नं० ११८५ ।

विषय-सूची	कर्ता	भाषा	विशेष
समाधि भरण	—	प्राकृत	६३ से ६२ पत्र तक
मोडा	हर्षकीर्ति	हिन्दी	६४ से ६७ पत्र तक

प्रारम्भ — राग सौरठी:—

म्हारो रै मन मोडा तू तो गिरनार-या उठि आये ।

नेमिजी स्यौ युं कहियो राममती दुख ये सौंसे ॥म्हारो॥

अंतिम—मोक्ष गया जिण राजइ प्रभु गढ गिरनारि भभार रे ।

राजल तौ सरपति हुवौ स्वामी दुर्षकीर्ति सुकारौ रे ॥ गहारो० ३० ॥

॥ इति मोडो समाप्ता ॥

भक्ति वर्णन	—	प्राकृत	६८ से ८५ तक
पद	—	हिन्दी	८५ पत्र पर

प्रारम्भ—जय अरहंत संत समग्रंत देव तू विभुवन मूप ।

म०म. गुटका नं० ११६ । पत्र संख्या-२० । साइज-८x६ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X ।

पूरी । वेष्टन नं० १२१६ ।

विषय-सूची	कर्ता	भाषा	विशे
पद	महमद	हिन्दी	—

प्रारम्भ—भूलो मन भभरा रे काँई लदे ।

अंतिम भाग—महमद कहै वसत बोरीये ज्यों क्यू आवै साथी ।

साहा आपण उगाहीलै लेखी साहिब हाथी ॥

संज्ञा	बनारसीदास	हिन्दी
नववाडसञ्ज्ञाय	जिनहरी	२१

विशेष—अंतिम—रूप रूप देखि करि रे माँहि पडै किम अंध ।

दुख साथी जायौ नही हो कहै जिनहरव प्रबंध ॥

सुख रे नारि रूप त जोख्ये रे ॥ १० ॥

इति नववाडसञ्ज्ञाय संपूर्ण ।

राखल बारहमासा	—	हिन्दी	अपूर्णा ।
पार्श्वनाथ स्तुति	मावकुशल	गुजराती	पूरा

अंतिम—भवि भवि दीव्यो देव सेव इक ताहरी ।

गिर सिर तुम्ह सी आण आस प माहरी ॥

पदम सुन्दर उवभाय पसाय गुण भरी ।

भाग कुशल मरपूर सुख संपति धरी ॥

इति पार्श्व जिन स्तुति ॥

संज्ञेश्वर पार्श्वनाथ स्तुति

रामविजय

पूर्ण

ले० का० सं० १७६० चैत सुदी ५

अंतिम—संज्ञो श्री जिनराज । आपै अविवल राज ॥

रामविजय भणीए । सु प्रसन तूँ धणीए ॥

इति श्री संज्ञेश्वर पार्श्वनाथ जिन स्तुति । इमें लिखिता भाव कुरालेन । श्री केसरि वाचन कृते ॥

नंद लत्तोसी

—

संस्कृत

अपूर्ण

शृंगार ले० का० सं० १७६३ पौष मदी २

विशेष—केवल १७ से २६ तक पद्य है । बाई केसर के पठनाथ लिपि की गई थी ।

नेमिनाथ बारहमासा

हिन्दी

(गु०) १४ पद्य हैं ।

विशेष—रागभरा राजीमती लिथो संज्ञम मार ।

कहै जाण मैहर जसुमालीया सुगत मंभार ॥१४॥

विमोग शृंगार का अच्छा वर्णन है ।

सुवराम

हिन्दी

अपूर्ण

विशेष—प्रारम्भ के पत्र गल गये हैं ।

अंतिम—गांठि गरथ मत लूखा खाय ।

भूखो मत चालै सियालै । जीमर मत चालै उन्हालै ॥

बमिण होय अणन्हायो ।

कापस हो पर लेखो भूलै । ए तितु किण हीनै तोरै ॥१२०॥

एह बुधसार तणोर विचार । आलन आवै इण संसार ॥

मथी पालय रोषम युता । राज करो पलार संछुता ॥२१०॥

॥ इति बुधरास संपूर्ण ॥

तमाखू की जयमाल

आणंद मुनि ।

हिन्दी

पूर्ण

विशेष—प्रारम्भः—प्रीतम सेती बीनमें प्रमदा मुख विह्वल ।

सोरा लाल मन मोहण एके चितै तू संभाल ॥ चतुर सुजाण ॥

अंतिम—दया धरम जाणी करी सेवो सदगुरु साध भोरा लाल ।

आणंद मुनि इम उच्चरै जग माही जस वाध सोरा लाल ॥

चतुर तमाखू परिहरी ।

॥ इति तमाखू जयमाल संपूर्ण ॥

॥ लिखत अवि होरा ॥

८०६. गुटका नं० १२० । पत्र संख्या-२२ । साइज-५ $\frac{1}{2}$ ×७ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-।
अपूर्ण । वेष्टन नं० १२१० ।

विशेष — जीवों की संख्या का वर्णन दिया हुआ है ।

८१०. गुटका नं० १२१ । पत्र संख्या-५६ । साइज-६×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X ।
पूर्ण । वेष्टन नं० १२१८ ।

विषय-सूची	कर्ता	भाषा	विशेष
कक्का बचीसी	अजयराज	हिन्दी	
पद	वारी हो शिव का लोभी	"	
नारी चरित्र	—	"	
भक्त्य की उत्पत्ति	—	"	
पद	दीपचंद	"	
श्री जिनराजें क्षाम त्यों अधिकार ॥			
विनती	अजयराज	"	
श्री जिन रिलख महंत गाऊ ॥			
उपदेश बचीसी	राज	"	

८११. गुटका नं० १२२ । पत्र संख्या-२४ । साइज-४ $\frac{1}{2}$ ×६ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-हिन्दी । रचना काल-X ।
लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन नं० १२१८ ।

विशेष—मत्तिसागर सेठ की कथा है । पत्र संख्या १८१ है । प्रारम्भ में मंत्र जंत्र भी दिये हुए

८१२. गुटका नं० १२३ । पत्र संख्या-८६ । साइज-८ $\frac{1}{2}$ ×६ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X ।
पूर्ण । वेष्टन नं० १२२० ।

विशेष—गुणस्थान की चर्चा पूर्व नवल तथा भूधरदास के पद और छंडेलवाल गोत्रोत्पत्ति वर्णन ।

८१३. गुटका नं० १२४ । पत्र संख्या-५० । साइज-६ $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X ।
पूर्ण । वेष्टन नं० १२२१ ।

निम्न पाठों का संग्रह है—

विषय-सूची	कर्ता	भाषा	विशेष
राहुल धन्वीसी	विनोदीलाल	हिन्दी	
नेमिकुमार बारहमासा	—	"	

नेमि राजभक्ति जखड़ी

हेमराज

११

जखड़ी का अंतिम—नीस दिन अक निश्चारजी ।

हेम भयो जीन जानिये । ते पावै भव पार जी ॥

दिल्ली में प्रतिलिपि हुई थी ।

तिलोकचंद पटवारी गोधा चाकरू वाली ने सं० १७८२ में प्रतिलिपि की थी ।

फल पासो (फल चित्तमणि) तीर्थंकरों की जयमाल पुनः पार्श्वनाथ की चिनती आदि और हैं ।

८१४. गुटका नं० १२५ । पत्र संख्या-२२ । साइज-६×४ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X ।
अपूर्ण । वेष्टन नं० १६२२ ।

विषय-सूची	कर्ता	भाषा	विशेष
जिनराज स्तुति	कनककीर्ति	हिन्दी (गुजराती)	ले० का० सं० १७५६ कागुण सुदी ६ सांगानेर में प्रतिलिपि हुई ।
चिन्तामणि स्तोत्र	—	११	—
पार्श्वनाथ स्तोत्र	—	११	१० का० सं० १७०४ आषाढ सुदी ६ । ले० का० सं० १७६०
नेमीश्वर लहरी	—	हिन्दी	—
पंचमेक पूजा	विश्वभूषण	११	—
अष्ट विधि पूजा	सिद्धराज	११	—
आदित्यवार कथा (छोटी)	—	११	—
कुटकर काविरा—	—	११	—
ज्ञान पञ्चीसी	बनारसीदास	११	—
भक्तिसंगल	११	११	—
नित्यपूजा	—	हिन्दी	पूर्व
जिनस्तुति	रूपचन्द	११	११
आदोश्वरजी का बधावा	कल्याणकीर्ति	११	११
सम्यक्ता का बधावा	—	११	अपूर्ण

८१५. गुटका नं० १२६ । पत्र संख्या-१२२ । साइज-६×४ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल—
सं० १७०४ आषाढ सुदी ६ । अपूर्ण । वेष्टन नं० १२२४ ।

विशेष—पूजाओं के अतिरिक्त निम्न मुख्य पाठों का संग्रह है—

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
कल्याणमन्दिर स्तोत्र भाषा	बनारसीदास	हिन्दी	
सहेली संबोधन	—	"	
बच्ची पञ्चिका	भनराम	"	
ज्ञानवितामणि	मनोहर	"	

८१६. गुटका नं० १२७ । पत्र संख्या-६२ । साइज-८×६ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X ।
पूर्ण । वेष्टन नं० १२२६ ।

विषय-सूची	कर्ता	भाषा	विशेष
कर्म प्रकृति वर्णन भाषा	—	हिन्दी	—
चौबीस तीर्थंकर पूजा	अजयराज	"	से० का० सं० १८१३ अषाढ सुदी २
प्यान बच्चीसी	बनारसीदास	"	
पद	दीपचंद	"	
जोगोरासा	जिनदास	"	
जिनराज विनती	—	"	१४ चरम है ।

८१७. गुटका नं० १२८ । पत्र संख्या-१०२ । साइज-८×६ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X ।
अपूर्ण । वेष्टन नं० १२२८ ।

विषय-सूची	कर्ता	भाषा	विशेष
ककका बच्चीसी	गुलाबराव	हिन्दी	से० का० सं० १८२३ कार्तिक सुदी ४
विशेष — हीरालाल ने प्रतिलिपि की ।			
संबोध पंचासिका भाषा	बिहारीदास	"	१० का० १७५८ कार्तिक सुदी १३ ।
विशेष—बिहारीदास आगरे के रहने वाले थे ।			
आदिनाथ का बधावा (बाजा बाजीआ घण्टा जहाँ जनम्मा हो प्रभु रीसबकुमार)			
पंच मंगल	रूपचन्द्र	"	
पद (गस्तग आजि हो पवित्र मोहि भयो)		"	
छाठ द्रव्य की भजना	जगराम	"	
जैन पञ्चसी	नवलराम	"	
पद संग्रह	मोधराज बनारसीदास आदि के पद हैं ।		
चार मित्रों की कथा	अजयराज	"	१० का० १७२१ जेठ सुदी १३ । से० का० सं० १८२१ अषाढ सुदी ६ ।

वज्रनाम चक्रवर्ति की

भूधरदास

हिन्दी

वैराग्य भावना

८१८. गुटका नं० १२६ । पत्र संख्या-१६ । साइज-४ $\frac{३}{४}$ ×२ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X ।
अपूर्ण । केप्टन नं० १२३० ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

८१९. गुटका नं० १२७ । पत्र संख्या-७३ से ११४ । साइज-४ $\frac{३}{४}$ ×२ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा-संस्कृत-हिन्दी ।
लेखन काल-X । अपूर्ण । केप्टन नं० १२३२ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजाओं का संग्रह है । प्रारम्भ के ७१ पत्र तथा ७४, ७५ पत्र नहीं हैं ।

८२०. गुटका नं० १२१ । पत्र संख्या-१६ । साइज-६×३ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन
काल-सं० १६२६ मादवा सुदी ११ । अपूर्ण । केप्टन नं० १२३२ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है । जयपुर नगर स्थित नैत्यालयों की सूची दी हुई है ।

८२१. गुटका नं० १२२ । पत्र संख्या-१२६ । साइज-६ $\frac{३}{४}$ ×२ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन
काल-X । अपूर्ण । केप्टन नं० १२३६ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा, साधु नंदना, भक्तानंद भाषा आदि पाठ हैं बीच में कहीं २ पत्र नहीं हैं ।

८२२. गुटका नं० १२३ । पत्र संख्या-१७० । साइज-४ $\frac{३}{४}$ ×२ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन
काल-X । पूर्ण । केप्टन नं० १२३८ ।

विषय-सूची	कला	भाषा	विशेष
आदित्यनार कथा	माऊ	हिन्दी	—
चतुर्दशी कथा	हरिकृष्ण पारखे	"	—
पंच मंगल	रुपचंद	"	—
नित्य पूजा पाठ	—	संस्कृत	—
जिन ब्राह्मी स्तुति	—	"	—
रूपन पूजा, वैश्वनाथ पूजा आदि नैमित्तिक पूजा-संग्रह भी है ।			

८२३. गुटका नं० १२४ । पत्र संख्या-१७० । साइज-६×३ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X । पूर्ण ।
केप्टन नं० १२३६ ।

विषय-सूची	कर्ता	भाषा	विशेष
नेमीश्वर विनती	---	हिन्दी	७ वय है ।
पुण्य, पाप जग भूल पच्चीसी भगवतीदास	---	"	२० वय है ।
४६ दोष रहित आहार वर्णन	---	"	---
जिन धर्म पच्चीसी	भगवतीदास	"	अपूर्ण
पद संग्रह	जगन्नाथ	"	---
पद	श्रीमानन्द	"	---
(भज श्री विष्णु जिनंद कू)			
पद	जिणदास	"	---
(जैन धर्म नहीं करी नरदेही पाई)			
पद	जीवन्मोक्ष	"	---
(अश्वसेन राय कुल मंडन उग्र वंश अवतारी)			
सप्त व्यसन कवित्त	---	"	---
जिनके प्रभु के नाम की भई हिये प्रतीति ।			
विस्तराय ते नर भजे नरक वास मयमीत ॥			
सोलह स्वप्न (स्वप्न बत्तीसी) भगवतीदास		"	---
विशेष—अभितम—निज दीलत पाँवें भया हरै दोष दुख रासैं ॥			
सरत लकावर्ती के १६ स्वप्नों का वर्णन है ।			
पद	कृष्ण गुलाब	"	---
(समरि जिनंद समरना है निदान)			
खड्गदाला	बुधजन	"	ले० का० सं० १८१० ।
शंभूराम ने प्रतिलिपि की थी ।			
ननद मौजाई	आनंदवर्धन	"	---
का भगडा			
अनुविंशति स्तुति	जिनोदीलाल	"	---
पद संग्रह	बनारसीदास एवं भूषणदास	"	---
भाईस परीषह	भूषणदास	"	---
चरखा चउपह	अजयराज	"	---
नारहखड़ी	---	"	---

८२४. गुटका नं० १३५ । पत्र संख्या-७७ । सादृज-१५×४ १/२ इंच । भाषा-प्राकृत-संस्कृत । लेखन कागज-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १२४० ।

विषय-सूची	कला	भाषा	विशेष
दर्शन सार	देवसेन	प्राकृत	५२ गाथाएँ हैं ।
त्रिलोक प्रकृति	—	"	१२६ "
सामुद्रिक श्लोक	—	संस्कृत	—
गोशह कल्याण प्रकृति	—	"	२० श्लोक हैं ।
अष्ट ऋषि पूजा	—	"	—
राज पट्टावली	—	"	—
राजाओं के वंशों की पट्टावलि संवत् ८२६ से १६०२ तक की दो हुई हैं ।			
सञ्जन चित्त वल्लभ	मल्लिकार्जुन	"	—
त्रिलोक प्रकृति	—	प्राकृत	—

विशेष—गुटके के अन्त के ४ पृष्ठ आधे फटे हुये हैं ।

८२५. गुटका नं० १३६ । पत्र संख्या-१४० । सादृज-७×६ । भाषा-हिन्दी-संस्कृत-प्राकृत । लेखन कागज-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १२४१ ।

विषय-सूची	कला	भाषा	विशेष
आदित्यवार कथा	भाऊ	हिन्दी	१५४ पद्य हैं ।
मावना कशीली	अभिलिखति	संस्कृत	—
अनादिनिघन स्तोत्र	—	"	—
कर्म प्रकृति वर्णन	—	"	—
१४८ प्रकृतियों का वर्णन है तथा ४ गुणस्थान तक सात मोहनीय की प्रकृतियों का वर्णन भी है ।			
त्रिभुवन विजयी स्तोत्र	—	संस्कृत	—
गुणस्थान जीव संख्या	—	हिन्दी	—

समूह वर्णन

७ वें गुणस्थान से १४ वें गुणस्थान तक एक समय में कितने जीव अधिक से अधिक व कम से कम हो सकते हैं इसका वर्णन है ।

चीवीस ठाण चर्चा	—	हिन्दी	—
श्रेष्ठशास्त्राका पुस्तकों की नामावलि	—	"	—

परमानन्द स्तोत्र	---	संस्कृत	---
नेमीश्वर के दश भवतार	ब्रह्म० धर्मरुचि	हिन्दी	---
अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है ।			
बूंदी गढ़ में भासना कीधी भणिसी जे नर नारी जी ।			
श्री रवि मंगल कारणि कीधी भणौ धर्मरुचि ब्रह्मनारीजी ॥			
निर्वाण कारुड गाथा	---	प्राकृत	---
लघु सहस्र नाम	---	संस्कृत	---
विष्णुपहार स्तोत्र	धनजय	"	---
बड़ा कल्याण	---	हिन्दी	---
तीर्थंकरों के रामे जमादिक कल्याणों की तिथियां दी हैं ।			
पल्लु विधान	---	"	---
गुरुभक्ति स्तोत्र	---	प्राकृत	---
शोभीकार महिमा	---	हिन्दी	---
पल्लु विधान कथा	---	संस्कृत	---

८२६. गुटका नं० १३७ । पत्र संख्या-४४ । साइज-६ १/४ × ४ १/४ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन नं० १२४२ ।

विषय-सूची	कर्ता	भाषा	विशेष
पंच मंगल	रूपचन्द्र	हिन्दी	---
तीन चौबीसी एवं बीस तीर्थंकरों को नामावलि	---	"	---
विजयी संग्रह	---	"	---
बारह भावना	भूधरदास	"	---
वज्रनाभि लक्ष्मि	---	"	---
को वैराग्य सावना			

८२७. गुटका नं० १३८ । पत्र संख्या-६ से ४१ । साइज-६ × ४ १/४ इंच । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन नं० १२४३ ।

विषय-सूची	कर्ता	भाषा	विशेष
पूजा संग्रह	---	संस्कृत	---
विशेष-देव पूजा वीर विरहमान सिद्ध पूजा आदि का संग्रह है ।			
समुच्चय चौबीस तीर्थंकर पूजा अजयराज		हिन्दी	पूर्ण

पंचमेक पूजा	—	हिन्दी	अपूर्ण
तीन चौबीसी तीर्थ'करों की नामावलि	—	"	पूर्ण
समुच्चय चौबीस तीर्थ'कर जयमाल	—	"	—

८२८. गुटका नं० १३६ । पत्र संख्या-२३ से ७० । साइज-६ १/२×६ । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । लेखन काल-५ । अपूर्ण । वेष्टन नं० १२४४ ।

विषय-सूची	कर्ता	भाषा	विशेष
पञ्चावती पूजा	—	संस्कृत	अपूर्ण
चंद्रप्रभरतुति	—	हिन्दी	पूर्ण
(चन्द्रप्रभु जिन ध्यायज्यौ । मन्त्रि हो चंद्रप्रभु जिन ध्यायज्यौ ॥ टेक			
पंच बधावा	—	"	—
आदिनाथ स्तुति	—	"	अपूर्ण
धारती विनती	—	"	ले० का० सं० १७७७ मंगसर सुदी ५
पद	—	"	ले० का० सं० १७७४ पीष बुदी १०
विनती	—	"	—
पूजा	—	"	—
दर्शनपाठ	—	संस्कृत	—
भक्तामर स्तोत्र	मानसुंगाचार्य	"	—
सीख गुरुजनों की	—	हिन्दी	—
कल्याणभंदर भाषा	बनारसीदास	"	ले० का० सं० १७६५ आसोज सुदी ४
देवपूजा	—	"	ले० का० सं० १७६६ आषाढ बुदी २

विशेष—गुलाबचन्द पारमी की पोष्टी है । सांगानेर में प्रतिलिपि की गई थी ।

८२९. गुटका नं० १४० । पत्र संख्या-१० से १२० । साइज-५×६ इंच । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन काल-५ । अपूर्ण । वेष्टन नं० १२४५ ।

विषय-सूची	कर्ता	भाषा	विशेष
समयसार भाषा	बनारसीदास	हिन्दी	—
भक्तामर स्तोत्र एवं पूजा	—	संस्कृत	—

सिद्धि प्रिय स्तोत्र	देवनन्दि	संस्कृत	—
कल्याणमंदिर स्तोत्र	कुमुदचंद्र	"	—
विषाणहार स्तोत्र	धनंजय	"	—
नेमीश्वरगीत	जिनहर्ष	हिन्दी	—
जलखी	अनंतकीर्ति	"	रचना काल सं० १७५० भाद्रपद सुदी १०
नेमीश्वर राजमति गीत	विनोदोत्तम	"	—
मेघधुमार गीत	पूनी	"	—
भुविश्वर स्तुति	—	"	—
ज्येष्ठजिनवर कथा	—	"	—

गुटके के प्रारम्भ के २ पत्र नहीं हैं ।

८३०. गुटका नं० १४१ । पत्र संख्या-१२ । साइज-७×६ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-५ । अपूर्ण । वेष्टन नं० १२५३ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

८३१. गुटका नं० १४२ । पत्र संख्या-१५ से ४८ । साइज-८×६ इंच । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । लेखन काल-सं० १८११ । अपूर्ण । वेष्टन नं० १२६४ ।

विषय-मूर्ची	कर्ता	भाषा	विशेष
पार्श्वनाथ जयमाल	—	संस्कृत	—
कलिकुंड पूजा	—	"	—
चितामणिपूजा	—	"	—
शान्ति पाठ	—	"	—
सरस्वती पूजा	—	"	ले० का० सं० १८११ जेठ सुदी १
क्षेत्रपाल पूजा	—	"	—
महावीर विनती	—	हिन्दी	—

विशेष—चाँदनगात्र के महावीर की विनती है । इसमें ११ अंतरे हैं । अन्य पाठ भी हैं ।

८३२. गुटका नं० १४३ । पत्र संख्या-६० । साइज-४½×६½ इंच । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन काल-सं० १८१३ । अपूर्ण । वेष्टन नं० १२५५ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

(१) निर्वाण काण्ड, भक्तामर भाषा, पंच मंगल, कल्याण मंदिर आदि स्तोत्र ।

(२) ४८ यंत्र विधि सहित दिए हुए हैं एवं उनके फल भी दिये हुए हैं । ये भक्तामर स्तोत्र के यंत्र नहीं हैं ।

(३) गज करणादि की औपधि, हितोपदेश भाषा, लाला तिलोकचंद की सं० १८२२ की जन्म कुंडली भी दी हुई है ।

(४) कविता—केई खंड खंड के निरदन कू जिति आयो ।

पलक में तोरे डारया किलो जिन बारको ॥

म्हा मगरु कोऊ सुभक्त न सूर ।

राहु केत खी गरुर हौ वहीया बडे सारको ॥

मोर है हजार च्यारि असवार और ।

लगी नहीं वार जोध विच्यो वजार को ॥

भाधव प्रताप सेती जैपुर सवाई मांझ ।

मारि कवारयो मगरु महाजना मलारको ॥

(५) नौ कोठे में बीस का यंत्र —

				२
१	६	०	१०	
	०	३	०	
	७	०	८	५
४				

यंत्र का फल भी दिया हुआ है ।

नं० ३३. गुटका नं० १४४ । पत्र संख्या-२२ । साइज-६×४ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-४ ।
अपूर्ण । वेष्टन नं० १२५६ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

नं० ३४. गुटका नं० १४५ । पत्र संख्या-७५ । साइज-६×४ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-४ ।
अपूर्ण । वेष्टन नं० १२५७ ।

विशेष—बखतराम कृत आसावरी है पत्र संख्या ३१ है ।

नं० ३५. गुटका नं० १४६ । पत्र संख्या-३ सँ २७ । साइज-६×४ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन
काल-४ । अपूर्ण । वेष्टन नं० १२५८ ।

विशेष—पंच संगल पाठ तथा चौबीस ठाणों का व्योम है ।

८३६. गुटका नं० १४७ । पत्र संख्या-१२ से १२ । साइज-६×४ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखनकाल-सं० १८३८ आषाढ शुदी ७ । अपूर्ण । वेष्टन नं० १२६६ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है तथा सूक्त की बारह खड़ी है जिसके ११२ पद्य हैं ।

८३७. गुटका नं० १४८ । पत्र संख्या-२७६ । साइज-७½×६ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-सं० १७६६ ज्येष्ठ शुदी ११ । अपूर्ण । वेष्टन नं० १२६७ ।

विषय-सूची	कर्ता	भाषा	विशेष
हनुमंत कथा	ब्रह्म राममन्त्र	हिन्दी	—
सविन्दुता कथा	—	"	खै० का० सं० १७२७ फाल्गुण शुदी ११
जैनरासो	—	"	—
साधु बंदना	बनारसीदास	"	—
चतुर्गति बेलि	हर्षकीर्ति	"	—
अठारह नाता का चौदाला	साहू लोहर	"	—
स्फुट पाठ	—	"	—

८३८. गुटका नं० १४९ । पत्र संख्या-२० । साइज-६½×४½ इंच । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन नं० १२६८ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

८३९. गुटका नं० १५० । पत्र संख्या-११० । साइज-६½×४½ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-४ । अपूर्ण । वेष्टन नं० १२६९ ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है ।

८४०. गुटका नं० १५१ । पत्र संख्या-१६४ । साइज-६½×४½ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखनकाल-४ । पूर्ण । वेष्टन नं० १२७० ।

विशेष—पद्य व स्तोत्रों का संग्रह है ।

८४१. गुटका नं० १५२ । पत्र संख्या-१२० । साइज-६½×४½ इंच । भाषा-हिन्दी-संस्कृत-प्राकृत । लेखन काल-सं० १७६९ । पूर्ण । वेष्टन नं० १२७१ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजाओं, जयमाल तथा भाऊ कवि वृत्त आदित्यवार कथा आदि का संग्रह है ।

८४२. गुटका नं० १५३ । पत्र संख्या-२४ । साइज-६ $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १२७० ।

मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है—

भक्ताभर स्तोत्र	मानलुंगारवाय	संस्कृत	—
बारह खंडी	श्रीदत्तलाल	हिन्दी	—

प्रारम्भ—कका केवल कृष्ण भज जब लग रहे शरीर ।

बहोर न औसा दाव है, आन पड़ेगी मीठ ॥१॥

अन्तिम—हा हा इह मन हसत हो, हरजन हुँ न कोइ ।

बेसे हँस खाली गये ए जुर रहे सुम जोय ॥

जे जुर रहे सुम जोय होय तीतु रे पुरकु ।

होनहार थी रहे सुरावन गऐ जू धरकु ॥

सुरा अत पाताल काल यह वाली ।

भाइदत्तलाल वह साहिब खाली ॥

॥ बाराखंडी संपूर्ण ॥

८४३. गुटका नं० १५४ । पत्र संख्या-१७ । साइज-६×५ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन नं० १२७१ ।

विशेष—जगराम, नवल, सालिग भागचंद, आदि कवियों के पद हैं तथा बनारसीदास कृत कुछ कविता और सबैये भी हैं ।

८४४. गुटका नं० १५५ । पत्र संख्या-६४ । साइज-६ $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-सं० १३०१ आसोज सुदी १२ । अपूर्ण । वेष्टन नं० १२७२ ।

विषय-सूची	कर्ता	भाषा	विशेष
सुशुभ शतक	जिनदास	हिन्दी	१० का० सं० १८१२ चैत बुदी ८
मीरा पैड़ी	बनारसीदास	"	—
बारह भावना	भगवतीदास	"	—
निर्वाण काण्ड भाषा	"	"	१० का० सं० १७४३ आसोज सुदी १०
जैन शतक	भूधरदास	"	१० का० सं० १७८१ पौष बुदी १३

८४५. गुटका नं० १५६ । पत्र संख्या-४४ । साइज-७×५ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १२७३ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजादि का संग्रह एवं ६३ श्लोका पुरुष तथा १६६ पुरुष जीवों का ध्यौरा दिया हुआ है।

८४६. गुटका नं० १५७। पत्र संख्या-२३४। साइज-११ $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इंच। भाषा-हिन्दी-संस्कृत। लेखन काल-५। लेखन काल-५। पूर्ण। वेष्टन नं० १२७४।

रचना का नाम	कर्ता	भाषा	विशेष
समयसार वननिका	—	हिन्दी	ले. का. सं० १६६७ चैत्र सुदी ७।

प्रशस्ति—सं० १६६७ चैत्र शुक्ल पक्षे तिथी सप्तम्या अंबावती मध्ये राजा जैसिध प्रतापे लिखाइतं सहि देव-सी जी। लिखतं जोसी अखिराज प्रसिद्धा।

पद संग्रह	बनारसीदास, रूपचंद	॥	—
धर्म धमाल	धर्मचंद	॥	ले. का. सं० १६६६ श्रावण सुदी ८।
आत्म हिंडोलना	केशवदास	॥	—
वणिजारो रास	रूपचंद	॥	ले. का. सं० १६६६ श्रावण सुदी ८।
ज्ञान पच्चीसी	बनारसीदास	॥	—
कर्म कच्चीसी	—	॥	—
ज्ञान बत्तीसी	बनारसीदास	हिन्दी	—
चंद्रगुप्त के सोलह स्वप्न	ब्रह्मरायमल्ल	॥	—
छादशानुप्रेक्षा	आलू	॥	—
शुभाषितार्थव	—	संस्कृत	—

८४७. गुटका नं० १५८। पत्र संख्या-१२६। साइज-६×४ इंच। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-५। पूर्ण। वेष्टन नं० १२७५।

विशेष—मुख्य रूप से निम्न पाठों का संग्रह है—

पूजा स्तोत्र एवं पद संग्रह	—	हिन्दी	—
जिनगीत	अजयराज	॥	—
शिवरमणी ओ विवाह	॥	॥	१७ पद्य है।

फ़ारनसिंह, अजयराज, घानतराय, दीपचंद आदि कवियों के पदों का संग्रह है।

८४८. गुटका नं० १५९। पत्र संख्या-१५ से ६४। साइज-८×६ $\frac{३}{४}$ इंच। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-५। पूर्ण। वेष्टन नं० १२७६।

विशेष—चन्द्रायण व्रत कथा है । पत्र संख्या १ : ८ से ६३७ तक है । कथा गद्य पद्य दोनों में ही है । गद्य का उदाहरण निम्न प्रकार है—

जदी सारा लोमा कली । छाप तो जाणो प्रणीय छी । जसा बल ग्यान कुला सो तो काम की नहीं । अर पीहर सागर आदर नहीं अर जमारो अर्थीको बीसर होई । जीसु काइ कहवाम आव । अर श्रीको तो सीलौव लीखो छी । जीसु आपका मनम आवतो कवर नै जुलाइ लीनावो ॥

८४६. गुटका नं० १६० । पत्र संख्या—१३ से १४४ । साइज—८×५ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—सं० १७३८= कार्तिक-वृद्धी १३ । अपूर्णे । वेष्टन नं० १२७७ ।

निम्न पाठों का संग्रह है—

विषय—सूची	कर्ता	भाषा	विशेष
महाराज देवेन्द्रकीर्ति की पूजा	—	संस्कृत	पत्र १३ से १४
सिद्ध प्रिय स्तोत्र टीका	—	हिन्दी	१४ से ३२
योगसार	योगचंद्र	"	३३ से ४६
ले० का० सं० १७३५ चैत्र सुदी ५ ।			
संग्रहाने में लिखा गया ।			
अनित्य पंचासिका	त्रिभुवनचंद्र	"	पत्र ४७ से ६६, ५६ पद्य हैं ।
अष्टकर्म प्रकृति वर्णन	—	"	६० से ६८
मुनीश्वरों की जयमाला	जिनदास	"	६८ से ७२
पंचसंख्य	—	संस्कृत	७२ से ७३
धमाल	धर्मचंद्र	हिन्दी	७३ से ७४
जिन विनती	सुमतिकीर्ति	"	पत्र ७४ से ७८, २३ पद्य हैं ।
गुणस्थान गीत	महबद्धन	"	७८ से ८१
समकित भावना	—	"	८१ से ८४
परमार्थ गीत	रूपचंद्र	"	८४ से ८६
पंच भगवा	—	"	८६ से ८८
मेषकुमार गीत	पूनी	"	८८ से ९६
महामर स्तोत्र भाषा	हेमराज	"	८६ से ९५
मनोरथ माला	—	"	९५ से ९६
पद	श्यामदास जिनदास आदि	"	९६ से १०१

मोह विवेक युद्ध	भनारसीदास	हिन्दी	१०१ से ११०
योगीरासो	जिनदास	"	१११ से ११३
जख्खी	रूपचंद	"	११४ से १२४
पंचेन्द्रिय बेल	ठक्कुरसी	"	१२४ से १२६
			२० का० सं० १५८५
पंचगति की बेल	हर्षकीर्ति	"	१२६ से १२८
पंचगति	छोड़ल	"	१२८ से १३४
पद	रूपचंद	"	१३४ से १३६
द्वादशानुशेष	—	"	१३७ से १४४

नं०. गुटका नं० १६१ । पत्र संख्या-१५० । साहज-८५५६ १/२ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन
काल-X । अपूर्ण । केप्टन नं० १२७८ ।

निम्न पाठों का संग्रह है—

विषय-सूची	कर्ता	भाषा	विशेष
सन्ध्या	केशवदास	हिन्दी	अपूर्ण ।
सोलह घड़ी जिन धर्म पूजा की कन्हिराम गोधा ने लिपि की ।	—	"	—
पंच अध्याय	पं० हरीचैस	"	ले. का. १७७१
पाश्वेनाथ स्तुति	—	"	र. का. सं. १७०४ आषाढ सुदी ५ ।
पद	हर्षकीर्ति	"	१३ पद्य हैं ।

प्रारम्भ—जिन जपु जिन जपु जीयडा सुवण मै सारोजी ।

अंतिम—सुम परणाम का हेत स्यो उपजै पुनि अनंतो जी ।

हरष कीरतो जीन नाम सुमरणो दीनी मति चको जी ।

जिन जपु जिन छपि जीबडो ॥

आदिनाथ जी का पद	कृशलतिह	हिन्दी	ले. का. सं. १७७१
मयाचंद गंगवाल ने रौभन्दी में लिपि की थी ।			
नेमिजी की लहर	पं० दूंगो	"	—
सुखर सील	मनोहर	"	—
साह हरीदास ने प्रतिस्तिपि की थी ।			

राजल पंचवीसी	विनोदलाल	"	ले. का. सं. १७६३
अठारह नाता का चौदाला	सोहर	"	—
नेमिनाथ का बारहमासा	श्यामदास गोधा	"	जे. सं. १७८६ आषाढ सुदी १४ ।

अंतिम—नागजी मासी नेम को राजल सोलैहनी गाढ़ जी ।

नेम जी मुक्ती पहुतण श्यामदास गोधा उरि लावी जादुगइती ।

इति बारहमासा संपूर्ण ।

कक्का — हिन्दी ले० का० सं० १७७४

मैन २० का १ जोड़नी लः—

			९
४	७	६	
	८	१०	२
	५		

बारह मावना मगवतीदास हिन्दी ले० का० सं० १८५०
कर्म प्रकृति — " —
मानमल ने प्रतिलिपि की थी ।

प्र० १. गुटका नं० १६२ । पत्र संख्या—२१ से २१२ । साइज—८×३ १/२ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—४ । पूर्ण । वेष्टम नं० १२७६ ।

विशेष—निम्न पार्थों का संग्रह है—

विषय—पूर्वा	कर्ता	भाषा	विशेष
माली रासा	जिणदास	हिन्दी	पत्र ६३
नेमीश्वर राजमति गीत	—	"	६५
नेमिनाथ राजल गीत	हर्षकीर्ति	"	६८

प्रारम्भ—स्वारो रै मन मोहवा गिरनार्याँ उडि दैसो रै ।

अन्तिम—मोषि गयो जिण राजह गद गिरनारि मझारे ।

राजमति सुरपति हुई हरष कीरति सुख करै ।

नेमीश्वर गीत	हर्षकीर्ति	"	६६
आचार रासा	—	"	७०

वेदतान जयमाल	—	संस्कृत	पृ. ७२
गीत	हेमराज	हिन्दी	७२
चौबीस तीर्थंकर स्तुति के २ पद्य हैं ।			
जीयदा गीत	—	"	७४

विशेष—तु मेरो पीब साजना रै हुं तेरी वर नारि मेरा जीवडा ।

तुम विन बिधा एक ना रहो रे लाल तुझसे प्रेम पियार मेरा जीवडा ।

काया कामिणी वीनउ रै लाल ॥१॥

६ पद्य हैं ।

पूजा संग्रह	—	संस्कृत हिन्दी	६८
श्री जिनस्तुति	न० तेजपाल	"	११६
श्रीजिन नमस्कार	यशोनंद	"	११७, ११ पद्य हैं ।
धर्म सहेली	मनराम	"	१६३, २० पद्य हैं ।
मेघकुमार गीत	पूनी	"	१६६, २१ पद्य हैं ।
पद	कवि सुन्दर	"	१६७, २० पद्य हैं ।
जीवकी साधना	—	"	१७२, ६ पद्य हैं ।
ऋषमनाथ वेलि	—	"	१७३
नेमि राजल गीत	बुगरसी बैनाडा	"	१७४
पंचेन्द्रिय वेलि	ठक्कुरसी	"	१७६ र. का. सं. १४=४
कर्म हिंडोलना	हर्षकीर्ति	"	१८१
नेमिगीत	—	"	१८४
नेमिराजमती गीत	—	"	१८६ १७ पद्य हैं ।
दीतवार कथा	भक्तकवि	"	—
भारह खड़ी	—	"	—
सीता की धमाल	लक्ष्मीचंद	"	२०९
तत्वाथे सूत्र	उमास्वाति	संस्कृत	२१२

स्फुट एवं अवशिष्ट साहित्य

८५२. अहमंताकुमार रास—मुनि नारायण । पत्र संख्या—८ । साइज—१०×४½ इंच । भाषा—हिन्दी (एक) गुजराती मिश्रित । विषय—कथा । रचना काल—सं० १६=३ । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ११६१ ।

विशेष—१ तथा ५ वां पत्र नहीं है ।

अन्तिम—अरिहंत वाणी हृदय आणी पूरा इति निज थासए ।

श्री रामसीह राखि मल्ल नायक पाय प्रथमी तासए ॥३३॥

संवत सोल त्रिहासो आ वर्षि कुबि बदि पौस मासए ।

कल्प वल्ली माहि रंगिइ रच्यउ सुंदर रास ए ॥३४॥

बाचारिषि शिष्य समरचंद मुनी विमल गुण आकासए ॥३५॥

८५३. अजोर्ण मंजरी—पत्र संख्या—८ । साइज—१०½×४½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० १४१ ।

८५४. अर्द्धकथानक—अनारसीदास । पत्र संख्या—४ से ३२ । साइज—६×८½ इंच । भाषा—हिन्दी एक । विषय—आत्म चरित्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ११६३ ।

विशेष—कवि ने स्वयं का आत्म चरित्र लिखा है ।

८५५. अर्हन् सदस्त्रनाम—पत्र संख्या—६ । साइज—१०½×४½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० १२०३ ।

विशेष—चित्तामणि पार्श्वनाथ स्तोत्र एवं मंत्र भी दिया हुआ है । पंडित श्री सिध सौभाग्य गण ने प्रतिलिपि की भी ।

८५६. आदिनाथ के पंच मंगल—अमरपाल । पत्र संख्या—८ । साइज—६×४ इंच । भाषा—हिन्दू एक । विषय—वर्म । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १७७२ सावण सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन नं० १२२० ।

विशेष—सं० १७७२ में जहन्नाबाद के जैसिहपुरा में स्वयं अमरपाल गंगवाल ने प्रतिलिपि की भी ।

अन्तिम छंद—अमरपाल को चित्त सदा आदि चरन लो लाइ ।

मय मय मोहि उपासना रहो सदा ही आइ ॥

जिनकर स्तुति दीपचन्द की भी दी हुई है ।

८५७. किशोर कल्पद्रुम -- शिव कवि । पत्र संख्या-१८४ । साइज-८ १/२ x ६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पाक शास्त्र । रचना काल-X । लेखन काल-X । अधूरा । बेष्टन नं० १०१२ ।

विशेष--इति श्री महाराज नृपति किशोरदास आम्ना प्रमाणेन शिव कवि विरचितं ग्रंथ किशोर कल्पद्रुमे सिस्तरादि विधि वरनन नाम नवविंशत साखा समाप्ता । १२० पृथ तक है । आगे के पत्र नहीं हैं ।

८५८. कुवलयानन्द कारिका--पत्र संख्या-८ । साइज-१२ x ७ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-रस अलंकार । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । बेष्टन नं० १०७१ ।

विशेष--एक प्रति और है । इसका दूसरा नाम चन्द्रालोक भी है ।

८५९. ग्रन्थ सूची--पत्र संख्या- । साइज-८ x ६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-सूची । रचना काल-X । लेखन काल-X । अधूरा । बेष्टन नं० ११५२ ।

८६०. चन्द्रगुप्त के सोलह स्वरन--पत्र संख्या-३ । साइज-६ ३/४ x ४ ३/४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-विविध । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । बेष्टन नं० ६४३ ।

विशेष--सम्राट् चन्द्रगुप्त को छे लोहाह स्मरण भूरे दे उनका पत्र दिया हुआ है ।

८६१. चौबीस ठाणा चौपई--साह लोहट । पत्र संख्या-६२ । साइज-११ १/२ x ६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-सं० १७३९ मंगसिर सुदी ५ । लेखन काल-सं० १७६३ फाल्गुण सुदी १४ शके १६२३ । पूर्ण । बेष्टन नं० ४२७ ।

विशेष--कपूरचन्द ने टोक में प्रतिनिधि की थी । प्रशस्ति में लोहट का पूर्ण परिचय है ।

रचना चौपई छन्द में है जिसकी संख्या १३०० है । साह लोहट अच्छे कवि थे जो श्री धर्मा के पुत्र थे । पं० लक्ष्मीदास के आग्रह से इस ग्रंथ की रचना की गयी थी । भाषा सरल है ।

प्रारंभ--श्री जिन नेमि जिनंदचंद बंदिष आनंद मन ।

सिध सुध अकलंक ध्येक सर सरि मयंक तन ॥

ए अष्टादश दोष रहत उन अन्नत कीइय ।

ए गुण रत्न प्रकास सुजस जग उन भजोइय ॥

ए ज्ञान बहै यमृत सबै इवै साति बहै सीतधर ।

ए जीव स्वरूप दिखाय दे बहै लखावै लोक वर ॥

अंतिम--बुध सज्जन सब ते अरदास, लखि चौपई करोमत हासि ।

इमकी पारन कीऊलही, मै सोरी मति साक कही ॥१८५॥

लाख पचीस निम्नपावन कीष्टि एक अब बुध लीज्यो नोहि ।

सो रचना लख उगीन लाय । जंगल कदे धरु बनाय ॥१८६॥

८६२. जखण्डो—पत्र संख्या—२ । साइज—११ $\frac{१}{२}$ ×१२ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्फुट । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०४६ ।

८६३. जीतकल्याणचूरि—पत्र संख्या—५ । साइज—१०×१२ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ११६२ ।

विशेष—संस्कृत टिप्पण भी दिया हुआ है ।

८६४. दस्तूर मालिका—बंशीधर । पत्र संख्या ६ । साइज १०×१० । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्मशास्त्र । रचना काल सं० १७६५ । लेखन काल—X । अपूर्ण एवं जीर्ण । वेष्टन नं० १२८० ।

विशेष—इसमें व्यापार संबंधी दस्तूर दिये हुए हैं ।

प्रारम्भ—... जो धरत गनपति वार्ते मैं धरत जे लोह ।

धुन बंदत इकदंत के धर मुनि जन सब कोह ॥ १ ॥

हीन अक चक धुज पय पर प्रय पाप प्रसाद ।

बंसीधर वरननि कियौ सुनत होय यहलाद ॥ २ ॥

जदि यदुनी लेखे धनै लेखे के करतार ।

मटकत बिनि दस्तूर है अटकत मारभार ॥ ३ ॥

सूध पंथ जो अनिरिगै पहुचहि मजल ऊताल ।

रहिबीना बिसराइ है संकट बंकट जाल ॥ ४ ॥

पतसाहि आलम अमिल सालिम प्रवस प्रताप ।

आलम मे जाको सबै घर घर जापस जाप ॥ ५ ॥

अब साल भुवपाल को राजम राज बिसाल ।

सकल हिन्दु उम जाल में मनौ इन्दुदत जाल ॥ ६ ॥

ताके अंता सोमिजे सकतसिध बलवान ।

उमसहैगा सब हके नंद दीह दलवान ॥ ७ ॥

सहर सकतपुर राज ही सब समाज सब ठौर ।

परम धरम सुकरन जहा सबै जगस खिर मौर ॥ ८ ॥

सकत सप्तसैकरा पैसठ परम पुनीत

करि वरननि यहि ग्रन्थ को अह चरनन करि भीत ॥ ९ ॥

अथ श्रृंगार खरीद को दस्तूर —

जिते रुपैया मोल को गज प्रत जो पट लेइ ।

गिरह एक आना तिते लेख लिखारी देइ ॥ १० ॥

आना ऊपर होय गज प्रति रुपिया अंक ।

तीन दाम थठ अंसु बट मट प्रति लिखी निरुक्त ॥ ११ ॥

इसमें कुल १४३ तक पद्य हैं । प्रति अपूर्ण है ।

८६५. नख शिख चर्णन — पत्र संख्या—६ से १६ । साइज—६×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—शृंगार । रचना काल—X । लेखनकाल—सं० १८०६ । अपूर्ण । वेष्टन नं० १०१३ ।

विशेष—बलतरान साह ने लिखी थी ।

८६६. नित्य पूजा पाठ संग्रह । पत्र संख्या—१० । साइज—११×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ३०५ ।

८६७. पत्रिका—पत्र संख्या—१ । साइज—X । भाषा—संस्कृत—हिन्दी । विषय—प्रतिष्ठा का वर्णन । रचना काल—X । लेखनकाल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० १२६१ ।

विशेष—सं० १८२१ में जयपुर में होने वाले पंच कल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव की निमंत्रण पत्रिका है ।

८६८. पद संग्रह — जौहरीलाल । पत्र संख्या—९४ । साइज—१०½×६½ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पद । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० १२१२ ।

विशेष—२४ पदों का संग्रह है ।

८६९. पन्नाशाहजगदा की बात—पत्र संख्या—२० । साइज—६½×८½ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १७६० आसोज सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६६ ।

विशेष—आविका कुरासा ने बाई केशर के पठनार्थ प्रतिलिपि की ।

२० से धागे के पत्र पानी में भोंगे हुए हैं । इनके अतिरिक्त मुख्य पाठ ये हैं—

पद	हरीसिंह	
समति कृमति का गीत	विनोदीलाल	१८७२
ओगीरसा	विणदास	—

८७०. परमात्म प्रकाश—योगीन्द्रदेव । पत्र संख्या—५ से २४ । साइज—११½×६ इंच । भाषा—अवध भाषा । विषय—अध्यात्म । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १५६७ वैशाख सुदी १० । अपूर्ण । वेष्टन नं० ११६६ ।

विशेष—ईदर के दुर्ग में लेखक इंगर ने प्रतिलिपि की ।

अंत में यह भी लिखा है:—श्रीमूलसंघे श्री मत् इर्ष सुकीर्ति नं पुस्तक सिद्धे ॥ बसुपुरे ॥

८७१. पल्लव विधान पूजा—रत्न नंदि । पत्र संख्या—१ । साइज—१० $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । बेष्टन नं० १२११ ।

८७२. पाठ संग्रह—पत्र संख्या—६१ । साइज—१२×४ इंच । भाषा—संस्कृत—प्राकृत । विषय—संग्रह । लेखन काल—X । पूर्ण । बेष्टन नं० १०६७ ।

विशेष—आशाधर विरचित प्रतिलिपि पाठ के पाठों का संग्रह है ।

८७३. पाठ संग्रह—पत्र संख्या—२० । साइज—१२×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—संग्रह । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । बेष्टन नं० ४८० ।

विशेष—इहं सतीति, पुत्रीमन, स्तोत्र वाक्यान्तर संग्रह, निर्दिष्ट मंड, परंबरीति, कल्याण मन्दिर और विद्यापहार स्तोत्र हैं ।

८७४. पाठ संग्रह—भाष्यतीदास । पत्र संख्या—३ । साइज—१०×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—संग्रह । लेखन काल—X । पूर्ण । बेष्टन नं० १६७ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

मूढाक्षक वर्णन—

सम्यक्त्व पञ्चीसी—

वैराग्य पञ्चीसी—

१० का० सं० १७६० ।

८७५. पाठ संग्रह—पत्र संख्या—२५ । साइज—१२×८ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—संग्रह । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । बेष्टन नं० ४७५ ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र, सहस्र नाम, तथा तत्त्वार्थ सूत्र का संग्रह है ।

८७६. पाठ संग्रह—पत्र संख्या—१० । साइज—८×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—संग्रह । लेखन काल— । पूर्ण । बेष्टन नं० ८६६ ।

विशेष—सात गुरु का भगवा आदि पाठों का संग्रह है ।

८७७. बनारसी विलास—बनारसीदास । पत्र संख्या—७ से ८७ । साइज—११ $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—संग्रह । रचना काल—X । संग्रह काल—१७०१ । लेखन काल—सं० १७०८ भाष्य कुटी ६ । अपूर्ण बेष्टन नं० ७३६ ।

विशेष—सकलकीर्ति ने प्रतिलिपि की थी । प्रारम्भ के २१ पत्र फिर लिखवाये गये हैं ।

८७८. प्रति नं० २ । पत्र संख्या—१३७ । साइज—१० $\frac{३}{४}$ ×७ $\frac{३}{४}$ इंच । लेखन काल—सं० १७०७ कागुण सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७६३ ।

विशेष—३ प्रतियाँ थीं ।

८७९. बुधजन विलास—बुधजन । पत्र संख्या—११८ । साइज—१० $\frac{३}{४}$ ×७ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—संग्रह । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ७२२ ।

८८०. मजलसराय की चिट्ठी—पत्र संख्या—२२ । साइज—६×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—शात्रा वर्णन । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८४७ मादवा सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन नं० १२६४ ।

विशेष—मजलसराय पानीपत वाले की चिट्ठी है । चिट्ठी के अन्त में पदों का संग्रह भी है ।

८८१. रागमाला—पत्र संख्या—२ । साइज—६ $\frac{३}{४}$ ×६ इंच । भाषा—संस्कृत—हिन्दी । विषय—संगीत शास्त्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ६०६ ।

८८२. लघु क्षेत्र समास—पत्र संख्या—४६ । साइज—६ $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—लोक-विज्ञान । रचना काल—X । लेखनकाल—X । पूर्ण । जीर्ण । वेष्टन नं० ११८८ ।

विशेष—मूल ग्रंथ प्राकृत भाषा में है जो स्तनशेखर कृत है । यह इसकी टंका है ।

८८३. लीलावती भाषा—पत्र संख्या—१ से ७४ । साइज—१० $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—गणित शास्त्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ६३४ ।

८८४. वर्द्धमानचरित्र टिप्पण—पत्र संख्या—३८ से ४१ । साइज—१० $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १४२१ आसीज सुदी १० । अपूर्ण । वेष्टन नं० १२६३ ।

विशेष—वर्द्धमानचरित्र संस्कृत टिप्पण । यह टिप्पण जयमित्रहल के वर्द्धमाण कव्य (अथर्वश) का संस्कृत टिप्पण है । टिप्पण का अन्तिम भाग ही अवशिष्ट है ।

८८५. व्यसनराजवर्णन—टेकचन्द्र । पत्र संख्या—१८ । साइज—१२×७ इंच । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—विविध । रचना काल—सं० १८२७ । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ८७४ ।

विशेष—सप्त व्यसनों का वर्णन है पद्य संख्या २१६ है ।

८८६. श्रावक धर्म वर्णन—पत्र संख्या—१० । साइज—४ $\frac{३}{४}$ ×६ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विशेष—आचार शास्त्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० १२२३ ।

विशेष—गुटका साइज है ।

८८७. सञ्ज्ञाय—विजयभद्र । पत्र संख्या-१ । साइज-१०×४½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तुति । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ११७१ ।

विशेष—इसके अतिरिक्त यादों के द्वारा सूरि की सञ्ज्ञाय भी दी हुई है ।

८८८. साधमी भाई रायमल्लजी की चिट्ठी—रायमल्ल । पत्र संख्या-१० । साइज-१०×७ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास । रचना काल-सं० १=२१ माह बुदी ६ । लेखन काल-सं० १=२१ माह बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०८ ।

विशेष—रायमल्लजी के हाथ की चिट्ठी है ।

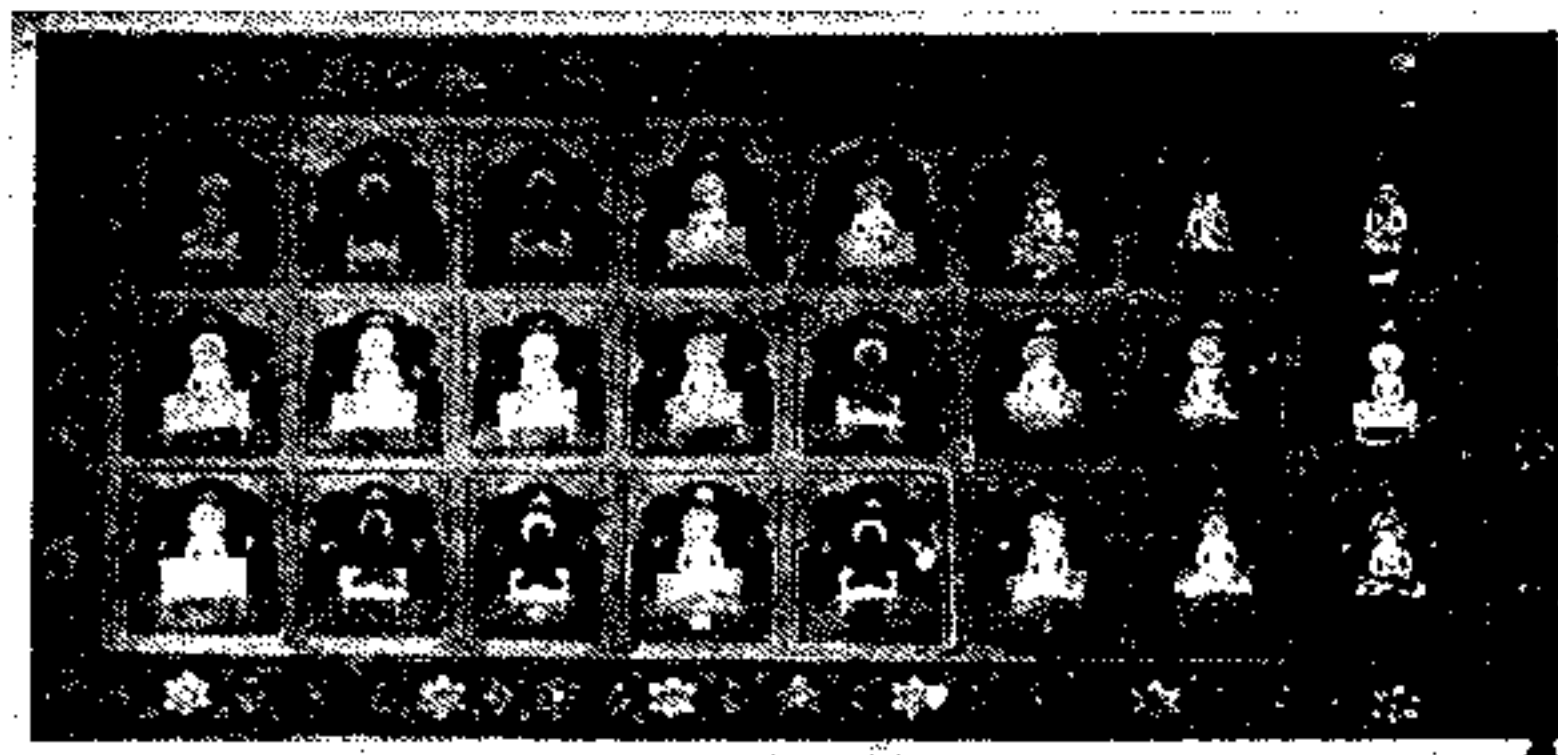
८८९. शालिभद्र सञ्ज्ञाय—मुनि लोचन स्वामी । पत्र संख्या-१ । साइज-१०×४½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तुति । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १७२६ चैत्र बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ११७० ।

विशेष—रामजी ने प्रतिलिपि की थी ।

८९०. हरिवंश पुराण—महाकावि धवल । पत्र संख्या-२१६ से २२४ । साइज-६२×४½ इंच । भाषा-अष्टभंश । विषय-काव्य । रचना काल-X । लेखन काल-X । अपूर्ण एवं जीर्ण । वेष्टन नं० १२४० ।



जयपुर में टोलियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डार में संग्रहीत एक कलात्मक पुट्टा
जिस पर चौबीस तीर्थङ्करों के रंगीन चित्र दिये हुये हैं ।



जयपुर के दिगम्बर जैन मन्दिर पार्श्वनाथ के शास्त्र भण्डार में संग्रहीत
यशोधर चरित्र के सचित्र प्रति का एक चित्र ।

श्री दि० जैन मन्दिर ठोळियों

के

ग्रन्थ

विषय—सिद्धान्त एवं चर्चा

१ आगमसार—मुनि देवचंद्र । पृष्ठ संख्या—४६ । साइज—१०×४ $\frac{3}{4}$ इंच । भाषा—हिन्दी मय ।
विषय—सिद्धान्त । रचना काल—सं० १७७६ । लेखन काल—सं० १७८६ । पूर्ण । बंधन नं० ४०८ ।

प्रारम्भ—अथ मध्य जीव नै प्रतिबोधना निमित्तै मोक्ष मार्गनी वचनिका कहै जै । तिही प्रथम जीव अनादि काल
नी सिध्दाती यी । काल लवधि पाभी नै तीन करण करै छै प्रथम यथाप्रवृत्ति करण १ बीजौ अपूरन करण २ तीजौ अनिवृत्ति
करण ३ तिही यथा प्रवृत्ति कहै जै ।

अन्तिम—संवत् सतर विहोतरै मन सुद्ध कायुण मास ।

भोटै कोट मरोट में बसतां सुख चौमास ॥२॥

सुविहत खतर गळ सुधिर ज्जगमर जियचंद्र सूर ।

पुण्य प्रधान प्रधान गुण पाठक मुखेय भूर ॥३॥

तास सीस पाठक प्रवर जिन मत परमत जाण ।

भयिक कमल प्रतिबोधना राज सार एर भाष ॥४॥

ज्ञान धरम पाठक प्रवर खस दम भुणै आगाह ।

राज हंस शुरु सकति सहज न करै सराह ॥५॥

तास सीस आगम रुची जैन धर्म को दास ।

देवचंद्र आभंद मय कोनौ ग्रन्थ प्रकाश ॥६॥

आगम सारोद्धार यह प्राकृत संस्कृत रूप ।

अथ कियो देवचंद्र मुनि ज्ञानामृत रस कूप ॥७॥

धर्ममृत जिन धर्म रति भक्तिजन समकित वंत ।

सुद्ध अमर पदउ लक्षण अथ कियो गुण वंत ॥८॥

तत्त्व ज्ञान मय अथ यह जो रवै बालाबोध ।

निज पर सत्ता सन लखै श्रोता लखै सुबोध ॥९॥

ता कारण देवचंद कीनी माया प्र'थ ।
 मणसी गुणसी जे मविक लहसी ते सिव पंथ ॥१३॥
 कथक शुद्ध ओता रूची मिल ज्यो ० संयोग ।
 तत्र क्षाम अह्मा सहित बल काया नीरोग ॥१४॥
 परमागम सु' राचज्यो लहस्यो परमानंद ।
 धर्म राग गुरु धर्म सु' धरि ज्यो ए सुख वृन्द ॥१५॥
 प्र'थ फियी मनरंग सु' सित पख कागुण मास ।
 भौमवार अरु तीज तिथि सकल फली मन आस ॥१६॥

इति श्री आगमसार प्रथम संपूर्ण । स० १७६६ वर्षे मार्गशीर्ष शुदी १२ भृगुवासरे वेधमनगरमध्ये रावत
 ज्योतिषि गणेश लिखितं कृतं मद्रासैराज्य पटनाम् । वर्षे आगम्य श्री ।

२. आश्वविभंगी..... । पत्र संख्या-११० । साइज-१२×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-
 सिद्धान्त । रचना काल-५ । लेखन काल-५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३२२ ।

विशेष-पत्र २० सं = ५ तक सत्ता विभंगी तथा इससे आगे भाव विभंगी हैं । गुणस्थान तथा मार्गशा का
 वर्णन है ।

३. कर्मप्रकृति-नेमिचन्द्राचार्य । पत्र संख्या-२१ । साइज-१२×४^३/_४ इंच । भाषा-प्राकृत ।
 विषय-सिद्धान्त । रचना काल-५ । लेखन काल- । पूर्ण । वेष्टन नं० १६७ ।

विशेष-दो प्रतिर्था और हैं ।

४. कर्मप्रकृति वृत्ति-सुमतिकीर्त्ति । पत्र संख्या-४६ । साइज-१२^३/_४×५ इंच । भाषा-संस्कृत ।
 विषय-सिद्धान्त । रचना काल-५ । लेखन काल-सं० १=५५ वैशाख शुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३७० ।

विशेष-जयपुर में शान्तिनाथ चैत्यालय में पं० आनन्दराम के शिष्य श्री चंद्र ने प्रतिलिपि की थी ।

५. गुणस्थान चर्चा-पत्र संख्या-११० । साइज-१२×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त ।
 रचना काल-५ । लेखन काल-सं० १७६० । पूर्ण । वेष्टन नं० ३१३ ।

विशेष-गोमट्टसार के आधार से हैं ।

६. गुणस्थान चर्चा..... । पत्र संख्या-४५ । साइज-१२^३/_४×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-
 सिद्धान्त । रचना काल-५ । लेखन काल-५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३१४ ।

विशेष-गोमट्टसार के आधार से वर्णन है ।

७. गोमट्टसार (कर्मकाण्ड)—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र संख्या—४२ । साइज—१०×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—प्रकृत । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १७=२ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३६२ ।

विशेष—संस्कृत हिन्दी टीका सहित है । केवल कर्म प्रकृति का वर्णन है ।

८. गोमट्टसार जीवकाण्ड भाषा—पं० टोडरमल । पत्र संख्या—३६६ । साइज—१३×= इंच । भाषा—हिन्दी भष । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—सं० १=२= । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन नं० १२= ।

विशेष—ग्रन्थ की एक प्रति और है लेकिन वह भी अपूर्ण है ।

९. गोमट्टसार कर्मकाण्ड भाषा—हेमराज । पत्र संख्या—१०१ । साइज—११×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—हिन्दी (भष) । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १७२० संगसिर सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४८ ।

विशेष—दीना ने रामपुर में प्रतिलिपि की थी ।

एक प्रति और है लेकिन वह अपूर्ण है । इस प्रति के पुङ्खे पर सुन्दर चित्रकारी है ।

१०. चरचा संग्रह । पत्र संख्या—१५ । साइज—१० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—हिन्दी भष । विषय—चर्चा (भर्म) । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० १४७ ।

११. चर्चाशतक—ज्ञानतरायजी । पत्र संख्या—२८ । साइज—=×६ इंच । भाषा—हिन्दी भष । विषय—चर्चा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । २ प्रतियाँ और हैं ।

१२. चर्चा समाधान—भूधरदासजी । पत्र संख्या—१११ । साइज—१० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—हिन्दी भष । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—सं० १८०६ माघ सुदी ५ । लेखन काल—सं० १८१३ माघ सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन नं० १३ ।

विशेष—शक्ति निहालचंद ने प्रतिलिपि की थी ।

१३. चौबीस ठाणा चर्चा - नेमिचन्द्राचार्य । पत्र संख्या—३४ । साइज—११×४ इंच । भाषा—प्रकृत । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १७०१ कार्तिक सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन नं० १८६ ।

विशेष—जड़ानाबाद मध्ये राजा के बाजार में पंडित भाषा राम के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई । तीन प्रतियाँ और हैं । ये संस्कृत टीका टीका सहित हैं ।

१४. चौबीस ठाणा चर्चा—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र संख्या ८ । साइज—११ $\frac{३}{४}$ ×४ इंच । भाषा—प्रकृत । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० १७३ ।

विशेष—पत्र संख्या ४ से आगे कलिधुग की चीनती है भाषा—हिन्दी भष। जयदेव कृत है

१५. ज्ञान क्रिया संवाद—पत्र संख्या—३ । साइज—१०×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—चर्चा ।
रचना काल—X । लेखन काल—सं० १७४६ आसोज बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४१७ ।

विशेष—श्लोक संख्या—१५ हैं । तृतीय पत्र पर धर्मचर्चा भी दी हुई है :

१६. तत्त्वसार दोहा—भट्टारक शुभचंद्र । पत्र संख्या—५ । साइज—११×८ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—गुजराती
लिपि देवनागरी । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३६७ ।

प्रारम्भ—समय सार रस सभिलो, रे समरवि श्री समिसार ।

समय सार सुख सिद्धता, सीमि सुख विचार ॥१॥

अप्या अपि आपसुं रे आपण हेति आप ।

आप निमित्त आपणी व्यातुं रहित सन्ताप ॥२॥

अपार प्राण प्रीणित सदा रे निश्चय न्याय विषय ।

सदा सुख वर बोधनि चेतना धुब प्राण ॥३॥

अपार प्राण व्यवहार श्री रे दस दीसि एह भेद ।

इंदिय बल उरसास स्रं आसु तथा बहु छेद ॥४॥

अन्तिम—मयी मयीय २ मन्त्रितसर सारि चेता चिद्रूप ।

चितता चित्ति चेतन चतुर भाव आवए ॥

सातु धात देहवेगलो भमल सकल सु विमल भावए ।

आत्म सक्षप परुवण पटयौ पावन संत ।

व्याजो ध्यानि ज्येयस्यु व्याता चार मईत ॥५॥

सात शिव कर ५

ज्ञान निज भाव शुद्ध चिदानंद चोत्रतो मूको माया मोह गेह देहइ ।

सिद्ध तथा सुखजि मल हरहि आत्मा भावि शुभ ए हए ॥

श्री विजय कीर्ति गुरु मनि धरी व्याउं शुद्ध चिद्रूप ।

भट्टारक श्री शुभचंद्र मणि भा तु शुद्ध सरूप ॥६॥

॥ इति तत्त्वसार दोहा ॥

१७. तत्त्वार्थरत्नप्रभाकर—भट्टारक प्रभाचंद्र देव । पत्र संख्या—१३६ । साइज—११ $\frac{1}{2}$ ×८ इंच ।
भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन नं० १७७ ।

विशेष—यह तत्त्वार्थ सूत्र की टीका है । सारा संस्कृत में है । कहीं २ हिन्दी भी दृष्ट होती है । ५ अध्याय

तक है ।

अध्याय ६ सूत्र-३४: हिंसानुस्ते-रौद्र ध्यानं कथयति तद्व्यथा प्रकार ५ भवन्ति । हिंसानंद केश । जीव चात
की कथ । सुखी जोय सती होय, समाप्त होय तजइ आनन्द सुख मानइ त हिंसानन्द होइ । रौद्र ध्यान प्रथम पद नरक कारण
इति बतावा । हिंसानंद न कर्त्तव्यः

इति तत्त्वार्थ रत्नप्रभाकर ग्रन्थे सर्वाभिनिर्द्धी छान्ति श्रीधर्मचंद्र शिष्य प्रभाचन्द्र देव विरचिते ब्रह्म जैश्रु साधु हावडेव
भाष्ये पदार्थसिद्धिर्वा तद्वर्णनं परार्थकथनं सत्यमस्ति अत्र सूत्र विचारकरणा ।

बीचमें २ से ७ पय भी नहीं है ।

१८. तत्त्वार्थसार—अमृतचंद्र सरि । पत्र संख्या-२५ । साइज-१२×२१ इंच । भाषा-संस्कृत ।
विषय-सिद्धान्त । रचना काल-५ । लेखन काल-५ । पूर्ण । वेष्टन नं० २१४ ।

प्रति प्राचीन है ।

१९. तत्त्वार्थसूत्र—उमास्वामि । पत्र संख्या-१४८ । साइज-१२×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-
सिद्धान्त । रचना काल-५ । लेखन काल-५ । अपूर्ण । वेष्टन नं० १२५ ।

विशेष—अति संस्कृत टीका सहित है ।

२०. प्रति नं० २ । पत्र संख्या-४० । साइज-८×५ इंच । लेखन काल-सं० १८७६ चैत्र सुदी ६
पूर्णे । वेष्टन नं० १२३ ।

विशेष—सूत्रों पर हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है । चार प्रतियाँ और हैं किन्तु वे मूल मात्र हैं ।

२१. तत्त्वार्थसूत्र टीका (टट्टा) । पत्र संख्या-२५ । साइज-१२×७ इंच । भाषा-संस्कृत
हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-५ । लेखन काल-सं० १९१२ आसोज सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७० ।

विशेष—लाला रतनलाल ने कश्मीर शमसाबाद में प्रतिलिपि की ।

२२. प्रति नं० २ । पत्र संख्या-४६ । साइज-१२×८ इंच । लेखन काल-५ । पूर्ण वेष्टन नं० ३१७ ।

प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

२३. तत्त्वार्थसूत्र भाषा टीका - कनककीर्ति । पत्र संख्या-१४२ । साइज-१२×५ इंच । भाषा-
हिन्दी गद्य । रचना काल-५ । लेखन काल-सं० १७४४ कार्तिक सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४७ ।

विशेष—कनककीर्ति ने जोशी जगन्नाथ से लिपि कराई ।

उमा स्वामि रचित तत्त्वार्थ सूत्र पर श्रुतसागरी टीका की हिन्दी व्याख्या है । एक प्रति और है ।

२४ त्रिभंगीसार—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र संख्या-२६ । साइज-१२×५ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-
सिद्धान्त । रचना काल-५ । लेखन काल-५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३४३ ।

विशेष — एक प्रति और है ।

२४. त्रिलोकसारसंग्रह—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र संख्या—६३ । साइज—११ $\frac{1}{2}$ ×८ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—प्राकृत ।
विषय—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८८८ पौष सुदी २३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६१ ।

विशेष—अयपुर में कंवक ज्ञानजी ने महात्मा दयाचंद से प्रतिलिपि कराई थी ।

२६. द्रव्यसंग्रह—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र संख्या—६ । साइज—११ $\frac{1}{2}$ ×५ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—
सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण वेष्टन नं० १०३ ।

विशेष—४ प्रतिभा और हैं ।

२७. प्रति नं० ७ । पत्र संख्या—५७ । साइज—१०×४ इंच । लेखन काल—सं० १७५० फागुन सुदी १४ ।
पूर्ण । वेष्टन नं० २६४ ।

विशेष—हिन्दी और संस्कृत में भी अर्थ दिया है ।

२८. द्रव्यसंग्रह टीका—अष्टादेव । पत्र संख्या—१११ । साइज—११×३ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १४१६ भाद्रपद सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन नं० १७६ ।

विशेष—लेखक प्रशस्त निम्न प्रकार हैं ।

संवत् १४१६ वर्षे भाद्रपद सुदी १३ गुरौ दिने श्रीमन्नोमिनीपुरे सकल राज्य शिरामुकुट माणिक्य मराचिकुत चरण-
कमल पद पंडित्य श्रीमन् पेरौज साहे सकल साम्राज्यधुरा विभागास्थ समये वर्तमान श्री कुन्दकुन्दाचार्येभ्ये मूलसंघे सरस्वती
गच्छे बलात्कार गणे महारक रत्नकोटि कण्य कण्ठ मूर्वाकुर्वाका श्री प्रभाचन्द्राकां तस्य शिष्य ब्रह्म नाथू पठनार्थं अंगोतकान्वये
गोहिल गोत्रे मरकल वास्तव्य परम श्रावक साधू साउ भार्या बीरो तयो पुत्र साधु उधस मर्या चालही तस्य पुत्र कुलधर भार्या
पाणधरही तस्य पुत्र मरहपाली भार्या लोधा ही मरहपाल लिखा पितृ कम कपार्थ । कमलदेव पंडित लिखित । शुभे भवत् ।

२९. द्रव्यसंग्रह भाषा—पर्वतधर्मार्थी । पत्र संख्या—२६ । साइज—१२×६ इंच । भाषा—हिन्दी गुजराती
लिपि देवनागरी । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८४३ फागुन सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन नं० १८ ।

विशेष—पं० केशरीसिंह ने अलवर में प्रतिलिपि की थी ।

३०. नामकमे प्रकृतियों का वर्णन—पत्र संख्या—१६ । साइज—१० $\frac{1}{2}$ ×५ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—प्राकृत ।
विषय—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३६१ ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है ।

३१. पंचास्तिकाय टीका मूलकर्ता—आ० कुन्दकुन्द । टीककार अमृतचंद सूरि । पत्र संख्या—६५ ।
साइज—१३ $\frac{1}{2}$ ×५ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—प्राकृत-संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० १६४ ।

विशेष - २ प्रतियाँ और हैं ।

३२. पंचास्तिकाय भाषा टीका - पंडित हेमराज । पत्र संख्या-१११ । साइज-१० $\frac{१}{२}$ ×११ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा-संस्कृत हिन्दी गद्य । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १७१८ पौष सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३४ ।

विशेष-रामपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

३३. पाक्षिक सूत्र-पत्र संख्या-३ । साइज-८ $\frac{१}{२}$ ×३ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४२४ ।

३४. भगवती सूत्र-पत्र संख्या-१७=से ८५४ । साइज १३×६ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १८६४ आसोज सुदी १ । अपूर्ण । वेष्टन नं० १६२ ।

विशेष-८व्या टीका गुजराती, लिपि हिन्दी में है । निहालचंद के शिष्य तुलसा ने किशनगढ़ नगर में प्रतिलिपि की थी ।

३५. भावसंग्रह-पंडित वामदेव । पत्र संख्या-३४ । साइज-११×११ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १८५८ पौष सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३६६ ।

विशेष-गवाई जयपुर में शान्तिनाथ जैनालय (इसी टीकियों के मन्दिर में) विदुष आनन्दराम के शिष्य श्रीचंद्र ने प्रतिलिपि की थी ।

विशेष - एक प्रति और है ।

३६. भावसंग्रह-देवसेल । पत्र संख्या-२० । साइज-११ $\frac{१}{२}$ ×११ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३७० ।

३७. भावसंग्रह-श्रुतमुनि । पत्र संख्या-१३ । साइज-११ $\frac{१}{२}$ ×११ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १५१६ माघ सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन नं० २८६ ।

विशेष-धन हरिदास ने प्रतिलिपि की । ३ प्रतियाँ और हैं ।

३८. रत्नसंख्य - विनयराज गणि । पत्र संख्या-१४ । साइज-१० $\frac{१}{२}$ ×११ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १७७० कार्तिक सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन नं० २०७ ।

श्री विद्यासागर सूरि के शिष्य लक्ष्मीसागर गणि ने प्रतिलिपि की थी । पं० जीवा बाकसीवाल के पठनाथ प्रतिलिपि की गई थी ।

३९. लघुसंख्य टीका-माधवचंद्र त्रैविद्यदेव । पत्र संख्या-७७ । साइज-११×११ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा-सिद्धान्त । रचना काल-X । लेखन काल-X-सं० १८८४ फागुन सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन नं० १८२ ।

४०. विशेष सत्ता त्रिभंगी । पत्र संख्या-२६ । साइज-१२X६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-X । लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ३२३ ।

४१ सिद्धान्तसार दीपक—सकलकीर्ति । पत्र संख्या-२२= । साइज-१०X६ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १८२१ । पूर्ण । वेष्टन नं० २५२ ।

विशेष—कुल १६ अधिकार हैं तथा मंथ (श्लोक) संख्या ४=३६ है । २ प्रतियाँ और हैं ।

४२ सिद्धान्तसार संग्रह—आचार्य नरेन्द्रसेन । पत्र संख्या-६६ । साइज-१२X६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १८२३ ज्येष्ठ सुदी २ । पूर्ण वेष्टन नं० २६ ।

विशेष—जयपुर में चंद्रप्रभ चैत्यालय में पंडित रामचन्द्र ने माधवसिंह के राज्य में प्रतिलिपि की थी । श्लोक संख्या २४१६ । एक प्रति और है ।

विषय—धर्म एवं आचार शास्त्र

४३. अनुभव प्रकाश—दीपचंद्र काशीवाला । पत्र संख्या-५६ । साइज-८ $\frac{१}{२}$ X७ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा-हिन्दी मध्य । विषय-धर्म । रचना काल-सं० १७७६ । लेखन काल-X । पूर्ण वेष्टन नं० ११६ ।

४४. आचार शास्त्र । पत्र संख्या-२२ । साइज-१२X४ । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० २१२ ।

४५. आचारसार—वीरनंदि । पत्र संख्या-१०० । साइज-११ $\frac{१}{२}$ X६ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण वेष्टन नं० २५१ ।

विशेष—कुल १२ अधिकार हैं । प्रारम्भ के पत्र जीर्ण हो चुके हैं ।

४६. उनतीसवोल दंडक—पत्र संख्या—१० । साइज—१०×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० २२५ ।

४७. उपदेशसिद्धान्त रत्नमाला भाषा—भागचंद्र । पत्र संख्या—४३ । साइज—१० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इंच । विषय—धर्म । रचना काल—सं० १८१२ आषाढ शुदी २ । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३ ।

विशेष—मूलग्रंथ ही गाथाएँ भी दी हुई हैं ।

४८. उपासकाध्यन—आ० वसुमंदि । पत्र संख्या—५५ । साइज—११×५ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८०० भाद्रपद शुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० १४ ।

विशेष—प्रति हिन्दी अर्थ सहित है । ग्रंथ का दूसरा नाम वसुनन्दि आचकाचार भी है । एक प्रति और है ।

४९. प्रति नं० २ । पत्र संख्या—३० । साइज—११ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इंच । लेखन काल—सं० १९६९ चैत्र शुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३४४ ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

अथ संवत्सरेस्मिन् श्री नृप विक्रमादित्यमताम्बः संवत् १५९५ वर्षे चैत्र शुदी ५ आश्विनमासे श्रीकुरुजांगल देशे श्री सूर्यपत्र सुमदुर्गे पातिसाह हम्माऊराध्यप्रवत्तमाने श्री काष्ठासंधे माथुरावने पुष्करगणे भट्टारक गूणकीर्तिदेवाः तत्पट्टे बभूव भाषा प्रतीक भट्टारक श्री सहस्रकीर्तिदेवा तत्पट्टे वित्रककलाकमलिनीविकाराशैकमास्कर भट्टारक श्री मलयकीर्तिदेवाः तत्पट्टे वादीमकुंभस्थलविदारणैककेसरि, मय्यांबुजविकाराशैकमास्कर भट्टारक श्री गुणमदपूरिदेवाः तदाम्नाये पावू वंशे गर्भगोत्रे गोधानइ वास्तव्यं अनेक गुण विराजमानु साधु शरणी तस्य समुद्रद्वय गंभीरान् मेखद्वीरान् चतुर्विध दानवितरणैक श्रेयासाधवतारान् सरस्वती कंठा कठितान् राव्यसमाजैनासमा शृंगाग्रहारान् परोपकारी पंडितु साधु गोपी तेन इदं आचकाचार लिखापितं । कर्म कर्या ।

पत्र नं० ३७ के कोने पर एक महीर लगी हुई है जिसमें उर्दू में नरनदास मूलवन्द... .. लिखित लिखा है । ग्रंथ में कुछ परिचय ग्रंथ कर्ता का भी दिया हुआ है ।

५०. गवला दीव (छियालीस दीव)—भैया भगवतीदास । पत्र संख्या—७ । साइज—१० $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०४ ।

५१. क्रियाकोष भाषा—दौलतराम । पत्र संख्या—८५ । साइज—१२×५ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—आचार । रचना काल—सं० १७६५ भाद्रपद शुदी १२ । लेखन काल—सं० १८६४ भाद्रपद शुदी १० । पूर्ण । वेष्टन नं० १६३ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

५२. ग्यारह प्रतिमा बणन । पत्र संख्या-२ । साइज-८ $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-आचार । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । बेष्टन नं० ६५ ।

५३. चर्चासागर भाषा—पत्र संख्या-२०० । साइज-१२ $\frac{1}{2}$ ×८ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-X । लेखन काल-X । अपूर्ण । बेष्टन नं० ६१ ।

विशेष—२०० से आगे पत्र नहीं है । दो तीन तरह की लिपियां हैं :

५४. चौबीसदंडक—दौलतराम । पत्र संख्या-८ । साइज-८×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । बेष्टन नं० ४१२ ।

विशेष—५७ पत्र है । दो प्रतियां और हैं ।

५५. जिनपालित मुनि स्याध्याय—विमल द्वर्ष काव्यक । पत्र संख्या-२ । साइज-१०×४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । बेष्टन नं० ६५३ ।

विशेष—

प्रारम्भ—भिरि पास संझसर अलविसर सगवंत ।

धाय प्रथमि जिग पालित मुनि संत ॥१॥

अन्तिम—संत एहनीय परिजग लंडय, अहविकथा विषयदिनाडी ।

एह परमव ते बाइ सुखिया तेहनी कीर्ति गवाणी ॥

जगभुज हीर यह सोहाकार श्री विजयसेन तरिंद ।

श्री विमल द्वर्ष काव्यक तउ सेवक भाव कहइ सानंद ॥१६॥

प्रति प्रामाण है ।

५६. त्रिवर्णाचार—सोमसेन । पत्र संख्या-१३४ । साइज-११ $\frac{1}{2}$ ×७ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार । रचना काल-सं० १६६७ । लेखन काल-सं० १६८२ बैशाख सुदी १ । पूर्ण । बेष्टन नं० २८७ ।

विशेष—पार्श्वपुत्र (पटना) में प्रतिलिपि हुई । कुल १३ अध्याय हैं । अंशा प्रथम सं० ७०० है । एक प्रति और है ।

५७. धर्म परीक्षा—हरिचरण । पत्र संख्या-२ से ७६ । साइज-११ $\frac{1}{2}$ ×८ $\frac{1}{2}$ इंच । विषय-धर्म । भाषा-अपभ्रंश । रचना काल-सं० १७४८ । लेखन काल-X । अपूर्ण । बेष्टन नं० १७१ ।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है ।

५८. धर्म परीक्षा—अमितगति । पत्र संख्या-८५ । साइज-१२×७ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । रचना काल-सं० १७१७ । लेखन काल-X । पूर्ण । बेष्टन नं० ३१६ ।

५९. धर्मपरीक्षा भाषा..... । पत्र संख्या-३५ । साइज-११ $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । बेष्टन नं० १०० ।

६०. धर्मरत्नाकर—अथसेन । पत्र संख्या-१२३ । साइज-१०½×१ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८६० । पूर्ण । बेस्टन नं० ३०६ ।

६१. धर्मरसायन—पद्मनंदि । पत्र संख्या-८ । साइज-११½×१½ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८७२ । पूर्ण । बेस्टन नं० ३२८ ।

६२. धर्मसंग्रहशास्त्रकाचार—पं० मेधावी । पत्र संख्या-५२ । साइज-११½×१½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-सं० १५४१ कार्तिक कुदी १३ । लेखन काल-सं० १८३६ भाद्र कुदी ६ । पूर्ण । बेस्टन नं० २४६ ।

विशेष—कुल दश अधिकार हैं । अथ १४४० श्लोक प्रमाण है । अथकार प्रशस्ति विस्तृत है पूर्ण परिचय दिया हुआ है । श्रीचंद ने प्रतिलिपि की थी ।

६३. धर्मोपदेशभावकाचार—ब्रह्मनेमिदत्त । पत्र संख्या-३६ । साइज-८×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८७३ फागुण सुदी १४ । पूर्ण । बेस्टन नं० १३६ ।

६४. नास्तिकवाद—पत्र संख्या-२ । साइज-११×८½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । बेस्टन नं० ४२५ ।

६५. नियमसार टीका—पद्मप्रभसंलधारिदेव । पत्र संख्या-१२७ । साइज-१२×१½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १७८२ मंगसिर सुदी ६ । पूर्ण । बेस्टन नं० ३१८ ।

६६. पंचसंसारस्वरूपनिरूपण—पत्र संख्या-६ । साइज-१०×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । बेस्टन नं० १७३ ।

(विशेष—एक प्रति और है ।

६७. पाखण्डवृत्तन—धीरभट्ट । पत्र संख्या-१६ । साइज-८×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८४१ भाद्र कुदी ४ । अपूर्ण । बेस्टन नं० ४७४ ।

विशेष—पत्र २ व ४ सही हैं । मानवगढ़ में मंगलदास के पठनार्थ पंमदास ने प्रतिलिपि की थी ।

६८. पुरुषार्थसिद्धयुपाय—अमृतचंद्र सूरि । पत्र संख्या-१०६ । साइज-११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । बेस्टन नं० ११४ ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । टीका सुंदर एवं सरल है ।

६९. पुरुषार्थसिद्धयुपाय भाषा—दौलतराम । पत्र संख्या-१२४ । साइज-१२×७ इंच । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-धर्म । रचना काल-सं० १८२७ मंगसिर सुदी २ । लेखन काल-सं० १८३६ सावन सुदी १० । पूर्ण । बेस्टन नं० ५६ ।

विशेष—विमनलाल मालपुरा वाले ने प्रतिलिपि की थी । २ प्रतियाँ और हैं ।

७०. पुरुषार्थानुशासन—गोविन्द । पत्र संख्या—६४ । साइज—११×५½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८४८ मंगसिर सुदी ५ । पूर्ण । बेधन नं० २९ ।

विशेष—विस्तृत लेखक प्रारंभ दी हुई है । श्रीचंद ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

७१. पुष्पमाल—हेमचंद्र सूरि । पत्र संख्या—१६ । साइज—१०×४½ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण बेधन नं० ३८५ ।

विशेष—कहीं २ गुजराती भाषा में अर्थ दिया है जोकि सं० १८४६ का लिखा हुआ है प्रति प्राचीन है । इसमें कुल ५०५ गाथाएँ दी हुई हैं । म० वाछा ने प्रतिलिपि की थी ।

पत्र संख्या—३ गुजराती गद्यः—

रति सुन्दरी राजपुत्री नदनपुर नर राजाह पारणा । आतिरूप पात्र सभिली हस्तिनपुर नौ राजाह प्राण लीभी तांथ इव मनादिक अशुचि पण्ड दिखाला राजा प्रतिबोधउ साह राखिउ रिद्धि सुन्दरी श्रेष्ठि श्री व्यवहारि पुत्र परिणी सम्राट् चट्टिउ प्रवहण भागउ । काण्ट प्रयोगि शस्य द्वीपि पहुता । बीजा प्रवहणि चट्या रूपि मोहि तिथि भसरि ससइ माहिला खिउ प्राचीने इह प्रकन्यनः ।

७२. प्रभोत्तरोपासकाचार—सकलकीर्ति । पत्र संख्या—७८ सं १४४ । साइज—१०½×४½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । रचना काल—X । लेखन काल सं० १७५३ मंगसिर सुदी १३ । अपूर्ण । बेधन नं० १७५ ।

विशेष—अलवर में प्रतिलिपि हुई थी । दो प्रतियाँ और हैं ।

७३. प्रश्नोत्तरआवकाचार—मुत्ताकीदास । पत्र संख्या—१३८ । साइज—१२½×८ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—आचार शास्त्र । रचना काल—सं० १७४७ वैशाख सुदी ३ । लेखन काल—सं० १८५५ सावन सुदी ४ । पूर्ण । बेधन नं० ७३ ।

विशेष—विमनलाल बडजात्या ने अजमेर में स्व पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

७४. प्रायश्चित्तसमुच्चय चूड़िका—श्री नंदशुक्ल । पत्र संख्या—२७ । साइज—१२×५½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८२८ कार्तिक सुदी ५ । पूर्ण । बेधन नं० २१८ ।

विशेष—लालचंद टोंग्या ने प्रतिलिपि करवाकर शान्तिनाथ चैत्यालय में चढ़ाई । उभेताम्बर भोक्तीराम ने प्रतिलिपि की थी ।

७५. प्रायश्चित्तसंग्रह—अकलंक देव । पत्र संख्या—८ । साइज—८½×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । बेधन नं० ३६७ ।

७६. बाईसपरीषद्—पत्र संख्या—A । साइज— $15 \times 10 \frac{1}{2}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । बेष्टन नं० १२५ ।

७७. भगवती आराधना भाषा—सदासुख कासलीवाल । पत्र संख्या—५७८ । साइज— 11×11 इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—आचार शास्त्र । रचना काल—सं० १६०० भाद्रपद सुदी २ । लेखन काल—सं० १६४४ आषाढ सुदी ३ । पूर्ण । बेष्टन नं० ८५ ।

विशेष—श्लोक संख्या २१६७ । एक प्रति और है ।

७८. मिथ्यात्व खंडन—वल्लभराम साह । पत्र संख्या—८६ । साइज— 10×6 इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—धर्म (नाटक) । रचना काल—सं० १८२९ पौष सुदी ४ । लेखन काल—X । पूर्ण । बेष्टन नं० १४८ ।

पत्र संख्या—१४२८ दिया हुआ है । एक प्रति और है ।

७९. मिथ्यात्व निषेध—बनारसीदास । पत्र संख्या—३२ । साइज— 10×5 इंच । भाषा—हिन्दी विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १६०७ सावन सुदी १४ । पूर्ण । बेष्टन नं० १५० ।

विशेष—२८ पत्र से सूत्र सूमनी कथा ध्यानतरंग कृत दी हुई है ।

८०. मोक्षमार्गप्रकाश—पं० टोडरमल । पत्र संख्या—२७० । साइज— 11×10 इंच । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १६४८ आषाढ सुदी २ । पूर्ण । बेष्टन नं० ६६ ।

८१. रत्नकरंदश्रावकाचार—पं० सदासुख कासलीवाल । पत्र संख्या—४३० । साइज— 11×11 इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—आचार शास्त्र । रचना काल—सं० १६२० चैत्र सुदी १४ । लेखन काल—X । पूर्ण । बेष्टन नं० ८३ ।

विशेष—पं० सदासुखजी के हाथ के खरटे से प्रतिलिपि की गयी है ।

८२. रत्नकरंदश्रावकाचार—धानजी । पत्र संख्या—२१ । साइज— $11 \frac{1}{2} \times 5 \frac{1}{2}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—आचार शास्त्र । रचना काल—सं० १८२१ चैत्र सुदी ५ । लेखन काल—X । पूर्ण । बेष्टन नं० १४१ ।

विशेष—हरदेव के मन्दिर में लिवाली नगर में फूलचंद की प्रेरणा से ग्रंथ रचना हुई थी ।

८३. रथसुसार—कुन्दकुन्दाचार्य । पत्र संख्या—१८ । साइज— $11 \times 10 \frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १७६२ । पूर्ण । बेष्टन नं० ४८७ ।

विशेष—बसवा नगर में महात्मा गोरखन ने प्रतिलिपि की थी । भाषा सं० १०० है । एक प्रति और है ।

८४. लाटीसंहिता (आवका चार)—राजमल्ल । पत्र संख्या—६४ । साइज— 11×5 इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । रचना काल—सं० १६४१ । लेखन काल—सं० १८५३ आषाढ सुदी २ । पूर्ण । बेष्टन नं० २८१ ।

विशेष—सं० १६४१ में बादशाह अकबर के शासनकाल में अलक इटा के पुत्र, कमल ने ग्रंथ रचना कराई थी।

८४. षट्कर्मोपदेशमाला—अमरकीर्ति । पत्र संख्या—१२० । साइज—११×५ इंच । भाषा—अपभ्रंश ।

विषय—आचार शास्त्र । रचना काल—सं० १२४७ भादवा सुदी १० । लेखन काल—सं० १६५६ आसोज सुदी २ । पूर्ण ।
वेष्टन नं० ३६८ ।

विशेष—१४ संधियां हैं । लेखक का परिचय दिया हुआ है ।

८५. षट्कर्मोपदेशमाला—मट्टारक श्री सकलभूषण । पत्र संख्या—१२० । साइज—१०½×५ इंच ।

भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । रचना काल—सं० १६२७ सावन सुदी ६ । लेखन काल—सं० १६४४ । पूर्ण । वेष्टन
नं० २०३ ।

विशेष—संवत् १४४४ वर्षे जेष्ठमासे शुक्लपक्षे नवम्यां तिथीं रविवारसरे हस्तनक्षत्रे सिधियोगे श्री रणधर्म दुर्गे राजाधिराजराजाश्रीजगन्नाथरात्रये प्रवर्तमाने श्री मल्लिनाथचैत्यालय श्री काष्ठासंघे माधुरगच्छे पुष्करगच्छे मट्टारक श्री सेमकीर्तिदेवा तत्पट्टे मट्टारक कमलकीर्तिदेवा तत्पट्टे मट्टारक श्री जयसेणदेवाः । तदाज्ञाये अग्रबालान्नये गोयलगोत्रे देव्यानां वटि साहजो पदस्थ तस्य भार्या भार्या । तस्य पुत्र ५ । प्रथम पुत्र साह श्री भवान्नादास तस्य भार्या गोमा तस्य पुत्र साह खेमचन्द तस्य भार्या ब्राजी तस्य पुत्र द्वयः । प्रथम पुत्र मोहनदास तस्य भार्या कौजी । द्वितीय पुत्र चिरंजीव धूडी । द्वितीय पुत्र साहयान तृतीय पुत्र साह बीरदास । चतुर्थे पुत्र साह श्री रामदास तस्य भार्या मागोती तस्य पुत्र त्रयः । प्रथम पुत्र साह मेधा द्वितीय पुत्र चिरंजीव साह चोखा तस्य भार्या पार्वती तस्य पुत्र चिरंजीव देवसी तृतीय पुत्र साह नेतसी । पंचमो पुत्र रसीला । एतेषां सध्ये चतुर्विधि-
दानवितरणकल्पवृक्ष साह चोखा तस्य भार्या पार्वती इदं शास्त्रं लिखाप्य ज्ञानावर्णोक्तमभिहितं रत्नयपुण्यनिमित्तं ज्ञानपात्राय अग्रे श्री रूपाचन्दये दत्त ॥ इति ॥

८६. षोडशकारणभावना—पत्र संख्या—१६ । साइज—१३×७½ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—धर्म ।

रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० १४२ ।

८७. षोडशकारणभावना व दशलक्षण धर्म—पं० सदासुख कासकीवाज । पत्र संख्या—११३ ।

साइज—११×७½ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० १३६ ।

८८. शिखरविज्ञास—मनसुखराम । पत्र संख्या—६३ । साइज—११×५ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य ।

विषय—धर्म । रचना काल—सं० १८४५ आसोज सुदी १० । लेखन काल—सं० १८८६ आषाढ सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन
नं० ४५ ।

विशेष—शिखर महात्म्य में सं वर्णन है । मनसुख मधुगोपाल के शिष्य थे ।

८९. आचकाचार..... । पत्र संख्या—६० । साइज—११½×५½ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—

आचार शास्त्र । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १७३३ वैशाख सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन नं० १६३ ।

विशेषः—राजनगर में अतिथि लिखि हुई थी । प्रामाण्य ह्वातीय बाई अमरा मे लिखवाया था ।

६१. आवकाचार—योगीन्द्रदेव । पत्र संख्या—१४ । साइज—२१ $\frac{१}{२}$ ×५ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—अपभ्रंश ।
विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० १७३ ।

विशेष—दोहा संख्या २२१ है ।

६२. संबोधपञ्चासिका—गौतमस्वामी । पत्र संख्या—६ । साइज—११ $\frac{१}{२}$ ×५ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—प्राकृत ।
विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३८७ ।

६३. संबोधपञ्चासिका टीका—पत्र संख्या—१३ । साइज—१० $\frac{१}{२}$ ×५ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—प्राकृत-संस्कृत ।
विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । वेष्टन नं० ३८८ ।

६४. संयमप्रवहण—मुनि मेघराज । पत्र संख्या—४ । साइज—१०×८ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य ।
विषय—धर्म । रचना काल—सं० १६६१ । लेखन काल—सं० १६८२ । भाषा—सं० १५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३३० ।

विशेषः—

प्रारम्भ दोहाः—रिसह जियेसर जगतिउ नामि नरिंद मरुहार ।

प्रथम नरेसर प्रथम जिन त्रिमोवन जन साधार ॥१॥

धन्वी पंचम आधीइ सोलमउ जिनराय ।

शान्तिनाथ जगि शान्तिकर नर सर प्रथमइ पाय ॥२॥

अन्तिम-राग धन्यासी—

गजपति दरिसिणि अति आणंद ।

श्रीराजचंद सूरिसर प्रतपउ जा लागि हु रविचंद ॥ ४२ ॥ श्रीकबी ॥

संयम प्रवहण मालिमगायउ नथर खम्भावत माहि ॥

संवत सोल अनह इकसठई आणी अति उछाह ॥ गद्य० ॥

सरवथा ऋषि गुरु साधु शिरोमणि, मुनि मेघराज तसु सीस ॥

गुण गजपति ना भावइ भाषइ पडुचइ आस जणीस ॥ १५८ ॥

॥ इति श्री संयम प्रवहण संपूर्ण ॥

श्रुश्राविका पुन्यप्रभाविका धर्मधूनिर्वाहिका सम्यक्त्वभूषणदसवत कपूरपूजासितोक्तमंगा श्रुश्राविकासंध बाई
घडनाथम् ॥

संवत् १६८१ वर्षे आषाढ मासे शुक्ल पक्षे पृथिमादित्यवारे स्वप्न भांवे लिखितं ऋषि कल्याणसेन ।

श्लोक संख्या २०० है ।

६५. सम्मोदशिलरमहात्म्य—दीक्षित देवदत्त । पत्र संख्या—७८ । साइज—११×५ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । रचना काल—सं० १८४६ । लेखन काल—सं० १८४८ । पूर्ण । वेष्टन नं० २१६ ।

विशेष—जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

६६. सागारधर्माभूत—पं० आशाधर । पत्र संख्या—१८१ । साइज—११×५ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । रचना काल—सं० १२६६ । लेखन काल—सं० १७८७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३०७ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

६७. सामायिक टीका—पत्र संख्या—३६ । साइज—१२×५ इंच । भाषा—संस्कृत प्राकृत । विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३२१ ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

६८. सामायिक पाठ—पत्र संख्या—१२ । साइज—१०×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४३१ ।

६९. सामायिक पाठ भाषा—जयचन्द्र छाबड़ा । पत्र संख्या—५३ । साइज—११×५ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १६०१ चैत्र सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४२ ।

विशेष—३ प्रति और हैं ।

१००. सुदृष्टितरंगिणि—टेकचन्द्र । पत्र संख्या—४६७ । साइज—११×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । रचना काल—सं० १८३८ सावन सुदी ११ । लेखन काल—सं० १६६२ भाद्रपद सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४८६ ।

विशेष—४२ संधियाँ हैं । चंद्रलाल बज्र ने प्रतिलिपि की थी ।

१०१. सूतक वर्णन—पत्र संख्या—२ । साइज—६×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४४७ ।

१०२. हितोपदेशकोशरी—श्री रत्नहर्ष । पत्र संख्या—३ । साइज—१०×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३५२ ।

विशेष—किशनविजय ने विक्रमपुर में प्रतिलिपि की थी । श्लोक संख्या ७१ है ।

विषय—अध्यात्म एवं योग शास्त्र

१०३. अष्टपादुड भाषा—जयचंद झाबडा । पत्र संख्या—१७८ । साइज—१३ $\frac{1}{2}$ ×६ $\frac{3}{4}$ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—अध्यात्म । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १९५० फागुन सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६८ ।

१०४. आत्मानुशासन—गुणभद्राचार्य । पत्र संख्या—३० । साइज—११×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १७६४ भाद्रपद सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० २८६ ।

विशेष—वसना नगर में श्री चंद्रप्रम चैत्यालय में श्री लोमकर के शिष्य विलोकचंद ने प्रतिलिपि की थी । एक प्रति और है ।

१०५. आत्मानुशासन टीका—अभाचन्द्र । पत्र संख्या—६५ । साइज—९×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८२६ भाद्रपद सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० २८० ।

१०६. आत्मानुशासन भाषा टीका—पं० टोडरमल । पत्र संख्या—१०५ । साइज—१२×५ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । रचना काल—सं० १७९६ भाद्रपद सुदी २ । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ५१ ।

विशेष—राजा की मंडी (आगरा) के मंदिर में महात्मा संभूराम ने प्रतिलिपि की थी । एक प्रति और है ।

१०७. आराधनासार—देवसेन । पत्र संख्या—१३ । साइज—१०×५ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—अध्यात्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० १५२ ।

विशेष—एक प्रति और है वह संस्कृत टीका सहित है ।

१०८. आराधनासार भाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र संख्या—१८ । साइज—१२ $\frac{1}{2}$ ×८ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—अध्यात्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ८२ ।

१०९. कार्तिकेयानुप्रेक्षा—स्वामीकार्तिकेय । पत्र संख्या—७८ । साइज—११×५ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—अध्यात्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० १० ।

विशेष—प्रथम ७ पत्र तक संस्कृत में संकेत दिया हुआ है ।

११०. कार्तिकेयानुप्रेक्षा भाषा—पं० जयचंद झाबडा । पत्र संख्या—१४७ । साइज—११×७ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—अध्यात्म । रचना काल—सं० १८६३ सावन सुदी ३ । लेखन काल—सं० १९१४ भाद्रपद सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७२ ।

विशेष—२ प्रतियां और हैं ।

१११. चारितार्णव—पं० जयचंद ज्योतिषी । पत्र संख्या—१५ । साइज—१२×८ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ६१ ।

११२. ज्ञानार्णव—शुभचंद्र । पत्र संख्या—१७६ । साइज—११×५^३/_४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—योग । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १६१८ । पूर्ण । वेष्टन नं० २५ ।

विशेष—संवत् १७८२ में कुछ नवीन पत्र लिखे गये हैं । संस्कृत में कठिन शब्दों का अर्थ दिया हुआ है ।

प्रति—एक प्रति और है ।

११३. दर्शनपाहुड—पं० जयचंद ज्योतिषी । पत्र संख्या—२० । साइज—१२×८ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—अध्यात्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३० ।

११४. द्वादशानुप्रेक्षा—कुन्दकुन्दाचार्य । पत्र संख्या—१२ । साइज—१०^३/_४×५ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—वित्तन । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८८२ द्वि० वैशाख सुदी ७ । अपूर्ण । वेष्टन नं० १७३ ।

विशेष—हिन्दी संस्कृत में छाया मी दी हुई है ।

११५. द्वादशानुप्रेक्षा—आलू कवि । पत्र संख्या—१६ । साइज—८^३/_४×४^३/_४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—वित्तन । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ६५ ।

विशेष—बारह भावना के ३८ पद्य हैं । इसके अतिरिक्त निम्न हिन्दी पाठ और हैं—

(१) जखड़ी—हरीसिंह ।

(२) पद्य (बंदू श्री अरहंत देव सारद नित सुमरण हृदय भरूँ)—हरीसिंह ।

(३) समाधि मरन—धानतराय ।

(४) वज्रनाभि चक्रवर्ती की वैराग्य भावना—गुधरदास ।

(५) वधावा—(वाजा वाजिया मला)

(६) बार्हस परीषद् ।

रामलाल तैरा पंथी ज्योतिषी ने दीक्षा में प्रतिलिपि की थी ।

११६. दोहाशतक—योगीन्द्र देव । पत्र संख्या—४ । साइज—६^३/_४×४^३/_४ इंच । भाषा—अपभ्रंश । विषय—अध्यात्म । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८२७ कार्तिक सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन नं० १२० ।

विशेष—श्रीचंद्र ने असबा में प्रतिलिपि की थी ।

११७. नवतत्त्ववाक्ताओध—पत्र संख्या—३१ । साइज—१०^३/_४×४^३/_४ इंच । भाषा—गुजराती हिन्दी । विषय—अध्यात्म । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८८५ आसोज सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन नं० १७४ ।

विशेष—हिम्मताराय उदयपुरिया ने प्रतिलिपि की थी

११८. परमात्मप्रकाश—योगीन्द्रदेव । पत्र संख्या-२० । साइज-११ $\frac{१}{२}$ ×११ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा-अपभ्रंश ।
विषय-अध्यात्म । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १७७८ फागुन शुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन नं० २१० ।

विशेष—वृन्दावती नगरी में श्री चंद्रप्रभु चैत्यालय में श्री उदयराम लक्ष्मीराम ने प्रतिलिपि की थी । संस्कृत में काठन शब्दों के अर्थ दिये हुए हैं । कुल दोहे ३४६ हैं । २ प्रति और हैं ।

११९. प्रति नं० २ । पत्र संख्या-१२३ । साइज-११×४ $\frac{१}{२}$ इंच । लेखन काल-सं० १४८६ पौष बुद्धि ३ । पूर्ण । वेष्टन नं० २४६ ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । इसमें कुल ४५ अधिकार हैं । प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

सर्वत्र १४८६ वर्ष पौष बुद्धि ६ रवौदिने श्री गोपगिरिः तोमरवंशमहाराजाधिराजश्रीमदहोमरसीदेवराज्यप्रवर्तमाने श्री काण्ठासंघे माधुरान्वये पुष्करगणे महारक्ष श्री लेोन्द्रकीर्तिदेवास्तद्गुरु शिष्य श्री पद्मकीर्तिदेवाः तस्य शिष्य श्री वादीन्द्रचूडामणी महासिद्धान्ती श्रीब्रह्म हीरारूपानामदेवा । अमोतकान्वये भीतलगीचे साधु श्री गल्हा भार्या खेमा तयोः पुत्री भौणी एक पत्नी । द्वितीय पत्नी अमोतकान्वये मर्ग गोत्र साधु श्री सेमंभरा भार्या हरी । तयोपुत्राश्चत्वारः प्रथम पुत्र देसलु, द्वितीय बील्हा, तृतीय बाल्हा, चतुर्थ भरया देसल भार्या रुपा, बील्हा भार्या नाथी साधु बाल्हा भार्या धानी तयो पुत्राश्चत्वारः साधु श्री चंदा साधु हरचंद, सा०, रता, सा०, साल्हा । श्रीचंद्र पुत्रमेवा स्वधर्मत साधु श्री मर्वा भार्या भौणी शीलशालिनी धर्म प्रभावनी रत्नयपाराधिनी आई जीणी आत्मकर्मचर्याई ईदं परमात्मप्रकाश ग्रंथ लिखापितं ।

इसमें ३४५ दोहा हैं । प्रथम पत्र नया लिखा गया है ।

१२०. प्रवचनसार—कुन्दकुन्दाचार्य । पत्र संख्या-३३ । साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×४ इंच । भाषा-प्राकृत ।
विषय-अध्यात्म । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १७६६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३५८ ।

विशेष—पत्र ८ तक संस्कृत टीका भी दी है ।

१२१. प्रवचनसार सटीक-अमृतचन्द्र सूरि । पत्र संख्या-१०७ । साइज १० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ६६ ।

विशेष—अन्तिम पत्र फटा हुआ है । बीच में २४ पत्र कम हैं । आगरे में प्रतिलिपि हुई थी । प्रति प्राचीन है

१२२. प्रवचनसार भाषा—पांडे हेमराज । पत्र संख्या-३० । साइज-११×५ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-अध्यात्म । रचना काल-सं० १७०६ । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४४ ।

१२३. प्रवचनसार भाषा—पांडे हेमराज । पत्र संख्या-१४२ । साइज-१३×८ इंच । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-अध्यात्म । रचना काल-सं० १७०६ भाद्र शुदी ६ । लेखन काल-सं० १८६२ आषाढ शुदी २ । पूर्ण वेष्टन नं० ६७१ ।

एक प्रति और है ।

१२४. बोधपाहुड भाषा—पं० जयचन्द झाबडा । पत्र संख्या-२१ । साइज-१२X= इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—अध्यात्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ८६ ।

१२५. भव वैराग्य शतक—पत्र संख्या-११ । साइज-१० $\frac{1}{2}$ X५ इंच । भाषा—अपभ्रंश । विषय—अध्यात्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०३ ।

विशेष—हिन्दी में छाया दी हुई है ।

१२६. मृत्युमहोत्सव—बुधजन । पत्र संख्या-३ । साइज-८X६ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—अध्यात्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० १३० ।

१२७. योगसमुच्चय—नवनिधिराम । पत्र संख्या ५२३ । साइज-६X४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—योग । रचना काल—X । लेखन काल—X । वेष्टन नं० ४६० ।

विशेष—१० पत्र तक श्लोको पर हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है ।

१२८. योगसार—योगान्द्रदेव । पत्र संख्या-६ । साइज-११ $\frac{1}{2}$ X४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—अपभ्रंश । विषय—अध्यात्म । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८७२ मंगसिर सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३२६ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

१२९. षट्पाहुड—कुन्दकुन्दाचार्य । पत्र संख्या-६७ । साइज-१२X५ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—अध्यात्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० २४५ ।

विशेष—२ प्रतियाँ और हैं जिनमें केवल लिंगपाहुड तथा शीलपाहुड दिया हुआ है ।

१३०. षट्पाहुड टीका—टीकाकार भूधर । पत्र संख्या-५२ । साइज-११ $\frac{1}{2}$ X४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १७७१ । पूर्ण । वेष्टन नं० २४४ ।

विशेष—प्रति टिका टीका सहित है । यह टीका भूधर ने प्रतापसिंह के लिए बनाई थी ।

१३१. समयसार कुन्दकुन्दाचार्य । पत्र संख्या-१५१ । साइज-११X६ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—अध्यात्म । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८२६ भाद्रपद सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ५० ।

विशेष—दोसा में पृथ्वीसिंह के शासनकाल में प्रतिलिपि हुई थी ।

अमृतचन्द्र कृत आत्मख्यति टीका सहित है । एक प्रति और है ।

१३२. समयसार कलशा — अमृतचन्द्रसूरि । पत्र संख्या-२६ । साइज-११X= इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० १२७ ।

१३३. प्रति नं० २ । पत्र संख्या-११२ । साइज-१०×५^३/_४ इंच । लेखन काल-X । पूर्ण । बेष्टन नं० २४७

विशेष—आनंदराम के वाचनार्थ नित्य विजय ने यह टिप्पण लिखा था । टिप्पण ठूँवा टीका के सदृश है । प्रति सुन्दर है ।

१३४. समयसारनाटक—धनारसीदास । पत्र संख्या-७३ । साइज-१२×५^३/_४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । रचना काल—सं० १६६३ । लेखन काल—सं० १८०० चैत सुदी १५ । पूर्ण । बेष्टन नं० ३२० ।

विशेष—बसवा में श्री निरमौराम के बेटा श्री मनसाराम ने कतेराम के पठनार्थ लिखी थी । ४ प्रतियाँ और हैं ।

१३५. समयसार वचनिका—राजमल्ल । पत्र संख्या-१६८ । साइज-११×६^३/_४ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—अध्यात्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । अपूर्ण । बेष्टन नं० १३ ।

१३६. समाधितंत्र भाषा—पर्यंतधर्माधी । पत्र संख्या-७७ । साइज-८^३/_४×५ इंच । भाषा—गुजराती देवनागरी लिपि । विषय—योग । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १७५५ फागुन बदी ७ । पूर्ण । बेष्टन नं० १८३ ।

विशेष—समापत्तन में श्री आदिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी । एक प्रति और है ।

१३७. समाधिभरण भाषा—पत्र संख्या-१३ । साइज-१२^३/_४×८ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—अध्यात्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । बेष्टन नं० ८१ ।

१३८. सूत्रपाहुड—जयचंद झांझडा । पत्र संख्या-१५ । साइज-१२×८ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—अध्यात्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । बेष्टन नं० ६२ ।



विषय-न्याय एवं दर्शन शास्त्र

१३६. आप्तपरीक्षा—विद्यानंदि । पत्र संख्या-६ । साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-दर्शन शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० २६० ।

विशेष—पंडित धरभू के पठनाथ गयाससाहि के राज्य में प्रतिलिपि की गई थी ।

१४०. आलापपद्धति—देवसेन । पत्र संख्या-११ । साइज-१०×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-दर्शन शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० २०६ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

१४१. तर्कसंग्रह—अन्नंभट्ट । पत्र संख्या-६ । साइज-१०×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३०३ ।

विशेष—मोतीलाल पाटनी ने प्रतिलिपि की थी । एक प्रति और है ।

१४२. दर्शनसार—देवसेन । पत्र संख्या-३ । साइज-११ $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-दर्शन शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८७२ मंगसिर बुदी अमावस । पूर्ण । वेष्टन नं० २१७ ।

विशेष—२ प्रतियां और हैं ।

१४३. नयचक्र—देवसेन । पत्र संख्या-३३ । साइज-११ $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८२६ फागुन बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३८६ ।

श्लोक संख्या-४५३ है ।

१४४. न्यायदीपिका—धर्मभूषण । पत्र संख्या-४८ । साइज-८ $\frac{३}{४}$ ×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८०६ द्वि० भाद्रपद बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन नं० २६८ ।

विशेष—देवीदास ने स्वपठनाथ लिखी थी ।

१४५. परिभाषा परिच्छेद (नयमूल सूत्र)—पंचानन भट्टाचार्य । पत्र संख्या-११ । साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-दर्शन शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४३७ ।

अन्तिम—इति श्री महामहोपाध्यायसिद्धान्त पंचानन भट्टाचार्य कृत परिभाषा परिच्छेदः समाप्तः ।

१६६ श्लोक हैं प्रति प्राचीन मालूम देती है ।

१४६. षट्दर्शन समुच्चय—हरिभद्रसूरि । पत्र संख्या-७ । साइज-१०×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-दर्शन शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० २८४ ।

विशेष—६६ श्लोक है ।

१४७. सन्मतिवर्क—सिद्धसेन दिवाकर । पत्र संख्या—८ । साइज—८×४ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—न्याय शास्त्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । बेष्टन नं० १०२ ।



पूजा एवं प्रतिष्ठादि अन्य विधान

१४८. अक्षयनिधिपूजा—पत्र संख्या—३ । साइज—१२×४ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । बेष्टन नं० ११४ ।

विशेष—लब्धि विधान पूजा भी दी हुई है ।

१४९. अंकुरारोपण विधि—पत्र संख्या—७ । साइज—१०×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—विधि विधान ।

रचना काल—X । लेखन काल—X । अपूर्ण । बेष्टन नं० ३२० ।

विशेष—छठा पत्र नहीं है ।

१५०. अनंतव्रतपूजा—श्री भूषण । पत्र संख्या—६ । साइज—१०×४ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । बेष्टन नं० १०२ ।

१५१. अनंतव्रतोद्यापन—पत्र संख्या—२२ । साइज—१२ $\frac{1}{2}$ ×६ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । बेष्टन नं० ३६ ।

१५२. अभिषेकविधि—पत्र संख्या—३ । साइज—७ $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—विधि विधान ।

रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । बेष्टन नं० १२६ ।

विशेष—५६ प्रति और है ।

१५३. अर्हन्पूजा—पद्मनंदि । पत्र संख्या—५ । साइज—६×६ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । बेष्टन नं० ४८ ।

१५४. अष्टक—पत्र संख्या—१ । साइज—१०×४ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४३ ।

१५५. अष्टाह्निकापूजा—पत्र संख्या—१० । साइज—७ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—संस्कृत प्राकृत । विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० १२५ ।

१५६. अष्टाह्निकापूजा—पत्र संख्या—७ । साइज—६×६ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ४८ ।

विशेष—जाप्य से आगे पाठ नहीं है ।

१५७. अष्टाह्निकापूजा—शुभचंद्र । पत्र संख्या—३ । साइज—१० $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३७ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । न० भी मेघराज के शिष्य व० सक्ती के पठनार्थ लिपि की गई थी ।

१५८. इन्द्रध्वजपूजा—विश्वभूषण । पत्र संख्या—६६ । साइज—११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८२० चैत सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३३ ।

१५९. कलिकुंडपार्वनाथपूजा—पत्र संख्या—६ । साइज—१×६ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४७ ।

विशेष—पत्र ४ से चिन्तामणिपार्वनाथ पूजा भी है ।

१६०. कर्मदहनपूजा—देवार्थ । पत्र संख्या—१६ । साइज—१ $\frac{३}{४}$ ×७ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० १३ ।

१६१. कौस्तुभहस्त—पत्र संख्या—३८४ । साइज—८×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—विधि विधान । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १६०१ वैशाख सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०७ ।

विशेष—यज्ञादि की सामग्री एवं विधि विधान का वर्णन है । कुल ६१ अध्याय हैं ।

१६२. गणधरवल्लभपूजा—शुभचंद्र । पत्र संख्या—१० । साइज—१० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ११७ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

१६३. गिरनारसिद्धदेवपूजा—हजारीमल्ल । पत्र संख्या—३६ । साइज—१२ $\frac{१}{२}$ ×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । रचना काल—सं० १६२० आश्विन सुदी १२ । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ।

विशेष—इजारीमश्ल के पता का नाम हरीकिसन था । ये जयपुर के रहने वाले थे । कवि ने साहपुर में आकर दीलतराम की सहायता से रचना की थी ।

१६४. चन्द्रायणव्रतपूजा—भ० देवेन्द्रकीर्ति । पत्र संख्या-४ । साइज-१२ $\frac{1}{2}$ ×७ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० १७ ।

विशेष—२ प्रतियाँ और हैं ।

१६५. चारित्रशुद्धिविधान (बारहसोचौतीसविधान)—श्री भूषण । पत्र संख्या-७३ । साइज-१२×२ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—विधि विधान । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८१३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३२ ।

विशेष—दक्षिण में देवगिरि दुर्ग में पार्श्वनाथ जैलालय में ग्रंथ रचना की गयी थी । तथा जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

१६६. चौबीसतीर्थकरपूजा—पत्र संख्या-५१ । साइज-११×२ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ६१ ।

१६७. चौबीसतीर्थकरपूजा—सेवाराज । पत्र संख्या-४३ । साइज-१२×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । रचना काल—सं० १८५४ माह सुदी ६ । लेखन काल—सं० १८८६ । पूर्ण । वेष्टन नं० २८ ।

१६८. चौबीसतीर्थकरपूजा—रामचंद्र । पत्र संख्या-१० । साइज-१० $\frac{1}{2}$ ×७ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८८६ चैत सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन नं० १० ।

विशेष—प्रति सुन्दर व दर्शनीय है । पत्रों के चारों ओर विभिन्न २ प्रकार के सुन्दर बेल बूटे हैं । रंगोजीराम भात्रसा ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

१० प्रतियाँ और हैं :

१६९. चौबीसतीर्थकरपूजा—मनरंगलाल । पत्र संख्या-४१ । साइज-१२ $\frac{1}{2}$ ×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४ ।

१७०. चौबीस तीर्थकर पूजा—धुन्दावन । पत्र संख्या-१५१ । साइज-११×७ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजन । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० २० ।

विशेष—३ प्रतियाँ और हैं ।

१७१. चौबीसतीर्थकर समुच्चय पूजा—पत्र संख्या-४ । साइज-११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ७१ ।

१७२. चौसठ ऋद्धिपूजा (गुरावली)—स्वरूपचंद्र । पत्र संख्या—७१ । साइज—११×७ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । रचना काल—सं० १६०० आश्विन शुदी ७ । लेखन काल—सं० १६५८ । पूर्ण । वेष्टन नं० २ ।

विशेष—इस प्रति को बहादुरजी ठोलिया ने ठोलियों के मन्दिर में चढ़ाई थी ।

१७३. जम्बूद्वीप पूजा—जिण्णदास । पत्र संख्या—३१ । साइज—११ $\frac{1}{2}$ ×५ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३५ ।

१७४. जलहर तेजा की पूजा—पत्र संख्या—४ । साइज—११×७ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३२ ।

१७५. जिनयज्ञ कल्प (प्रतिष्ठापाठ)—आशाधर । पत्र संख्या—१२० । साइज—१०×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—विधि विधान । रचना काल—सं० १२८५ । लेखन काल—सं० १८७६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३६६ ।

ग्रन्थप्रथम संख्या—२१०० श्लोक प्रमाण है ।

विशेष—संवत्सराधारास्मृतिप्रमिते मार्गशीर्षभूतिष्टा सिते लिखितमिदं पुस्तकं विदुषा श्वेतांबर सुन्दरदासेन श्रीमङ्गलपुरे जयपत्तने ।

१७६. जैनविवाहविधि—जिनसेनाचार्य । पत्र संख्या—४४ । साइज—१२×८ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—विधान । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १६३३ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०५ ।

विशेष—प्रति हिन्दी अर्थ सहित है । भाषाकार पञ्चालालजी दुनी वाले हैं । सं० १६३३ में इसकी भाषा पूर्ण हुई थी ।

१७७. ज्ञानपूजा—पत्र संख्या—८ । साइज—११×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ११५ ।

विशेष—श्री मूलसंघ के आचार्य नेमिचन्द्र के पठनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी ।

१७८. तीनचौबीसी पूजा—पत्र संख्या—२१ से ६८ । साइज—११×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६७ ।

१७९. त्रिशत्चतुर्विंशतिपूजा—शुभचंद्र । पत्र संख्या—१२० । साइज—३ $\frac{1}{2}$ ×८ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ६१ क ।

शुटका के आकार में है ।

१८०. तेजाघ्न की पूजा—पत्र संख्या—४ । साइज—१०×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०५ ।

१८१. दक्षिणयोगीन्द्र पूजा — आ० सोमसेन । पत्र संख्या-१ । साइज-११ $\frac{1}{2}$ × ११ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १७६४ भाष सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ८५ ।

विशेष—पंडित मनोहर ने प्रतिलिपि की थी ।

१८२. दशलक्ष्णप्रतोद्यापनपूजा—पत्र संख्या-५२ । साइज-८ $\frac{1}{2}$ × ११ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । अर्थ । वेष्टन नं० ११८ ।

विशेष—अन्तिम दोहा—

डारि मत दश धर्म को लुब्ध हो गृह सेव ।

रावत सूर नर सम हत मरि परमत्र शिव लेव ॥

१८३. दशलक्ष्णपूजा—पत्र संख्या-३ । साइज-११ $\frac{1}{2}$ × ११ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११२ ।

विशेष—मंदीश्वर पूजा (प्राकृत) भी दी है ।

१८४. दशलक्ष्णपूजा—पत्र संख्या-१७ से २४ । साइज-८ $\frac{1}{2}$ × ४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १२२ ।

१८५. दशलक्ष्णपूजा—अभयनादि । पत्र संख्या-१४ । साइज-११ $\frac{1}{2}$ × ११ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ७१ ।

१८६. दशलक्ष्णजयमाल—भावशर्मा । पत्र संख्या-११ । साइज-१० $\frac{1}{2}$ × ४ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १७३३ वैद्धि० सावन सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७१ ।

विशेष—रामकीर्ति के शिष्य पं० श्रीहर्ष तथा कल्याण तथा उनके शिष्य पं० चिन्तामणि ने स्लेम रतनसिंह के पठनाश्रम प्रतिलिपि की थी ।

१८७. दशलक्ष्णपूजा जयमाल—रङ्गधू । पत्र संख्या-१६ । साइज-११ × ४ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-अपभ्रंश । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०८ ।

संस्कृत टिप्पण सहित है । ४ प्रतिष्ठा और है ।

१८८. द्वादशव्रतपूजा—देवेन्द्रकीर्ति । पत्र संख्या-१५ । साइज-१२ × ५ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १७७२ भाष सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन नं० ८० ।

१८९. देवपूजा—पत्र संख्या-६ । साइज-१० × ४ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६ ।

विशेष—२ प्रतियाँ और हैं । एक प्रति हिन्दी भाषा की है ।

१६०. नन्दीश्वरविधान—रत्ननंदि । पत्र संख्या—१७ । साइज—११×१ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८२७ फागुन शुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४२ ।

विशेष—सहाराजाधिराज श्री सवाई पृथ्वीसिंहजी के राज्यकाल में बसवा नगर में श्री चंद्रप्रम चैत्यालय में पंडित आनन्दराम के शिष्य ने प्रतिलिपि की थी । एक प्रति और है ।

१६१. नंदूसप्तमीव्रतपूजा—पत्र संख्या—१ । साइज—१२½×७½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ११ ।

१६२. नवग्रहअरिष्टनिवारकपूजा—पत्र संख्या—१८ । साइज—१२½×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४ ।

१६३. नित्यनियमपूजा—पत्र संख्या—४० । साइज—८×४½ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० १२५ ।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है । ३ प्रतियाँ और हैं ।

१६४. निर्वाणक्षेत्रपूजा—स्वरूपचंद । पत्र संख्या—२६ । साइज—११×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । रचना काल—सं० १६१६ कार्तिक शुदी १३ । लेखन काल—सं० १६३८ चैत्र सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन नं० ८२ ।

विशेष—गणेशलाल पांड्या चाकसू वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

१६५. निर्वाणकारणपूजा—द्यानतराय । पत्र संख्या—३ । साइज—११×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३४ ।

विशेष—निर्वाणकारण भाषा भी बी हुई है ।

१६६. पद्मावती पूजा—पत्र संख्या—१३ । साइज—११½×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३७ ।

विशेष—निम्न पाठों का और संग्रह है—

पद्मावती स्तोत्र, श्लोक संख्या ३३, पद्मावती सहस्रनाम, पद्मावती कवच, पद्मावती पटल, और घंटाकरण मंत्र ।

१६७. पंचकल्याणपूजा—लक्ष्मीचंद । पत्र संख्या—२ से २४ तक । साइज—११×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १६०६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ८६ ।

१६८. पंचकल्याणकपूजा—टेकचंद । पत्र संख्या—२४ । साइज—८½×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १६१४ अषाढ सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४७ ।

१६६. पंचकल्याणकपूजा पाठ—पत्र संख्या—२२ । साइज—१० $\frac{३}{४}$ ×७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १६०० वैशाख सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन नं० २३ ।

विशेष—विष्णुनलाल साविता ने जयपुर में बरूशोराम से प्रतिलिपि कराई थी ।

२००. पंचपरमेष्ठीपूजा—पत्र संख्या—४ । साइज—११×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १७३१ । पूर्ण । वेष्टन नं० १११ ।

विशेष—श्लोक संख्या १०० हैं ।

२०१. पंचपरमेष्ठीपूजा—पत्र संख्या—४८ । साइज—८×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ६२ ।

२०२. पंचमेरूपूजा—पत्र संख्या—७ । साइज—७ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० १२५ ।

२०३. पूजा एवं अभिषेक विधि । पत्र संख्या—१४ । साइज—८ $\frac{३}{४}$ ×६ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत हिन्दी मध्य । विषय—विधि विधान । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६ ।

विशेष—गुटका साइज है ।

२०४. पूजापाठसंग्रह - पत्र संख्या—६८ । साइज—११×८ इंच । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ७३ ।

विशेष—नित्य दैनिकक पूजा पाठ आदि संग्रह है । पूजा पाठ संग्रह की ८ प्रतियाँ और हैं ।

२०५. बीसतीर्थकरपूजा—पन्नालाल संची । पत्र संख्या—६२ । साइज—१२ $\frac{३}{४}$ ×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । रचना काल—सं० १६३४ । लेखन काल—सं० १६५४ सावन सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ५ ।

विशेष—टोक में बीजसिंह के पुत्र पन्नालाल ने रचना की तथा अजमेर में प्रतिलिपि हुई थी । ३ प्रतियाँ और हैं ।

२०६. भक्तिसर स्तोत्र पूजा—सोमसेन । पत्र संख्या—१० । साइज—१० $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १७८४ कार्तिक सुदी । पूर्ण । वेष्टन नं० १०३ ।

विशेष—पंडित नानकदास ने प्रतिलिपि की थी

२०७. भंडल विधान एवं पूजा पाठ संग्रह—पत्र संख्या-६४४ । साइज-११×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । लेखन काल—सं० १८६१ । पूर्ण । वैष्टन नं० १२६ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

नाम पाठ	कर्ता	पत्र संख्या	लग्न काल	विशेष
(१) जिन सहस्रनाम	आशाधर	} १ से १६	—	—
(२) " "	जिनसेनाचार्य			
(३) तीन चौबीसी पूजा	—	१६ से ३६	—	—
(४) पंचकल्याणकपूजा	—	३४ से ४४	—	भंडल चित्र सहित
(५) पंचपरमेष्ठिपूजा,	शुभचंद्र	४६ से ७७	लग्न काल १८६५	—
(६) कर्मदहनपूजा	शुभचंद्र	७८ से ९७	—	चित्र सहित
(७) बीसतीर्थहरपूजा	नरेन्द्रकीर्ति	९८ से १०१	—	—
(८) भक्तिसंस्तोत्रपूजा	श्रीभूषण	१०२ से ११२	—	भंडल चित्र सहित
(९) धर्मचक्र	सत्यमल्ल	११३ से १२६	—	—
(१०) शास्त्रभंडल पूजा	ज्ञानभूषण	१२७ से १३४	—	चित्र सहित
(११) ऋषिभंडलपूजा	आ० गणितार्थ	१३५ से १४४	—	"
(१२) शान्तिचक्रपूजा	—	१४६ से १६१	—	चित्र सहित
(१३) पद्मावतीस्तोत्र पूजा	—	१६२ से १६६	—	—
(१४) पद्मावतीसहस्रनाम	—	१६७ से १७३	—	—
(१५) षोडशकारणपूजा उद्यापन केशव लैन	—	१७४ से १८८	—	—
(१६) मेघमाला उद्यापन	—	१८८ से २१३	—	चित्र सहित
(१७) चौनीसीनामस्तमंडलविधान	—	२१४ से २३०	—	—
(१८) दशलक्षणव्रतपूजा	—	२३१ से २६०	—	चित्र सहित
(१९) पंचमीव्रतोद्यापन	—	२६१ से २६७	—	"
(२०) पुष्पांजलिब्रतोद्यापन	—	२६८ से २८३	—	"
(२१) कर्मचूरव्रतोद्यापन	—	२८३ से २८९	—	—
(२२) अक्षयनिधिब्रतोद्यापन	ज्ञानभूषण	२९० से ३०६	—	—
(२३) पंचमासचतुर्दशी	म० सुरेन्द्रकीर्ति	३०६ से ३११	—	—
व्रतोद्यापन				
(२४) अर्धव्रत पूजा	—	३१२ से ३४१	—	चित्र सहित

नाम	कर्ता	पत्र सं०	काल	विशेष
(२८) अनेकव्रतपूजा	गणचंद्र	३४२ से ३७४	१० का० १६३०	सचित्र
(२९) रत्नत्रय पूजा	केशवसेन	३७५ से ३८६	—	—
(३०) रत्नत्रयव्रतोद्यापन	—	३८७ से ४१२	—	—
(३१) पद्मव्रतोद्यापन पूजा	शुभचंद्र	४१३ से ४२६	—	चित्र सहित
(३२) भासांत चतुर्दशी पूजा अक्षयराम	—	४२७ से ४४४	—	चित्र सहित
(३३) यमोकार पौर्णमी पूजा अक्षयराम	—	४४५ से ४६०	—	चित्र सहित
(३४) जिनगुणसंपत्तिव्रतोद्यापन	—	४६१ से ४६८	—	सचित्र
(३५) त्रैलोक्यव्रतोद्यापन देवेन्द्रकीर्ति	—	४६९ से ४८६	—	सचित्र
(३६) सौख्यव्रतोद्यापन अक्षयराम	—	४८७ से ४८९	—	सचित्र
(३७) सप्तपरमस्थान पूजा	—	४८९ से ४८८	—	—
(३८) अष्टादशिका पूजा	—	४८९ से ५११	—	सचित्र
(३९) रोहिणीव्रतोद्यापन	—	५१२ से ५२४	ले० का० १८८६	—

विशेष—जयपुर में लिपि हुई थी ।

(४०) रत्नावलीव्रतोद्यापन	—	४२५ से ४३६	—	सचित्र
(४१) ज्ञानपञ्चीसीव्रतोद्यापन देवेन्द्रकीर्ति	—	५२७ से ५४५	ले० का० सं० १८४०	—

विशेष—जयपुर में चंद्रप्रभु चैत्यालय में लिपि हुई थी ।

(४२) पद्मैरूपपूजा म० रत्नचंद्र	—	५४६ से ५५२	—	—
(४३) आदित्यवास्त्वतोद्यापन	—	५५२ से ५६१	—	सचित्र
(४४) अक्षयदशमीव्रतपूजा	—	५६२ से ५६६	—	—
(४५) द्वादशव्रतोद्यापन देवेन्द्रकीर्ति	—	५६६ से ५७८	—	—
(४६) चंदनषष्ठीव्रतपूजा	—	५८० से ५८६	—	सचित्र पर अपूर्ण

विशेष—५८७ से ६०५ तक पृष्ठ नहीं है ।

(४७) भौमिव्रतोद्यापन	—	६०६ से ६२१	—	—
(४८) श्रुतज्ञानव्रतोद्यापन	—	६२२ से ६३६	—	—
(४९) कांजीव्रतोद्यापन	—	६३६ से ६४४	—	—
(५०) पूजाटीका संस्कृत	—	६४५ से ६५४	—	—

इसके अतिरिक्त १ फुटकर पत्र हैं । और २ पृष्ठों में व्रत पञ्चाओं की सूची दी है महत्वपूर्ण पाठ संग्रह है ।

२०८. मुक्तावलीश्रुतोद्यापनपूजा—पत्र संख्या-१८ । साइज-१४×६ $\frac{3}{4}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १६०२ सावन सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन नं० १२७ ।

विशेष—चाकसू के मंदिर चंद्रप्रभ-चैत्यालय में पंडित रतीराम के शिष्य रामवरुण ने प्रतिलिपि की थी ।

२०९. रत्नत्रयजयमाला—पत्र संख्या-५ । साइज-१०×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ११० ।

विशेष—संस्कृत में टिप्पण दिया हुआ है । ३ प्रतियां और हैं ।

२१०. रत्नत्रयपूजा—पत्र संख्या-६ । साइज-११×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १८६६ पौष सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०१ ।

विशेष—पं० श्रीचंद्र ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी । एक प्रति और है ।

२११. रत्नत्रयपूजा—आशाधर । पत्र संख्या-४ । साइज-१२×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ६० ।

२१२. रत्नत्रयपूजा—पत्र संख्या-३४ । साइज-१२ $\frac{1}{2}$ ×७ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० २६ ।

२१३. रत्निश्रुतपूजा—पत्र संख्या-१६ । साइज-८ $\frac{1}{2}$ ×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ६३ ।

२१४. रोहिणीश्रुत पूजा—केशवसेन । पत्र संख्या-६ । साइज-११×७ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०० ।

२१५. लब्धि विधान पूजा—पत्र संख्या-२१ । साइज-१०×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४१ ।

२१६. लब्धि विधान श्रुतोद्यापन—पत्र संख्या-८ । साइज-१३×८ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ८१ ।

२१७. विमलनाथ पूजा—रामचंद्र । पत्र संख्या-३ । साइज-११ $\frac{1}{2}$ ×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६ ।

२१८. षोडशकारण पूजा—पत्र संख्या-८ । साइज-६×६ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४८ ।

विशेष—दशरक्षण पूजा भी है वह भी संस्कृत में है ।

२१६. षोडश .कारण व्रतोद्यापन पूजा—आचार्य केशव सेन । पत्र संख्या—२१ । साइज—१० $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४४ ।

२२०. शान्तिनाथ पूजा—सुरेश्वर कीर्ति । पत्र संख्या—४ । साइज—११×१ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६ ।

विशेष—अंत में आरती भी है ।

पुछानी जन आरती नित्य करो । गुरु वृषभद सुरेश्वर कीर्ति भव दुख हरो । प्रभु के पद आरती नित्य करो ।

२२१. श्रुतज्ञान पूजा—पत्र संख्या—१३ । साइज—११ $\frac{1}{2}$ ×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ६२ ।

विशेष—पत्र ४ से आगे पाठों की सूची दी हुई है । हेमचंद्र कृत श्रुत स्कंध के आधार से लिखा गया है । मंडल तथा तिथि दी हुई है ।

२२२. सप्त ऋषि पूजा—पत्र संख्या—८ । साइज—१० $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३४ ।

२२३. समवशरण पूजा—ललितकीर्ति । पत्र संख्या—४ । साइज—११ $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १७६४ आसोज सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६१ ।

विशेष—दसवा . घर में प्रतिलिपि हुई थी ।

२२४. समवशरण पूजा—पन्नालाल । पत्र संख्या—६७ । साइज—१२ $\frac{1}{2}$ ×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । रचना काल—सं० १८२१ आसोज सुदी ३ । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३ ।

विशेष—जवाहरलालजी की सहायता से रचना की गयी थी । पन्नालालजी जीवतसिंह जैपुर के कामदार थे ।

२२५. सम्मेदशिखरपूजा—पत्र संख्या—१० । साइज—६×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ६६ ।

२२६. सम्मेदशिखरपूजा—नंदराम । पत्र संख्या—१२ । साइज—११×७ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । रचना काल—सं० १६११ माघ सुदी ५ । लेखन काल—सं० १६१२ पौष सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन नं० ११ ।

विशेष—रतनलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

२२७. सम्मेदशिखर पूजा—जवाहरलाल । पत्र संख्या—११ । साइज—१२ $\frac{1}{2}$ ×८ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ८३ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

२२८. सहस्रगुणितपूजाश्रीशुभचंद्र । पत्र संख्या-६८ । साइज-१० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा-संस्कृत ।
विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १६६८ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६० ।

विशेष—संवत् १६६८ वर्षे शक १६३३ प्रवर्तमाने पौष बुदी ७ सहाराजाधिराज महाराज श्री मानसिंह प्रवर्तमाने अंवावलि मध्ये ।

२२९. सहस्रनाम पूजा—धर्मभूषण । पत्र संख्या-८७ । साइज-११×११ इंच । भाषा-संस्कृत ।
विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १८७४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७७ ।

विशेष—शान्तिनाथ मंदिर के पास जयपुर में पं० जगन्नाथ ने प्रतिलिपि की थी ।

२३०. सहस्रनाम पूजा—चैनसुख । पत्र संख्या-१८ । साइज-१२ $\frac{१}{२}$ ×८ इंच । भाषा-हिन्दी ।
विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ८ ।

विशेष—पत्र संख्या २२० है ।

२३१. साङ्गद्वय द्वीप पूजा—विश्वभूषण । पत्र संख्या-२०८ । साइज-१०×४ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा-संस्कृत ।
विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १८६७ मंगसिर बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७८ ।

प्रति नं० ८—पत्र संख्या-४६ । साइज-११×११ $\frac{१}{२}$ । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ७९ ।

विशेष—अट्टई द्वीप के तीन नक्शे भी हैं उनमें एक कपड़े पर है जिसका नाप २' ५"×२' ७" फीट है । नक्शे के पीछे द्वीपों का परिचय दिया हुआ है । इसके प्रतिरिक्त तीन लोक का नक्शा भी है ।

२३२. सिद्धक्षेत्र पूजा— । पत्र संख्या-४१ से ५० तक । साइज-१० $\frac{१}{२}$ ×१ इंच । भाषा-हिन्दी ।
विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ४६ ।

विशेष—निर्वाणकाण्ड गाथा भी है । ५ प्रतियां और हैं ।

२३३. सिद्धचक्र पूजा (अष्टाहिका)—नथमल बिलाला । पत्र संख्या-१० । साइज-१२ $\frac{१}{२}$ ×८ इंच । भाषा-हिन्दी ।
विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १६ ।

२३४. सिद्धचक्र पूजा—सन्तलाल । पत्र संख्या-११० । साइज-१२ $\frac{१}{२}$ ×७ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा-हिन्दी ।
विषय-पूजन । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १९८६ आसोज बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन नं० १ ।

विशेष—ईश्वरलाल चांदवाड ने अन्नसेर वालों के चौबारे में प्रतिलिपि की थी ।

संवत् १९८७ में अष्टाहिका व्रतोत्थापन में केसरलालजी साह की पत्नी नंदलाल पीते वालों की पुत्री ने ओलियों के मन्दिर में सेट की थी ।

२३५. सिद्धपूजा—पद्मनंदि । पत्र संख्या-४ । साइज-१०×४ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा ।
रचना काल-X । लेखन काल— आसोज बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

२३६. सुगंधदशमीप्रतोद्यापन पूजा—पत्र संख्या-२२ । साइज-८ $\frac{1}{2}$ ×६ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४३ ।

विशेष—वन्दिकामतोद्यापन भी है वह भी संस्कृत में है ।

२३७. सोलहकारखजयमाल—पत्र संख्या-१४ । साइज-११ $\frac{1}{2}$ ×५ इंच । भाषा—अपभ्रंश । विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८३५ सावन सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७० ।

विशेष—श्रीचंद ने जयपुर में श्री शान्तिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी ।

२३८. सौख्यकाख्यप्रतोद्यापन विधि—अक्षयराम । पत्र संख्या = । साइज-८ $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । रचना काल—सं० १८२० भाद्रपद शुदी ४ । लेखन काल—सं० १८२८ कार्तिक सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ११३ ।

विषय—चरित्र एवं काव्य

२३९. ऋषभनाथचरित्र—सकलकीर्ति । पत्र संख्या-२३१ । साइज-११×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १६६६ भाद्र शुदी १० । पूर्ण । वेष्टन नं० २२० ।

विशेष—मल्लहारपुर में चांदबाड गोत्र वाली भाई लाडा तस्तिष्या मगा ने प्रतिलिपि कराई थी । एक प्रति और है ।

२४०. किरातार्जुनीय—महाकवि भारवि । पत्र संख्या-१६८ । साइज-११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४८१ ।

विशेष—प्रारम्भ के ३१ पत्र दूसरी प्रति के हैं । पत्र ४२ से १६८ तक दूसरी प्रति के हैं जिसमें श्लोकों पर हिन्दी में अर्थ भी दिया हुआ है ।

२४१. कुमारसंभव—कालिदास । पत्र संख्या-१३ । साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा-संस्कृत ।
विषय-काव्य । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १४८६ आषाढ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४८५ ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

प्रशस्ति—संवत् १४८६ वर्षे आषाढमासे वटपत्रवास्तव्य दीसावालजातीय नखद सुत व्यास पद्मनाभेन कुमार संभवकाव्यमलेखि । शुभंभवतु । भट्टारक प्रभु संसारवाण्यविदारणसिंह श्री सोमसुन्दर सूरिचिचरनंदतु । प्रति सुन्दर है ।

२४२. चंदनाचरित्र—शुभचंद्र । पत्र संख्या-२७ । साइज-११ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १८६१ भाद्रवा सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन नं० १६७ ।

विशेष—शिवशाल साह ने प्रतिलिपि कराई थी ।

२४३. चन्द्रप्रभचरित्र—वीरनन्दि । पत्र संख्या-१४३ । साइज-१३×५ इंच । भाषा-संस्कृत ।
विषय-काव्य । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १५५७ भाद्रवा सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन नं० ६७ ।

विशेष—इसमें कुल १८ सर्ग हैं अंथा अंथ संख्या २५०० श्लोक प्रमाण हैं । प्रारम्भ के १४ पृष्ठों पर संस्कृत टीका भी दी हुई है ।

२४४. चन्द्रप्रभचरित्र—कवि दामोदर । पत्र संख्या-२०२ । साइज-१२ $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा-संस्कृत ।
विषय-चरित्र । रचना काल-सं० १७२३ । लेखन काल-१८५० भाद्र सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० २३३ ।

विशेष—जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

२४५. चारुदत्तचरित्र—भारामल्ल । पत्र संख्या-५१ । साइज-१२×८ इंच । भाषा-हिन्दी (पद्य) ।
विषय-चरित्र । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ७६ ।

विशेष—पद्य संख्या ११०६ है ।

२४६. जम्बूस्वामीचरित्र—ब्रह्म जिनदास । पत्रसंख्या-७२ । साइज-१२×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० २४२ ।

२४७. जम्बूस्वामीचरित्र—नाथूराम । पत्र संख्या-३२ । साइज-१२ $\frac{३}{४}$ ×८ इंच । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-चरित्र । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ८० ।

प्रारम्भ—प्रथम प्रथमो परमेष्ठिगण, प्रथमो सारद माय ।

शुभ निमग्न नमो सदा, मत्र मत्र मैं सुखदाय ॥१॥

धर्म दया हरदै धरुं, सब विधि मंगलकार

जम्बू स्वामी चरित, की करुं वचनिका सार ॥२॥

अथ वचनिका आरम्भ । मध्यलोक के असंख्यात द्वीप और समुद्रों के मध्य एक लाख योजन के व्यास वाला घाली के आकार सदृश गोल जम्बू नाम की द्वीप है । जिसके मध्य में नाभि के सदृश सोमा देने वाला एक सुदर्शन नाम का पर्वत पृथ्वी से दस हजार योजन ऊँचा है और जिसकी जड़ पृथ्वी में १०००० दश हजार योजन की है ।

अन्तिम - जंबूस्वामी चरित जो, पढ़े सुने मनलाय ।

मनवांछित सुख भोग के, अनुक्रम शिवपुर जाय ॥

संस्कृत से भाषा करी, बर्म बुद्धि जिनदास ।

लमेचू नाथूराम पुनि, छंद भद्र की तास ॥

किसनदास सुत मूलचंद, करी प्रेरणा सार ।

जंबूस्वामी चरित की, करी वचनिका सार ॥

तब तिनके आदेश से भाषा सरल विचार ।

तब मति नाथूराम सुत दीपचंद परवार ॥

जगत राग घर द्वेष वश, चहुँगति भ्रमै सदीक ।

पावै सम्यक रत्न जो, काटे कर्म अदीन ॥

गत संवत् निर्वाण को महावीर जिनराय ।

एकम आशय शुद्ध को करी पूर्ण हरषाय ॥

अन्तिम है इक प्रार्थना सुनो सुखी नरनार ।

जी हित चाहो तो करो स्वाध्याय परचार ॥

इति श्री जंबूस्वामी चरित्र भाषा मय वचनिका संपूर्ण ।

२४८. जीवंधरचरित्र—आचार्य शुभचंद्र । पत्र संख्या—८० । साइज—११ $\frac{3}{4}$ ×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । रचना काल—सं० १६२७ । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० २११ ।

२४९. दुर्घटकाव्य—कालिदास । पत्र संख्या—२० । साइज—११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४८४ ।

प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

२५०. धन्यकुमारचरित्र—गुणभद्राचार्य । पत्र संख्या—१२ । साइज—१२×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० १७२ ।

विशेष—लंबकंधुकमोत्रेभूच्छुभचन्द्रो महामना ।

साधुः सुशीलवान् शांतः भावको धर्मवत्सल ॥

तस्य पुत्रो बभूवाय कल्हणो दानवान् वशी ।

परोपकारचित्तस्य न्यायेनार्जितसद्जनः ॥

धर्मासुरागिणा तेन धर्मकर्मनिर्बन्धनं ।

चरितं कारितं पुरथं शिवापेति शिवार्चिवनः ॥

इति धन्यकुमार चरित्रं समाप्तं ।

संस्कृत में कठिन शब्दों का अर्थ भी दिया हुआ है । ७ परिच्छेद हैं ।

२५१. धन्यकुमार चरित्र—सकलकीर्ति । पत्र संख्या-४० । साहज-१२X५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १५६४ मंगसिर सुदी १३ । पूर्ण । बेष्टन नं० ३६४ ।

प्रशस्ति—संवत् १५६४ वर्षे आषाढादि ६५ वर्षे शाके १४३१ प्रथम भागसिर सुदि सुयं श्री गिरेपुरे श्री आदिनाथचैत्यालये श्री-मूलध्वजे सरस्वतीगच्छे चलात्कारगणे मट्टारक श्री सकलकीर्तिः तत्पट्टे मट्टारक श्री भुवनकीर्ति स्तत्पट्टे मट्टारक श्री जनमूषणस्तत्पट्टे मट्टारक श्री विजयकीर्तिस्तत् शिष्य ब्रह्म मल्लिदासपठनार्थं हुबड सातीय वृद्ध शास्त्रार्थ चौकडी आनाका तद्वार्या वरुणदे तयो द्वौ पुत्रौ । चौकडी सारुपा तद्वार्या राजलदे । एते ज्ञानावर्णा कर्म क्षयार्थं श्री धन्यकुमार-लिखाप्यदत्त शुभं संवत् पश्चात् ब्रह्म श्री मल्लिदासात् शिष्य उन्ही आकेन पठितं । पं० हीरा की पोथी है । सात अधिकार हैं ।

२५२. धन्यकुमारचरित्र—ब्रह्म नेमिदूत । पत्र संख्या-२५ । साहज-६X४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-X । लेखन काल-X । अपूर्ण । बेष्टन नं० ४८६ ।

विशेष—चतुर्थ अधिकार तक है इसके आगे अपूर्ण है ।

२५३. धन्यकुमारचरित्र—सुशालचंद । पत्र संख्या-३८ । साहज-१४X८ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-चरित्र । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १६५६ मंगसिर सुदी ७ । पूर्ण । बेष्टन नं० ६६ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

२५४. धर्मशर्माभ्युदय—हरिचंद्र । पत्र संख्या-१०६ । साहज-१२X४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । बेष्टन नं० ४३२ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है बीच के कुछ पत्र जीर्ण हैं । धर्मानाथ तीर्थकर का जीवन चरित्र वर्णित है ।

२५५. नागकुमारचरित्र—पत्र संख्या-३६ । साहज-१३X८ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । बेष्टन नं० ७६ ।

२५६. नेमिदूतकाव्य—विक्रम । पत्र संख्या-१३ । साहज-१०X४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १७८७ । पूर्ण । बेष्टन नं० ४०३ ।

२५७. नेमिदूतकाव्य सटीक—मूलकर्ता विक्रम कवि । टीकाकार पं० गुण चिन्त्य । पत्र संख्या—२३ । साइज—१० १/४ × ४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । टीका काल—सं० १६४४ । लेखन काल—सं० १६४४ । पूर्ण । वेष्टन नं० २६२ ।

२५८. प्रद्युम्नकाव्य पंजिका—पत्र संख्या—८ । साइज—१० × ६ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—काव्य । रचना काल—X । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ३४२ ।

विशेष—१४ सर्ग तक है ।

२५९. प्रद्युम्नचरित्र—महसेनाचार्य । पत्र संख्या—८८ । साइज—११ १/४ × ५ १/४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १७११ ज्येष्ठ सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० २६४ ।

विशेष—कुल २४ परिच्छेद हैं, कठिन शब्दों के अर्थ दिये हुए हैं ।

२६०. प्रद्युम्नचरित्र—आ० सोमकीर्ति । पत्र संख्या—२३६ । साइज—११ × ६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० २६३ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । ग्रंथ सं० ४=५० श्लोक प्रमाण है । एक प्रति संवत् १६४७ की लिखी हुई और है ।

२६१. प्रद्युम्नचरित्र—कवि सिंह । पत्र संख्या—३४३ । साइज—११ × ४ १/४ इञ्च । भाषा—अपभ्रंश । विषय—चरित्र । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १५६८ चैत सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन नं० १८१ ।

विशेष—सुबकगढ (डोडारायसिंह) में सोलंकी वंशोत्पन्न सूर्यसेन के राज्य दाबणहया स्थाने खडेलवालजातीय सोगाणी गोत्रोत्पन्न संघी सोढा के वंशज दूंगा पठा सांगा आदि ने प्रतिलिपि कराकर मुनि पद्मकीर्ति को भेंट किया ।

२६२. पार्श्वपुराण—भूधरदास । पत्र संख्या—८२ । साइज—११ × ६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—काव्य । रचना काल—सं० १७=८ । लेखन काल—सं० १८१६ आषाढ सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन नं० १७ ।

विशेष—२ प्रतियाँ और हैं ।

२६३. पार्श्वनाथचरित्र—भ० सकलकीर्ति । पत्र संख्या—१०३ । साइज—११ × ४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १६०६ कार्तिक सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन नं० ५३ ।

विशेष—श्री बादशाह सलीमशाह (जहाँगीर के) शासन काल में प्रयाग में श्री आदिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी । अल्लाह ने इसे सुगतिदास के पठनाथ प्रतिलिपि की थी । आचार्य श्री हेमकीर्ति के शिष्य सा० भण्डीर की पुस्तक है ऐसा लिखा है ।

इस ग्रंथ की भण्डार में एक प्रति और है ।

२६४. प्रीतिकरचरित्र—ब्रह्मनेमिदत्त । पत्र संख्या—२७ । साइज—१२ × ४ १/४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८०५ द्वि० वैशाख सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन नं० २७६ ।

विशेष—बलपुर नगर में श्री चंद्रप्रमचैत्यालय में प० परसराम जी के शिष्य आनन्दराम के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी ।

२६५. भद्रबाहुचरित्र—रत्ननंदि । पत्र संख्या—३० । साइज—११×२ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । रचनाकाल—X । लेखन काल—सं० १६५२ कार्तिक सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन नं० २६७ ।

विशेष—प्रशस्ति अपूर्ण है अंश ६८८ श्लोक संख्या प्रमाण है ।

२६६. भद्रबाहुचरित्र भाषा—चंपाराम । पत्र संख्या—३८ । साइज—१२^१/_४×७^१/_२ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—चरित्र । रचना काल—सं० १८०० सावन सुदी १५ । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३४ ।

विशेष—अंश १३२५ श्लोक प्रमाण है ।

प्रारम्भ—जैबंती भरती सदा, चौबीसुं जिनराज ।

तिन बंदत बंदक लहै, निश्चय बल सुखदाय ॥

शेष—रिषव अजित संभव अभिनीदन ।

सुमति पत्र सुपासि चंद ॥

पुष्पदंत शीतल जिन राय ।

जिन श्रीहांस नमूं सिर नाय ॥२॥

पत्र संख्या—२३ पर—अद्यान्तर जे जीव तिस ही भव विषे स्त्री कूं मोह गमन कई है, ते जीव आसई रूप ग्रह करि अस्य है अथवा तिनकूं नाय सगी है ॥८३॥ कदाचि स्त्री पर्याय धारि अर दुद्धर घोर वीर तप करै । तथायि स्त्रीकूं तद्वत् मोह नहि ॥८४॥

अन्त—इह चरित्र गुर मय्य लिखि रत्ननंदि गुनिराय ।

रन्थौ पंसत श्लोक मय मू३ महा सुख दाय ॥१॥

लैय तिस अनुसार कछु रन्थौ वचनका रूप ।

जात नाम कुल तास अव कहुं सुनौ गुन मूप ॥२॥

देश छ'जाहठ मध्यपुर माधव सुवस्थान ।

जगतसंघ ता नगरपति पातल राज महान ॥३॥

तहां बसे एक वैश्य शुभ हीरालाल सु जान ।

वाति आवग न्याति में खंडेलवाल शुभ जानि ॥४॥

गोत मावसा पुनि धरै परम शुनी गुन नाम ।

तिनकै अति मति दीन सुत उपनौ चंपाराम ॥५॥

तत्कै फुनि अता जगम लसे सुजन सुख दाय ।
 तानै कछु अतर समझि सीखी पाय सहाय ॥६॥
 तिस पुर मध्य जिन भवन इक राजत अधिक उदार ।
 मध्य लसै जिन वृषभ सुर नर बंदिता पद सार ॥७॥
 तहा जात दिन रैन सुभि नगै कछु अस्यात ।
 तभ लखि कै सुचरित्र इह रवी वचनका तास ॥ ८ ॥
 होय दोस यामै जहाँ अमिलत अतर होय ।
 सोधौ ताकूँ सुखद नर निज लक्षण थन सोय ॥ ९ ॥
 संत सदा गुन दुर्जन महे औगण लेय ।
 सुख तै तिन्हीसूभि पार मो पर कृपा करेय ॥ १० ॥
 बुद्धहीन तै मूलवत अर्थ भयो नही होय ।
 ता परि सजन पुण्य मो जमा करो गुन जोय ॥ ११ ॥
 अर सोधी नर बोर तै लखि अतर विनास ।
 यह मेरी अरजी शुभग भरौ चित्त गुण राखि ॥ १२ ॥
 अधिक कहे किम होत है जे है संत पुमान ।
 ते थोरे ही कहन तै समझि लेत उर आन ॥ १३ ॥
 नर सुर पति बंदत चरण करन हरन गुन पूर ।
 पर दरसत भंजन करै धर्म रूप विधि चूर ॥ १४ ॥
 जो जिनेश इन गुण सहित सो बंदूँ सिर नाय ।
 सोहु इहा भंगल करन हरन विघ्न अधिकाय ॥ १५ ॥
 आनण सुदि पूनिम सु रविवार अर्थ रस जानि ।
 सद ससि संवत्सर विनौ मयौ मंथ सुख खानि ॥ १६ ॥
 नर थिर चवगति जीवत निति होहु सुखी अगवान ।
 टरो विघन दुख रोष सब बर्धौ धर्मभगवान ॥ १७ ॥

— छंद अतुष्टया—

भद्रबाहुमुनेरेतत् चरित्र प्रति दर्शता ।
 भाषा मयं कृतं त्वंपारमेण भद्रबुद्धिना ॥ १८ ॥

—सौरा—

तरय दोष परित्यज्य भद्र तु गुन सज्जना ।
 यथा वृष्टौपि सौरभ्यं ददाति चंदनोत्पत्तं ॥ १९ ॥

तेरह से पचास श्लोक रूप संख्या गिनी ।

मद्रवाहु छुनि हैन चरित नवी भाषा सरै ॥ १२ ॥

इति श्री आचार्य रत्नसिंह विरचित मद्रवाहु चरित्र संस्कृत ग्रंथ ताकी बालबोध वचनका त्रिषै स्वताम्बर मत उत्पति वा पर्यसंध की उत्पति तथा लुकामत की उत्पति नाम वर्णनों नाम चतुर्थ अधिकार पूर्ण भया ॥ इति ॥

२६७. मद्रवाहु चरित्र भाषा—किशानसिंह । पत्र संख्या—३२ । साइज—११×१४ इंच । भाषा—हिन्दी भाषा । विषय—चरित्र । रचना काल—सं० १७८३ । लेखन काल—X । पूर्ण । बेष्टन नं० ७८ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

२६८. भविष्यदत्त चरित्र—श्रीधर । पत्र संख्या—६६ । साइज—१२×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १४८६ भगसिर सुदी १० । पूर्ण । बेष्टन नं० ५३१ ।

विशेष—खंडेलवाल जातीय साह गोश्रोत्यन साह लाला के वंशज नाथा खीमा क्षीतर आदि ने प्रतिलिपि कराई थी ।

२६९. भविष्यदत्तचरित्र—ब० रायमल । पत्र संख्या—३९ । साइज—१२×८ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—चरित्र । रचना काल—सं० १६१६ । लेखन काल—X । पूर्ण । बेष्टन नं० ११५ ।

२७०. भविष्यदत्त चरित्र—धनपाल । पत्र संख्या—११२ । साइज—११×१४ इंच । भाषा—अपभ्रंश । विषय—चरित्र । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १६६२ माघ सुदी १२ । पूर्ण । बेष्टन नं० १६५ ।

विशेष—सं० १६६२ वर्षे माघ सुदी ११ शुक्रवासरे रोहिणीनक्षत्रे श्री मूलसंधि लिखित खेमकरण काव्य हाजीपुरनगरे ।

एक प्रति और है लेकिन वह अपूर्ण है ।

२७१. भोजप्रबंध—पंडित अल्लारी । पत्र संख्या—१९ । साइज—१०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । बेष्टन नं० २९८ ।

विशेष—श्लोक संख्या ११०० प्रमाण है ।

२७२. महीपालचरित्र—नथमल । पत्र संख्या—७० । साइज—१२×१६ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—चरित्र । रचना काल—सं० १६१८ आषाढ सुदी ४ । लेखन काल—X । अपूर्ण । बेष्टन नं० ३६ ।

विशेष—प्रारम्भ के २ तथा अन्तिम पत्र नहीं हैं ।

श्री नथमल दोसी दुखीचंद के पौत्र तथा शिवचंदजी के पुत्र थे । इनने पं० सदासुखजी के पास रहकर अध्ययन व रचनाएँ की थी ।

२७३. मेघदूत—कालिदास । पत्र संख्या—२७ । साइज—१०×४^१/_२ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४१३ ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । टीकाकार सरस्वतीतीर्थ हैं । काशी में टीका लिखी गई थी । पत्र २३ एक मूल साहित (श्लोक ५५) टीका है शेष पत्रों में मूल श्लोकों के लिए स्थान खाली है ।

२७४. यशोधरचरित्र—वादिराजसूरि । पत्र संख्या—१७ । साइज—१२×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १७०० ज्येष्ठ सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन नं० २७७ ।

२७५. यशोधरचरित्र—सकलकीर्ति । पत्र संख्या—५२ । साइज—१०×४^१/_२ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० २७१ ।

विशेष—आठ सर्ग हैं । प्रति प्राचीन है । पत्र पानी में भीगे हुए हैं । एक प्रति और है ।

२७६. यशोधरचरित्र—ज्ञानकीर्ति । पत्र संख्या—७६ । साइज—१०^१/_२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । रचना काल—सं० १६५६ भाद्र सुदी ५ । लेखन काल—सं० १६६२ ज्येष्ठ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० २७५ ।

विशेष—४ सर्ग हैं । राजमहल नगर के श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय में महाराजाधिराज श्री मानसिंह के राज्य काल में उनके प्रधान अमात्य श्री भाव गोधा ने प्रतिलिपि कराई थी ।

२७७. यशोधरचरित्र—वासवसेन । पत्र संख्या—६३ । साइज—१०^१/_२×४^१/_२ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १६१४ चैत्र सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० २७४ ।

प्रशस्ति—संवत् १६१४ वर्षे चैत्र सुदि ५ शुक्रवारे तत्कालमहादुर्यो महाराजाधिराजराजश्रीकल्याणराज्यप्रकर्षमाने श्रीमूलसंघे तंघःम्नाये बलात्कारागणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्दाचार्यान्वये महारक श्री पद्मनंदिदेवा तत्पट्टे भा० श्रीशुभचंद्रदेवा तत्पट्टे भा० श्रीजिनचंद्रदेवा तत्पट्टे श्रीप्रभाचंद्रदेवा तत् शिष्यमंडलाचार्यश्रीधर्मचंद्रदेवा तत् शिष्यमंडलाचार्यश्री ललितकीर्तिदेवा-पद्मनाये खंडेलालाभवये अजमेरा तंघे सा दामा तद्व्यापी चांदी तत्पुत्री द्वी । प्र० रायो जिनपूजापुरंदर चतुर्दीनत्रितरणकस्तुल शीलगंगेय सा बोहिथ, द्वि० सा वाता । सा० बोहिथ तद्व्यापी बालदे । तत्पुत्री द्वी । प्र० सा. सुदामा द्वि० सा. साधु । सा, सुरताण मया द्वी

२७८. यशोधरचरित्र—पद्मनाभ कायस्थ । पत्र संख्या—८६ । साइज—११^१/_२×४^१/_२ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन नं० २७२ ।

विशेष—६ सर्ग तक है, प्रति प्राचीन है ।

२७९. यशोधरचरित्र—सोमकीर्ति । पत्र संख्या—५१ । साइज—१०^१/_२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । रचना काल—सं० १६३६ पौष सुदी ५ । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० २७० ।

विशेष — आठ सर्ग हैं । श्री शीतलनाथ चैत्यालय गीटियामेव पाठ में अन्य रचना की गई थी । अंश श्लोक संख्या—१०१ = प्रमाण है । २० से ४१ तक पत्र दूसरी प्रति के हैं । प्रति प्राचीन है । एक प्रति और है ।

२८०. यशोधरचरित्र—लित्थमीदास । पत्र संख्या—२६ । साइज—१३×७½ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—चरित्र । रचना काल—सं० १७८१ कार्तिक सुदी ३ । लेखन काल—सं० १८५२ । पूर्ण । बेष्टन नं० १२२ ।

२८१. यशोधरचरित्र भाषा—खुशालचन्द्र । पत्र संख्या—३३ । साइज—१३×८ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—चरित्र । रचना काल—सं० १७८१ कार्तिक सुदी ८ । लेखन काल—सं० १८०० अषाढ शुदी ३ । पूर्ण । बेष्टन नं० ६८ ।

विशेष—पं० कालीचरन ने प्रतिलिपि की थी । एक प्रति और है ।

२८२. रघुवंश—कालिदास । पत्र संख्या—११७ । साइज—१०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । बेष्टन नं० ४२० ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । संस्कृत टीका सहित है । पत्रों के मध्य में मूल सूत्र है तथा ऊपर नीचे टीका की है । अंश टीका श्लोक संख्या—५२४० है । मूल श्लोक संख्या—२००० है ।

एक प्रति और है लेकिन वह अपूर्ण है ।

२८३. रामकृष्ण काव्य—पं० सूर्य कवि । पत्र संख्या—९३ । साइज—११×४½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८१७ चैत्र सुदी ११ । अपूर्ण । बेष्टन नं० ४०२ ।

विशेष—अन्वयदीपिका नाम की टीका है । पंडि आनन्दराम ने प्रतिलिपि की थी ।

प्रारम्भ—श्रीमज्ज्ञानकीर्णाय नमः ।

श्रीमन्मंगलमूर्तिमार्तिरामनं नत्वा विदित्वा ततः ।

शम्भुब्रह्मनोःरमं सुगुणकलाधिरजात्मनः ॥

अन्तिम—सुखान्वयठास्तु विसोमवर्ण काव्येऽत्र भव्येऽतिमादधातु ।

चातुर्यभाषाति यतः कवित्वे, नाशा तथा पाक जातमेति ॥

इति श्री सूर्यकवि कृता रामकृष्णकाव्यस्यान्वयदीपिका नाम्नी टीका संपूर्णा ।

२८४. वरांगचरित्र—भट्टारक बख्शमान देव । पत्र संख्या—६७ । साइज—११½×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । रचना काल—X । लेखन काल—१८६३ अषाढ शुदी १ । पूर्ण । बेष्टन नं० ३७० ।

विशेष—जयपुर के शन्तिनाथ चैत्यालय में विदुष अमृतचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

२८५. वासवदत्ता—महाकवि सुबोधु । पत्र संख्या—१६ । साइज—१०½×४½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । बेष्टन नं० ४७३ ।

२८६. विदग्धमुखमण्डन—धर्मदास । पत्र संख्या—३१ । साइज—११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । रचना काल—४ । लेखन काल—सं० १८६१ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३४० ।

विशेष—यति श्रमरदत्त ने जयपुर में सं. १=३१ में पंडित श्रीचंद्र के शिष्य जे० मनोहराश्रम के पठनाथ प्रतिलिपि करवाई थी । प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

२८७. शिशुपालवध—महाकवि माघ । पत्र संख्या—११ । साइज—११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । रचना काल—४ । लेखन काल—४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४२६ ।

विशेष—केवल १४ वें सर्ग की टीका है, टीकाकार मल्लिनाथ सूरि हैं ।

२८८. श्रीपालचरित्र—ब्रह्मनेमिदत्त । पत्र संख्या—६६ । साइज—११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । रचना काल—सं० १५८१ आषाढ सुदी १५ । लेखन काल—सं० ५=४४ आशीज सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन नं० २२६ ।

विशेष—पूर्वनाम नगर के आदिनाथ चैत्यालय में ग्रन्थ रचना की गई थी ।

२८९. श्रीपालचरित्र—परिमल । पत्र संख्या—१३२ । साइज—१२×४ इंच । भाषा—हिंदी । विषय—चरित्र । रचना काल—४ । लेखन काल—४ । पूर्ण । वेष्टन नं० २७ ।

विशेष—४ प्रतियाँ और हैं ।

२९०. श्रीलोकचरित्र—शुभचंद्र । पत्र संख्या—११३ । साइज—११ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । रचना काल—४ । लेखन काल—सं० १७८५ आषाढ सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन नं० २४१ ।

विशेष—कोड़ी ग्राम में प्रतिलिपि हुई थी ।

२९१. सप्तवयसन चरित्र भाषा । पत्र संख्या—१३ । साइज—१२×८ इंच । भाषा—हिन्दी भेष । विषय—चरित्र । रचना काल—सं० १८२१ । लेखन काल—४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ८७ ।

विशेष—रचना के मूलकर्ता श्रीमकर्ति हैं ।

२९२. सुकुमालचरित्र—सकलकीर्ति । पत्र संख्या—४३ । साइज—१० इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । रचना काल—४ । लेखन काल—४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४११ ।

विशेष—६ सर्ग हैं । श्लोक संख्या १२०१ है पत्र पानी में भीगे हुए है ।

२९३. सुकुमालचरित्र भाषा—नाथूलाल मोसी । पत्र संख्या—२५ । साइज—११ इंच । भाषा—हिन्दी भेष । विषय—चरित्र । रचना काल—४ । लेखन काल—४ । पूर्ण । वेष्टन नं० १४० ।

विशेष—प्रारम्भ में चरित्र पत्र में दिया हुआ है फिर उसकी बचनिका लिखी गई है ।

प्रारम्भ (पद्य)—श्रीमत् वीर जिनेश पर, कमल नभूँ शिरनाथ ।

जिनवाणी उर मैं धरूँ जजू सुशुभ के पाय ॥ १ ॥

पंच परम गुरु जगत में परम इष्ट पहिचान ।

भक्त सब तन करि ध्यावते होत कर्म की हानि ॥ २ ॥

अन्तिम—सर्वारथ सिद्ध लौं मये, शेष जतो तज ग्राम ।

जानो भवि संक्षेप तैं ईह विध चरित बखान ॥ १२५ ॥

अब सुकुमाल चरित का सकल ज्ञान के हेत ।

देश वचनिका मय लिखूँ पदों सुनी धरि चित ॥ १२६ ॥

ब्रह्म प्रमाद कहुँ मूलि के अरथ लिख न ओ होय ।

दंडित जन सब सोधियो, मूल ग्रंथ अवलोय ॥ १२७ ॥

वचनिका पद्य नं० ८८ की:—

अर भूत बचनका बोलना ते बुद्धि को नाश हो ते । अपजस फैलै ते । अर सर्व जीवन के अविश्वास की पात हो ते । बहुत राजादिकनि ते हाथ पाथ कान नाक जीभ आदि का छेद रूप दंड पावै ते ।

अन्तिम—आदि अंत संगल करी श्री वृषभादि जिनेश ।

जिन धर्म जिन भारती, हर संसार कलेश ॥

गर्वना । दंडादंड देश मध्य जैपुर नगर सो है,

प्यार धर्म राह चलि अपने सुधर्म की ।

रामसिंह धृपत के राज माहि कमी नाहि,

कमी कछु दष्टि परै जानौ निज कर्म की ॥

वैष्णवल जेनी को पूज कृत्य पुण्य भकी,

पाथो यह सोलो अब सुदी दष्टि धर्म की ।

जिन वैन कान सुनी अत्मस्वरूप मूनी,

साध अनुयोग भनी यही सीख मर्म की ॥ २ ॥

नाराई—ऐसी गोत्र दुलीचंद नाम । ताको सुत शिवचंद अभिराम ॥

नभूलाल तामु सुत भयो : जिन धर्म को सरणी लख्यो ॥ ३ ॥

बोदावाण संजही अमरेश । पाय सहाय पल्लो भूत लेश ॥

काशीवाल सदा सुख पास । फिर कोनी भूत को अभ्यास ॥ ४ ॥

श्री सुकुमाल चरित रसाल । देख कही हरचंद गंगवाल ॥

कौन वचनिका मय जो ऐह । सब जन वांचे हित गेह ॥ ५ ॥

बिन व्यकरण परे नहीं ज्ञान । मूलग्रंथ को हीरे निदान ॥
 औसी प्रार्थना तने बसाय । मूल ग्रंथ को पाय सदाय ॥ ६ ॥
 भाषारथ सो लिखयो गृह । देश वचनिका मय धरि नेह ॥
 भाची पढी पढायी सुनौ । आत्म हित कृ नीक' सुनौ ॥ ७ ॥
 जो प्रमाद बस तै कुल दहा । भोलपने तै रीने कहा ॥
 सो सब मूल ग्रंथ अचुसर । एध करयो बुध जन सुविचार ॥ ८ ॥
 उनबीससत्तारहसार । सावण सुदी दशमी सुखवार ॥
 पूरण भई वचनिका एह । भाची पढी सुनौ धरि नेह ॥ ९ ॥

दाहा—संगलमय संगल करन वीतराग चिद्रूप ।

मन वच कर व्यभिचरै, हो है त्रिभुवन भूष ॥ १० ॥

इति श्री सकलकीर्ति आचार्य विरचित सुकुमाल चरित्र संस्कृत ग्रंथ ताकी देशभाषा वचनिका समाप्ता ॥

२६४. सीताचरित्र—कवि बालक । पत्र संख्या—११३ । साइज—१३×६ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य ।

विषय—चरित्र । रचना काल—सं० १७०३ संवत्सर सुदी ५ । लेखन काल—सं० १७६८ सावन सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६२

विशेष—पं० सुखलाल ने केयूरा नगर में प्रतिलिपि की थी । पं० सुखराम का पोत टालिया, बत्ती शम्बा-
 चाटी, बास दिगुगया था ।

२६५. हनुमतचौपई—ब्रह्मरायमल्ल । पत्र संख्या—४० । साइज—१०×६ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य ।

विषय—चरित्र । रचना काल—सं० १६१६ । लेखन काल—सं० १८६४ । पूर्ण । वेष्टन नं० १८० ।

विशेष—बोटेलालजी टोल्या ने मन्दिर दाणावलि (दीवानजी) के पंडित सवाई रामजी से ८) देकर पुस्तक
 संवत् १८०२ में ली थी ।

२६६. हनुमच्चरित्र—ब्रह्म अजित । पत्र संख्या—८६ । साइज—१०×६ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—चरित्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ५६६ ।

विशेष—ग्रंथ २००० श्लोक प्रमाण है प्रति प्राचीन है ।

२६७. होलिकाचरित्र—जिनदास । पत्र संख्या—१०६ । साइज—११×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—चरित्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० २६८ ।

विशेष—ग्रंथ श्लोक संख्या ६४६ प्रमाण है ।



विषय-पुराण साहित्य

२६८. आदिपुराण—जिनसेनाचार्य । पत्र संख्या-३४५ । साहज-१२ $\frac{३}{४}$ ×६ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १७३६ ज्येष्ठ सुदी ५ । पूर्ण । बेष्टन नं० १५८ ।

विशेष—पालुम्ब नगर निवासी बिहारोदय के पुत्र निहालचंद जैसवाल ने, प्रतिलिपि की थी । एक प्रति और है लेकिन वह अपूर्ण है ।

२६९. आदिपुराण—पुष्पदंत । पत्र संख्या-४ से २७६ । साहज-१२×५ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा-हिन्दी । भाषा-अपभ्रंश । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १६४३ आश्वीज सुदी ६ । पूर्ण । बेष्टन नं० १६४ ।

विशेष—एक प्रति और है । लेकिन वह अपूर्ण है ।

लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

प्रशस्ति—अथ श्रीविक्रमादित्यराज्यात् संवत् १६४३ वर्षे आश्वीज सुदी ६ गुरुवारे श्री हिसारपरोज्जाकांटे सलतान श्रीबहलोलसहराज्यप्रवर्तमाने श्री मूलसंघे मंथाम्नाये सरस्वतीगण्ड्ये कलात्कारगणे मटारकश्रीपञ्चनदिदेवाः तत्पट्टे मटारक श्री शुभचंददेवा तत् शिष्य श्री मुनि जयनंददेवा तत् शिष्यणी वाई गृहरी निमिरा श्री खडेलवालागण्ये चेतपासीय गोत्रे सुनामपुरवास्तव्ये जिनशासनप्रभावकपरमश्रावकसंघपतिकल्ह नामा तत्पत्नी शीलशालिनी साध्वी राग्यो नाथी तयो चत्वारः पुत्राः अनेकतीर्थयात्रादिमहामहीत्सवकाराधिका अर्हतादिपंचपरमेष्ठिचरणारविंदसेवनैकचंचरीका संघपति ह्वा सं० धीरा सं० कामा, सं० सुस्वति नामधेया तन्मध्ये संघपति कामा भार्या विहितानेकजनियमतपोविधानादिधर्मकार्या साध्वी कमलश्री तत्पुत्री देवपूजादिषट्कर्मपद्मिनीखंडमारीशङ्खौ हरितनगपुरतीर्थयात्राप्रभावनाकारणोपपन्न पुन्यबलप्रबंधौ सं० भीवा सं० बच्छकी संघपति भीमाख्यजाया देवगुरुशास्त्रभक्तिविधानप्रलब्धजाया साध्वी मौकशी इति प्रसिद्धि तद्व्यमंदने प्रर्थनामा गुरुदास तत् कलत्र शीलायनैकगुणपात्रे गुणश्री नामिक तत्सुतौ चिरंजीव जैरणमल संघपति बहू गेहनी विनयादिगुणश्रुतदाहिनी वडलसिरि इति शशि । तत् तनुजो जिनचरणकमल सेवनैकचंचरीकाः सं० रावणदासाख्य तज्जननी शंलचिनयादिगुणशायत्तं सरस्वती संज्ञिका । पुत्रेषामध्ये साध्वीया कमलश्री तया निज पुत्र सं० भीवा बच्छक्यो न्यायोपाजित विद्येन इंदश्री आदिपुराणपुस्तकं लिखापित । लिखितं महेश्वर शोभा सुत ऊधाकेन इदं पुस्तकं ।

३००. आदिपुराण भाषा—पं० दौलतराम । पत्र संख्या-६४८ । साहज-१३ $\frac{३}{४}$ ×६ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पुराण । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । बेष्टन नं० ६६ ।

ग्रन्थ २३७०० श्लोक प्रमाण है । एक प्रति और है ।

३०१. उत्तरपुराण—गुणभद्राचार्य । पत्र संख्या-३०१ । साहज-१२ $\frac{३}{४}$ ×६ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १८६२ चैत्र सुदी २३ । अपूर्ण । बेष्टन नं० १५६ ।

विशेष—प्रशस्ति अपूर्ण है। अजमेर पट्ट के म० देवेन्द्रकीर्ति के पट्ट में आचार्य रामकीर्ति के समय में लश्कर (खालियर) में आदिनाम नैथालय में प्रतिलिपि की गयी थी। इसमें ६६ से ६८ तक पत्र नहीं हैं।

एक प्रति और है। यह प्रति प्राचीन है।

३०२. नेमिजितपुराण—ब्रह्मनेमिदत्त। पत्र संख्या—१८३। साइज—११×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पुराण। रचना काल—X। लेखन काल—सं० १६१२ आषाढ सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन नं० २३०।

विशेष—तत्तकाल में राजा रामचंद्र के शासन काल में आदिनाम नैथालय में प्रतिलिपि की गई थी। प्रतिभा और है।

३०३. पद्मपुराण—रविषेण/आर्य। पत्र संख्या—१ से १५०। साइज—१३×६½ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पुराण। रचना काल—X। लेखन काल—X। अपूर्ण। वेष्टन नं० १६१।

३०४. पद्मपुराण—पं० दौलतराम। पत्र संख्या—६२१। साइज—१२×६½ इंच। भाषा—हिन्दी भाषा। विषय—पुराण। रचना काल—सं० १८२२ भाद्र सुदी ३। लेखन काल—सं० १८०० आषाढ सुदी ४। पूर्ण। वेष्टन नं० ५०

विशेष—दयाचंद भादवाड ने लिपि की की।

३०५. पारुडवपुराण—शुभचंद्र। पत्र संख्या—२०२। साइज—१२½×६½ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पुराण। रचना काल—सं० १६०३ भाद्रवा सुदी २। लेखन काल—सं० १७६२ आसोज सुदी १४। पूर्ण। वेष्टन नं० ४१।

विशेष—श्वेताम्बर यति गोरखदास ने बसवा में प्रतिलिपि की थी।

३०६. बलभद्रपुराण—रङ्गू। पत्र संख्या—१५५। साइज—१२×६½ इंच। भाषा—अपभ्रंश। विषय—पुराण। रचना काल—X। लेखन काल—सं० १७३२ फागुन सुदी १४। पूर्ण। वेष्टन नं० १६३।

विशेष—औरंगजेब के शासनकाल में बेराठ नगर में अमनाल बंशीधरन भुगिल गोत्रीय संघी साधु के वंशज संघी श्री कृशलसिंह ने पेमराज से प्रतिलिपि कराई थी।

३०७. रामपुराण (पद्मपुराण)—भ० सोमसेन। पत्र संख्या—२८४। साइज—११½×५½ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पुराण। रचना काल—सं० १६६६। लेखन काल—सं० १८२८ भाद्र सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन नं० २५८

विशेष—श्वेताम्बर जयदास ने प्रतिलिपि की थी। कुल ३३ अधिकांश हैं। अध्याय संख्या—७३० श्लोक प्रमाण है।

३०८. वर्द्धमानपुराण—सकलकीर्ति। पत्र संख्या—५६४। साइज—१२½×६ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पुराण। रचना काल—X। लेखन काल—सं० १८५८। पूर्ण। वेष्टन नं० २५७।

विशेष—इसमें कुल ११ अधिकार हैं। महामा सासगरास ने प्रतिलिपि की थी।

३०६. शान्तिनाथपुराण—सकलकीर्ति । पत्र संख्या—४६ से १८८ । साइज—११×१४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १६१८ माह सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन नं० २४८ ।

विशेष—कुल १६ अधिकार हैं । श्लोक संख्या ४६८० है । एक प्रति और है ।

३१०. हरिवंशपुराण—यशकीर्ति । पत्र संख्या—१४१ । साइज—११½×१४½ इंच । भाषा—अपभ्रंश । विषय—पुराण । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १६१५ सावनसुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन नं० २६६ ।

विशेष—४००० प्रमाणश्लोक ग्रन्थ है । बादशाह अकबर के शासन काल में अमवाल वंशोत्पन्न मिर्चल गोत्रीय रेवडी निवासी राह अमराज के वंशज सा. भीमसेन ने प्रतिलिपि कराई थी । लेखक प्रशस्ति काफी विस्तृत है ।

३११. हरिवंशपुराण—ब्र० जिनदास । पत्र संख्या—३६६ । साइज—१०½×१४½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १७१२ अग्रहन सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन नं० १६८ ।

लेखक प्रशस्ति अधूर्ण है । एक प्रति और है ।

३१२. हरिवंशपुराण—पं० दौलतराम । पत्र संख्या—६८४ । साइज—१३×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पुराण । रचना काल—सं० १८२६ चैत्र सुदी १ । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० १४५ ।

विशेष—बलदेव कृत जयपुर रचना भी है ।

विषय—कथा एवं रासा साहित्य

३१३. अप्रह्लिकाकथा—पत्र संख्या—३८ । साइज—१०×४½ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—कथा । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १६१० मंगसिर सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७२ ।

विशेष—गुजराती हिन्दी मिश्रित है । आकृत वाशाएँ हैं उस पर टीका है । पञ्चलाल के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

प्रारम्भ—शान्ति देव प्रणाम करि निश्चय मन में ध्याय ।

कथा अठार्वनी लिखी, भाषा सुगम बनाय ॥

यहाँ समस्त स्रोत कर्म से पालने वाली, निमल धर्म से उपजावने वाली और कर्म निगरी नासरी करिने वाली कर, यह लोग से विषै परलोक से विषै परलोक से विषै कियो है । वहाँ सुख जिन्हे ऐसा पयूँकणा पर्व आगी मकी समस्त देवता भवनपति इन्द्र भेल्या होय ते नंदीश्वर नामा आठमा द्वीप से विषै धर्म से महिमा करनाये जावे ।

अन्तिम—मति मंदिर किनी सरस कथा अठई देख ।

पद में असुध कैई हुबो कबि जन लीजो देख ॥

३१४. अष्टाह्निका कथा—पत्र संख्या—३३ । साइज—१०×४^१/_२ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—कथा । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८=२ थापाट सुदी ११ । पूर्ण । बेष्टन नं० ३८१ ।

विशेष—पचालाल ने प्रतिलिपि की थी । अन्त में निम्न दोहा भी है:—

रतन कोह सुन्न संकड़ो अलवेली पणोवार ।

रंपत पाणि मरै तीसै पुरुष से मर ॥ १ ॥

३१५. अनंतव्रतकथा—पत्र संख्या—६ । साइज—११×४^१/_२ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १३०१ भाद्रवा सुदी १३ । पूर्ण । बेष्टन नं० ४२५ ।

३१६. अष्टाह्निका कथा—रत्ननंदि । पत्र संख्या—४ । साइज—११^३/_४×४^३/_४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । बेष्टन नं० ७५ ।

विशेष—संस्कृत में कठिन शब्दों के अर्थ भी दिया हुआ है । प्रति प्राचीन है । श्लोक संख्या—२६ है ।

३१७. आराधनाकथाकोष—पत्र संख्या—८२ । साइज—११×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १६४५ भाद्र सुदी ८ । पूर्ण । बेष्टन नं० ३२५ ।

विशेष—इसारे पैरोजाबादपत्तने सुरवाण मथलोलिसाहि रावरे मुगमद देवा-नेवां आम्नाये साधु चौदा
..... अन्त कथाकोषअन्त लिखापित । ब्रह्म वाटम योगधत्त ।

प्रति प्राचीन एवं जीर्ण है । पत्र ३४ से ८२ तक फिर लिखाये गये हैं । अन्तिम पत्र जीर्ण तथा फटा हुआ है ।

३१८. कमलचन्द्रायणकथा—पत्र संख्या—२ । साइज—१०×४^१/_२ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । बेष्टन नं० ४२५ ।

विशेष—१५४ और १६६ वां पत्र अन्य ग्रन्थ के हैं ।

३१९. कालिकाचार्यकथानक—भाषादेवाचार्य । पत्र संख्या—८ । साइज—१०^१/_२×४^१/_२ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । बेष्टन नं० ३८५ ।

विशेष—भाषा संख्या १०० है । पत्रों पर सुन्दरी पंक्ति है ।

३२०. **आराधनाकथाकोश**—पत्र संख्या-६६ । साइज-१२ $\frac{1}{2}$ ×८ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । रचनाकाल-५ । लेखन काल-५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ८८ ।

निम्न कथाओं का संग्रह है:-

सत्यकवोद्योत कथा, अकलंक स्वामी की कथा, समंतभद्राचार्य की कथा, सनतकुमार चक्रवर्ती की कथा, संजयंत मुनि की कथा, सधुविंगल की कथा, नागदत्त मुनि की कथा, ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती की कथा, अंजन चौर की कथा, अनंतभक्ति की कथा, ज्वापन राजा की कथा रेश्मी रानी की कथा, जिनेन्द्र सक्त सेठ की कथा, वारिषेण की कथा, विष्णुकुमार कथा, ब्रजकुमार कथा, भक्तिंदर कथा, तथा जन्मस्वामी कथा । ये कुल १८ कथाएँ हैं ।

३२१. **नन्दीश्वरविधान कथा**—पत्र संख्या-४ । साइज-१० $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । रचना काल-५ । लेखन काल-५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ११६ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

३२२. **नन्दीश्वरव्रत कथा**—शुभचंद्र । पत्र संख्या-७ । साइज-११×१ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । रचना काल-५ । लेखन काल-५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४२ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

३२३. **नागकुमारपंचमी कथा**—मल्लिषेण सूरि । पत्र संख्या-२१ । साइज-१०×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । रचना काल-५ । लेखन काल-५ । पूर्ण । वेष्टन नं० २८१ ।

विशेष—४ सर्ग हैं । अंश श्लोक संख्या ४३५ प्रमाण है ।

३२४. **निशिभोजनकथा**—भारामल्ल । पत्र संख्या-१० । साइज-१२×८ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । रचना काल-५ । लेखन काल-५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ११२ ।

प्रति प्राचीन है ।

३२५. **पुण्याश्रयकथाकोष**—दौलतराम । पत्र संख्या-४१ । साइज-१३×६ इंच । भाषा-हिन्दी । पद्य । विषय-कथा । रचना काल-५ । लेखन काल सं० १७०७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६२ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

३२६. **भक्तामरस्तोत्र कथा**—पत्र संख्या-३७ । साइज-१० $\frac{1}{2}$ ×१ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । रचना काल-५ । लेखन काल-५ । अपूर्ण । वेष्टन नं० ११५ ।

३२७. **भक्तामरस्तोत्रकथा भाषा**—विनोदीलाल । पत्र संख्या-१७३ । साइज-११ $\frac{1}{2}$ ×८ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । रचना काल-सं० १७४७ भावन सदी २ । लेखन काल-सं० १८४७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६३ ।

विशेष—भानजीलाल जी ने प्रतिलिपि कराई थी। कुल ३८ कथाएँ हैं। एक प्रति और है।

३२८. मदनसंजरीकथा प्रबन्ध—पोपटशाह। पत्र संख्या—२५। साइज—१० $\frac{1}{2}$ ×८ $\frac{1}{2}$ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—कथा। रचना काल—मंगसिर सुदी १०। लेखन काल—सं० १७०६ आषाढ सुदी १०। पूर्ण। वेष्टन नं० २४३।

३२९. मुक्तावलित्रतकथा—सुशालचंद। पत्र संख्या—५। साइज—८ $\frac{1}{2}$ ×७ $\frac{1}{2}$ इंच। विषय—कथा। रचना काल—सं० १८०२। लेखन काल—X। पूर्ण। वेष्टन नं० ११६।

३३०. मेघकुमारगीत—कनककीर्ति। पत्र संख्या—२। साइज—१०×४ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—कथा। रचना काल—X। लेखन काल—X। पूर्ण। वेष्टन नं० ४४०।

विशेष—प्रति प्राचीन है—४६ पद्य हैं।

धी वीर जिगंद पसाइ, जे मेघकुमार रिषि गाइ।

ताही थागली वीनस बीजाइ, वसी संपति सगली पाइ ॥ ४६ ॥ धन धन रै ॥

जे मुनीवर मेघकुमार, जोथी चारित पालवसार।

गुगैरु श्री जीरा माणीक ससै, इस कनक भगव नीस दीस ॥

॥ इति मेघकुमार गीत संपूर्ण ॥

३३१. राजुलपचचीसी—लालचंद विनोदीलाल। पत्र संख्या—४। साइज—१० $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{1}{2}$ इंच। भाषा—हिन्दी (पद्य)। विषय—कथा। रचना काल—X। लेखन काल—सं० १७६६। पूर्ण। वेष्टन नं० १६६।

३३२. रैदव्रत कथा—देवेन्द्रकीर्ति। पत्र संख्या—४। साइज—११ $\frac{1}{2}$ ×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—कथा। रचना काल—X। लेखन काल—X। पूर्ण। वेष्टन नं० ७२।

३३३. रोहिणीव्रत कथा—भानुकीर्ति। पत्र संख्या—८। साइज—११×५ $\frac{1}{2}$ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—कथा। रचना काल—X। लेखन काल—X। पूर्ण। वेष्टन नं० ४२५।

३३४. बंकचोर कथा (धनदत्त सेठ की कथा)—नथमल। पत्र संख्या—१४। साइज—१२ $\frac{1}{2}$ ×७ $\frac{1}{2}$ इंच। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—कथा। रचना काल—सं० १७०५ आषाढ बुदी ३। लेखन काल—X। पूर्ण। वेष्टन नं० ३७।

विशेष—एक प्रति और है। चाकम् का विस्तृत वर्णन है। पद्य संख्या २६१ है।

प्रारम्भ—

—चौपाई—

प्रथम् पंच पार्श्वी सार। तिहूँ सुमरत पात्रे भवपार ॥

दूजा सारद नै भितरूँ। बुधि प्रकास कवित उचरू ॥

गुरु निमर्थ नमू जगदीस। संख्या तीस सहस चौबीस ॥

बाणी तिहूँ कहै जनसार। सुगत भग्य जिन उतरै पार ॥

गणधर मुनिवर कलं वंदना । वंक चोर की कथा मन तथा ॥
 ता सीखा पाली निज भास । ताको भयो सोलहो निवास ॥ ३ ॥
 दूजी कथा बैठ की कही । नाम धनदत्त धर्म नगरी सही ॥
 सदा व्रत पाली निज सार । ऊँच नीच को नहीं विचार ॥ ४ ॥

अन्तिम—पटली सुणली जे नर कोय ॥ कम २ तें सृक्ति ही होय ॥

सहर चाटसु सुवस वास । तिह पुर नाना भोग विलास ॥ २७७ ॥
 नवसै कूषा नव सै ठाय । ताल पीसरी कथा न जाय ॥
 नर्म बडो जगोली राव । सबै लोग देखण को माव ॥ २७८ ॥
 पेडीत माहि वणी चोकोर । नीर भरै नारी बहु ओर ॥
 चकवा चकवी केल कराहि । अधिक ताहि नहीं दुख दाय ॥ २७९ ॥
 छत्री चोतरा बैठक घणी । घर ससजद तुरका की घणी ॥
 चहुंघा रुख वृक्ष बहु आय । पंथी देखि रहे विस्माय ॥ २८० ॥
 चहुंघा ताट अधिक बजाय । पीवै संग वस्त्रा घर गाय ॥
 सहर बीचि तें कोट उत्तर । ताहि भुज्य अति वणी सुचंग ॥ २८१ ॥
 चहुंघा छार्ई मरी सुभाय । एक भीस जागी निरदाय ॥
 चहुंघा वणे अधिक बाजार । वसै वणिक करै व्यापार ॥ २८२ ॥
 कोई सोनो रूपो कमी । कोई मोती माणिक लसै ॥
 कोई बेचै टका रोक । केई बजाजी रोका ठोकि ॥ २८३ ॥
 कोई परचूना बेचै नाज । केई गुफटे मेलै साज ॥
 केई उधार दाम की गांठि । केई पयारी माडै हाटि ॥ २८४ ॥
 च्यार देव पृ जिण्डर तथा । ता मति बिन बडो अति वसा ॥
 करै महोछै पूजा सार । धावक लीया सब आचार ॥ २८५ ॥
 बार्ई जती रहण को चाव । उनही द्वार दाजे करि भाव ॥
 ओर देहुरे बैसनु तथा । धर्म करै सगला आस्था ॥ २८६ ॥
 नीरंगमादि राज ते धरे । पीण छतीसी लौला करै ॥
 कहैं चीवा चंदन महकाय । कहैं अंगरजा फल बिकसाय ॥ २८७ ॥
 नगर नायक सोभा धरे । पालु नवु रचित बोली करै ॥
 ओसो सहर ओर नही सही । दुखी अलिही दीसै नही ॥ २८८ ॥
 दाकिम सै मदारस्ता सही । ओर जोर कोड दासै नही ॥
 बावै परजा चारि न्याय । सीलवत नर काम लदाय ॥ २८९ ॥

अन सतरा सै पचीस । अषाढ़ बदी जाणो वरतीज ॥

बारज सोनवार ते जाणि । कथा संपूर्ण भई परमाथ ॥ २४० ॥

पदमी सुणप्री जे नर कोय । ते नर स्वर्ग देवता होय ॥

रत्न चूक कही लिख्यो होय । नथमल समा करो सब कोय ॥ २४१ ॥

॥ इति श्री देकछोर धनदत्त कथा संपूर्णम् ॥

विशेष—एक प्रति और है ।

३३७. ग्रन्थकथाकोष—श्रुतसागर । पत्र संख्या-८० । साइज-१२×१६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १७८४ वैशाख सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन नं० १५३ ।

विशेष—भिलाय में पार्श्वनाथ बैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी । ४ प्रतियाँ और हैं ।

३३८. ग्रन्थकथाकोष—सुशालचंद्र । पत्र संख्या-८० । साइज-१२×१६ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—कथा । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १७८७ । पूर्ण । वेष्टन नं० २० ।

विशेष—२ प्रतियाँ और हैं ।

निक ३३ कथाओं का संग्रह है—

शेखरकि कथा, दशलक्ष कथा, मुक्तावलीप्रतकथा, तपकथा, धंदनषष्ठीकथा, खोदककारणकथा, ज्येष्ठ जिनवरकथा, आकाशार्पचमीव्रतकथा, मंगलसप्तमीव्रतकथा, अक्षयनिधिकथा, मेघमालाव्रतकथा, लब्धिविधानकथा और पुष्पाजितप्रतकथा ।

३३९. शुकराज कथा (शत्रुंजयगिरि गौरव वर्णन)—माणिक्य सुन्दर । पत्र संख्या-२१ । साइज-१०×१६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४७४ ।

३४०. समव्यसनकथा—सोमकीर्ति । पत्र संख्या-६६ । साइज-११×१६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । रचना काल—सं० १६२६ । लेखन काल—सं० १७१७ चैत्र शुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन नं० १६६ ।

विशेष—बोर्ला भगवान ने सिलौर में प्रतिलिपि की थी कुल ७ अध्याय हैं । श्लोक संख्या २१६७ प्रमाण है ।

३४१. सिंहासनद्वित्रिशका—पत्र संख्या-४२ । साइज-६×१६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । रचना काल—X । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ३८६ ।

विशेष—बर्तालों कथाएँ पूर्ण हैं पर इसके बाद जो कुछ और विवरण है वह अपूर्ण है ।



विषय-व्याकरण शास्त्र

३४०. आख्यात प्रक्रिया । पत्र संख्या-२२ । साइज-१० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४१६ ।

विशेष—इलोक संख्या १४० है ।

३४१. दुर्गपदप्रबोध—श्री चतुलभवाचक हेमचन्द्राचार्य । पत्र संख्या-३६ । साइज-१० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-सं० १६६१ । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४४४ ।

विशेष—शिगानुशासन की वृत्ति है । प्रति प्राचीन है ।

३४२. धातु पाठ—बोपदेव । पत्र संख्या-१४ । साइज-१० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १८११ मंगसिर सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३०० ।

विशेष—प्रथम पत्र संख्या ४०५ है । एक प्रति और है वह संस्कृत टीका सहित है ।

३४३. पंचसन्धि । पत्र संख्या-६ । साइज-८ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४३६ ।

३४४. पंच सन्धि टीका । पत्र संख्या-२८ । साइज-८ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १७८२ ज्येष्ठ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४३६ ।

विशेष—सं० १७८२ ज्येष्ठ में नंदलाल यति ने टीका लिखी थी ।

३४५. प्रक्रियाकौमुदी—रामचन्द्राचार्य । पत्र संख्या-६१ । साइज ११ $\frac{१}{२}$ ×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४०८ ।

प्रति प्राचीन है । इलोक संख्या-२५०० है ।

३४६. प्रयोगमुख्यसार । पत्र संख्या-११ । साइज-८×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १७८८ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४८८ ।

३४७. प्राकृतव्याकरण—चंड । पत्र संख्या-२ । साइज-१०×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १८६६ कार्तिक सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० १८८ ।

३४८. प्राकृतव्याकरण । पत्र संख्या-१८ । साइज-११ $\frac{१}{२}$ ×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६ ।

३४९. शिगानुशासन—हेमचन्द्राचार्य । पत्र संख्या-४ । साइज-१० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन ४४१ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

३५०. सारस्वत वाचस्पति—वर्णमाला । पत्र संख्या-१८ । साइज-१० $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-५ । लेखन काल-सं० १७८१ चैत्र सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन नं० २६७ ।

विशेष—खंडेलबाल राष्ट्रीय हेमसिंह के पठनार्थ ग्रन्थ रचना की गई तथा वसु प्राम में प्रतिलिपि हुई थी ।

३५१. सारस्वत प्रक्रिया—अनुभूतिस्वरूपाचार्य । पत्र संख्या-१७ । साइज-११×४ $\frac{3}{4}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-५ । लेखन काल-सं० १८६४ सावन सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन नं० २६६ ।

विशेष—६ प्रतियां और हैं ।

३५२. सारस्वत प्रक्रिया—नरेन्द्रसूरि । पत्र संख्या-७४ से १३३ । साइज-१०×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-५ । लेखन काल-५ । अपूर्ण । वेष्टन नं० ४१५ ।

विशेष—केवल कर्तव्य प्रकरण है ।

३५३. सारस्वतप्रक्रिया टीका—परमहंस परित्राजकाचार्य । पत्र संख्या-५६ । साइज-१०×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-५ । लेखन काल-५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३६० ।

विशेष—द्वितीय वृत्ति तक पूर्ण है ।

३५४. सारस्वत रूपमाला—पद्मसुन्दर । पत्र संख्या-६ । साइज-१० $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-५ । लेखन काल-५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४५६ ।

विशेष—श्लोक संख्या-५२ है । पंडित आश्रमदास ने प्रतिलिपि की थी ।

३५५. सिद्धान्त चन्द्रिका (कृत्यन्त प्रकरणी)—रामचंद्राश्रम । पत्र संख्या-२१ । साइज-१० $\frac{1}{2}$ ×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-५ । लेखन काल-सं० १८८६ द्वितीय वैशाख सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३३८ ।

विशेष—जयपुर में बासीराम ने महात्मा फतेहचंद से प्रतिलिपि कराई । तृतीय वृत्ति है । एक प्रति और है लेकिन वह भी अपूर्ण है ।

३५६. सिद्धान्त चन्द्रिका वृत्ति—सदानंद । पत्र संख्या-२८४ । साइज-१० $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-५ । लेखन काल-सं० १८६१ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३६४ ।

३५७. हेमठ्याकरण—आचार्य हेमचन्द्र । पत्र संख्या-२४ । साइज-१०×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-५ । लेखन काल-५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४२१ ।

विशेष—पत्र के कुछ हिस्से में मूल दिया हुआ है तथा शेष में टीका दी हुई है । धरादि गण तक दिया हुआ है ।

विषय-कोश एवं छन्द शास्त्र

३५८. अनेकार्थ मंजरी—नन्ददास । पत्र संख्या-५ । साइज-१२×५^१/_२ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य ।
विषय-कोश । रचना काल-५ । लेखन काल-५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४२६ ।

विशेष पत्र संख्या-११४ है ।

३५९. अनेकार्थ संग्रह—हेमचंद्र सूरि । पत्र संख्या-६६ । साइज-१२^१/_२×५ इंच । भाषा-संस्कृत ।
विषय-कोश । रचना काल-५ । लेखन काल-सं० १४७७ कार्तिक सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ११५ ।

विशेष—अंशामंथ संख्या २०४ है । पत्र लोच्य है । पत्र २८ तक संस्कृत टीका भी है ।

३६०. प्रति नं० २ । पत्र संख्या-४ । साइज-१३×५ इंच । लेखन काल-सं० १४८० अषाढ । पूर्ण ।
वेष्टन नं० ३१६ ।

विशेष—३ काण्ड तक है । सागरचंद सूरि ने प्रतिलिपि की थी ।

३६१. अभिधानचिंतामणि नाममाला—आचार्य हेमचंद्र । पत्र संख्या-१२६ । साइज-१०^१/_२×४^१/_२ इंच । भाषा-संस्कृत ।
विषय-कोश । रचना काल-५ । लेखन काल-सं० १८०४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३७५ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

३६२. अमर कोष (नाम लिङ्गानुशासन)—अमरसिंह । पत्र संख्या-११२ । साइज-११^१/_२×५ इंच । भाषा-संस्कृत ।
विषय-कोष । रचना काल-५ । लेखन काल-५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३८१ ।

विशेष—द्वितीय काण्ड तक है । पत्रों के बीच २ में श्लोक हैं । एक प्रति और है उसमें तृतीय काण्ड तक है ।

३६३. प्रति नं० २ । पत्र संख्या-१८७ । साइज-१०^१/_२×४^१/_२ इंच । टीका काल-सं० १९८१ अक्टूबर सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४८२ ।

विशेष—संस्कृत में टीका भी हुई है एवं कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हुए हैं ।

३६४. धनंजय नाम माला—धनंजय । पत्र संख्या-१६ । साइज-१०×४^१/_२ इंच । भाषा-संस्कृत ।
विषय-कोश । रचना काल-५ । लेखन काल-सं० १७४७ भाद्र । पूर्ण । वेष्टन नं० ४०५ ।

श्लोक संख्या-२०० है ।

विशेष—टोक में प्रतिलिपि हुई तथा दीवराज ने संशोधन किया ।

एक प्रति और है ।

३६५. शाब्दानुशासन-वृत्ति—हेमचंद्राचार्य । पत्र संख्या-१६० । सादृज-१०१/२ इअ । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १५२४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४१४ ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १५२४ वर्षे श्री स्वतन्त्राक्षे श्री जिनचन्द्रमूर्तिविजय लब्धविशालगणि, वा० शांतिरत्नगणि शिष्य वा० भ्रमंगणि नाम पुस्तकं चिरंनष्ठात् ।

३६६. वृत्तरत्नाकर—भट्ट केदार । पत्र संख्या-७ । सादृज-११X५ इअ । भाषा-संस्कृत । विषय—छंद शास्त्र । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १०६२ चैथ सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० १६ ।

विशेष—५ प्रतियाँ और हैं जिनमें एक संस्कृत टीका सहित है ।

३६७. वृत्तरत्नाकर टीका—सोमचंद्रगण । पत्र संख्या-४७ । सादृज-१०X१ इअ । भाषा—संस्कृत । विषय—छंद शास्त्र । टीका काल-सं० १३०६ । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० २१६ ।

३६८. श्रुतबोध—कालिदास । पत्र संख्या-१ । सादृज-६X४ इअ । भाषा—संस्कृत । विषय—छंद शास्त्र । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४३३ ।

विशेष—६ फुट लम्बा एक ही पत्र है । पत्र संख्या ४३ है । इसके बाद स्वप्नोप्याय दिया हुआ है जिसके ७६ पत्र हैं । इसकी प्रतिलिपि मुखराम मोटे ने (संजेलवाल) स्वपठनार्थ सं० १०४५ मंगशिर सुदी ६ को बटेश्वर में की थी ।

विशेष—एक प्रति और है ।

विषय-नाटक

३६९. प्रबोधचन्द्रोदय नाटक—श्रीकृष्ण मिश्र । पत्र संख्या-४७ । सादृज-१०X६ इअ । भाषा—संस्कृत । विषय—नाटक । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १७८३ फाल्गुन सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३९६ ।

३७०. मदन पराजय—जिनदेव । पत्र संख्या-१० । साइज-११ $\frac{१}{२}$ ×१ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-नटक । रचनाकाल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० २४० ।

विषय-लोकविज्ञान

३७१. त्रिलोकप्रज्ञप्ति—प्रति धृष्टम । पत्र संख्या-२०२ । साइज-१२ $\frac{१}{२}$ ×१२ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-लोक विज्ञान । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १=३१ । पूर्ण । वेष्टन नं० २४१ ।

३७२. प्रति नं० २ । पत्र संख्या-२०६ । साइज-१२×६ इंच । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १३२ ।

विशेष—ग्रन्थ के साथ जो लकड़ी का पुट्टा है उस पर चौबीस तीथकटों के चित्र हैं । पुट्टा सुन्दर तथा सुनहरे हैं ।

३७३. त्रिलोकसार—नेमिचंद्राचार्य । पत्र संख्या-२६ । साइज-१२ $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-लोक विज्ञान । रचना काल-× । लेखनकाल-सं० १७६६ बैशाख सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन नं० २०० ।

विशेष—नरसिंह अग्रवाल ने प्रतिलिपि की थी ।

३७४. त्रैलोक्यसार चौपट्ट—सुमतिकीर्ति । पत्र संख्या-२३ । साइज-८×६ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-लोक विज्ञान । रचना काल-सं० १६२७ माघ सुदी १२ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १४१ ।

विशेष—१३ पत्र से धागे अजयराज कृत सामायिक समावाणी हैं । जिसका रचना काल-सं० १७६४ है ।

३७५. त्रिलोकसार सटीक-मू० कर्त्ता-नेमिचन्द्राचार्य । टीकाकार-सहस्रकीर्ति । पत्र संख्या-८८ । साइज-११×५ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा-प्राकृत-संस्कृत । विषय-लोक विज्ञान । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १७६८ माघ १० । पूर्ण । वेष्टन नं० २६ ।

विशेष—नरसिंह अग्रवाल ने प्रतिलिपि की थी ।

विषय—सुभाषित एवं नीतिशास्त्र

३७६. कामन्दकीय नीतिसार भाषा—कामन्द । पत्र संख्या—४ । साइज—१०×५ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—नीति । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४२८ ।

प्रारम्भ—अयं कामन्दकीय नीतिसार की बात लिख्यते । जाके प्रभावते सनातन मार्ग विषे प्रवर्ते । सो दंड को धारक लक्ष्मीवान राज जयवंत प्रवर्तते ॥ १ ॥ जो विष्णुशक्त नामा आचारिन बडे वंश विषे उपजे अयानक गुणनि करि बडे जे रिषीश्वर तिनके वंश में प्रथिवी त्रिवै प्रसिद्ध होती भयो ॥ २ ॥ जो अग्नि समान तेजस्वी वेद के स्नातानि में ओष्ठ अति चतुर प्यारु वेदनि की एक वेद नाहि अभ्ययन करतो हुवो ॥ ४ ॥

अन्तिम—विस्तीर्ण विषय रूप बन विषे दोडतो पीडा उपजायवेको है स्वभाव जाको औसो इन्दिय रूप हस्तो ताहि आत्मज्ञान रूप अंकुश करि बशीभूत करै ॥ २७ ॥ प्रयत्न करि आत्मा विषयनि ग्रह ॥ कामन्दकी ॥ मारशरामजी की लीख ॥

३७७. चारुव्यनीतिशास्त्र—चारुव्य । पत्र संख्या—२ से १५ तक । साइज—१० $\frac{1}{2}$ ×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—नीति । रचना काल—X । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ४३० ।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है तथा आठवें अध्याय तक है । एक प्रति और है । लेकिन वह भी अपूर्ण है ।

३७८. ज्ञानचिंतामणि—मनोहरदास । पत्र संख्या—६ । साइज—१२×८ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—सुभाषित । रचना काल—सं० १७२६ माह सुदी ७ । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ६३ ।

३७९. जैनशतक—भूधरदास । पत्र संख्या—१५ । साइज—१५×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित । रचना काल—सं० १७८३ पौष सुदी १३ । लेखन काल—सं० १८६६ मंगसिर सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० १४ ।

३८०. प्रति नं० २ । पत्र संख्या—१३ । साइज—१० $\frac{1}{2}$ ×५ इंच । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ११८ ।

विशेष—इस प्रति में रचना काल सं० १७८१ पौष सुदी १३ दिया है ।

३८१. नीति शतक—भर्तृहरि । पत्र संख्या—६ । साइज—१२×५ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—नीति । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३७३ ।

विशेष—श्लोक संख्या—१११ है । एक प्रति और है ।

३८२. नीतिसार—इन्द्रनंदि । पत्र संख्या—५ । साइज—११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—नीति । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३३० ।

विशेष—श्लोक संख्या ११३ प्रमाण है ।

३८३. शतकत्रय—भक्तृहरि । पत्र संख्या-६७ । साहज-१०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । रचना काल-× । लेखन काल—सं० १८५८ वैशाख सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३५१ ।

विशेष - पत्र ३३ तक संस्कृत टीका भी दी हुई है । नीतिशतक बैराग्य शतक एवं शृंगार शतक दिये गये हैं ।

३८४. मनराम विलास—मनराम । पत्र संख्या-१० । साहज-१२×५३ इंच । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—सुभाषित । रचना काल-× । लेखन काल—× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३६६ ।

विशेष—गोहा, सर्वैया, कवित्त आदि छंदों का प्रयोग किया गया है तथा विहारीदास ने संग्रह किया है ।

प्रारम्भ—करमादिक करिनि की हरै अरहंत नाम, सिद्ध करै काज सब सिद्ध को भजन है ।

उत्तम सुखन गुन आचरत जाकी संन, आचारज भगत बसत जाके भन है ॥

उपाध्याय ध्यान तै उपाधि सम होत, साथ परि पूरण की तुमरन है ।

पंच परमेश्वरी की नमस्कार संवराज धावै मनराम जोई पात्रै निज धन है ॥

३८५. राजनीति कवित्त—देवीदास । पत्र संख्या-२४ । साहज-६×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—नीति । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४७३ ।

विशेष—११६ कवित्त हैं एवं गुटका साहज है । पत्र १, २, ६ तथा अन्तिम बाद के लिखे हुए हैं । ताजगंज आगरे के रहने वाले थे तथा औरंगजेब के शासन काल में आगरे में ही रचना की ।

३८६. सद्भाषितावली—पन्नालाल । पत्र संख्या-१३ । साहज-१३×८ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—सुभाषित । रचना काल-× । लेखन काल—सं० १६४२ पौष सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन नं० ८४ ।

३८७. सिद्धू प्रकरण—बनारसीदास । पत्र संख्या-३७ । साहज-८×६ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—सुभाषित । रचना काल—सं० १६६१ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १३६ ।

विशेष—१८ पत्र से आगे मैया भगवतीदासजी कृत चेतन कर्म चरित्र है जो अतृप्त है ।

३८८. सुभाषितरत्न सन्दोह—अमितराति । पत्र संख्या-७२ । साहज-१२×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । रचना काल—सं० १३५० । लेखन काल—सं० १८०६ वैशाख सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन नं० २४३ ।

विशेष—मेवाड़ देश में सहाजहानाबाद में प्रतिलिपि हुई । अहमदशाह के शासन काल में लाल इन्दराज ने देवीदास के पठनार्थ प्रतिलिपि कराई ।

३८९. सुभाषित संग्रह..... । पत्र संख्या-२२ । साहज-६०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४१८ ।

श्लोक संख्या-१२१ हैं ।

३६०. सुभाषितावली—सकलकीर्ति । पत्र संख्या-२८ । साइज-१०X१ इंच । भाषा-संस्कृत ।
विषय-सुभाषित । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १७५६ । पूर्ण । वेस्टन नं० २२१ ।

विशेष—यमरसिंह व्यासवा न टोंक में प्रतिलिपि की थी ।

३६१. सुभाषितार्णव—शुभचंद्र । पत्र संख्या-६४ । साइज-११X१ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-
सुभाषित । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १७५६ । पूर्ण । वेस्टन नं० २२२ ।

विशेष—कसबा में दीपचंद्र सोनी ने प्रतिलिपि की थी । एक प्रति और है जो संवत् १०८० की लिखी हुई है ।

३६२. सुभाषितावली—धौधरी पन्नालाल । पत्र संख्या-१०४ । साइज-११X१ इंच । भाषा-
हिन्दी । विषय-सुभाषित । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेस्टन नं० ४२ ।

३६३. सूक्तिमुक्तावलि—सोमप्रभाचार्य । पत्र संख्या-४४ । साइज-१०^१/_४X२ इंच । भाषा-
संस्कृत । विषय-सुभाषित । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेस्टन नं० २४४ ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । अन्तिम पृष्ठाका में टीकाकार सोमराज वैद्य लिखा हुआ है । * प्रतियां
और हैं । जो केवल मूल मात्र हैं ।

३६४. प्रति नं० २ । पत्र संख्या-१८ । साइज-१०X४ इंच । लेखन काल-X । पूर्ण । वेस्टन नं० १४२ ।

३६५. प्रति नं० ६ । पत्र संख्या-६० । साइज-१२X६ इंच । लेखन काल-सं० १७६० । पूर्ण ।
वेस्टन नं० ३१० ।

विशेष—प्रति सटीक है । टीकाकार इर्षकीर्ति हैं ।



विषय-स्तोत्र

३६६. हृत्प्रेमदेश—पूज्यपाद । पत्र संख्या—२ । साइज—१२×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।
रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । बेष्टन नं० २०२ ।

विशेष—श्री श्रीमद्भागवत के शिष्य पं० केशव ने प्रतिलिपि की थी । प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

३६७. एकीभावस्तोत्रभाषा—भूधरदास । पत्र संख्या—= । साइज—७ ३/४×४ ३/४ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—स्तोत्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । बेष्टन नं० १२५ ।

३६८. एकीभावस्तोत्र—बादिराज । पत्र संख्या—४ । साइज—१० ३/४×४ ३/४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
स्तोत्र । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १७३३ वैशाख सुदी १ । पूर्ण । बेष्टन नं० ४८ ।

विशेष—२ प्रतियाँ थीं हैं । जिसमें एक प्रति टीका सहित है ।

३६९. कल्याणमन्दिरस्तोत्र—कुमुदचन्द्र । पत्र संख्या—२० । साइज—१०×४ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—स्तोत्र । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १६९६ । पूर्ण । बेष्टन नं० ३ ।

विशेष—संस्कृत में लिप्यन्त दिया हुआ है । तथा अन्य कर्ता का नाम सिद्धसेन विवाकर दिया हुआ है । श्रीरामदास ने प्रतिलिपि की थी । निम्न श्लोक टीका के अंत में दिया हुआ है ।

मालवास्ये महोद्देशे सागपुष्पतने ।

स्तोत्रस्यार्थो ज्ञेयो नम्यः छात्राय उत्तमर्षिणा ॥

विशेष—६ प्रतियाँ थीं हैं जो केवल मूलभाषा हैं ।

४००. कल्याणमन्दिर स्तोत्र भाषा—बनारसीदास । पत्र संख्या—३ । साइज—११ ३/४×६ इंच । भाषा—
हिन्दी । विषय—स्तोत्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । बेष्टन नं० ६०१ ।

विशेष—इसके अतिरिक्त पार्श्वनाथ स्तोत्र भी है ।

४०१. कुम्भेश्वरस्तोत्र । पत्र संख्या—१ । साइज—११ ३/४×६ ३/४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।
रचना काल—X । लेखन काल—सं० १६१४ वैशाख सुदी ३० । पूर्ण । बेष्टन नं० ६०१ ।

४०२. चैत्यवंदना । पत्र संख्या—= । साइज—७ ३/४×३ ३/४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।
रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । बेष्टन नं० ६८ ।

विशेष—इसके अतिरिक्त महावीरछक (संस्कृत) भी है ।

४०३. चौबीसजिनस्तुति—शोभन मुनि । पत्र संख्या—१० । साइज—१० $\frac{1}{2}$ ×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३४८ ।

विशेष—श्लोक संख्या ३४ है । प्रथम पत्र नहीं है प्रति प्राचीन है । इसका शासन सूत्र नाम भी है ।

४०४. चौबीसतीर्थकरस्तवन—लजित त्रिनोद । पत्र संख्या—१ । साइज—३०×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८८६ वैशाख शुद्धी १४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४२९ ।

४०५. ज्वालामालिनी स्तोत्र । पत्र संख्या—२ । साइज—१०×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४३१ ।

४०६. ज्वालामालिनी स्तोत्र । पत्र संख्या—२ । साइज—११ $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८८८ अश्वि शुद्धी ७ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६ ।

विशेष—छोटेलाल के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी ।

४०७. जिनसहस्रनाम—जिनसेनाचार्य । पत्र संख्या—२३ । साइज—११×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ११२ ।

४०८. जिनसहस्रनाम—आशाधर । पत्र संख्या—१४ । साइज—११×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३३४ ।

४०९. जिनसहस्रनाम टीका—श्रुतसागर । पत्र संख्या—१२० । साइज—१२×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन नं० २१६ ।

विशेष—कुल इसमें १००० (१२३४) पद्य हैं ।

४१०. जिनसहस्रनाम टीका—अमर कीर्ति । पत्र संख्या—८४ । साइज—११ $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० २१७ ।

प्रति प्राचीन है । मूल कर्ता जिनसेनाचार्य है । एक प्रति थी है ।

४११. जम्बूद्वी—विहारोदस । पत्र संख्या—४ । साइज—८ $\frac{1}{2}$ ×७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४८८ ।

विशेष—३६ पद्य हैं ।

४१२. दर्शन । पत्र संख्या—२ । साइज—८ $\frac{1}{2}$ ×८ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४४७ ।

४१३. दर्शनाष्टक पत्र संख्या-१। साइज-११ $\frac{१}{२}$ ×४ इअ। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० २०१।

४१४. दंडकषड्त्रिशतिका पत्र संख्या-३। साइज-१० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$ इअ। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ३६०।

४१५. देवागमस्तोत्र—आचार्य सभतभट्ट। पत्र संख्या-६। साइज-११×४ $\frac{१}{२}$ इअ। भाषा-संस्कृत। विषय-दर्शन। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ३४२।

विशेष—श्लोक संख्या-११७ प्रमाणा है।

४१६. देवप्रभारस्तोत्र—जयानंदिसूरि। पत्र संख्या-६। साइज-१० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$ इअ। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८५८। पूर्ण। वेष्टन नं० २७८।

विशेष—संस्कृत वृत्ति साहित है। सवाई जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी।

४१७. निर्वाणकारणडगाथा पत्र संख्या-२। साइज-१०×४ $\frac{१}{२}$ इअ। भाषा-माकृति। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४२६।

विशेष—एक धात धोर है।

४१८. नेमिनाथस्तोत्र—रालिपंडित। पत्र संख्या-२। साइज १०×४ $\frac{१}{२}$ इअ। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १४२।

४१९. पद्मावतीस्तोत्रकवच पत्र संख्या-२। साइज-११×४ $\frac{१}{२}$ इअ। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र एवं मंत्र शास्त्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४२६।

४२०. पंचपरमेष्ठीगुणस्तवन—पं० बालूराम। पत्र संख्या-३६। साइज-७ $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$ इअ। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४३४।

४२१. पंचमंगल—रूपचंद। पत्र संख्या-१४। साइज-७ $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$ इअ। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १२५।

४२२. पार्श्वदेशास्तरङ्गद पत्र संख्या-४। साइज-११ $\frac{१}{२}$ ×६ इअ। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० २०१।

४२३. पार्श्वनाथस्तोत्र—मुनिपद्मनंदि। पत्र संख्या-१७ से २६। साइज-१०×४ इअ। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ५।

४२४. पार्श्वनाथस्तोत्र । पत्र संख्या-१ साइज-१० ३/४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । रचना काल-५ । लेखन काल-सं० १=१४ मंगसिर सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० २०१ ।

४२५. पार्श्वनाथस्तोत्र । पत्र संख्या-१ । साइज-१० ३/४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-५ । लेखन काल-५ । पूर्ण । वेष्टन नं० २०२ ।

४२६. भगवानदास के पद—भगवानदास । पत्र संख्या-६२ । साइज-८ ३/४ इंच । भाषा-हिन्दी । पद्य । विषय-पद्य । रचना काल-५ । लेखन काल-सं० १=०३ । पूर्ण । वेष्टन नं० २०३ ।

विशेष—१४० पदों का संग्रह है । विभिन्न राग रागिनि यो में कृष्ण भक्ति के पद हैं ।

श्रीराम—हरि का नाम बिसाहों रे सतगुरु चोखा बनिज बनाथा ।

गोविंद के गुन रतन पदारथ नभा साथ ही पाया । जनम पदारथ पाइ के किनहूँ विरले बेग लगाया ।
काम क्रोध मद लोभ मोह मैं मूरख मूल भवाया । हरि हरि नाम अराधि के जिन हरि ही सी भव लाया ।
कहि भगवान हित रामराय तिमि जग मैं आनि कमाया ॥११२॥

टिप्पणी—अनेक पद के अन्त में “कहि भगवान हित रामराय” लिखा हुआ है । ६२ पत्र के अतिरिक्त अन्त में ६ पत्रों में विषय चार भिन्न २ रागिनियों की सूची दी है । इसमें कुल ११३ पद तथा ४०० श्लोकों के लिये लिखा है । गोविंदप्रसाद साह के परमार्थ रूपराम नंदीश्वर के गृहार्थ ने प्रतिलिपि की । पदों की सूची के लेखन का सम्बन्ध १८८० दिया है ।

४२७. भक्तामरस्तोत्र—मानतुंगाचार्य । पत्र संख्या-५६ । साइज-८ ३/४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-५ । लेखन काल-५ । पूर्ण । वेष्टन नं० १४३ ।

विशेष—१२ पत्र से कथाएँ भक्ति स्तोत्र है जो कि अपूर्ण है । इसी में २ कुटुम्ब पत्रों पर संस्कृत में लक्ष्मी स्तोत्र भी है ।

विशेष—२ प्रति और है ।

४२८. भक्तामर टीका । पत्र संख्या-४३ । साइज-१० ४ ३/४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-५ । लेखन काल-५ । अपूर्ण । वेष्टन नं० २०३ ।

४२९. भक्तामरस्तोत्रवृत्ति—भक्त रत्नचन्द्र सूरि । पत्र संख्या-४४ । साइज-१० ४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-सं० १६६७ आषाढ सुदी २ । लेखन काल-सं० १७२४ कार्तिक सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३४६ ।

विशेष—इन्द्रावती नगर में चन्द्रशम बैद्यालय में आचार्य कनककीर्ति के शिष्य पं० रामसक्त ने स्वयंप्रनाथ की परंपरावर्ध प्रतिलिपि की थी । प्रति भंग तथा कथाओं सहित है ।

प्रत्यक्ष परित्यात्मक श्लोक—

श्रीमद्गुरुवर्णमङ्गलमग्निसर्तपेति नामा बशिक ।
 तद्वर्णं गुणमङ्गित व्रतयुता र्थापामिति नामधा ॥
 तत्पुत्रो जिनपादपङ्कज मधुपौ श्रीरत्नचन्द्रो मुनिः ।
 तस्मै वृत्तिमिमांस्तवस्य नितरां नत्वा श्रोत्रादीन्दुकम् ॥ ॥
 सप्तषष्ठ्याकिते वर्षे शोडशाभ्येहि संवते ।
 धावाटश्वेतपक्षस्य पंचम्यां बुधवारके ॥६॥
 श्रीवापुरे महीसिन्धोस्तट भर्ता समाहिते ।
 मोक्षुर्गदुर्गसंशुक्ते श्री चन्द्रप्रमसन्ननि ॥७॥
 वर्णितः कर्मसी नाम्नः वचनात् मया ग्यारवि ।
 भक्तामरस्य सङ्कृति एतच्चन्द्रेण सुरिणा ॥८॥

४३०. भक्तामरस्तोत्र भाषा—अथचंदजी छावड़ा । पत्र संख्या—२७ । साइज—११×२ इंच । भाषा—हिन्दी भष । विषय—स्तोत्र । रचना काल—सं० १८७० कार्तिक सुदी १२ । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ७ ।

विशेष—२ प्रतियां और हैं ।

४३१. भक्तामर स्तोत्र भाषा कथा सहित—नथमल्ल । पत्र संख्या—४७ । साइज—१२×१२ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—स्तोत्र एवं कथा । रचना काल—सं० १८२६ अश्वि सुदी १० । लेखन काल—सं० १८५२ सावन सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४० ।

विशेष—यह अथ लिखवाकर ब्रह्मचारी देवकरजी को दिया गया ।

४३२. भारती स्तोत्र । पत्र संख्या—१ । साइज—१७×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० २०१ ।

४३३. भूपाल चतुर्विंशति स्तोत्र—भूपाल कवि । पत्र संख्या—३ । साइज—११×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० १६६ ।

विशेष—संस्कृत में कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हुए हैं । एक प्रति और है ।

४३४. लक्ष्मी स्तोत्र—पद्मनंदि । पत्र संख्या—१ । साइज—१०½×४½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४३ ।

४३५. लघु सप्तहन्ताम । पत्र संख्या—३ । साइज—१०×४½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ११३ ।

४३६. विचारपट्टत्रिशका स्तोत्र—धवलचन्द्र के शिष्य राजसार । पत्र संख्या-४ । साइज- $१० \times ४\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३४६ ।

विशेष—सिरि जिणहंस पुष्पीसर रजे धवलचंद्र :
सिसण राजसारेण लहिया एसा अप हिया ॥४९॥

४३७. विद्यापहार स्तोत्र—धनंजय । पत्र संख्या-३ । साइज- ११×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३४६ ।

पत्र संख्या ४० है ।

४३८. विद्यापहारस्तोत्र भाषा—अचलकीर्ति । पत्र संख्या-१६ । साइज- $१०\frac{1}{2} \times २$ । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० २०१ ।

विशेष—पत्र ५ में आगे हेमराज कृत भक्तमर स्तोत्र भाषा भी है । २ प्रतियां थीं हैं ।

४३९. विद्यापहार टीका—नागचंद्रसूरि । पत्र संख्या २६ । साइज- $१०\frac{1}{2} \times ६$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० २१० ।

विशेष—महाराज ललितकीर्ति के ५३ शिष्यों में नागचंद्र सूरि हैं ।

४४०. विनतो—अजयराज । पत्र संख्या-२ । साइज- $१० \times ४\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४२६ ।

विशेष—दूसरे पत्र पर विचार कथा भी दी हुई है पर वह अधूर्ण है । २६ पत्र तक है ।

४४१. रात्रुजय मुख मंडन स्तोत्र (युगादि देव स्तवन) । पत्र संख्या-१० । साइज- $१० \times ४\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—गुजराती । विषय—स्तोत्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० २६६ ।

विशेष—ग्रन्थ में २१ गाथाएँ हैं जिन पर गुजराती भाषा में अर्थ दिया हुआ है । अर्थ के स्थान पर "वखान" नाम दिया है ।

४४२. शान्तिनाथ स्तोत्र—कुशलवर्धन शिष्य नगार्गसि । पत्र संख्या-४ । साइज- $१० \times ४\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० २६२ ।

विशेष—पत्र संख्या ६२ है ।

आरम्भ—सकल मनोरथ पूरणी वांछित फल दातार ।

वीर जिणसर नायके जय जय जगदाधार ॥१॥

अन्तिम—ईय वीर जिणवर सगल मुखकर नयर बडली भंडनी ।

मिथुणयी भगति प्रवर युगति रोग सोम बिहंडनी ॥

तप गच्छ निमल नयन दिनयर श्री विजयसेन सूरिसरी ।

कवि कुशलवर्धन सास प भगव नगागणि संशस करो ॥२२॥

४४२. समवशरण स्तोत्र पत्र संख्या-७ । साहज-११३/४ इअ । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० २०० ।

४४३. स्तुति संग्रह—चंद्र कवि । पत्र संख्या-९ । साहज-११४/२ इअ । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तुति । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १२४ ।

विशेष—शान्तिनाथ, महावीर तथा आदिनाथ की स्तुतियाँ हैं ।

दाहा—स्तुतिक्रम में में नर चंद्र इन्द्रादिक सुरवास । चंद तणी यह वीनती दीव्यो मुक्ति निवास ॥१॥

॥ शक्ति आदिनाथजी स्तुति संग्रह ॥

४४४. स्तोत्रटीका—आशाधर । पत्र संख्या-३० । साहज-११४/४ इअ । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६६१ कार्तिक एतौ १५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३६३ ।

विशेष—रायमल्ल ने प्रतिलिपि की थी ।

४४५. स्तोत्र संग्रह पत्र संख्या-४ । साहज-११३/६ इअ । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-संग्रह । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४३ ।

निम्न लिखित स्तोत्र हैं—

नाम स्तोत्र	कर्ता	भाषा	र० का०	ले० का०	विशेष
पार्श्वनाथस्तोत्र	अगतभूषण	हिन्दी	×	×	
लक्ष्मीस्तोत्र	धननंदि	संस्कृत	×	×	
पार्श्वनाथस्तोत्र	×	"	×	×	
कलिकुंड पार्श्वनाथस्तोत्र	×	"	×	×	
पार्श्वनाथस्तोत्र	×	"	×	×	संज्ञा अद्वित
चिन्तामणि पार्श्वनाथस्तोत्र	×	"	×	×	
पार्श्वनाथस्तोत्र	राजसेन	"	×	×	
पार्श्वनाथस्तोत्र	पानतराय	हिन्दी	×	×	

४४६. सिद्धिप्रियस्तोत्र—देवनंदि । पत्र संख्या-५ । साहज-७३/५ इअ । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १३७ ।

विशेष—एक प्रति श्रीर है ।

विषय—ज्योतिष एवं निमित्तज्ञानशास्त्र

४४८. अरिष्टाध्याय—पत्र संख्या-१० । साइज-१० $\frac{1}{2}$ ×५ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-ज्योतिष ।
रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८६६ मंगसिर सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३३१ ।

विशेष—कुल २०३ गाथाएँ हैं । अन्त में ८ पद्य में जाया पुरुष लक्षण है । पं० श्रीचंद्र ने प्रतिलिपि की थी ।

४४९. क्षीरार्णव—विश्वकर्मा । पत्र संख्या-१८ । साइज-१२×५ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-
ज्योतिष (शकुन शास्त्र) । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ३७४ ।

४५०. चमत्कारचिंतामणि—नारायण । पत्र संख्या-७ । साइज-१० $\frac{1}{2}$ ×५ इंच । भाषा-संस्कृत ।
विषय-ज्योतिष । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८६६ ज्येष्ठ सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६१ ।

विशेष—सवाई जयपुर में महाराजा जगतसिंह के शासन काल में प्रतिलिपि हुई थी ।

४५१. ज्योतिषरत्नमाला—श्रीपति भट्ट । पत्र संख्या-१५ । साइज-१०×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-संस्कृत ।
विषय-ज्योतिष । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ४६४ ।

४५२. नीलकंठज्योतिष—नीलकंठ । पत्र संख्या-६६ । साइज-११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-
ज्योतिष । रचना काल-शक सं० १५०१ आसोज सुदी ६ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६७ ।

विशेष—नीलकंठ काशी के रहने वाले थे ।

४५३. पाशाकेवली—पत्र संख्या-६ । साइज-११ $\frac{1}{2}$ ×५ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष ।
रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४०० ।

श्लोक संख्या ४६ है । पाशा फेंक कर उसके फल निकालने की विधि दी हुई है ।

४५४. भङ्गतीविचार—सारस्वत शर्मा । पत्र संख्या-१४ । साइज-११ $\frac{1}{2}$ ×५ इंच । भाषा-हिन्दी
पद्य । विषय-ज्योतिष । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६८ ।

विशेष—प्रत्येक नक्षत्र तथा तिथियों में भेष की गर्जना को देखकर वर्ष फल जानने की विधि दी हुई है ।
कुल ३१६ पद्य हैं ।

४५५. शोघबोध—काशीनाथ । पत्र संख्या-३४ । साइज-१०×६ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-
ज्योतिष । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८६६ वैशाख सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६६ ।

विशेष—चतुर्थ प्रकरण तक है । श्लोक संख्या-७७ है । उदयचन्द्र ने स्वपठनार्थ लिपि की थी । मुद्रका साइज है ।

४५६. षट्पंचासिका मालाबोध—भट्टोत्पल । पत्र संख्या—१६ । साइज—१०×४ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १६१० वैशाख सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६३ ।

विशेष—मुनि नोरनधीर ने भंदासा ग्राम में प्रतिलिपि की थी । यह ग्रंथ कपूर विजय का था । संस्कृत मूल के साथ गुजराती भाषा में गद्य टीका दी हुई है ।

प्रारम्भ—प्रणिपत्य रवि मूर्द्धना वराहमिहिरात्मजेन सततशः ।

प्रश्नो कृतार्थं गहनापराधमुद्दिश्य पृथु यशसा ॥१॥

टीका—प्रणिपत्य कहीइ नमस्कार करी नइ सूर्य प्रति मूर्द्धा मस्तकि करी वराहमिहरज पंडित तेह आश्रमज कहीइ पुत्र पृथुयत्ता एह वं नामि प्रश्न नइ विषइ प्रश्न तीविया कृता कहीइ की थी ।

४५७. संक्रान्ति तथा ग्रहातिचारफल—पत्र संख्या—१८ से ४२ तक । साइज—८×६ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १७७३ माघ सुदी ४ । अपूर्ण । वेष्टन नं० ४७० ।

विशेष—व्यास दयाराम ने प्रतिलिपि की थी ।

विषय—आयुर्वेद शास्त्र

४५८. अंजनशास्त्र—अग्निवेश । पत्र संख्या—१३ । साइज—११ $\frac{1}{2}$ ×११ $\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १७१४ आश्विन सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४५१ ।

विशेष—श्लोक संख्या २३४ है । नेत्र संबंधी रोगों का ध्यान है । मुस्तान नगर में रामकृष्ण ने प्रतिलिपि की थी ।

४५९. अष्टांगहृदयसंहिता—वाग्भट्ट । पत्र संख्या—६१ । साइज—११ $\frac{1}{2}$ ×११ $\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ६५० ।

विशेष—सूत्र मात्र है । जयसल ने प्रतिलिपि की थी ।

४६०. कालज्ञान—पत्र संख्या—१६ । साइज—१०×११ $\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८२७ पौष सुदी १५ । वेष्टन नं० ४५८ ।

विशेष—श्लोक संख्या—४०० है । सहजराम ने चित्रकोट में अन्नपुराण जी के पास प्रतिलिपि की थी ।

४६१. त्रिशतिकाटीका—पत्र संख्या—२२ । साइज—११ $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४५८ ।

४६२. योगशत—अमृतप्रभसूरि । पत्र संख्या—१६ । साइज—१० $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८५५ आषाढ शुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० २२ ।

विशेष—संपतराम झाबडा ने प्रतिलिपि की थी ।

अन्तिम पुष्पिका—इति श्री अमृतप्रभ सूरि विरचित योगशत । सपूर्ण ॥

सं० १=१९११ का बौद्ध शास्त्रोक्त रवर्तमाने मरुतानामाशुभमासे द्वितियआवणमासे शुभे शुक्लपक्षे तिथौ षष्ठ्या भृगवासरे लिखितं संपतराम आवक गोत्र झाबडा निज पठनार्थ ।

४६३. रसरत्नसमुच्चय—पत्र संख्या—१३२ । साइज—११ $\frac{३}{४}$ ×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८९२ चैत्र सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४५६ ।

विशेष—गुलाबखंद झाबडा ने जयपुर में भवानीराम सिवारी की प्रति से लिपि की थी ।

४६४. रससार—पत्र संख्या—८ । साइज—१०×८ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १७३६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४५५ ।

विशेष—

प्रारम्भ—श्री गौडीपार्श्वनाथाय नमः पंडित श्री ५ भावनिधानमणि सदागुरुभ्यः नमः ।

अन्त—इति श्री रससार ग्रंथ निर्विशम् अनभूतिसंग्रीहतम् बहुशास्त्रसम्मत सम्पूर्ण ।

४६५. रोगपरीक्षा—पत्र संख्या—७ । साइज—१२×११ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—हिन्दी संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । रचना काल—X । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ४५७ ।

४६६. वैद्यजीवन—लोलिम्बराज । पत्र संख्या—२६ । साइज—१२×११ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८९३ आसोज शुदी १ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४५३ ।

विशेष—श्लोकों के ऊपर टीका की हुई है ।

४६७. सर्वज्वरसमुच्चयदर्पण—पत्र संख्या—३६ । साइज—१२×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४५२ ।



विषय—गणित शास्त्र

४६८. पटत्रिशिका—महावीराचार्य । पत्र संख्या—४५ । साइज—११×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—गणित । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १६६५ आसोज सुदी = । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६५ ।

विशेष—संवत् १६६५ वर्षे आसोज सुदी = गुरौ श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्याम्बये
म० श्री पद्मनंदिदेवा तत्पट्टे म० श्री सकलकीर्तिदेवा । तत्पट्टे म० शुभचन्द्र देवा तत्पट्टे म० सुमतिकीर्तिदेवा तत्पट्टे म०
श्रीगुणकीर्तिदेवा तत्पट्टे वादिभूषणदेवास्तदगुरुभ्राता व० श्री भीमा तत् शिष्य व० श्री मेघराजं तत् शिष्य व० केशव
पठनार्थ । व० नेमिदास की पुस्तक है ।

४६९. प्रति नं० २ । पत्र संख्या—१८ । साइज—११×४ $\frac{1}{2}$ इंच । लेखन काल—१६३२ ज्येष्ठ सुदी ६ ।
पूर्ण । वेष्टन नं० ४६६ ।

विशेष—प्रति पर बचीसी टीका भी लिखी है ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है:—

संवत् १६३२ वर्षे ज्येष्ठमासे शुक्लपक्षे नवम्यां तिथौ शुभवासरे इत्यादिप्रकारे शिष्यभार्याचार्यैः गणिते श्री मूलसंघे
सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्याम्बये म० श्री पद्मनंदिदेवा तत्पट्टानुसरिण म० शुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे श्री
सुमतिकीर्तिदेवा तत्शिष्य व० श्री सुमतिदास लिखायितं शास्त्रं । महारक श्री गुणकीर्ति शिष्य श्रीगुनिश्रुतकीर्ति पुस्तकं ।

विषय—रस एवं अलंकार शास्त्र

४७०. इस्कचिमन—नागरीदास । पत्र संख्या—३ । साइज—११ $\frac{1}{2}$ ×४ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य ।
विषय—भृंगार रस । रचना काल—X । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ४६८ ।

प्रारम्भ—इस्क उसी की भलक हैं उयौ सूरज की भूप ।

जहाँ इस्क ताहीं आपहं कादर नागर रूप ॥१॥

कंहु कीया नहि इस्क का इस्तमाल संवार ।
सो साहिब भूँ इस्क हैं करि कथा सके गंवार ॥२॥

अन्तिम—जिस् जदम जारी जहाँ नित लोह का कीच ।
नागर आसिक लुट रहे इस्क भिन्न के बीच ॥४४॥
चलै तेज नागर इफ है इस्क तेज की धर ।
और कटै नहीं वार सौ कट्टै करै रिभवार ॥४५॥

४७१. कविकुलकंठाभरण—दूलह । पद्य संख्या—११ । आइज—६५० ३ इश्व । भाषा—हिन्दी । विषय—
अलंकार शास्त्र । रचना काल—X । लेखन काळ—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४७२ ।

प्रारम्भ—पारवती शिव चरन में कवि दूलह करि प्रीति ।
धीरे कम कम तें कहे अलंकार की रीति ॥१॥
गरन वरन लखन लखित रचिरी वयो करतार ।
बिन पूरन नहि भूई कविता वनिता कार ॥२॥
दीप मत सत कविन के अरथा सै लधु तरन ।
कवि दूलह याते कियो कविकुलकंठामरन ॥३॥
जो यह कंठाभरण को कंठ करै सुल पाई ।
समासध्य सोमा लहै अलंकृती ठहराई ॥४॥
चंद्रादिक उपमान है वदनादिक उपमेय ।
तुल्य अरथ वाचक लहै धर्म एक सो लेख ॥५॥

मध्य—अप्रस्तुत वरन प्रससा लिए प्रस्तुत की ।
पंचधा अप्रस्तुत प्रससा होति चाहे तैं ॥
पच्छिन में याही तैं बडो है राजहंस ।
एक सदा नीर छीर के विवेक अवगाह तैं ॥
प्रस्तुत में प्रस्तुत को घोटन जहाई होइ
प्रस्तुत अंकुर तहां वरनौ उछाह तैं ।
झूली रस रली मली मालती समीप तैं
अली कनैर कली कोकले मुदेत काह तैं ॥३२॥

अन्तिम—सूरता उदारता की अद्भुत वरनन ।
निधारुप अति उक्ति भावे सब लोग है ॥
दानि हूँ कैं जाचक हूवे रंक भरे तेज ॥

सूखे सिंधु तेरी रिपु रानी करि सोय है ॥
 नाम जोय और अर्थ आपिष्ट निरुक्ति ।
 साचे गुपाल मए जो स्थो राधे सो वियोगु है ।
 प्रगट निषेध को अनुकमन प्रतिषेध ।
 गिर महिबो नयो तो साधिन को भोगु है ॥

४७२ चैनबिलास—नागरीदास । पद्य सख्या—६ । सङ्ग—५०३×५ इत्य । भाषा—हिन्दी पद्य ।
 विषय—शृंगार । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । प्रेस नं० ३७७ ।

विरोध—प्रारम्भ के ४ पद्यों में स्नेहसंग्राम अतापतेज कृत दिया है जिसके २५ पद्य हैं । इसे सं० १=३४ में छोटेलाल टोखिया ने ३ आने में खरीदा था ॥१॥

स्नेहसंग्राम—प्रारम्भ—कुंडलियाः—

मों है बाकी बाकसी लखी कुंज की ओट ।
 समर सस्त्र विछुवा लग्यो लालन लोटहि पोट ॥
 लालन लोटहि पोट चोट जब उर में लागी ।
 कियो द्विओ दुखार वीर प्राप्य में लागी ।
 बजनिधि बाकेवीर खेत में खड़े पगोहे ।
 तहां घाव पर घाव करत राधे की मोहे ॥१॥

अन्तिम—नेही बृजनिधि राधिका दीउ समर सधीर
 हेत खेत छाडत तही आके बाके वीर ॥
 आके बाके वीर इत्थ वत्थ न मरि छुट्टे ।
 दोऊ करि करि दाव घाव लिन हूं नहि छुट्टे ॥
 यह सनेह संग्राम सुनत चित होत बिदेही ।
 प्रताप तेज की बात जानि है सुधर सनेही ॥२॥

चैनबिलास—प्रारम्भः—

अहे बावरी वसुरिया ते तप कीनों कौन ।
 अधर सुधारस तैं विभौ हम तरफत बिच मोन ॥१॥

अन्तिम - मुरली सुनित में मई आसू दगनि बिसाल ।
 मुख आवै सोही कहे प्रेम बिवस बज वाल ॥२॥
 नागर हरहि पलाग की दाव धरी दवाय ।
 अंग राम वंशी लपट्यो ही चिलखी नभ काय ॥३॥

इति श्री नागरीदास कृत चैनबिलास संपूर्ण ।

४७३. रसिकप्रिया—केशवदास । पत्र संख्या-१६ । साइज-१२ $\frac{1}{2}$ ×१२ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य ।
विषय-शृंगार । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १७३३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३६८ ।

विशेष—पद्य संख्या-१२४ है । मिश्र थामानेरी बाले ने भसवा में प्रतिलिपि की थी । स्वामी गोविंददास की पोथी से प्रतिलिपि हुई थी । सं० १८६८ भाद्र सुदी ६ को छोटेलाल ठोलिया मारोठ बाले ने सवाई जयपुर में १॥) रु० निछरावलि देकर यह प्रति खरीदी थी ।

४७४. शृंगारतिलक—कालिदास । पत्र संख्या-४ । साइज-१०×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-
शृंगार । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४०६ ।

विशेष—२३ पद्य हैं ।

४७५. शृंगारपञ्चवीसी—छविनाथ । पत्र संख्या-९ । साइज-१० $\frac{1}{2}$ ×४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-
शृंगार । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४७४ ।

प्रारम्भ—कोकिल न हो हिये मर्तग महा मस्तक कै ।

बात मानु मंथ की बताई मली वस्त है ॥

पूछै न पलाह लख गैर बात फैलि गये ।

जग चहुं धा रखिवे को बड़ी दस्त है ॥

मेरी समझाई हिल मिल प्यारी पीतम सों ।

कानि काम भूपति की मान वो प्रस्त है ॥

कहै छविनाथ आज बकसीष संत देखि ।

मान गड परत करिवे की करी कस्त है ॥१॥

अन्तिम—छाँटि मकरंद कमलन के मरंद मई पाइ कै ।

सुगंध जाकी हस्त न टारै है ॥

खंजन चकोर मृग मीन सेदखत जाहि ।

चौकत से अहाँ तहां छपत निचारै है ॥

कहै छविनाथ छवि अंगन की देखि ।

जासों हारि गई तिलोत्तमा जाने जग बारे है ॥

प्यारे नंद नंदन तिहारे मुख चंद पर ।

बारि बारि बारे बहि नैनन के तारे है ॥२६॥

बोधा—माधव नृप की रीझ को कवि छविनाथ विसल ।

कौन्हे रस शृंगार के कवित्त पञ्चीस रसाल ॥२६॥

इति श्री मन्महाराजाधिराज श्री भाधवेश प्रसन्नता व्यवस्थापक गोविन्ददासात्मज कवि अविनाश विरचिता
शृंगारपञ्चीसी सोमरी ॥ विजय नाम संवत्सरे दक्षिणायणे हेमन्त ऋतौ पौषमासे शुक्लपक्षे द्वितीया शुक्लपक्षे लिखितमिदं
पुस्तकम् ।

महाराजा साधवसिंह के प्रसन्न करने को गोविन्ददास के पुत्र अविनाश ने रचना की थी ।

४७६. हृदयालोकलोचन—पत्र संख्या-१६ । साइज-१०×४ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-अलंकार ।
रचना काल-X । लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ४७८ ।

स्फुट-रचनायें

४७७. अकलनामा—पत्र संख्या ३ । साइज-११×४ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-स्फुट ।
रचना काल-X । लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ४७९ ।

४७८. अक्षरवत्तीसी—मुनि महिसिंह । पत्र संख्या-२ । साइज-९ $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य ।
विषय-स्फुट । रचना काल-सं० १७२५ । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १६६ ।

विशेष अन्तिम पद्य—

सतरइसई पञ्चीस संवत् कीयो बखान ।

उदयपुर उद्यम कीयो मुनि महसंहि जाण ॥

४७९. ज्ञानार्णव तत्वप्रकरण टीका—पत्र संख्या-१० । साइज-१२ $\frac{1}{2}$ ×९ $\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी ।
विषय-योग । रचना काल-X । लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ३१२ ।

४८०. गोरसविधि—पत्र संख्या-४ । साइज-८ $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । रचना
काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ७१ ।

४८१. गोत्रवर्णन—पत्र संख्या-१० । साइज-९×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-इतिहास ।
रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १८४ ।

विशेष—गोत्रों के नाम दिये हुये हैं ।

४८२. चौरासी गोत्र—पत्र संख्या—१ । साइज—२१ $\frac{1}{2}$ ×१० इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—इतिहास ।
रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८६२ । पूर्ण । वेष्टन नं० १८४ ।

विशेष—खण्डेलवालों के चौरासी गोत्रों के नाम हैं ।

४८३. चौरासी गोत्रोत्पत्ति वर्णन—नन्दनन्द । पत्र संख्या—१२ । साइज—६×३ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—
हिन्दी पद्य विषय—इतिहास । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८८६ । पूर्ण । वेष्टन नं० १८४ ।

विशेष—पद्य संख्या—२११ है । खण्डेलवालों के ८४ गोत्रों की उत्पत्ति का वर्णन है ।

प्रारम्भ दोहा—श्री मुगादि रिसमादि गुण, सरण आय गुण गाय ।

आवक बल सुप्रथ रवि अतुल सु संपति धाय ॥१॥

वैश्य वरण मैं उच्य पद, अर्म दया कौ पाभि ।

अय कल्याण आवक प्रगट, स्ये गोत्र कुल माम ॥२॥

चंद—आवक अत तीर्थ कर सेय सुख्यारहि बर्ष सु पालत है ।

च्यार ही वर्ण सुकर्म किया तब मुक्ति गया सु भालत है ॥

श्रीवरवर्द्ध सु मान्य सु स्वामी सु मुक्ति गया सुम तालत है ।

फेर सुवर्ष छह सतीयासिंह बा तब मुनि प्रगटासत है ।

चौपाई—अपराजित मुनि नाम सुस्वामी । धान सीधाडा मन्न कहामी ॥

अपराजित मुनि तप सु प्रभाक । जिणसेनाचार्य सु भये ताक ॥

श्री जिणसैनचार्य तब होये । संबत येक साल मध्य जोये ॥

जिणसैनचार्य सु मध्य सारा । छह सात मुनि, कासु सिधारा ॥

प्रभु पदम पन्न ध्यान तहां धर्ता । श्री जिण जोग रटण मुनि कर्ता ॥

किर अक्सर इक असहु आया । भाम खंडेसा बन मधि थाया ॥

मुनिहुँ पाच सह पंक्तावलि तह । भूत भवविष बर्त ज्ञान लह ॥

मूनी सकल मुनि मुनि की बानी । हैगौ यह उपसर्ग पिछानी ॥

होनहार उपसर्ग अठही । होनहार नहि मिटै कठही ॥

भावधान मुनि ध्याम सुहाया । जोग सु ध्यान समर्थ सु जूवा ॥

भाम लगै चतुरासि खंडेलै । ताहां इक विमल मरी उपजेलै ॥

ताहां नरनारी बहुत अति होये । ताहां जपति चौता उपजोये ॥

तबै जपति सब वीष दूखाये । विमल मिटै सो करो दुजोये ॥

तब इक वीघ्र कही सुधि राख्ये । नरहि मेध की जल कहाये ॥
 तब उह जपति वाक्य सत्य कीन्हो । नरहि मेध सायत रचि दीन्हो ॥
 नर सब चौरासी के आप । बधो विघ्न ताहा बहोत कहाये ॥
 दुख्य कहि जपति मनुष सत चाहै । मिटै विघ्न यह होन कराहै ॥
 ताहा मुनी तप करै सु त्याहुं । पकडि मंगाय होन किये व्याहुं ॥
 हाहाकार बोहोत तहां होयो । जपति दुष्टतै काहा कर धोयो ॥
 तब वाहा मुनिराज सब आये । जैनसैन आचार्य ताहाये ॥
 बडा बडा सब मुनि का स्वामी । जोग ध्यान श्री अंतर्यामी ॥
 नगर सुकल सध्यान लगायो । चकोरुरी सु जाप जजायो ॥
 बहुरी गुहो जिन थापन कीनो । शक्ति मई जप ग्यान लपीनो ॥
 तब आय जप बंदन कीनी । जमा करो अपराध मुनीनी ॥
 जपति कहै मुनिराज दयालं । विघ्न मिटै सो करो कृपाल ॥
 जप सु कही मुनी सर बानी । लग्यो पाप मानुष को बानी ॥
 स्व आत्म वक्त नंदित राजा । परचो पाप मुनि के छु समाजा ॥
 कही भूप मम अथ मेरो । तुम पारस्य मुनिराज सु मेरो ॥
 कही मुनि मुनि हे जप राजा । श्री जिणधर्म सग्य तुव आज्ञा ॥
 दया रूप जिण धर्म प्रकासा । मिटे पाप बुधि निर्मल मासा ॥
 आवक धर्म जपति मुनि लोन्हो । मीटे पाप निर्मल अंग तीन्हो ॥
 नगर खंडेल गांव बयासी । बज्या छा बज्या त्या बासी ॥
 दय सुनार बज्या छा त्याही । कही भूप ये दोउ व्याही ॥
 दोउ कैसु दोहाडी न्यारी । आवक धर्म मूल सुखकारी ॥
 इक कही आमणी देवी । दूजा कस्तु मोहणी तेवी ॥
 चौरासी सुगोत्र आवक का । नीकै रचौ भली बुधि सुखका ॥
 गोत्र वंस अरु नाम की हाडी । जिणसु धर्म तर नीकी वाडी ॥

अन्तिम—संवत् १८ सह गिनो अम्बुजीवासी साल ।

चैत कम्ब तेरसि शुभ सुम प्रथ पूर्णाल ॥ १०८ ॥

मन वंछित पठियो सुनै कुल आवक गुणसार ।

नंद नंद देदत सुख, न देता तिर भार ॥ ११० ॥

इति श्री प्रथ आवक गोत्र गुण सार नंद नंद रचिते संपूर्ण । सुमः ॥

लोखी गणेश लाल कवी स्वयं कृत । लिखायतं राख्य श्री चंपाराम का नंद चिरंजीव ॥ पुत्र पौत्र कुल वृद्धि
सुख संपत्ति फल प्राप्ति मत्वेव वाक्यं ॥ १११ ॥

४८४. जैनमार्तण्डपुराण—भ० महेन्द्रभूषण । पत्र संख्या—२०२ । साइज—१२×६ इंच । भाषा—
संस्कृत । विषय—सिद्धान्त एवं आचार । रचना काल—५ । लेखन काल—सं० १८५३ सावन बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन नं० १६७ ।

विशेष—म० महेन्द्रभूषण ने प्रतिलिपि कराई थी । ग्रन्थ का दूसरा नाम कर्म विपाक चरित्र भी है ।

प्रारम्भः—अर्खकात्मप्रज्ञानलज्जनितः तीव्रतिशयितञ्जलः ।

अत्रालावलीनिचयः परिदग्धाखिलमलः ॥

महासिद्धः सिद्धैः कृतचरणपंकैरनुति ।

महावीरस्वामी जयति जगतां नाथ उदतः ॥१॥

अन्तिमस्तीर्थकरो महात्मा महाशयः शीलमहाबुराशिः ।

नमोस्तु तस्मै जगदीश्वराय श्रीमन्महावीरजिनेश्वराय ॥२॥

अन्तिम पुष्पिका—इति श्रीमज्जैनमार्तण्डमहापुराणे श्रीमद्भट्टारक जिनोद्भूषण पट्टाभरण श्री भट्टारक महेन्द्रभूषण
इतिय नाम कर्मविपाक चरित्र कृते चित्रागद्यि भोक्तृप्राप्तवर्णनो नवमोऽधिकार समाप्तोऽयं ग्रंथः ॥

४८५. नंदवत्सीसी—हेमचिमल सूरि । पत्र संख्या—४ । साइज—१०×४ इंच । भाषा—हिन्दी ।
रचना काल—सं० १६६० । लेखन काल—सं० १६..... । पूर्ण । वेष्टन नं० ३०४ ।

प्रारम्भ—गाथा—

आगमवेदपुराणमग्ने जंजकवति कवीयथा तं शारद तुह पसायत ।

दूहा—पहिलउ प्रथमउ सरसती, जगजति लील विलास ।

श्री जिणवर शंकर नमु मीशु बुद्धि पयास ॥१॥

आपीय अविरल बुद्धि धण जन मन रंजन जेह ।

नंद वत्सीसी जे सुणउ चरीयर चंपुरि तेह ॥२॥

नयरागर अहि ठाय जे तेह तणा बोलेस ।

नंद वत्सीसी शुपई एहज नामठ व्योस ॥

चौपई—पुर पाडलीय नगर अभिराम । पुहवि प्रगटउ जेह तु नाम ॥

वरण वर्य बसि तहां लोक । जाणस जाण तणा तिहां योक ॥

सजल सरीवरनि वन खंड । राजा लोक न लेवि दंड ॥

गढ मढ मंदिर मैडी पोलि । थुरासी चहुंठा नारा कलि ॥

अन्तिम—हीयडि अति ऊमाहु करी । नंदरायतु बोल्यु करी ॥

सुण विनोद कथा चुपई । नंद बत्तीसी चुपई ॥५१॥

तप गच्छ नाथक एह मुग्धिद । जय श्री हेम किमल सूरंद ॥

ज्ञान सील पंडित सुविचार । तास सिस्य कहि येह विचार ॥

संवत १५ साठा मस्कार । चैत छुदि तेरसि वार ॥

जे नर विदुर विसेष सुणि । सुनिवर कुल संघ भणि ॥

मयता दुपता खरी दुधि दुधि उगव राज छी सिद्धि ॥

वयुधि फलीह बंझित सदा नितु नवर संपदा ॥१५४॥

॥ इति विनोदे नंद बत्तीसी चुपई समाप्त ॥

संस्कृत १६ श्रीमत् काष्ठासंघे नंदीतट्टगच्छे विद्यागणे भ० रामसेनान्वये तदाम्बाये भ० उदयसेन तत्पट्टे भ० श्री विभुवनकीर्ति तत्पट्टाभरणे द्वादिगजकेसरी उभयभाषावकवर्ति भ० श्री स्तम्भूषण नरसिंह पुरा ज्ञातीय सांपदीया गोत्रे सा० योगा भार्या विनादे सूत ब्रह्म श्री बळराज तत्सिष्य भ० श्री संगलदास ।

४८६. दशस्थानचौबीसी—द्यानतराय । पत्र संख्या-७ । साइज-८×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-हिन्दी । रचना काल-५ । लेखन काल-सं० १९४४ । पूर्ण । बेष्टन नं० १२५ ।

विशेष—चौबीस तीर्थंकरों के नाम, माता पिता के नाम, जंचाई, आशु आदि १०, बातों का वर्णन है ।

मीठालाल शाह पावदा वाले ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

४८७. समयसार कलशा—अमृतचंद्र । पत्र संख्या-१४ । साइज-११ $\frac{1}{2}$ ×५ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । रचना काल-५ । लेखन काल-५ । पूर्ण । बेष्टन नं० २८८ ।

४८८. पद्मनन्दिपंचविंशतिका—पद्मनन्दि । पत्र संख्या-५६ । साइज-११ $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । रचना काल-५ । लेखन काल-५ । अपूर्ण । बेष्टन नं० १ ।

विशेष—१०५ से आगे के पत्र नहीं हैं । २. प्रतियाँ थौर हैं ।

४८९. पंचदशशरीरवर्णन - पत्र संख्या-१ । साइज-११ $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्फुट । रचना काल-५ । लेखन काल-५ । पूर्ण । बेष्टन नं० ७५ ।

४९०. प्रतिक्रमण सूत्र..... । पत्र संख्या-४ । साइज-१०×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । रचना काल-५ । लेखन काल-५ । पूर्ण । बेष्टन नं० ४१० ।

४९१. प्रशस्तिका—पत्र संख्या-१६ । साइज-८×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विविध । रचना काल-५ । लेखन काल-५ । पूर्ण । बेष्टन नं० ४२३ ।

४६२. फुटकर गाथा—पत्र संख्या-२ । साइज-११×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४२३ ।

४६३. बारहव्रतोद्यापन (द्वादस व्रत विधासि)—पत्र संख्या-१ । साइज-१० $\frac{1}{2}$ ×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ८७ ।

४६४. बारहखड़ी—सूरत । पत्र संख्या-१६ । साइज-७ $\frac{1}{2}$ ×२ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—समाहित रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० २२६ ।

४६५. भावनावत्तोसी—अभिहितगति । पत्र संख्या-३ । साइज-१० $\frac{1}{2}$ ×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—चित्तन । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३६१ ।

विशेष—पत्र संख्या ३३ है ।

४६६. मानवर्णन—पत्र संख्या-५ । साइज-१० $\frac{1}{2}$ ×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्फुट । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० २०२ ।

४६७. मालवकीसी—विनोदीलाल । पत्र संख्या-४ । साइज-६ $\frac{1}{2}$ ×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १९०४ पौष सुदी ११ । अपूर्ण । वेष्टन नं० १८४ ।

४६८. सास बहु का भगडा—देवाग्रह । पत्र संख्या-१ । साइज-११×१ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—समाज शास्त्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४३८ ।

विशेष—देवाग्रह यो देखि समासो दाल वरगई सार । मात पिता की सेवा कीज्यो कुलवंता नर नारी ॥१७॥ साँची बात कहूँ छू जी ॥

४७०. लीलावती—पत्र संख्या-८ । साइज-१० $\frac{1}{2}$ ×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—गणित । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६२ ।

विशेष—संकमण सूत्र तक दिया हुआ है ।

४७१. स्नानविधि—पत्र संख्या-४४ । साइज-८ $\frac{1}{2}$ ×३ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—प्राकृत संस्कृत । विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ६४ ।

प्रति प्राचीन है ।

४७२. समस्तकर्मसंन्यास भावना—पत्र संख्या-७ । साइज-१० $\frac{1}{2}$ ×१ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३४६ ।

श्लोक संख्या-१३३ है ।

५०३. स्तवन—पत्र संख्या-१ । साक्ष-१०^१/_२×११^३/_४ इञ्च । भाषा-फारसी । लिपि-देवनागरी । विषय-स्तवन । रचना काल-५ । लेखन काल-५ । पूर्ण । वेष्टन नं० १४७ ।

विशेष—अदालत में मुकदमा पेश होने का पूरा रूपक है । जिस प्रकार अदालत में अर्ज की जाती है ठीक उसी तरह भगवान से प्रार्थना की गई है ।

गुटके एवं संग्रह ग्रन्थ

५०४. गुटका नं० १—पत्र संख्या-२७५ । साक्ष-११×११ इञ्च । भाषा-हिन्दी संस्कृत । लेखन काल-सं० १०५३ । पूर्ण ।

मुख्य रूप से निम्न पाठों का संग्रह है—

(१) अत विधान वासों—संगही दौलतराम । पत्र संख्या-१ से २३ । भाषा-हिन्दी । रचना काल-सं० १७६७ आसोज सुदी १० । लेखन काल-सं० १०३८ आसोज सुदी ३ । पूर्ण ।

प्राश्न—प्रथम सुमिरे स्वामी वृषभ जिनंद, आदि तीर्थंकर सुख के जो वृंद ।

तो नमो तिर्थंकर बीस हैं, नमो सनमति सदा सिद्ध सुखधाम ।

नमो परमेष्ठी जी पत्र पद, ता सुमिरे होय सुख अभिराम ।

तो वरत करी भवि जैन का ॥ १ ॥

रस भोजनी—अहो तप रस भोजनी मास वैशाख, एकल तीजनों जी करि अमिलाष ।

तो घत चौईस अति निर्मला, तीन रस भोजनी जल मन माय ॥

बहुरी जल लेन संख्या नही, ईसु चटाई जे जिन पद जाय ॥
तो वरत करी भवि जैन का ॥ २४१ ॥

अन्तिम पाठ—अहो बूंदी जो नम्र हाहा तनीं थान, राज करें शुभसिंह कुल मानु ।

पोन छत्तीस लीला करै, गढ़ अरु कौट वन उपवन बाय ।
महल तलाव देवल धर्मा, आवथ धर्म चलै बहु माय ॥ तो वरत ० ॥
अहो जगत कीरति भट्टारक परमान, मूल संधी सरस्वती गच्छ जान ।
तो कुंदकुंदा मुनि पाटई, ब्रह्मचार आचारिज पंडित भाय ॥
आर धारयिका जी संग मै, मानत आवथ यह अमनाय ॥ तो ० ॥
अहो पार्श्वनाथ चैत्याली जो गाय, तहां पंडित तुलसी जो दास रहाय ।
तो साख समूह विद्या धणी करइ, निर्गंतर धर्म दिशाय सुख स्यों काल पूरण करै ।
तास चरचा रचि गंध पसाय ॥ तो ० ॥

अहो साह भामा सुतधर धनपाल, ताकीं चतुरभुज रूप दसाय ।
तो सुत दौलतराम हुव कछुयक, जिन गुण कहि अभिराम ॥
वरत विधान रासो रच्यो, ताकीं पुत्र हरद्वारम सदाराम ॥ तो ० ॥
अहो पाटणी गीत परसिद्ध मही मांही, खंडेलवाल जिन म तिय कहाहि ।
तो आवथ धर्म भारग भालै, करहि चरचा जिन वचन विलास ।
अने धर्म नही ऊचरै, सहु परिवार बूंदी गढ़ वास ॥ तो ० ॥

×

×

×

अहो संकेत सतरासैं सत सटि लीन, आसोज सुक्ल दशों दिन परबीन ॥
तो लगन पुहुरत सुम घरी धार, गुरु वार नचत्र जो ता मांहि ॥
ग्रंथ पूरण मयो भविष्य संकोधन यह उपयोग ॥
अहो दीय सैं इक्क्या जी छंद निवास, सातसैं पचास संख्या तास ॥
तो एक सौ इक्कसठि तामैं तप कला, दौलतराम विविध वुरणाय ॥
भवि करि मन बच काय सौं, अनुक्रम सुर छल शिव पद पाय ॥ २०२ ॥

॥ इति श्री वत विधान रासो संगही दौलतराम कृत संपूर्ण ॥

{२} १५ = पत्रों के नाम - पत्र संख्या २३-२४ ।

{३} पूजा स्तोत्र संग्रह—पत्र संख्या-१ से २५१ तक ।

विशेष—६३ प्रकार के पाठ व पूजा स्तोत्र आदि का संग्रह है । गुटका के कुल पत्रों की संख्या २७५ है ।

२०५. गुटका नं० २—पत्र संख्या-२४ । साइज—२ १/२ × ६ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-१८५१ । अपूर्ण ।

विशेष—आयुर्वेदिक लुसखे दिये हुये हैं । एवं मंत्रों का संकलन है । सभी मंत्र आयुर्वेद से सम्बन्धित हैं । स्तोत्र आदि भी हैं ।

५०६. गुटका नं० ३—पत्र संख्या—२८। साइज—१५ इंच । भाषा—प्राकृत—प्रस्कृत । लेखन काल—५ । पूर्ण ।

विशेष—नित्य नियम पूजा पाठ है ।

५०७. गुटका नं० ४—पत्र संख्या—६० । साइज—१५ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—५ । पूर्ण ।

निम्न पाठों का संग्रह है—

(१) ज्ञानसार—रघुनाथ । पत्र सं० १ से ३४ । भाषा—हिन्दी । पत्र संख्या—२७० ।

प्रारम्भ - छाप्य छंद—

गनपति सनपति प्रथम सकल शुभ फल मंगलकर ।
स्वस्मति अति मति गूढ देत आरूढ हंस पर ॥
विभक्त धरन जग मरन करन लागि चरन गंगधर ।
अमर कोटि तेतीस बद्धत रघुनाथ जोरकर ॥
भवि तिरन हरन जामन मरन सरनि जानि इह देह वर ।
श्री हरि पद की पाऊ गुननि गाऊं मन बच काय कर ॥१॥

दोहा—हरि दरसावन सब सुखद अब हर ज्ञान उदोत ।
गंगनीर गुन के चरन लुवत सुधि गति होत ॥२॥
तुम सर्वज्ञ दयाल प्रभु कहो कृपा करि बात ।
अनत रूप हरि गति छलख लखे कौन विधि जात ॥३॥
तब अपनौ जन जाँनि मन मानि करी प्रतिपाल ।
रूप दयाल तिह काल कर धोले बचन रसाल ॥४॥

संत दशा वर्णन - सभैया—

जग सी उदार मन वास किये नास मन, थरत न आस रघुनाथ यौ कहैत है ।
क्रोधी से न क्रोध, न विरोधी से विरोध, नहिं लोभी से प्रमोह नित अने निवहत है ॥
जीव सकल समानि समझे न कह्य अनुराग दोग, अभिमान प्रस तो देहत है ।
ज्ञान जल मंजन मलीन कर्म मंजन कै, राखे है निरंजन सौ, अंजन रहत है ॥१-६॥

×

×

×

अमल रूप प्राया मिल्यो मलनि मयो सब ठाव ।
सोनी सोनी संग तेँ भूषन नाना नाव ॥१४३॥

बिन जानै बहु दुख है जानै तें उडि जात ।
 तीन काल में एक रस सो निज रूप रहात ॥१८७॥
 एह त्यागी रागी नहीं, मागी भ्रम जग प्रीति ।
 हरि पागी जागी सुबुधि इह वैरागी रीति ॥१८८॥

अन्तिम पाठ—औसो हरि को निज धर्म मुनि मन मयो हुलास ।

तातै इह भाषा करी लघु मति राधो दास ॥१८९॥
 गुनी मुनी पंडित कवि चतुर विद्यकी सोध ।
 कियो ग्रन्थ उनमान विधि धिमा सचल अपराध ॥
 बक्ति श्रुक्ति लुक छद गति भाव वरन मन हीन ।
 एक गुन हरि को गुन वरन तातै गुन्यो प्रवीन ॥१९०॥
 सतरसैं चालीसविय संबन् मरघ अनुष ।
 प्रगट भयो एहि पंचमी ज्ञान सार सुख रूप ॥१९१॥
 सुनत सुनत जे ज्ञान सत नसत अस्त भ्रम रूप ।
 भव नावत गावत निमम पावत ब्रह्म सरूप ॥१९२॥
 मुक्त अपार अपार सत्र सोखन सकल विकार ।
 पार करत संसार सर सहासर को सार ॥१९३॥
 राघव लाघव कैरि करि कहत सब संतन सौ श्रुति ।
 अमे दान सो जानि जन संत संग हरि भक्ति ॥१९४॥

॥ इति ज्ञानसार रघुनाथ सा० कृत संपूर्ण ॥

(२) गद्य भेद—रघुनाथ साह । पत्र संख्या ३ । भाषा—हिन्दी पद्य विषय—छंद शास्त्र (पद्य ३४ से ३७ तक) । पद्य संख्या—१४ । पूर्ण ।

प्रारम्भ—गवरिनंद आनन्द कर निघन घाय बहु माय ।

आदि कवि के राज कवि भंगल दास बनाय ॥१॥
 प्रथम चरित्र ब्रजराज के गाय सु मन बचकाह ।
 जन्म सुधारिउ भारि कुल कल मल सकल नसाह ॥२॥
 हरि गुन भेद विना अमल फल दुह लोक अपार ।
 रहन सकत नर कवित विनि तिन मधि विबधि विचार ॥३॥

मध्य भाग दोहा—अष्ट गणाग्य अमरफल अशुभ च्यारि शुभ च्यारि ।

राघव भनि कवि राज मुनि भरहु विचारि विचारि ॥१०॥

अन्त भाग—सुखत गुणत गण मेद को रचा प्रकासत ज्ञान ।

हर जस कवि रस रीति को पावत सकल सुजान ॥ १५ ॥

॥ इति श्री रघुनाथ साह कृत गण मेद संपूर्ण ॥

विशेष—छंद शास्त्र की संक्षिप्त रचना है किन्तु वर्णन करने की शैली अच्छी है ।

पूर्ण ।

(३) नित्य विहार (राधा माधो) रघुनाथ—पत्र संख्या-५ । भाषा-हिन्दी पद्य । पद्य सं० १६ ।

प्रारम्भ—छंद चरचरी राजत ब्रज रूप अंग अंग छवि अनुप ।

निरखि लजत काम भूप बहु विलास मीनै ॥

रत्न जटित मुकुट हासक मनि अमृत वरन ।

कुंडल द्युति उदित करन तिमिर करत दीनै ॥१॥

माल तरल निलक लाल गैरै कुल अंग मिला ।

नैन चपल मीन चिसंत नाशा शुक भीरै ॥

कुंद कली दसन रसन बीरी झुत मंद हसन ।

कल कपोल अधर लोल मधुर बोल सोहै ॥२॥

अन्तिम—जे जन अब नाम रतत मंगल सब भूपनि जटत ।

अब कटित जम जार फटित जगत गोट गावै ॥

श्री बाल निशि विहार आनंद तउर जे उदार ।

राघो भय होत पार प्रेम मक्ति पावै ॥३॥

॥ इति राघो माधो नित्य विहार संपूर्ण ॥

विशेष—रचना शृंगार रस की है ।

(४) प्रसंग सार—रघुनाथ । पत्र संख्या-४३ से ५६ तक । भाषा-हिन्दी पद्य । पद्य संख्या-१६० ।

रचना काल-सं० १७४६ भाषा सुदी ६ । पूर्ण ।

प्रारम्भ—एक रदन राजत वदन गन मंगल मुख कंद ।

रावव रिधि सिधि वृधि दे नव निम मवरी नंद ॥१॥

बानि गति वानीनर्त कस वखानी जात ।

हरि मानी रोनी सकल वर दानी जम मात ॥२॥

गुरु सत गुरु तीरथ निगम गंगादिक सुख आम ।

देव भिदेव रखी सुमनि पूत सबके काम ॥३॥

सौम नाथ सब गाय हो राघो मनि इह सीति ।
सकल देव की सेवकौ फल हरि पद सौ प्रीति ॥४॥

अन्तिम पाठ—निस दिन रचि पचि भरत सठ सबको इह उनमान ।
सकल जानि मन जानि मन राखा मजो मगवान ॥१५६॥
भजनि भजै तिन तैं भजै पाप ताप दुख दानि ।
भागवत भगवंत जन म्यान वत सो जानि ॥१५७॥
स्व सुख छत सुंदर सुमत सतरासे गुनचास ।
कीयो माघ सुदि पंचमी सार प्रसंग प्रकास ॥१५८॥
रंग रंग बहु अंग के वरने विवधि प्रसंग ।
सुनै गुनै एख में सनै अति रति है सतसंग ॥ १५९ ॥
अंग उधारत गंग ज्यों मलिन कर्म करि मंग ।
उक्ति छक्ति हरि भक्ति है समझै सार प्रसंग ॥ १६० ॥
॥ इति श्री रघुनाथ साह कृत प्रसंगसार संपूर्ण ॥

विशेषः—रचना सुभाषित, उपदेशात्मक एवं भक्ति रसात्मक है ।

५०७. गुटका नं० ५—पत्र संख्या—८० , साइज—८½×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत हिन्दी । लेखन काल—X ।
पूर्ण ।

विशेष—केवल नित्य नियम पूजा पाठ हैं ।

५०८. गुटका नं० ६—पत्र संख्या—२५ । साइज—८×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—सं० १९६३
भादवा शुद्ध १० । पूर्ण ।

विशेष—बारह भावना, इष्ट छर्त्तासी भाषा, भक्तामर भाषा, निर्वीणकाव्यभाषा एवं समाधिमरण आदि पाठों
का संग्रह है ।

५०९. गुटका नं० ७—पत्र संख्या—४४ । साइज—८½×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—सं०
१=३४ मंगसिर सदी ६ । पूर्ण ।

विशेष—रामचन्द कृत चौबीस तीर्थ करों की पूजा है ।

५१०. गुटका नं० ८—पत्र संख्या—२३ । साइज—८×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—X । पूर्ण ।

(१) वैराट पुराण—प्रभु कवि । प्रारम्भ के पत्र नहीं हैं ।

विशेष—प्रभु कवि चरणदासी संप्रदाय के हैं ।

अन्तिम पाठ—काँछ भि.ने ते पंड कह्यो, लंघेर अ एते मंडे सरकारी ।
कवन पवन ते वाक उचारा, कवन पवन के रहैय अधारा ।
याकौ भेद बतावो मोव, प्रभु कहे गुरु पुछू तीय ॥ १ ॥

(१) आपुर्वेद के मुखे—भाषा—हिन्दी । पूर्ण ।

५११. गुटका नं० ६ — पत्र संख्या—२७ ; साइज—६×६ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—X । पूर्ण ।

विशेष—यंत्र चिन्तामणि के कुछ पाठ हैं ।

५१२. गुटका नं० १०—पत्र संख्या—३४ । साइज—६×६ इंच । भाषा—संस्कृत—हिन्दी । लेखन काल—X । पूर्ण ।

विशेष—भक्तामर आदि पाठ एवं पूजा संग्रह हैं ।

५१३. गुटका नं० ११—पत्र संख्या—७१ । साइज—८ $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत—हिन्दी । लेखन काल—X । पूर्ण ।

विशेष—प्रथम तन्त्रार्थ सूत्र है पश्चात् पूजाओं का संग्रह है ।

५१४. गुटका नं० १२—पत्र संख्या— । साइज—१० $\frac{1}{2}$ ×५ इंच । भाषा—संस्कृत हिन्दी । लेखन काल—X । पूर्ण ।

विषय—सूची	कत्तों का नाम	भाषा	विशेष
(१) पद	कवीरदास	हिन्दी	
(२) शब्द व धातु पाठ संग्रह	—	संस्कृत	पत्र ५५ तक
(३) लक्षण चौबीसी पद	विद्याभूषण	हिन्दी	
(४) षोडशकारणव्रतकथा	ब्र० ज्ञानसागर	हिन्दी	पत्र सं० ३७

प्राप्ति—श्री जिनवर चौबीस नमुं, सारद प्रणामी अब निगमुं ।

निद्र गुरु केरा प्रणमुं पाय, सकल संत वंदत मुख पाय ॥ १ ॥

षोडश कारण व्रतनी कथा, भापु जिन आगम छे यथा ।

आवक मुख जो निज मन शुद्ध, जे श्री तीर्थकर पद वृद्ध ॥ २ ॥

अन्तिम भाग—जे नर नारी पृ व्रत करे, ते तीर्थकर पद अनुसरे ।

इह मनि पावे सिद्धि अपार, पर भव मोक्ष तथो अधिकार ॥

पासे सकल भोग संशोभ, टले आपदा सैरव रोग ।

श्री भूषण गुरु पद आधार, ब्रह्म ज्ञान सागर कहे सार ॥ ३ ॥

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
(५) दशलक्ष्य व्रत कथा	ब्रह्म ज्ञानसागर	हिन्दी	पृष्ठ सं० ५५

प्रारम्भ — प्रथम नमन जिनवर नें करूं, सारद गणधर अनुसरूं ।

दश लक्ष्य व्रत कथा विचार, भालुं जिन आगम अनुसार ॥१॥

अन्तिम पाठ—ए व्रत जे नर नारी करे, विगैते भव सागर तरे ।

सकल सौख्य पावं नव निद्र, सर्वारण मन धाँझित सिद्ध ॥२॥

महारक श्री भूषण धीर, सकल शास्त्र पूरण गंभीर ।

नस पद प्रणमी कीले सार ब्रह्म ज्ञान सागर सुविचार ॥३॥

(६) रत्नचय व्रत कथा	ब० ज्ञानसार	हिन्दी	—
(७) अनन्त व्रत कथा	"	"	—
(८) त्रैलोक्य तीज कथा	"	"	—
(९) श्रावण द्वादशी कथा	"	"	—
(१०) रोहिणी व्रत कथा	"	"	—
(११) अष्टादिका व्रत कथा	"	"	—
(१२) लक्ष्मि विधान कथा	"	"	—
(१३) पुष्पजलि व्रत कथा	"	"	—
(१४) आकाश पंचमी कथा	"	"	—
(१५) रक्षा बचन कथा	"	"	—
(१६) मौन एकादशी व्रत कथा	"	"	—
(१७) मुकुट सप्तमी कथा	"	"	—
(१८) अतस्कांध कथा	"	"	—
(१९) कोकिला पंचमी कथा	"	"	सं० १७३६ चैत्र सुदी ६ रविवार को मुरत में ब्रह्म कनकसागर ने प्रतिलिपि की थी ।
(२०) वंदन पछी व्रत कथा	"	"	—
(२१) निराक्याष्टमी कथा	"	"	—
(२२) सुगंध दशमी व्रत कथा	"	"	—
(२३) जिन रावि व्रत कथा	"	"	—
(२४) पद्म विधान कथा	"	"	—

(२५) जिनगुनसंपत्ति व्रत कथा	॥	॥	—
(२६) आदित्यवार कथा	॥	॥	—
(२७) भेषमाला व्रत कथा	॥	॥	—
(२८) पंच कल्याण चंडा	—	॥	—
(२९) ॥ ॥ ॥	—	॥	—
(३०) परमानंद स्तोत्र	पूज्यपाद स्वामी	संस्कृत	

प्रारम्भ—परमानंद संगुक्तं विविधार्थं निरामयं ।

ध्यानहीना न पश्यन्ति निजदेहे व्यवस्थितं ॥१॥

(३१) वर्द्धमान स्तोत्र	—	संस्कृत	—
(३२) पार्श्वनाथ स्तोत्र	राजसेन	॥	—
(३३) आदिनाथ स्तवन	ब्रह्म जिनदास	हिन्दी	

स्वामी आदि जिनंद, करू वीनती आपणीय । तुं जग साचो देव त्रिभुवन स्वामी तूं धर्मी ए ॥१॥
 लाख लोगमी योनि भावर जंगम हूं मर्त्यो ए । तुह न लाखो ब्रह्म संसार सागर तेह तर्फी ए ॥२॥
 किहुं गति संसार माहि पाव्या दुःखमि आंत घष्या ए । जामन मरण वियोग, रोग दारिद्र्य जरा तेह तर्फी ॥३॥
 कोध मान माया लोभ इन्दि चोरेहु मोल्योए । रोग द्वेष मद मोह-मयण पापी धणुं रेलकोए ॥४॥
 कुदेव कुगुरु कुशास्त्र मिथ्या भास्य रंजियुए । साचो देव सुशास्त्र सह गुरु वयण नमी दीसुए ॥५॥
 समन कुटुंब ने काज कांवा पावमि यति घष्याए । ते पातिकर्मावार जिनवर स्वामी अक्ष तर्फी ए ॥६॥
 तुं माता तुं बाप, तुं दाकुर तुं देव गुरु । तु वांधव जिन राज, वाञ्छित फल हंन दान कर ॥७॥
 ह्वे जा तुहें अज देव करम निवारी अक्ष तर्फी । भवि भवि तुम पाय सेव गुण आयो स्वामी अक्ष धर्मी ए ॥८॥
 सकलकीरति गुरु वंदि, जिनवर विनति जे भयोए । ब्रह्म जिनदास भणोसार, भुगति वरांगना ते वरे ए ॥९॥

(३४) चउवीस तीर्थंकर विनती	ब्रह्म तेजपाल	॥	—
(३५) जिनमंशलाष्टक	—	संस्कृत	—

५१४. गुटका नं० १३ - पत्र संख्या-२८ । साइज-८×६ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X । पूर्ण ।

विशेष - नित्य नियम की पूजाएँ हैं । ये पूजाएँ बाल सहेली जयपुर में प्रत्येक शुक्रवार को होती थीं ।

५१६. गुटका नं० १४—पत्र संख्या-११ । साइज-८×६ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-सं० १६=३ सादवा सुदी १० । पूर्ण ।

विशेष—सुगन्ध दशमी व्रतोद्यापन का पाठ एवं कथा है ।

५१७. गुटका नं० १५ - पत्र संख्या-१६२ । साइज-८×६ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X । पूर्ण ।

विषय-तुर्ची	कर्ता का नाम	भाषा	खं० क्र०	विशेष
ज्ञान तिलक के पद	कबीरदास	हिन्दी सं० १=०६ कार्तिक सुदी ७	—	—
कबीर की परचई	"	"	"	—
रेखता	"	"	"	—
काना पाजी	"	"	"	—
हंसमुक्तावली	"	"	"	—
कबीर धर्मदास की दश	"	"	"	—
अन्य पाठ	"	"	"	—
साखी	"	"	कितने ही प्रकार की हैं	—
सोसट बंध	"	"	"	—

विशेष—कबीर दास कृत रचनाओं का अपूर्व संग्रह है।

कसौ वसे कबीर गृसाई एव । हरि भक्तन की पकड़ी देख ॥

बहोत दिना संकिट में गये । अब हरि की गुन लोन भये ॥ (कवि की परचई)

५१६. गुटका नं० १६—पत्र संख्या—१३ से १० । सारज—६५६ ई. इष । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—५ । अपूर्ण ।

विशेष—महाभारत के पाँचवें अध्याय से ३० वें तक है प्रारम्भ के ४ अध्याय नहीं हैं । जिसके कर्ता लालदास हैं ।

४ वें अध्याय से प्रारम्भ—दरसन भीषम की प्रीय जदा, सकल रषीस्वर आये दिहा ।

सरसज्या भीषम विभ्राम, अब सुनि प्रगट रिबिन के नाम ॥ २ ॥

गुगु वसिष्ठ पारास्वर व्यास, चिदान अत्रिग्य अंगिरा प्रवगास ।

अगस्त नारद परवत नाम, जमदग्नि दुरवासा राम ॥ ३ ॥

२= २ अध्याय का अन्तिम भाग - धर्म रूपज राजा सिव भयो, जिहि परकाज अपनपों दयो ।

विस्नही आराधै इहि रीति धरम कथा सुनें करि सीति ॥ १६ ॥

जो याह कथा सुमै श्रम गावै, धरम सहित धरम गति पावै ।

गौ रौ कथा पुरानन कही, लालादास भाख्यौ यो सही । ३० ॥

५१६. गुटका नं० १७—पत्र संख्या—१०६ । सारज—६५६ । भाषा—हिन्दी । रचना काल—५ । लेखन काल—सं० १=५२ पौष सुदी ७ । पूर्ण ।

विशेष—महाभारत में से 'उवा कथा' है जिसके रचयिता 'रामदास' हैं ।

प्रारम्भ—श्री गणेशाह्वनमः । श्री सारदा माताजी नमः । ओ नमो भगवत वासुदेवाय श्री ऊषा चरण लिखते ।

वासुदेव पुराण चित लाउं, करी हो कृपा रिकछु ह गुण गाउं ।
 सुमरो गुण गोविंद मुरारी, सदा होत संतन हितकारी ॥
 सुमरो आदि सुरसति माता, सुमरो श्री गणपती मुखदाता ।
 बुधकर जोड चरथ चीत लाउ, करी हो कृपा कछु हरि गुणगाउ ॥
 सुमरो मात पिता बडमाई, सुमरो श्री रघुपति के पारै ।

दोहा—अडसठी तीरथ कथे, सुमरी देव कोटी तेतीस ।

रामदास कृपा कर बुधी देहो जगदीस ॥ १ ॥
 अहाँ चनमृज राय वीराज, प्रमसह तीतिहि पुरभी राजा ।
 जाके धरम कथा अधीकाई, दानव बुध वी नोहोत बडाई ॥
 अकलोकास सृ दरसण पुज मुखमान, मऊ विप्र की सेवा जान ॥ २ ॥
 नारद उकती श्वास कही नाहा, दसम सकंद भागवत कीन्हा ।
 व्यास पुराण कह सब साखी, श्री सुसदेव नृप सुमाणी ॥

दोहा—चित दे सुनी नृपति धनी परीछत राय ।

व्यास पुत्र उपदेश तै रस हीयो अभाय ॥
 अमर कोक पग मुल नहीं देखो, पंच संग सखव सेवा ।
 रामदास तबी संगति पारै, भाषा करी हरी कीरति गारै ॥ ६
 प्रेम सथाना पुछत चाता, तुम कंसन कहा भये विधाता ।
 आदि देस तुमाहारो कहा होइ, हम सुवचन कहो न असोई ॥
 महमा कह राम को दास, देस मालवो अती सुखवास ।
 सहर, सरुंछ निकट ताहां ठाहु, पावो जनम मालनी गाउ ॥
 पिता मनोहर दास विधाता, बीरम ने जनम दीयो माता ।
 रामदास सुत तीन को भाई, कसन नाव को भगतो ताही ॥

दोहा—लालदास लालच कथा, सोख्यो मगबंत सार ।

रामदास की बुधी लखु पंथ कुदे न भार ॥ १० ॥
 नृप पुज सुख है वसु सुनो, सुनाय करौ हो मोहि ।
 अनरव ऊषा हरन की कथा, कह सुनावो मोही ॥ ११ ॥
 कैसे चत्रा हरी ले गई, कैसे कवट भेंट गई ।
 कुण पुनी बाणसूर लीया, घर वसी हरी दरसण दीया ॥
 सो बंसा सुनी ध्यान लगायो, आदि पुरुष को अंत न पायो ।
 कहै प्रताप हरी पूजा पाइ, सो हम सुं कहीये सम्भाई ॥

अन्तिम पाठ—धनी सो सुरता लीत दे सुन, अरुण वीचार प्रेम गुनमन ।

धनी सोही देस धनी सोही गांव, नीस दिन कथा कृष्ण को नांव ।

उषा श्री मागोत पुराना, सहजही दुज दीजे दाना ॥

लुळ मसक पवन भर सोही, कृष्ण भगति बिना अवरथा देही ।

रामदास कथा श्रियो पुराना, पदत भुणत गंगा असनाना ॥

दोहा—चंद बदन यो होय फल, तो पातु दल पान ।

ई विध हर पूजही, कथे ही पुत्र को लाण ॥

इति श्री हरिचरित्रपद सभी असकंदे श्री मागोतपुराणे ऊवा कथा वरणनो नाम संपत्त दसो अध्याय ॥ १७ ॥

॥ इति श्री उषाकथा संपूर्ण समाप्ता ॥

५२०. गुटका नं० १८—पत्र संख्या—१३२ । साइज—४×६ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—सं० १७६७
फागुन वृद्धी ७ । पूर्ण ।

विशेष—कवि आलक कृत सीता चरित्र है ।

५२१. गुटका नं० १९—पत्र संख्या—१३१ । साइज—४×६ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—X ।
अपूर्ण ।

विशेष—नंददास कृत मागवत महा पुराण भाषा है । केवल ६१ पत्र है ।

५२२. गुटका नं० २०—पत्र संख्या—३ से ३२ । साइज—८½×६ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—X ।
अपूर्ण ।
विशेष—हितोपदेश कथा भाषा गद्य में है । रचना नवीन प्रतीत होती है भाषा अच्छी है आदि अंत माग
नहीं है ।

५२३. गुटका नं० २१—पत्र संख्या—१३६ । साइज—४×६ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—X ।
अपूर्ण ।

विशेष—हिन्दी गद्य में राम कथा दी हुई है । प्रति अशुद्ध है ।

५२४. गुटका नं० २२—पत्र संख्या—२८ । साइज—४×६ इंच । भाषा—संस्कृत हिन्दी । लेखन काल—
सं० १८१५ । पूर्ण ।

विशेष—पं० नकुल विरचित शालि होत्र है । संस्कृत से हिन्दी पद्य में भी अर्थ दिया हुआ है ।

५२५. गुटका नं० २३—पत्र संख्या—१० । साइज—८½×६½ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—X ।
अपूर्ण ।

विशेष—कृष्ण का बालाचरित वर्णन है। सं० १२२ पद्य है।

आदि—भर गनेस वर्धन करि के संतननि की सिर नाऊ।

बाल विनोद यथा मति हरि के सुंदर सरस सुनाऊ ॥१॥

भक्तन के प्रसन्न करना भय अदभुत तिन की क्रीडा।

सुनो संत ही साविधान हो श्री दामोदर लीला ॥२॥

५२६. गुटका नं० २६—पद्य संख्या—३०। सङ्ग—६×६ इंच। भाषा—हिन्दी। रचना काल—X।
लेखन काल—सं० १८२३ आश्विन बुदा ३। पूर्ण।

विशेष—लक्ष्मीराम कृत कल्या भरण नाटक है। कृष्ण जीवन की बाल लीला का वर्णन है।

प्रारम्भ—रसिक भगत पीडित काँवतु कही महाफल लेहु।

नाटक कल्या भरण तुम लक्ष्मीराम करि देहु ॥१॥

प्रेम बढे मन निपट हो अब आवै अति रोइ।

कल्या अति सिंगार रस जहाँ बहुत करि होइ ॥

लक्ष्मीराम नाटक करि दीनौ सुनिन पढाइ।

भेष रस निचैन निपट लाये नर निसि लाइ ॥२॥

अन्तिम पाठ—श्रीकृष्ण कथा अमृत सर वरनी, जन्म जन्म के कलमल वरनी।

अति आश रस वरन्यौ न जाई, दुधि प्रसान कछु वरनि सुनाइ ॥३४॥

सो मति थोरी हरि जस सागर, सिंधु समझ कहा लो गागर।

लक्ष्मीराम कवि कहा बखानौ, हरिजस को कोई हरिजन जानै ॥३५॥

इति श्री कृष्ण जीवन लक्ष्मीराम कृत कल्या भरण नाटक संग्रह। सं० १८२३ आश्विन बुदा ३ रविवार।
सन्तभो अध्यापक।

५२७. गुटका नं० २७—पद्य संख्या—३०। सङ्ग—६×७ इंच। भाषा—हिन्दी। लेखन काल—X। पूर्ण।

विशेष—गुटके में भद्रबाहु चरित है। यह रचना किशनसिंह द्वारा निर्मित है जिसको उसने सं० १७८३ में
समाप्ता की थी। अति नवीन है।

भद्रबाहु चरित—

प्रारम्भ—केवल बोध प्रकार रवि उदै होत सखि लाल।

जग जन अंतर तम सकल छेद्यो दीन दयाल ॥ १ ॥

सनमति नाम जु पाइयौ ऐसे सनमति देव।

मोको सनमति दीजिए नभौ त्रिविध करि लेव ॥ २ ॥

चन्तिम पाठ—अनंत कीरति याचरज जानि, ललित कीर्ति सु सिष प्रनाम ।

रत्ननिदि ताको सिष होय, अलप मति धरि करना सोय ॥

स्वतांबर मत को अधिकार, पद लोक मन रंजन हार

तिनही परीक्षा कारन जान, पूर्व श्रुत कृत मानस आनि ॥ १० ॥

किथा वही कवितह करी, काव कर्मा धमिमान ही श्री ।

मंगलाक इस चरितह जानि, रच्यौ सबै सुखदाइ मान ॥

मूल प्रथ कर्ता मये रतन नंदि सु जानि ।

तापरि भाषा प्रहरि कीनी मती परमान ॥ ११ ॥

नगर चरख सुदेस भै वरवाडा को गांव ।

माधुराय वसंत को दामपुरी है नांव ॥

तहा बसत संगही कानो गोट पाटणी जोय ।

ता सुत जानो प्रबट सुख देख नाम तसु होय ॥

ताको सद्यु मृत जानीयो किसन सिष सब मान ।

देस दुंदुहार को भयो संगानेर मुशान ॥ १५ ॥

तहाँ करी भाषा यह मदवाह गुणधारी ।

सुमति कुमति को परख कै द्वेव भाव न बिचारि ॥

किसनसिष विनती करै, लखि कविता की रीति ।

अह चरित्र भाषा कियो, बाल बोध श्री प्रीति ॥ १७ ॥

जो याकी वाचै सुनै विपुल मति उरधारी ।

कहुँ और नो मूल है लीज्यो सुधी सवारी ॥ १८ ॥

सुमति कुमति को परख कै, कीज्यो कुमत निवार ।

महण सुमति को कीज्यो जो सुर सिष पदकार ॥ १९ ॥

संवत् सतरह सैं असी उपरि और है तीन ।

भाव कृप्य कुज अष्टमी अंश समाप्त कीन ॥ २० ॥

५२८. गुटका नं० २६—पत्र संख्या-२०० । साइज-८ $\frac{1}{2}$ ×६ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । लिखन
काल-४ । अपूर्ण ।

विशेष—गुटका प्राचीन है । निम्न पाठों का संग्रह है ।

विषय—पूर्वी	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वाति	संस्कृत	—
श्रीपालरास	श्री रायभल्ल	हिन्दी	—
नेमीश्वररास	”	”	—
विवेकजखड़ी	—	”	—
पद्य संग्रह	—	”	—
जखड़ी	रूपचंद	”	—
मार्गगतुंगी की जखड़ी	रामकीर्ति	”	—
जखड़ी	जिनदास	”	२० का० सं० १६७८
कर्म हिंडोलगा	हर्षकीर्ति	”	—
गीत	चंदकीर्ति	”	—
गीत	मुनि धर्मचन्द्र	”	—
चेतनगीत	देविदास	”	—
चेतन गीत	—	”	—
पंचवधावा	—	”	—
आदिनाथस्तुति	चन्द्रकीर्ति	”	—
शालिभद्रचौपई	—	”	अपूर्ण

५२६. गुटका नं० २७—पत्र संख्या—२५ । साइज—६×५ ३/४ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—X ।
अपूर्ण ।

विशेष—स्फुट पूजाओं का संग्रह है ।

५३०. गुटका नं० २८—पत्र संख्या—२५ । साइज—६×५ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—X । अपूर्ण ।

विशेष—नित्य पूजा पाठों का संग्रह है ।

५३१. गुटका नं० २९—पत्र संख्या—१५ । साइज—८ ३/४×५ इंच । भाषा—संस्कृत । लेखन काल—X ।
अपूर्ण ।

विशेष—सामान्य पाठ संग्रह है ।

५३२. गुटका नं० ३०—पत्र संख्या—१४ । साइज—६×६ इंच । भाषा—हिन्दी संस्कृत । लेखन काल—X ।
पूर्ण ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

त्रिभुती संग्रह	—	हिन्दी	—
संक्षोभपञ्चासिका भाषा	धानतराय	"	—
अठारह नाता	—	"	—

५३४. गुटका नं० ३२—पत्र संख्या-२० । साइज-७½×५ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-५ ।

पूर्ण ।

विशेष—६५ चतुर्दश की वार्ता दी है जिसका रचना काल बीर सं० १४४९ है ।

५३५. गुटका नं० ३३—पत्र संख्या-२३ से १४२ । साइज-६×६ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-५ । पूर्ण ।

विशेष—मुख्य पाठों का संग्रह निम्न प्रकार है ।

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
स्तोत्रविधि	जिनेश्वरसूरि	हिन्दी	—
भक्ताभर स्तोत्र	मानतुंगाचार्य	संस्कृत	—
कल्याणमंदिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	"	—
पद संग्रह सत्तर प्रकार (पूजा प्रकरण)	साधुकीर्ति	हिन्दी	र. का. १६६८ आ. गु. ६
रागमाला	"	"	—
अष्टापदगिरिस्तवन	धर्मसुन्दर (बाचनाचार्य)	"	—
पद २	जिनदत्तसूरि	हिन्दी	—
स्तंभनक पार्श्वनाथ गीत	महिमासागर	"	—
पद	जिनचन्द्र सूरि, जिनकृष्णसूरि व कुमुदचन्द्र ।		
कवित्त	—	हिन्दी	र. का. सं १४११

इनके अतिरिक्त और भी हिन्दी पद हैं ।

सत्तर प्रकार पूजा प्रकरण—राम घनाश्री—भाषा शुद्धि घनजि के । सठि दिन तेज तरणि सुख राजइ ।

कवित्त शतक आठ व्युत्पत्ति शकस्तव । धय धुप रगद मछाजइ ॥भ०॥

अणहिल पुर शमन्ति सब सुखदाई । सो प्रभु नवनिधि सिधि आव जइ ॥

सत्तर स्रुज सुविधि आवक को । मर्यामई भगति हिज काजइ ॥भ०॥

श्रीजिनचन्द्रसूरि गरू खरतरपति । धरमनि वचन तासु तसु राजइ ॥

संबत् १६ अठार आवथ सुदि । पंचमि दिवसि समाजइ ॥भ०॥

दयाकलशागणि अमरमाणिक गुरु । तम्भु पसाइ सुनिवि हूँ गाजइ ।
कटइ साधु कीरति कर घमन संस्तव सति ।
साधुकीरति करत जन संस्तव सबिलील सब सुख साजइ ॥

॥ इति सत्तर प्रकार पूजा प्रकरण ॥

५३६. गुटका नं० ३४—पत्र संख्या—१४ से ८६ । साइज—६×५ इंच । भाषा—प्राकृत हिन्दी । लेखन काल—X । अपूर्ण ।

विशेष—द्रव्य संग्रह श्री गाथायें हिन्दी अर्थ सहित हैं तथा समयसार के २०६ पद्य हैं ।

५३७. गुटका नं० ३५—पत्र संख्या—२ से ३८ । साइज—६½×४ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—X । अपूर्ण ।

विशेष—पूजायों का संग्रह है ।

५३८. गुटका नं० ३६—पत्र संख्या—६ से ६३ । साइज—८½×५ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—X । अपूर्ण ।

विशेष—महाकवि कल्याण विरचित अनंग रंग नामक काव्य है । काम शास्त्र का वर्णन है आगे इसी कवि द्वारा निरूपित संभोग का वर्णन है । आयुर्वेद के सुसूत्र दिये हुए हैं ।

५३९. गुटका नं० ३७—पत्र संख्या—१६ । साइज—६×६ इंच । भाषा—संस्कृत हिन्दी । लेखन काल—X । पूर्ण ।

विशेष—विष्णु सहस्रनाम के अतिरिक्त अन्य भी पाठ हैं ।

५४०. गुटका नं० ३८—पत्र संख्या—११० । साइज—७×४½ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—सं० १७६६ पौष सुदी ६ । पूर्ण ।

विशेष—विभिन्न साधारण पाठों का संग्रह है ।

५४१. गुटका नं० ४०—पत्र संख्या—७ । साइज—८×६ इंच । भाषा—संस्कृत । लेखन काल—सं० १८८३ चत्र शुदी १४ । पूर्ण ।

विशेष—चाणक्य राजनीति शास्त्र का संग्रह है ।

५४२. गुटका नं० ४१—पत्र संख्या—३८ । साइज—५×६ इंच । भाषा—संस्कृत । लेखन काल—X । अपूर्ण एवं जीर्ण ।

५४३. गुटका नं० ४२—पत्र संख्या—२६ । साइज—६×६ इंच । भाषा—प्राकृत । लेखन काल—सं० १८१२ । पूर्ण ।

विशेष—आचार्य कुन्दकुन्द कृत (दर्शन, चरित्र, सूत्र, बोध, भाव और मोक्ष) षट् पाहुड का वर्णन है ।

५४४. गुटका नं० ४३—पत्र संख्या-४८ । साइज-६×५ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X । अपूर्ण एवं जीर्ण ।

विशेष—देहर्षा के बादशाहों की वंशावलि दी हुई है अन्य निम्न पाठ भी हैं—

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
कृष्ण का वारह भासा	धर्मदास	हिन्दी	—
विरहनी के गीत	—	"	—
प्रायुर्वेद के नुस्खे	—	"	—
दीर्घे	दादूदयाल	"	—

५४५. गुटका नं० ४४—पत्र संख्या-६८ । साइज-८ $\frac{1}{2}$ ×६ इंच । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-X ।

पूर्ण

विशेष—मंत्र शास्त्र से सम्बन्धित पाठ है ।

५४६. गुटका नं० ४५—पत्र संख्या-६० । साइज-८×४ इंच । भाषा-हिन्दी संस्कृत । लेखन काल-X ।

पूर्ण ।

विशेष—पार्ष्वनाथ स्तोत्र-संस्कृत, क्षेत्रपाल पूजा शनिधर स्तोत्र-हिन्दी आदि पाठ हैं ।

५४७. गुटका नं० ४६—पत्र संख्या-१२ । साइज-४ $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X ।

पूर्ण ।

विशेष—चामदास के पद हैं । कुल १५ पद हैं ।

५४८. गुटका नं० ४७—पत्र संख्या-१६ । साइज-८ $\frac{1}{2}$ ×८ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-X ।

पूर्ण ।

विशेष—भुवनेश्वर स्तोत्र सोमकीर्ति कृत हैं ।

५४९. गुटका नं० ४८—पत्र संख्या-३४ । साइज-६×८ इंच । भाषा-संस्कृत हिन्दी । लेखन काल-सं० १८६२ अषाढ सुदी ६ । पूर्ण ।

विशेष—अवि मंडल स्तोत्र तथा अन्य पाठ हैं ।

५५०. गुटका नं० ४९—पत्र संख्या-२० से ६०, १७२ से २१२ । साइज-५×३ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-X । अपूर्ण ।

विशेष—पंचस्तोत्र, पद्मावतीस्तोत्र, तत्त्वार्थसूत्र, पंचपरमेष्ठोस्तोत्र एवं वज्रपंजरस्तोत्र (अपूर्ण) आदि हैं ।

५५१. गुटका नं० ४०—पत्र संख्या—४ से २१० । साइज—६×४ इंच । भाषा—हिन्दी संस्कृत । लेखन काल—X । अपूर्ण ।

विशेष—स्तोत्र आदि का संग्रह है ।

५५२. गुटका नं० ४१—पत्र संख्या २६ । साइज—५×३½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—संग्रह । लेखन काल—X । अपूर्ण ।

विशेष—स्तोत्र आदि के संग्रह है गुटके के अधिकांश पत्र खाली हैं ।

५५३. गुटका नं० ४२—पत्र संख्या—४० । साइज—७×५ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—X । पूर्ण ।

विशेष—गुटका जल्दी में लिखा गया है । कोई उल्लेखनीय पात्र नहीं है ।

५५४. गुटका नं० ४३—पत्र संख्या—६ । साइज—७×४½ इंच । भाषा—संस्कृत । लेखन काल—X । अपूर्ण ।

विशेष—स्तोत्र आदि का संग्रह है ।

५५५. गुटका नं० ४४—पत्र संख्या—६—२०४ । साइज—८½×४½ इंच । भाषा—संस्कृत—हिन्दी । लेखन काल—X । अपूर्ण ।

विशेष—प्रारम्भ में स्वर्ग लोक का वर्णन है और पीछे तत्त्वार्थ सूत्र के सूत्रों की हिन्दी टीका है । कोई उल्लेखनीय सामग्री नहीं है ।

५५६. गुटका नं० ४५—पत्र संख्या—२० । साइज—४×३½ इंच । भाषा—संस्कृत । लेखन काल—X । अपूर्ण ।

विशेष—भक्तामर, पार्श्वनाथ, लक्ष्मीस्तोत्र आदि हैं ।

५५७. गुटका नं० ४६—पत्र संख्या—४६ । साइज—७×५ । भाषा—संस्कृत । लेखन काल—सं० १६२३ । पूर्ण ।

विशेष—सामान्य पाठ संग्रह है ।

५५८. गुटका नं० ४७—पत्र संख्या—३—४६ । साइज—७×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—संग्रह । लेखन काल—सं० १६२३ । अपूर्ण ।

विशेष—उल्लेखनीय पाठ नहीं है ।

५५९. गुटका नं० ४८—पत्र संख्या—८० । साइज—८½×६½ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—X । अपूर्ण एवं जीर्ण ।

विशेष—अक्षर चसीट होने पढ़ने में नहीं आते हैं ।

५६०. गुटका नं० ५६—पत्र संख्या—८ से १७ । साइज—६½×३½ इंच । भाषा—संस्कृत, हिन्दी ।
लेखन काल—X । पूर्ण ।

विशेष—निम्न पाठ हैं—

विषय—सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
चौबीस तीर्थंकर पूजा	—	संस्कृत	—
सरस्वती जयमाल	—	"	—
अकृतिम जयमाल	—	"	—
परमज्योतिस्तोत्र	बनारसीदास	हिन्दी	—
भक्तामरस्तोत्र	मानतुंगाचार्य	संस्कृत	—

५६१. गुटका नं० ६०—पत्र संख्या—१ से ३८ । साइज—७×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा ।
लेखन काल—X । अपूर्ण ।

विशेष—हितोपदेश की कथाएँ हैं ।

५६२. गुटका नं० ६१—पत्र संख्या—१०३ । साइज—८×५ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—X ।
अपूर्ण ।

विशेष—पूजाओं तथा स्तोत्रों का संग्रह है ।

५६३. गुटका नं० ६२—पत्र संख्या—१७ । साइज—६×५ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—सं०
१७५४ । अपूर्ण ।

विशेष—१ से १६ एवं १०७ से आगे के पत्र नहीं हैं । निम्न विषयों का संग्रह है ।

विषय—सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
मङ्गारक पट्टावली	—	हिन्दी	र. का. सं. १७३३
कृष्णदास का रासो	—	"	र. का. सं. १७४६ ले. का. १७५२
पर्वत पाटणी को रासो	—	"	ले. का. सं. १७५४
बीचढ रासो	—	हिन्दी	—
भवरत्न कवित	—	"	—

५६४. गुटका नं० ६३—पत्र संख्या—६० से १२४ । साइज—७×५½ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन
काल—सं० १७६० भाष सुदी १५ । अपूर्ण ।

(१) भृंतृहरि की घाता—पत्र संख्या-६० से ७८ । भाषा-हिन्दी गद्य । लेखन काल-सं० १७६० माघ सुदी १६ । अपूर्ण ।

अन्तिम पाठ—भरघरी जी गोरखनाथजी का दर्शन नै चलता रहा । प्रभा को भाव सारी देखी करि वक्रत चाँत हुयो । सारी जगत को सुख । हैद ताको एध । श्रीगो पराजमन सो देखता ओर सुना मंडल में चित बीजो । इति भरघरी जी का बात संपूर्ण । पोथी मान खंघ चमभुज का वेठा की लिखी जैराम काह्य बाँचे जैजैराम । मी. माह सुदी १६ सं० १७६० ।

(२) आसावरी की बात—पत्र सं०-८० से १२५ । भाषा-हिन्दी गद्य । अपूर्ण ।

श्री गणेशाई नमो । अबै आसावरी की बात उत्तिपति वरण ववरणी जे है । ईतरा माँही राणी के पुत्र हुवो । नाम सीधु नीसरयो । उद्याव हुयो । जाति कर्म हुयो । दान पुनि बाजा अतोसु बाजवा लाग्य । नम माँही वृद्धाह धरि धरि हुयो । आवतै दीनि कन्या को जनम हुयो । पंडिता नाम आसावरी काख्या । सिधि को वचन है । सीई नाम जनम को नीसरयो । आसावरी देव अंग अपधरा को ओतार हुई । तदि आसावरी वरस कहकी हुई । तदि पदिवानै बैठी ।

५६५. गुटका नं० ६४—पत्र संख्या-१३ । साक्ष-७ $\frac{1}{2}$ × ५ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-X । पूर्ण ।

विशेष—निम्न स्तोंकों का संग्रह है—

विवाहार, एकीभाव एवं भूपालचतुर्विंशति ।

५६६. गुटका नं० ६५—पत्र संख्या-४४ । साक्ष-७ × ५ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-सं० १७७६ । अपूर्ण ।

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
भान मञ्जरी	नंददास	हिन्दी	अपूर्ण
जानकी जन्म लीला	बालकृष्ण	"	पूर्ण ले० का० सं० १७५६
सीता स्वयंवर लीला	तुलसीदास	"	माघ सुदी ६

आदि पाठ—सुर गणपति गिरजापति गौरी गिरा पति,

सारद सेव भुक्वि श्रुति संत सरल भति ।

हाथ जोडि करि विनय सकल सिर भाऊ,

श्री रूपपति बिवा । जथामति मंगल गाऊ ॥१॥

सुम दिन त्यों सुमंगल मंगल दाइक ।

सुनत अचन हिए बसहु सीथ धुनाइक ।

देस सुहावन पावन वेद बखानिये ।

मोभि तिलक सम तिरहुत त्रिभुवन मानिये ॥२॥

जानकी जन्म लीला—

आदि माग—श्री खुबेर गुर चरन मनाऊँ, जानकी जनम सुमंगल गाऊँ ।

काम रहित सुधर्म जग जोहै, देस विरोहित तनु धरि सोहै ॥

ता भहि भिभुला पुरि सुहाई, मनउ मग्न विद्या छवि छाई ॥२॥

अन्तिम पाठ—भये प्रगट भक्ति अनंत हित दग दया अमृत रस भरे ।

सफल सारनर मुनिन केई है छिनहि सब कारिज सरे ॥३॥

जै देवि दांनि सिरोमने करि, दया यह वर दीजिये ।

सदा अपने चरनदास के दास हम कहैं कीजिये ॥४॥

॥ इति श्री जातुकी जनम लीला स्वामी बालवन्दजी कृत संपूरन ॥ माह सुदी ६ संवत् १७७६

५६७. गुटका नं० ६६—पत्र संख्या-८० । स.१ज-६६×६६ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-सं० २० ३४ पौष सुदी ३ । पूर्ण ।

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
भूषणभूषण	महाराज जसवंतसिंह	हिन्दी	पद्य सं० २१०
छवितरंग	महाराजा रामसिंह	”	पद्य सं० ६८

प्रारम्भ—असुर कदन मोहन मदन वदन चंद रघुनंद ।

सिया सहित बसियो सुनित, जग जय मय अनंद ॥१॥

यहाँ कवि की रीति प्रभावता करिकै राम जू सौ विजय होत है । तातैं भाव धुनि । अरु प्रथम अनेक चरन अनेक धर फिरत है तातैं किति अनुप्रास चंद रघुनंद यह रूपक ।

दीक्ष—आनंदित धंदत जगत सुख निकंद निष नंद ।

भाल चंद तुन जपत ही दूरि होत दुख धंद ॥-॥

अन्तिम पाठ—परी परोसनि सौ अटक, सटक चहचही चाह ।

भरि मादों की चोपि को चंद निहारत नाह ॥१३॥

कछुक गुन दोहान के, वरने और अनूप ।

जैसे ही सङ्ख्ये सब औरी लग्यौ अनूप ॥१४॥

इति श्री महाराजा रामसिंहजी विरचिते छवितरंग संपूर्ण ।

अप्रजाम	कवि देव	हिन्दी	पद्य सं० १२१
श्रीवधि वर्णन	—	”	—

५६८. गुटका नं० ६७—पत्र संख्या—५ से ११३ । साइज—६×४ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—X ।
अपूर्ण ।

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
कृष्णलीला वर्णन	—	हिन्दी	पत्र ५-१७
होली वर्णन	—	"	—
बारहमासा	—	"	पत्र सं० ७४ से ७७
रफूट पद	—	"	पत्र ७८ से ११३

५६९. गुटका नं० ६८—पत्र संख्या—२३ । साइज—६×४ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन काल— । पूर्ण ।

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
पीपाजी की पञ्चावलि	—	हिन्दी	—
धु चरित	सुसुदेव	"	—
विनति	—	"	—
पञ्चावती कथा	—	"	—

५७०. गुटका नं० ६९—पत्र संख्या—२४ । साइज—५½×४ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—X ।
पूर्ण ।

विशेष—निम्न रचना है—

कल्मष कुठार—रामभद्र हिन्दी ।

मध्यम भाग—करनी हौं सो कीजियो करनी की कछु दोर ।

मो करनी जिन देखियो तो करनी की ओर ॥ २१ ॥

मो सो करनी कुटिल जग तो सो तारक ताज ।

यही भरोसो मोहि तो सरन गहे की लाज ॥ २२ ॥

इति श्रीमत् कामन्दनस्य बाधूल संगोत्रोत्पन्न गणेश महात्मज रामभद्र भट्टने..... विरचिते
कल्मषकुठार ग्रंथ संपूर्ण ॥

५७१. गुटका नं० ७०—पत्र संख्या—५ । साइज—५×४ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—X ; अपूर्ण ।

विशेष—रसराज नामक ग्रंथ है ।

५७२. गुटका नं० ७१—पत्र संख्या—५ । साइज—६×४ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—सं० १८२२
चैत्र शुदी २२ । पूर्ण । पत्र संख्या—२५ ।

विशेष—गुटके में नंदराम पच्चीसी दी है । रचना सं० १७४४ अथ नंदराम पच्चीसी लिखते ।

दोहा—गनपति को ज मनाय हरि, रिद्ध सिद्ध के हेत ।

बाद बादनी मात तु, सुम अखिर बहु देत ॥

कछु कछा हु चाहत हू, तुम्हार गुनि प्रताप ।

ताहि सुश्या सुख उपजै, दया करो अब आप ॥ २ ॥

अन्तिम पाठ—नंद छंडेराख है धंवावति को वासी ।

सुत बलिराम गोत है रावत मत है कृष्ण उपासी ॥ २४ ॥

संवत् सतरासै चवाला कातिक चन्द्र प्रकासा ।

नंदराम कछु ॥

कली ओहार पच्चीसी वरनी जथा जोग मति तेरी ।

कलज्जग की ज बानगी एहै है और रासी बहुतेरी ॥

राखे राम नाम या कलि में नंद दासा ।

नंदराम तुम सरनै शायो गाथो अजब तमासा ॥ २६ ॥

इति श्री नंदराम पच्चीसी संपूर्ण । संवत् १८१२ चैत वृद्धी १२ ।

५७३. गुटका सं० ७२—पत्र संख्या—१६ । साइज—६×४ इंच । भाषा—हिन्दी लेखन काल—X ।

अपूर्ण ।

विशेष—कुछ हिन्दी के कवित्त हैं ।

५७४. गुटका सं० ७३ पत्र संख्या—११-२६३ । साइज—६×४½ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन

काल—X अपूर्ण ।

विशेष—मुख्य रूप से निम्न पाठ हैं—

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
श्रीपाल रास	शम्भुरायमल	हिन्दी	ले. का. सं. १८२५
भधु मालती कथा	चतुर्भुजदास	"	—
गोखल बचन	बनारसदास	"	—
वैद्य लक्षण	"	"	—
शिव पच्चीसी	"	"	—
भवसिन्धु चतुर्दशी	"	"	—
ज्ञानपच्चीसी	"	"	—

तेरह काठिया	बनारसीदास	हिन्दी	—
ध्यान बत्तीसी	"	"	—
अध्यात्म बत्तीसी	"	"	—
सूक्ति पृष्ठावली	"	"	—

मधु मालती कथा—

प्रथम—बरवीर चित नया वर पाउं, संकर पूत गणपत मनाऊं ।

चातुर हेत सहत रिभाउ, सरस मालती मनोहर गाऊं ॥ १ ॥

लीलावती ललित ऐक देसा, चन्द्रसेन जिहा सुख नरेसा ।

सुभग यामिनी हो गमन प्रवेसा, मान् भंडय रचो मदेसा ॥ २ ॥

वसहुपुर नगर जोजन चार, चौरासी कोहटा चोवार ।

अति विदिय दीसे नरनार मान्, तिलक पूत मभार ॥ ३ ॥

मध्य भाग—चंभावती निपुत मलिन्या, ताको कवर नाम जसु चंदा ।

वरस बीस भाईस मैं सोई, तास पटंतर अवर न कोई ॥

जास संय ग्रह कया सुन्दर, वरस अठारह माहि पुलंदर ।

रूपरेख तसु नाम सोई, जा देखे सर नर मन सोई ॥ ४५ ॥

अन्तिम पाठ—हम हैं काम अंन अवतारी, इहै कछै कही सोनी की न्यारी ।

ऐसे कही मधु नृप सुमभायो, राजा सुनत कहौत सुख पायो ॥

राज पाठ मधुक सब दीनों, चन्द्रसेन राजा तप सीनों ।

राजसिप्रिय बोहत होई, उनकी कथा लख रही कोई ॥ ८६३ ॥

दोहा—कायथ नैगमा कूल अहै, नासा सुत भए राम ।

तनय चतुर्भुज तास के, कथा प्रकासी ताम ॥ ८६३ ॥

अलख बधू दीठ दई, काम प्रबंध प्रकास ।

कवियन हुं कर जोर करि, कहत चतुर्भुज दास ॥ ८६४ ॥

काम प्रबंध प्रकास पुनी, मधु मालती विलास ।

प्रदुमनी का लाला इहै, कहत चतुर्भुज दास ॥ ८६५ ॥

बनासवति में अंबकल, रस मैं एक रसंत ।

कथा मध्य मधु मालती पट रति मधि बसंत ॥ ८६६ ॥

लता मध्या पवंम लता, सो अवन में अवनसार ।

कथा मैं मधु मालती, आभूषण मैं हार ॥ ८६७ ॥

राजनीत कीया मैं माखी, पंचाख्यान बुच ईहां भाषी ।
 चरना ऐका चातुरी बनायी, थोरी थोरी सबहु आई ॥ ८६८ ॥
 पुनि बसंत राज रस गावो, धर्म ईश्वर का मद भावो ।
 ताका ऐह त्रिजाबसतारो, रसिकनि रसक अवन सुखकारी ॥ ८६९ ॥
 रसिक होग सो रस कूं चाहै, अन्वात्म आत्म अवगाहे ।
 चातुर पुरष होई है जोई, जेदे कल भा समझ सोई ॥ ८७० ॥
 किसन देव को कुंवर कहावै, प्रदुभन काम अंस मधु भावै ।
 पुत्र कलच सब सुख पावै, दुख दाखिद रोग नहीं आवै ॥ ८७१ ॥

दीक्षा - राजा पढ़ै ही राज नीत, मित्र पढ़ै ताही वधु ।

कामो काम विलास रस, ग्यानी ज्ञान सरूप ॥ ८७२ ॥
 संपूर्ण मधु मालती, कलस भगो संपूर्ण ।
 सुरता वक्ता सवन कूं, सुख दायक दुख दूर ॥ ८७४ ॥
 कैसर के पति सामजी, तीण उपगार माहाराजै ।
 कनक बदनी कासनी, तैं पारमी मै आजै ॥ ८७५ ॥

॥ इति श्री मधु मालती की कथा संपूर्ण ॥

काश्या बुदी ७ मंगलवार संवत् १८२५ का दसकत मन्दराम सेठी का ।

१७५. गुटका नं० ७४— पत्र संख्या—३४ । साइज—७×४ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—सं० १८७३

पूर्ण ।

विशेष — मन्ददास कृत मानसञ्जरी है । पत्र संख्या—२८६ है ।

प्रारम्भ—तं नमामि पद्म परम शुभ कृष्ण कमल दल नैन ।
 जग कारण, कुरुगार्थव गोकुल जाकौ औन ॥
 नाम रूप गुण भेद लहि प्रगटत सब ही वीर ।
 ता दिन तहां ऊ आन कहु कहे सु अति वड वीर ॥

अन्तिम पाठ—

जुगल नाम—जुगल जुगल जुग द्वेय द्वय उभय मिथुन विविचीप ।
 जुगल किशोर सदा बसहु मन्ददास के द्वीप ॥८७॥

रस नाम—सरब्ज मधु पुनि पुष्प रस कृष्ण सार मकरंभ ।
 रस के जाननहार जन सुनियै है आनंद ॥८८॥

माला नाम—मालाष्टक ज गुणवती यह छ नान की दाम ।

जो नर कंठ करे सुनै है हे छवि को दाम ॥२८॥

इति श्री मानमंजरी नंददास कृत संपूर्ण । संवत् १८७३ मंगसिर बुदी १३ दीतवार ।

५७६. गुटका नं० ७५—पत्र संख्या—६० ; साइज—६×४½ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—X । पूर्ण ।
अशुद्ध ।

विशेष—साधु कवि की रचनाओं का संग्रह है । चरणदास को गुरु के रूप में कितने ही स्थानों पर स्मरण किया है । कोई उल्लेखनीय सामग्री नहीं है । प्रति अशुद्ध है ।

५७७. गुटका नं० ७६—पत्र संख्या—२४ से १८६ । साइज—४×६ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—X ।
अपूर्ण ।

विशेष—विविध पाठों का संग्रह है ।

५७८. गुटका नं० ७७—पत्र संख्या—६२ । साइज—६×६ इंच । भाषा—हिन्दी संस्कृत । लेखन काल—X ।
पूर्ण ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

दस अक्षरा, मुनि अक्षर लेता के पांच अक्षर, मनुष्य राशि भेद, सुमेरु गिरि प्रमाण, जम्बू दीपका वर्णन, शील प्रमाद के भेद, जीव का भेद, अटार्ह द्वीप में मनुष्य राशि, अष्ट कर्म प्रकृति, विवाह विधि आदि ।

५७९. गुटका नं० ७८—पत्र संख्या—१८ से २०४ । साइज—४×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
संग्रह । लेखन काल—सं० १७२४ कायुण्य बुदी ६ । अपूर्ण ।

(१) श्री भू चरित—हिन्दी । लेखन काल—सं० १७२५ कायुण्य बुदी ६ ।

अन्तिम पाठ—राजा प्रजा पुत्र समाना, संकट दुखी न दीसै आना ।

राजनीति राजा छु बीचारै, स्वामी धरम प्रजापति पालै ॥

चक्र सुदर्शन रक्ष्या करै, आग्या मंग करत सिर हरै ।

ताते सबको आग्या करी, चक्र सुदर्शन की डर मारी ॥१॥

ऐसी विधि करै धू राख, हरि किया सरै सब काजू ।

घर में बन, वन में घर भाई, अंतर नाही राम दुहाई ॥२॥

पानी तेल मिलै पुनि न्यारी, यो भू बरतौ राम पीयारी ।

परधनि पत्र मिलै नहीं पानी, येहि विधि बरतै दास की शानी ॥३॥

उलटी मोल चलै जल भाई, यो हरि भगत मिलन हरि जाहि ।

जैसे सीप समद तै न्यासी, खाति बुंद वर्षै सुख भासी ॥७॥
 जैसे चंद कमोद निभावै, जल में भसै भर प्रेम बढावै ।
 जैसे कंचल नभ तै न्यासी, ऐसी विधि धू पायासी ॥८॥
 जैसे कनिक न काई लागै, अग्नि दीप्ता तै जाती जावै ।
 सुत लपेटि अग्नि में दीजै, मोहरै की सरया नही जावै ॥९॥
 धू चरित जे को धुनै, मन बध कम चित्त लावै ।
 हरिपुरवै सक कामना, भक्ति मुक्ति कल पावै ॥१०॥
 समुधा सब कामद कल, साखा लिखु बनावै ।
 उदधि दीति नति कीजिये, तूहै नान समावै ॥
 मैं जानी मति आपनी, कलिप कही कछु बात ।
 सकसल मुक्त अपराध की, जन गोपाल पित मात ॥११॥

इति श्री धू चरित संपूर्ण समाप्त ॥

(२) भक्ति भावती—(भक्तिभाव)

हिन्दी

प्रारम्भ—सब संतन की नाथ माथा, जा प्रसाद तै भयो सुनाथा ।
 भव जल पार गयो की चाहै, तो संत वरन रज सीस चढावै ॥१॥
 जे नारायण अंतरजामी, सब की बुधि प्रकासक स्वामी ।
 तुम बाणी मैं प्रगटो धाई, निर्वर्ति परबति देह भलाई ॥२॥

बोधा—परम हुंस आस्तादित चरन, ... केवल मकरंद ।
 नमो समानंद नमो धनतानंद ॥३॥
 जे प्रवृत्ति को दुख नहि जानै, तो विवृति सौ क्यों मनमानै ।
 कलि आगनि भगवै विस्तार, पुख कही संचार ॥४॥

अन्तिम—भगति भावती भाकी नरमा, दुख खंजन सक सुख विसरमा ।
 सीसै सुथैर करै विचारा, तौ कलि कुसमल को इहै ख्यौ करा ॥ २७५ ॥
 अलप सुख नही जायै केला, सु सुख पावै चाहै जेला ॥

बोधा—जो बहू श्रुत तै मति लहै भू पंडित बुझै होई ।
 सो सक याही भै लहै जै निकै सोयै कोय ॥ २७६ ॥

चौपद—ललिका कछु बस्त जो पावै, ले मातंग आगे गुरुरावै ।
 भली बुरी नै लेहि पिछानी, यो तुम आगै भै यह आनी ॥ २७७ ॥
 भव बहैबो कहा तै कहै, अपणौ फल ले आगै धरई ।
 जैसी किरण तुम मोखु कीन्ही, तैसी मैं बाणी कहि दीन्ही ।

संवत् सौख्यसै नव सालैं, मथुरापुरी केसवा आलैं ।
 असुन पहल ग्यारसि रविवारी, तहा षट पहर माहि विस्तारी ॥ २७४ ॥
 करि जागरणै प्रकमा दीनी, तह आभानै समरधन कीनी ।
 भगत समेत संतोखे सीई, ज्यौं तो तद वचन सुन कै सुख होई ॥ २७५ ॥

दोहा—नमहं राम रामनंदा, नमहं अनंतानंद ।
 चरन कंवल रज सिर धरै, पर पनगै सानंद ॥ २७६ ॥

॥ इति श्री भगति भावती ग्रंथ समाप्ता ॥

(३) राजा चंद की कथा—पं० फूरो । पत्र संख्या—१३१-२०४ । भाषा—हिन्दी । रचना काल—सं० १६६३ फागुण सुदी २ ।

विशेष—राजा चंद आभानेरी की कथा है । चन्दन भक्त्यगिरी कथा भी इसका दूसरा नाम है ।

५८०. गुटका नं० ७६—पत्र संख्या—२-२२ । साइज—६×४ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—X ।
 अपूर्ण ।

विशेष—चरनदास कृत सतगुरु महिमा है—प्रथम व अन्तिम पत्र नहीं हैं ।

प्रारम्भ—..... ।

सुख देव जी पुरन विसवा वीस ।
 परम हंस तारन तरन गुरु देवन गुरु देवा ।
 अनमै बानी दीजिय सहजो पावे भेवा ।
 नमो नमो गुरु देवन देवा ॥

५८१. गुटका नं० ८०—पत्र संख्या—३० । साइज—७×४ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—X ।
 पूर्ण ।

विशेष—तीर्थंकरों के भ्राता, पिता, गणधर, वंश नाम आदि का परिचय, नन्दीश्वर पूजा तथा जीव आदि के भेदों का वर्णन किया गया है ।

५८२. गुटका नं० ८१—पत्र संख्या—२४ । साइज—८×४ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—X । पूर्ण ।

विशेष—पंचमंगल, सिद्धपूजा—सौलह कारण, दशलक्षण, पंचमेरु पूजा आदि का संग्रह है ।

५८३. गुटका नं० ८२—पत्र संख्या—१०२ । साइज—६×४ इंच । भाषा—प्राकृत-हिन्दी । लेखनकाल—X ।
 अपूर्ण ।

विशेष—अचार्य कुन्दकुन्द कृत रत्नसारा गाथा मात्र है, अहबल विचार आदि पाठों का संग्रह है ।

अपूर्ण ।

५८४. गुटका नं० ८३—पत्र संख्या—२२-६७ । साइज—६×४ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—X ।

विशेष—नारायण लाला के हिन्दी के २५२ पद्य हैं लेकिन वे कहीं २ अधूरे हैं ।

अपूर्ण ।

५८५. गुटका नं० ८४—पत्र संख्या—४० । साइज—७×४½ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—X ।

विशेष—गुटके में कोई उल्लेखनीय पाठ नहीं है ।

५८६. गुटका नं० ८५—पत्र संख्या—८२ । साइज—६×४ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—X । पूर्ण ।

विशेष—शीलकथा—(भारतमल्ल) लखनौ तथा समाधिभरण भाषा का संग्रह है ।

५८७. गुटका नं० ८६—पत्र संख्या—२२ । साइज—६×४ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—X । अधूरे ।

विशेष—विभिन्न चक्र दिये हुए हैं जो निम्न २ कार्य पूर्या से सम्बन्धित हैं । आगे उनके अलग २ फल लखे हुए हैं ।

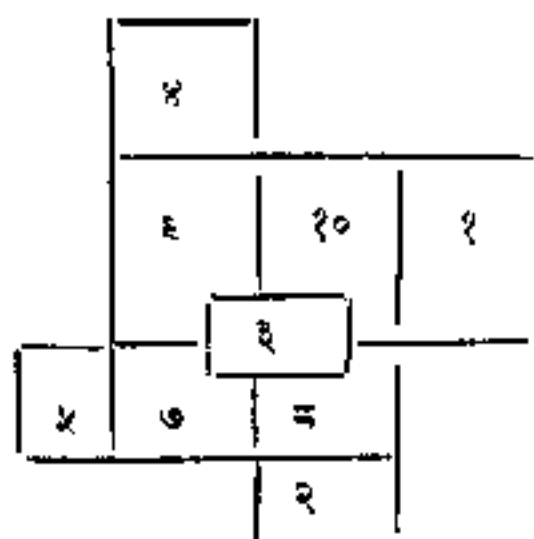
५८८. गुटका नं० ८७—पत्र संख्या—२० । साइज—६½×४½ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—X ।

अपूर्ण ।

विशेष—मोह मर्दन कथा है । रचना काल—सं० १७६३ कार्तिक कुदी १२ है । जीर्ण तथा अशुद्ध प्रति है ।

५८९. गुटका नं० ८८—पत्र संख्या—१४६ । साइज—७×५ इंच । भाषा—संस्कृत-हिन्दी । लेखन काल—X ।

विशेष—भक्तभारस्तोत्र, सिद्धयिष्टस्तोत्र, पार्श्वनाथस्तोत्र (पञ्चम), विष्णुपञ्चस्तोत्र, परमज्योतिस्तोत्र, आयुर्वेदिक नुसखे, तन्त्रय पूजा आदि पाठों का संग्रह है । बीस खंभे भी हैं जो निम्न प्रकार हैं—



५६०. गुटका नं० ८६—पत्र संख्या—६१ से १७१ । साइज—५×३ इंच । भाषा—संस्कृत । लेखन काल—५ । अपूर्ण ।

विशेष—ब्रह्मालाभालिनीस्तोत्र, चक्रेश्वरीस्तोत्र, अश्वनाथस्तोत्र, चित्रपालस्तोत्र, परमानन्दस्तोत्र, लक्ष्मी-स्तोत्र, चैतन्यस्तोत्र, शक्तिकरस्तोत्र-(पाकतो), चिन्तामणिस्तोत्र, पुण्डरीकस्तोत्र, मयङ्गस्तोत्र, उपसर्गहरस्तोत्र, सामायिक पाठ, जिन सहस्र नाम स्तोत्र आदि स्तोत्रों का संग्रह है ।

५६१. गुटका नं० ६०—पत्र संख्या—६८ । साइज—५×३ इंच । भाषा—संस्कृत । लेखन काल—सं० १८६६ । पूर्ण ।

विशेष—निम्न संग्रह है—

म्हण, सकलीकरणविधान, पुण्याहवाचन और याग मंडल ।

५६२. गुटका नं० ६१—पत्र संख्या—६० । साइज—५×४ इंच । भाषा—संस्कृत । लेखन काल—५ । पूर्ण ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५६३. गुटका नं० ६२—पत्र संख्या—७१ । साइज—५×४ इंच । भाषा—संस्कृत । लेखन काल—५ । अपूर्ण ।

विशेष—अधिकांशतः नन्ददास के हिन्दी पदों का संग्रह है । कुछ पद सूरदास के भी हैं । राधाकृष्ण से संबंधित पद हैं । पदों की संख्या १५० से अधिक है ।

५६४. गुटका नं० ६३—पत्र संख्या—१६१ । साइज—५×४ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—सं० १७६३ वैशाख सुदी २ । पूर्ण ।

विशेष—नेमीश्वरदास, श्रीपालदास (ब्रह्मरायमल्ल) हैं ।

५६५. गुटका नं० ६४—पत्र संख्या—२३ से ३४ । साइज—५½×७ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—५ । अपूर्ण ।

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है ।

५६६. गुटका नं० ६५—पत्र संख्या—१४० । साइज—४½×६½ इंच । भाषा—संस्कृत । लेखन काल—५ । अपूर्ण ।

विशेष—ज्योतिष शास्त्र से संबंध रखने वाले पाठ हैं ।

५६७. गुटका नं० ६६—पत्र संख्या—२६ । साइज—५×४ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—५ । अपूर्ण ।

विशेष—पदों का संग्रह है ।

५६८. , गुटका नं० ६७—पत्र संख्या—२७६ । साइज—७×४ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—X ।
अपूर्ण एवं जीर्ण ।

विशेष — २ गुटकों का सम्मिश्रण है । मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है ।

विषय—सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
(१) शालिमद्र चौपई	जिनराज सूरि	हिन्दी	१० का० सं० १६७=

आसोज सुदी ६

प्रारम्भ—सासण नाथक समरियइ, बहमान जिनचंद ।

अभिन्न विघन दुरइ, हरइ, आपइ परमानंद ॥१॥

अन्तिम पाठ—साधु चरित कहवा मन तरसइ, तिणए भास्यउ हरसइजी ।

सोखइ सय अठितरि वरसइ, 'आमू' बदि छठि दिवसइजी ॥

सा० जिनसिंह सूरि मतिसारइ भविष्य नइ' उपगारइजी ।

श्री जिनराज वचन अतुसारइ, चरित कछउ रु विचारइजी ॥

वणि परिसाधु तथा गुण गावइ, जे भविष्य मन आवइजी ।

अलिप विघन तसु दूरि पुलावइ मन बंछित सुख पावइजी ॥१०॥

ए संबंध भविक जे मणिस्थइ, एक मना सांभलिस्थइजी ।

दुख दुह नतस दूरि गयावस्थइ, मनि बंछित कल लहिस्यइजी ॥११॥

(२) शीतलनाथ स्तवन	धनराजजी के शिष्य हरखचंद	हिन्दी	१० का० सं० १७१६
			कार्तिक सुदी १६
(३) पार्श्व स्तोत्र	"	"	१० का० सं० १७१४
			कार्तिक सुदी ६
(४) नेमिनाथ स्तोत्र	—	"	१० का० सं० १७१३
५) पदसंग्रह	"	"	१० का० सं० १७१८
(६) नेमिनाथ स्तवन	धनराज	"	१० का० सं० १७४८
(७) चिन्तामणि जन्मोत्पत्ति	—	"	—
जन्मोत्सव स्तवधाय			
(८) गणनाथक चैमकरण जन्मोत्पत्ति	धर्मसिंह सूरि	"	१० का० सं० १७६६
			माघ सुदी
(९) प्रणयसार कथा	(प्रणयकीर्ति)	"	१० का० सं० १७६६

प्रारम्भ—नाभि राय चंदन नमु, सांति नेमि जिन पाशि ।

भद्रावीर चउवीसमउं प्रणम्या पुरइ आस ॥१॥

श्री गौतम गणधर सदा, लीखा लब्धि निधान ।

समरी सह गुर सरस्वती, वेपिष वधारइ वान ॥२॥

अन्तिम पाठ—स्वर्तर गध मति महिय विरजिउ, युग प्रधान जिनवन्द ।

आचारज मिहमागिर मुनि वरूप, श्री जिनसिंह गुरंद ॥२०॥

हर्षचंद्र गणि हर्ष हितकर, वाचक हंस प्रमोद ।

तास सीस पुन्यकीरत इस भाधइ, मन धर अणक प्रमोद ॥१॥

संवत् सोलह सइ द्वादसि समइ विजय दसमी गुरुवार ।

सांगविर नगर रलिया मणउ, पभसयउ एइ विचार ॥२॥

पञ्चप्रभ जिन सुपसाउलउ, दोष दोह गत जा दिन ।

उदय अद्वी मणउ, सुख संपद संतान ॥३॥

एह चरित्र भवियन जे सांभलइ दुख दोह गतसुं जाइ दीन ।

उदय अद्वकउ न तरुवइ, तसंधन बनि धयाइ ॥४॥

इति अष्ट प्रवचन माता उपर पुण्यसार कथा संपूर्ण ।

(१०) सीमंधर स्वामी जिन स्तुति

—

हिन्दी

विशेष

(११) छः जीव कथा

—

”

—

विशेष— ६५ पद्य के आगे = पत्र किसी के द्वारा फाड़ दिए गये हैं ।

(१२) आवक भूय (प्रतिक्रमण)

—

प्राकृत

—

(१३) अतिचार वर्णन

—

”

—

(१४) नेम गीत

लब्धिविजय

हिन्दी

—

(१५) स्तवन

—

”

—

(१६) सीमंधर स्तवन

गणिलाल चंद

”

—

(१७) चउसरण परिकरण

—

”

—

(१८) भक्तप्रस्तोत्र

—

”

—

(१९) नवतत्त्व

—

”

—

(२०) मेमिराजुलस्तवन

जिनहर्ष

”

—

(२१) नेम राजुल गीत

—

”

—

(२२) सुभद्रासती सज्जाय

—

”

—

(२३) विजय सेठ विजया सेठाणी सज्जाय

सूरिहर्षकीर्ति

”

—

(२४) पद—अरि अरिहंतनी चाकरी

जिनवल्लभ

”

—

(२४) सञ्ज्ञाय	—
(२६) पंचाख्यान पंचतंत्र)	कवि निर्मलदास

”	ले० क० सं० १७८१
”	—

प्रारम्भ—प्रथम जपु अरिहंत, अंग द्वादश जु भावधर ।
 गणधर गुरु संजुत, नमो प्रति गणधर तिसतर ॥
 नमो गणेश सारदा श्रवर गुरु गीतम स्वामी ।
 तीर्थहर चौबीस सकल मुनि भए शिवगामी ॥
 नमो न्याति श्रावक सकल रस हाय भिल भविक सम ।
 तुम्हरे प्रसाद यह उच्चरो पंचतंत्र की कथा अब ॥
 पंचख्यान बखानि हो न्याय नीति संसार ।
 अल्प बुद्धि भाषा रचुं करुं ग्रन्थ विस्तार ॥१॥

अन्तिम पाठ—रामं नाम निज हीरदै सरै, मुख तै मिष्ट वचन उचरै ।
 सब जिय, मुख सौ अपनै धान, सदा कहै निज मन में ग्यान ।

दोहा—सम निज धानक मुख लहै, सब मुख मुमरै राम ।
 सहस किरत भाषा कियो श्रावक निरमल नाम ॥

इति श्री पंचाख्यान श्रावक निरमल दास कृत भाषा संपूर्ण । लेखन काल सं० १७५४ जेठ सुदी ६ । अंश ५१ पत्रों में है । तथा ११४१ पद्य हैं ।

(२७) सात व्यसन सिञ्ज्ञाय	शेख कुराल	हिन्दी	—
(२८) ज्ञान पञ्चीसी	—	”	—
(२९) तमाखु गीत	सहसकर्ण	”	—
(३०) नल दमयन्ती चौपड़े	समयसुन्दर	”	१० का० सं० १७२१ पद्य सं० १०
(३१) शांति नाथ स्तवन	केशव	”	—
३१ क पार्श्वनाथ स्तवन	—	”	—
(३२) महावीर स्तवन	—	”	—
(३३) राजमती नो बिहूँ	—	”	—
(३४) नवकाडी नो सिञ्ज्ञाय	—	”	—
(३५) शीलरासो	विजयदेव सूरि	”	पद्य सं० ७६
(३६) दाम शील चौपड़े	जिनदत्त सूरि	”	ले० का० सं० १७४२
(३७) प्रमादी गीत	गोपालदास	”	२५ पद्य

(३८) अन्त उपदेश गीत	समय सुन्दर	"	—
(३९) यादुरासो	गोपालदास	"	—
(४०) रात्रिमोजन सञ्भाव	—	"	—
(४१) तमाखु गीत	मुक्ति आर्यद	"	—
(४२) शांति नाथ स्तवन	गुण सागर	"	—
(४३) पंच सहेली	खीइल	"	१० का० सं० १५७५
			फागुण सुदी १५
(४४) भाति छत्तीसी	गशःकीर्ति	"	१० का० सं० १६८८
(४५) यादवरासो	पुण्य रतन गणि	"	ले० का० सं० १७४३
(४६) सिंहासन वत्तीसी	—	"	ले० का० सं० १६३६
(४७) नेमिराजमतिगीत	—	"	—
(४८) मुनिगीत	—	"	—
(४९) भास	भनहरथ	"	१० का० सं० १७३६
(५०) सिंघासन वत्तीसी	हरि कलश	"	१० का० सं० १६३२
			आसोज बुदी २

५६६. गुटका नं० ६८—पत्र संख्या-१७४। साक्ष-६३५७ इत्य। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-
सं० १७२८ वैशाख सुदी ६। पूर्ण।

विशेष—पर्वतधर्मीयां कृत ससाधितं की बाल बोध टीका है। प्रति जीर्ण है।

६००. गुटका नं० ६६—पत्र संख्या-१४६। साक्ष-१०५२ इत्य। भाषा-संस्कृत। लेखन काल-
सं० १७६७ वैशाख बुदी ३। पूर्ण।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है:—

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
जिनसहस्रस्तवन	आशाधर	संस्कृत	—
नवग्रहपूजाविधान	—	"	—
अभिमंजलस्तोत्र	—	"	—
भूपाल चौबीसी	भूपाल कवि	"	—
आक्षिप्तवार कथा	माठ कवि	हिन्दी	१६ पद्य
सामायिक पाठ टीका सहित	जयचंदजी छाबड़ा	"	—

६०१. गुटका नं० १००—पत्र संख्या—२८ । साइज—१०×७ इंच । भाषा—प्राकृत—हिन्दी । लेखन काल—सं० १७०६ वैशाख वृद्धी ११ । पूर्ण ।

विशेष—गुणचंद्र सूरि के शिष्य ज्ञान कल्याण कीर्ति ने प्रतिलिपि की थी । विभंगी का वर्णन है ।

६०२. गुटका नं० १०१—पत्र संख्या—१२२ । साइज—६×४ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—X । अपूर्ण ।

विशेष—लक्ष्मीदास कृत अधिकांश चरित्र हैं । भाषा—हिन्दी है । कुल पद्यों की संख्या १६७५ है, अन्तिम के कुछ पद्य नहीं हैं । अधिकांश चरित्र के मूलकर्त्ता भ० शुभचन्द्र हैं ।

६०३. गुटका नं० १०२—पत्र संख्या—८० । साइज—१०×५½ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—सं० १६४८ । पूर्ण ।

विषय—सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
५६	संघपति राह दूगर	हिन्दी	—
	श्री जेय सासण सकल ग्रह गुर बिरे दे राउर भाव ।		
५७	—	”	—
	कुशल करि कुशल करि कुशल सुनिद गुरु ।		
५८	कालक सूरि	”	—
	जय जय भदा जय जय नदा वनिता वचन बिकासदरे ।		
सखिद्वार गीत	कवि बीर	”	—
	बीर जी बगये बिस्वीया, अधिकांश मन माहि सोई ।		
गीत	—	”	—
	करि शृंगार पहिर हार तजि विकार कामनी ।		
जड़तपद भेलि	कनकसोम	”	४६ पद्य हैं ।

१० का० सं० १६२५, ले० का० सं० १६४८ भादवा वृद्धी ८ ।

प्रास्थ—सस्सति सामधि वीनलु, मुभ दे अमृत वाधि ।

मूलषकी खरतरतथा, कस्सिू विरद बखान ॥१॥

आवक आनी मिलि सुणउ मनि भरि अति आणंद ।

चिति विष वादन को भरउ, साचउ कहर सुनिद ॥२॥

सोलह पचीसइ समइ, वाचक दया सुनीस ।

चउभासि आया आगरइ, बहुयारि करि सुजगीस ॥३॥

रत्नचंद्र बहराणि गणि, पंडित साधु कीरति ।

हरिरंग गुण आगलउ झानादेवकी रति ॥४॥

अन्तिम पाठ—दया अमर भाणिक गुरु सीस, साधु कीरति लहीय जगीस ।

मुनि कनक सोम इम आखइ चउ बिह श्री संध की साखइ ॥४६॥

इति श्री जइत पद बेलि । संवत् १६४८ वर्षे अषाढ जुदी अष्टमी ।

(५) चूनडी	साधुकीर्ति	हिन्दी	—
(भाउजपुरि सोहामण्ड, गढ मढ भन्दिर वाई हो)			
(७) मंजरी गीत	जिनचन्द्र सूरि	"	—
आली भारउ उदिरउ, नित खेलइ आलि ।			
(८) बइराभी गीत	—	"	—
(९) शील गीत	भारवदास	"	—
(१०) पद	—	"	—
(११) दानशीलतपभावना	—	हिन्दी	१४ पथ है ।
सरसति स्वामिणि वीनधुं वरदेई सारदा मोहि हो ।			
(१२) गोरी काली वाद	—	"	—
(१३) श्रावक अतिक्रमण सूत्र	—	प्राकृत	—
(१४) पार्श्वनाथ नमस्कार	अभयदेव	"	—
(१५) रागरागिनी भेद, संगीत भेद	—	हिन्दी	—
(१६) नेमिनाथ स्तवन	—	"	—

भारम्भ — श्री सहगुरना पाथ नमो, जिणवाणी पणमेवि ।

नय भव नेमीसर तथा संधेपह पमयेसु ।

सील सिरोमणि गुण निलउ, जादव कुल सिणगार ।

सुणता तेह तथा उचरी, पामीजइ भवपार ॥५॥

अन्त—इय नेमि जिण जगदीस गुरु, पाम सिव लखी वरो ।

हरिबंस खीर समुद्र समिहर सामि सुह संपह करो ।

उदाम काम कुरंग केसरि, सिवादेवि नंदणज ॥

मह देहि नीय पइ कमल सेवा, सयल जण आणंदगो ॥४३॥

(१७) वेताल पच्चीसी	वेतालदास	हिन्दी	

प्रारम्भ—सरसति सुललित वनभ विलास, आपउ सेवक पुरइ आरा ।
तुम्ह पसाइ हुअइ वृद्धि विशाल, कविता रसके एवउ रसाल ।
भहियल मालव देस बिस्वात, बरगी गोक बिसन् नही सान ।
उज्जैणी नगरी सु विसाल, राज करइ विक्रम भूपाल ॥२॥

अन्तिम—प्रगट हुई सर्व सिधि रिधि बहु बुधि बरेसर ।
परउ काज तुम्हि करउ राज, जाम तपइ दिशेसर ॥
इंद्रइ दीधउ मान बली, बरदान इसी परि ।
ए प्रबंध तुम्ह तणउ प्रसिधि होसी जम मीतरि ॥
रंजइ राउ सुपसाउ लहि विक्रम इत आच्यउ धरहि ।
उज्जैण नगरी उक्कव हुय हरण करी अति विस्तरिहि ॥३६७॥
राज रिधि सब सिधि सुखस विस्तरइ महीतलि ।
जरा मरण अवहरण, जन्म लधमइ उत्तिम कुलि ॥
धरम धराउ धरण करण सुख अहि निसि ।
रमय रूपि रंभा समाण, तिजि भाण हुउ बसि ॥
चिहु पदहि प्रथम अचर करी, जास नाम अछइ प्रसिद्धि ।
तिथि कही कथा पंच बीसए सरस बावउ विबुध ॥३६७॥

इति बेतालपचीसी चउपई समाप्त ।

(१८) विक्रमप्रबन्ध रास

विनयसमुद्र

हिन्दी

१७ का० सं० ११=दे

३६४ पद्य हैं ।

प्रारम्भ—देव सरसति २ प्रथम पणवेवि, वीणा पुस्तक धारिणी ।
चंद्र बिजसि सु प्रसंसि बल्लइ कासमीरपुर वासिणी ॥
देइ नाण अनाय पिल्लइ कवियणनी माडली दिउ मुभ बुधि विशाल ।
जिम विक्रम राजा तणउ कहउं प्रबन्ध रसाल ॥१॥

मध्य भाग—विक्रमा दत्त तेज आदित्य बोलइ वचन करइ ते सत्य ।
बलि मागइ मीजउ आदेस खंस नगरी करि बेग प्रवेश ॥२४२॥
श्री जयकर्ण राय मेघरे श्रीजीभि चडि साहस करे
पेटी आगि बेगि तिहा जाइ, राजा आलु करि समदाइ ॥२४३॥

अन्तिम भाग—संवत पनरह सई चासीयइ, ए चरित्र निसुणी हरि सीयइ ।
साहसीक जे होइ निसंकि, कायर कंवइ जे बलि रंकि ।

श्री उवणुसगळ गण वर सूरि, चरया करण गुण किरण मयूर ।
 रयण प्रणु गुणगण भूरि, तसु अठुकमि जंपइ सिद्धसूरि ॥६७॥
 तेह नइ वाचक हर्ष समुद्र तसु असु उजल षीर समुद्र ।
 तसु विनये विन या वुद्धि एह, रच्यु प्रबंधि निरवि तणेह ।
 पंच डंड नामा सुचिरिय, देखी वेहनउ आवि विचित्र ।
 तिथि विनोद चउपई रसाल, कीधी सुणता सुख रसाल ॥४६६॥

(१६) विद्याविलास चउपई आभासुंदर

हिन्दी ३६४ पद्य हैं ।

रचना काल सं० १५१६

प्रारम्भ—गीथम गणहर पाय नमी सरसति हियह धरेवि ।

विद्या विलास नरवइ तणउ, चरिय मणु संखेवि ॥१॥
 जिम जिम संभाखियइ श्रवणि पुण्य पवित्र चरित्र ।
 तिम तिम परमाणंद रस अहनिमि विससइ चित्त ॥२॥
 अण कण कचण सुयण जण राखिम भोग विलास ।
 मन वंजित सुख संपजइ जसु हुय पुण्य प्रकाश ॥३॥

चउपई—पुण्य पसाई पाम्यउ राज, पुण्य प्रमाणि चढ्या सविकाज ।

अन धन विद्या विलासहचरी, तेहिय निसणउ आदर करी ॥४॥

मध्य भाग—कमलवती पुत्री तणउ पाणि अइथा करंत ।

तउमु तउ नरवइ सुणउ वाचा अरणहुंत ॥६८॥

अन्तिम पाठ—इण परि पूरठ पाली आउ, देवलोकि पहुतउ नरराउ ।

खरतर गळि जिन वरदन सूरि, तासु सीस बहु आणंद पूरि ॥
 श्री आभासुंदर वसु वज्झाय, नव रस किङ्क प्रबध सुमाव ।
 संचत् पनरह सोल दरसेमि सध अणियुविय सुरम्भ ॥
 विद्या विलास नरिद चरिस, अविद्य लोय एह पविस ।
 जे नर पढइ सुखइ सासलइ, पुण्य प्रमात्र मनोरथ फलइ ॥६६७॥
 इति श्री विद्या विलास चउपई ।

(२०) साठि संवत्सरी

हिन्दी

सं० १६४८ से सं० १६६० का वर्णन है । विषय—ज्योतिष ।

६०४. गुटका नं० १०३—पत्र संख्या—७५ । साहज—७५५ इय । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—X । पूर्ण

विशेष—कमों की १४८ प्रकृतियों तथा चौबीस दंडकों का वर्णन है ।

६०५. गुटका नं० १०४ - पत्र संख्या-३४ । साइज-८×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-५ । पूर्ण

विशेष—सकलीकरणविधान, नहवनविधि, तथा पूजा संग्रह है ।

६०६. गुटका नं० १०५—पत्र संख्या-१२० । साइज-५ $\frac{1}{2}$ ×५ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी संस्कृत । लेखन काल-५ । पूर्ण ।

विशेष—नित्य नियम पूजायें आदि हैं ।

६०७. गुटका नं० १०६—पत्र संख्या-२१८ । साइज-५×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-५ । पूर्ण ।

विशेष—पूजा संग्रह है ।

६०८. गुटका नं० १०७—पत्र संख्या-२५५ । साइज-५ $\frac{1}{2}$ ×६ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन काल-५ । पूर्ण ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

६०९. गुटका नं० १०८—पत्र संख्या-२०० । साइज-६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी ।

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
(१) यशोधर चरित्र	खुशालचंद	हिन्दी	१० का० सं० १७७१ पृष्ठ ५६६
(२) सप्तपरमस्थानकथा	"	"	— पृष्ठ सं० ८३ लेखनकाल
(३) सुकटसप्तमीव्रतकथा	"	"	सं० १८३६ पृष्ठ सं० १२
(४) मेघमालाव्रतकथा	"	"	सं० १८३० पृष्ठ ४४
(५) चन्द्रनवविंशतव्रतकथा	"	"	"
(६) लब्धिविधानव्रतकथा	"	"	"
(७) जिनपूजापुरंदरकथा	"	"	"
(८) षोडशकण्ठव्रतकथा	"	"	"
(९) पद (५)	"	"	"
(१०) रूपचंद की जम्हरी	रूपचंद	"	१८३०
(११) लुकीमावस्तोत्रभाषा	धानतराय	"	१८३१ वैशाख सुदी ३
(१२) भक्तीभरस्तोत्रभाषा	—	"	"
(१३) कल्याणमंदिरभाषा	—	"	"
(१४) शनिश्चर देव की कथा	—	"	१८७४ जेठ सुदी १५

(१५) आदित्यवार कथा

भाऊ

हिन्दी

१=७४ अषाढ सुदी ४

१६) नेमिनाथ चरित्र

अजयराज

२२

पद्य संख्या - २६४ । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । (चन) काल-सं० १७६३ अषाढ सुदी १३ । लेखन काल-
सं० १७६८ वैशाख सुदी - १ ।

प्रारम्भ — श्री जिनवर वंदो सबे, आदि अंत चवबोसै ।

ज्ञान पुंजि गुण सगरिखा, नमो त्रिभुवन का ईस ॥१॥

सामें नेमि जिणंद को बंदौ बारंवार ।

तात चरित वखाणियो, तुल्य बुधि अजसर ॥२॥

मध्य भाग — जो होइ वियोग तिहारो, निरफल हूँ जनम हमारे ।

तार्ते संजम यह तजिए संसार तणां सुख मजिए ॥

जल दिन भान जिव किम भीन, तैसे हूँ तुम थाबीन ।

तुम भाव दया की कीन्हा, सब जीव छुड़ाई जो ॥

अन्तिम भाग — अजयराज इह कीयो वखाण, राज सवाई जयभिम जगण ।

अंघावती सहरै सुम धान, जिन मन्दिर जिम देव विमाण ॥

नीर निषाण सोहै वन राई, बेलि गुलाब चमेला जाइ ।

चंपो भरवो अरै सेवति, यौ हो जाति नगना विध कीती ॥२४॥

बहु सेवा विधि सार, वरणत मोहि सामें बार ।

गढ मन्दिर बहुत अछो न जाइ, सुखिया लौग वसे अधिकाइ ॥२५॥

तार्ते जिन मन्दिर इन सार, तहां विराजै श्री नेमिकुमार ।

स्थाम मूर्ति सोभा अति घणी, ताकी वापमा जाइ न गर्णी ॥२६॥

जाकै भाग उदै सभ होइ, करि दरसन हरषै भेट सोई ।

आवै जातै सरावग धणा, काटै कर्म सबै अपणा ॥२७॥

अजयराज तहां पूजा करई, मन बच तन अति हरषै धराई ।

निति अति बंदै ते भारंवार, तारण तरण करै भक्त पार ॥२८॥

तार्का चरित कह्यो मन अपणा बुधि सारु उपजाई ।

पंडित पुरुष हंसो मति कीई, भुल नूक यामैं जो होई ॥२९॥

संवत् सतरासै जैणवै, मास असाढ पाई वर्णयो ।

तिथि तेस अंधेरी पाख, शुक्रवार शुभ अतिम दाख ॥

इति श्री नेमिनाथजी की चौपई संपूर्ण ।

वह पोथी है साह की, उड़ड़ भाल तसु नाम ।

मान महातभा लिपि करी, नगर खंवावती बाप ॥

इसके अतिरिक्त चौबीस तीर्थकर स्तुति एवं कक्का बत्तीसी आदि पाठ और हैं ।

६१०. गुटका नं० १०६—पत्र संख्या—१६४ । साइज—५ १/४ × ४ १/४ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—X ।

पूर्ण ।

विशेष—सुदर्शन रास—षष्ठ संख्या २०१ । लेखन काल—सं० १८०१ कार्तिक सुदी ८ । पूर्ण ।

इसके अतिरिक्त १० और पाठ हैं ।

६११. गुटका नं० ११०—पत्र संख्या—१२० । साइज—६ × ५ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—X । पूर्ण ।

विशेष—भिन्न मुख्य पाठों का संग्रह है ।

विषय—सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
टंडाणागीत	—	हिन्दी	—
शिवपञ्चमी	बनारसीदास	"	—
समन्तशरणस्तोत्र	—	संस्कृत	—
पंचेन्द्रियवेलि	ठक्कुरसी	हिन्दी	—
पद	सुन्दर	"	—
बत्तीसी	मनराय	"	—

अंत में बहुतसी जन्मकुंडलियां दी हुई हैं ।

६१२. गुटका नं० १११—पत्र संख्या—५ सं १०४ । साइज—६ × ४ १/४ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—X । पूर्ण ।

विषय—सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
जिनसहस्रनाम भाषा	बनारसीदास	हिन्दी	—
एकमावस्तोत्र भाषा	जगजीवन	"	—
भक्तावरस्तोत्र	हेमराज	"	—
कल्याणमन्दिरस्तोत्र	बनारसीदास	"	—
पद	दीपचंद	"	—
	सेवा में जाय सीही सफल बर्दी ।		
पद	—	"	—

मेरे तो यह चान है निति दस्तख पाठ ।

पद	कनककीर्ति	"	—
	अनगुनहु बकसी नाथ मेरो ।		
पद	धानत	"	—
	सुमरण ही में तयारी धानत प्रभु		
पद	मनराम	"	—
	अस्त्रियां आज पवित्र भई मेरी		
पद	सोभा कही न जिनवर जाय जिनवर मूरति तेरी		
इस तरह के २२ पद्य और हैं ।			
त्रेपन किया	जलपुल्ल	"	—
पंचमकाल का गण भेद	करमचंद	"	—

६१३. गुटका नं० ११२—पत्र संख्या-३० । साइज-६×४ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-सं० १=६ कार्तिक सुदी ११ । पूर्ण ।

विशेष—गुणविवेक बार नियार्था है ।

६१४. गुटका नं० ११३—पत्र संख्या-४६ । साइज-६×४ इंच । भाषा-हिन्दी संस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण ।

विशेष—संबोधपंचांगिका भाषा, बारह भावना, एवं पंचपरमेष्ठियों के मूल गुण आदि का वर्णन है ।

६१५. गुटका नं० ११४—पत्र संख्या-२४ । साइज-६×४ इंच । भाषा-हिन्दी संस्कृत । लेखन काल-× । अपूर्ण ।

विशेष—त्रेपन भाषों का वर्णन, नरकों के दोहे, सकासर आदि सामान्य पाठों का संग्रह है ।

६१६. गुटका नं० ११५—पत्र संख्या-६७ । साइज-६×५ इंच । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण ।

विशेष—नित्य नियम पूजा, चौबीसठाया चर्चा, सभायिक पाठ आदि का संग्रह है ।

६१७. गुटका नं० ११६—पत्र संख्या-३७ । साइज-६×४ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

विषय-सूची	कृती का नाम	भाषा	विशेष
जिनकुशलसूरि छंद	—	हिन्दी	—
स्तवन	जिनकुशलसूरि	"	—

गंगाष्टक	शंकराचार्य	संस्कृत	—
जिनसहस्रनाम	जिनसेनाचार्य	"	—
रंगनाथ स्तोत्र	—	"	—
गोविन्दाष्टक	शंकराचार्य	"	—

६१८. गुटका नं० ११७—पत्र संख्या—६६ । साइज—७×५½ इंच । भाषा—हिन्दी—संस्कृत । लेखन काल—X । पूर्ण । निम्न संग्रह है:—

विषय—सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
(१) पार्श्वनाथ नमस्कार	अश्वथ देव	संस्कृत	—
(२) अजितशक्ति स्तोत्र	—	"	—
(३) अजितशक्ति स्तवन	जिनवल्लभ सूरि	"	—
(४) गवक्षर स्तोत्र	—	हिन्दी	—
(५) सर्वाधिपदाधिक स्तोत्र	—	"	—
(६) जैनरत्ना स्तोत्र	—	"	—
(७) सक्तामर स्तोत्र	—	"	—
(८) कल्याणमंदिर स्तोत्र	—	"	—
(९) नमस्कार स्तोत्र	—	"	—
(१०) वसुधारा स्तोत्र	—	"	—
(११) पद्मावती चउपई	जिनप्रभसूरि	"	—
(१२) शक्र स्तवन	सिद्धिलेन दिवाकर	"	"
(१३) गीतप्रसादा	विनयप्रभ	"	१० का० सं० १४१२

६१९. गुटका नं० ११८—पत्र संख्या—२२० । साइज—६½×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—संग्रह । लेखन काल—X । अपूर्ण ।

विशेष—बीच २ में से पत्र काट लिये गये गये हैं ।

विषय—सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
(१) पीपाजी की चतुराई	—	हिन्दी	—
(२) नाग दमन कथा (कालिय नागधी संवाद)	—	हिन्दी गद्य	—
(३) महाभारत कथा	—	गद्य में ३३ अध्याय हैं	ले० का० सं० १७८१ आसोज सुदी =
(४) पद्मपुराण (उत्तर खंड)	—	"	ले० का० सं० १७८२ श्रावण सुदी ३

(५) पृथ्वीराजवैलि

पृथ्वीराज

”

३०० पद्य हैं

(कृष्ण रूकमणी वेलि)

लेखन का० १७८२ आषाढ सुदी १३ । हिन्दी गद्य टीका सहित है ।

६२०. गुटका नं० ११६—पत्र संख्या-१२ से ६६ । साइज-४ $\frac{1}{2}$ ×४ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-५ । अपूर्ण ।

विशेष—हेमराज कृत भक्तामर स्तोत्र टीका है । प्रति जीर्ण है ।

६२१. गुटका नं० १२०—पत्र संख्या-३४ । साइज-५×४ इंच । भाषा-प्राकृत-संस्कृत । लेखन काल-५ । पूर्ण एवं जीर्ण ।

विशेष—परमानन्द स्तोत्र, दर्शन पाठ, सहस्रनाम (जिनसेन), सकलौकरण तथा द्रव्य संग्रह आदि पाठों का संग्रह है ।

६२२. गुटका नं० १२१—पत्र संख्या-४० । साइज-५×४ इंच । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-५ । पूर्ण

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
रामस्तवन	—	संस्कृत	

सनत्कुमारसंहितायां नारदीयं श्रीरामस्तवराज संपूर्ण ।

आदित्यहृदय स्तोत्र	—	”	

मन्त्रियोत्तरपुराणे श्री कृष्णार्जुन संवादे ।

सप्तश्लोकी गीता	—	”	

चतुश्लोकीगीता	—	”	

कृष्णकवच	—	”	

६२३. गुटका नं० १२२—पत्र संख्या-११७ । साइज-४×४ इंच । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-५ । पूर्ण ।

विशेष—तत्त्वार्थसूत्र, देवसिद्ध पूजा, लघु चाणक्य नीति शास्त्र आदि पाठों का संग्रह है ।

६२४. गुटका नं० १२३—पत्र संख्या-६० । साइज-६×४ इंच । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-५ । पूर्ण ।

विशेष—यंत्र लिखने तथा उसके पूजने की दिनों की विधि दी हुई है ।

६२५. गुटका नं० १२४—पत्र संख्या-१२५ । साइज-६×६ इंच । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन काल-५ । पूर्ण ।

विशेष—मुख्य निम्न पाठों का संग्रह है ।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
(१) संव पञ्चीसी	—	हिन्दी	२५ पृष्ठ
चौबीस तीर्थकरों के संघों के साधुओं आदि की संख्या का वर्णन है ।			
(२) बार्देस परीषद् वर्णन	—	"	—
(३) मांगीतु गी स्तवन	अभयचन्द सूरि	"	—
(४) सामायिक पाठ	—	"	—
(५) भक्तामर स्तोत्र भाषा	हेमराज	"	—
(६) पुकीमाव स्तोत्र भाषा	—	"	—
(७) नेमजी का व्याह लो	खालचंद	"	रचना काल सं० १७४०
(नव मंगल)			भादवा सुदी ३

विशेष—अलग २ नो मंगल हैं । अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है:—

एरी इह संवत सुनहु रसालारी हां,
 एरी सतरैस अधिक चबालारी हां ।
 एरी भादु सुदि तीज उजारी री हां,
 एरी तां इह दिन गीत सुधारी रीहां जे ॥

इह गीत मंगल नेम जिनका, साहजादपुर में गाइया ।
 अभवाल गरम गोती अनक चूर कहाईया ॥
 पातिसाह बैठाठिक या च्यौरा चक वैन बाईया ।
 नौरंगस्थाह वली के वारै खाल मंगल गाइया ॥

(=) चरचा संग्रह	—	हिन्दी	—
विभिन्न चर्चाओं का संग्रह है ।			
(६) परमात्म छत्तीसी	भगवतीदास	"	रचना काल संवत् १७५०
पद संग्रह	—	"	

ब्रह्म टोडर, विजयकीर्ति, विश्वभूषण, नवलराम, जगताराम, ध्यानतराय, खुशालचंद, कनककीर्ति, लालबिनोद, आदि कवियों के हिन्दी पदों का संग्रह है ।

(१०) पंचपरमेष्ठी चरचा	—	हिन्दी	—
(११) भक्तामर स्तोत्र भाषा	—	"	—

६२६. गुटका नं० १२५—पत्र संख्या—२ से ३३५ । साइज—६×६ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—सं० १७१२ ज्येष्ठ सुदी २ । अपूर्ण ।

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
(१) शूनर्गजनम	—	हिन्दी	४२२ पद्यों
की संख्या है । प्रारम्भ के १०४ पद्य नहीं हैं । पद्य समुदाय में लिपि विकृत है । ले० सं० १७१२ जेठ सुदी २ ।			
(२) डूंगर की बावनी	पद्मनाभ	"	१० का० सं० १६४३

बावनी में ६४ पद्य हैं । कवि ने प्रारम्भ और अन्त में अपना परिचय दे रखा है प्रति अशुद्ध है । लेखन काल सं० १७१३ अषाढ जुदी २ । बावनी के प्रत्येक पद्य में डूंगर श्रीमाल की सम्बोधित किया गया है ।

(३) त्रिवेक चौपई	मन्मथलाल	"	—
(४) चेतन गीत	जिनदास	"	—
(५) मदनचूड़	बूचुराज	"	१० का० सं० १६८६
(६) झीहल की बावनी	झीहल	"	६० पद्य हैं ।
(७) नन्दु सप्तमी कथा	—	"	१० का० सं० १६४३
(८) चन्द्रशुभ के सोलह स्वप्न	मन्मथलाल	"	—
(९) पंचोगीत	झीहल	"	—
(१०) साधु बंदना	बनारसीदास	"	—
(११) जोगीरासो	जिनदास	"	—
(१२) श्रीपाल रासो	मन्मथलाल	"	अपूर्ण

इसके अतिरिक्त अन्य पाठ संग्रह भी हैं । भक्तामर स्तोत्र, पूजा, जयमाल, कल्याणमन्दिर स्तोत्र, पञ्चमंगल, मेघदूत गीत (पुरा) आदि ।

६२७. गुटका नं० १२६—पत्र संख्या-१४६ । साइज-६×४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-संग्रह । लेखन काल-४ । पूर्ण ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

६२८. गुटका नं० १२७—पत्र संख्या-२४० । साइज-६×४ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-४ । पूर्ण ।

विशेष—पूजा पाठ के अतिरिक्त निम्न पाठों का संग्रह है:—

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
(१) पंचाशुद्धत की जयमाल	बाई मेघश्री	हिन्दी	(सुधि चेतन सुशुभा घणा जीहा जीव दया मत पाली)
(२) सिद्धों की जयमाल	—	"	—
(३) गोमट की जयमाल	—	"	—

(४) मुनीश्वरों की जयमाला	जिगदास	”	—
(५) योगसार	योगचन्द्र	”	—
		गण में दोहों पर रत्न दिए हुए हैं ।	
(६) अध्यात्म सर्वैया	रूपचंद	”	—

प्रारम्भ—अनमो अभ्यास में निवास सुध चेतन को ।
 अनमो सरूप सुध बोध को प्रकाश है ॥
 अनमो अनूप उप रत्न अनंत ग्यान ।
 अनमो अनीत त्याग ग्यान सुखरास है ॥
 अनमो अपार सार आप ही को आप जानै ।
 आप ही में व्याप्त दीसै जामें जड नास है ॥
 अनुमो सरूप है सरूप निदानन्द चंद ।
 अनुमो असीत आठ कम स्यौ अकास है ॥१॥

अन्तिम पाठ—चौधे सरवांग सुधि भानै सो मिथ्याती जीव,
 स्यादवाद स्वाद बिना मूलौ मूढ मती है ।
 चौधे अति इन्द्रो ग्यान जानै नहीं सो अजान,
 वहे जगवासी जीव महा मोह रती है ॥
 चौधे धन्यो मृत्यो मानै दूह में को भेद जानै,
 दानै यो निदान कौशौ साचौ सीख सती है ।
 चार चाल्यो धारा दोइ ग्यान भेद जानै सोइ,
 तेरेहे प्रगट चौदे गथो सिध गती है ॥

इति श्री अध्यात्म रूपचंद कृत कवित्त समाप्त । अन्धा ग्रन्थ ४०१ ।

६२६. गुटका नं० १२८—पद्य संख्या—१२० । साइज—६×६ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखनकाश—X । अपूर्ण ।

विशेष—प्रारम्भ के २१ पत्र नहीं हैं ।

काल चरित्र	कवीर	हिन्दी	अपूर्ण
साखी	”	”	२३ पद्य हैं

अन्तिम पद्य—ऐसे राम कहे सब कोई, इन बातोंन तो भवतिन न होई ।

कहै कबीर सुनहु गुर देवा, दूजो जानै नाही सेवा ॥

भाखी, कबीर धनी धर्मदास की माता, सबद, रमावती, रेवता तथा अन्य पदों व पाठों का संग्रह है ।

गुटका अधिक प्राचीन नहीं है ।

६३० गुटका नं० १२६—पत्र संख्या—२ से ८ । साइज—८×५ इंच । भाषा—संस्कृत । लेखन काल—X ।

अपूर्ण ।

विशेष—संस्कृत में अभिवेक पाठ है ।

६३१. गुटका नं० १३०—पत्र संख्या—१६ । साइज—७½×५½ इंच । भाषा—संस्कृत । लेखन काल—X ।

अपूर्ण ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है ।

६३२. गुटका नं० १३१—पत्र संख्या—२२५ । साइज—६×६ इंच । भाषा—हिन्दी—संस्कृत । लेखन काल—
सं० १७७६ मंगसिर सुदी ३ । पूर्ण ।

विषय—सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
मोक्ष पैडी	बनारसीदास	हिन्दी	—
विनती	मनराम	"	—
विनती	श्रवणराज	"	—
अठारह नाता का चौदाल्या	लोहट	"	दो प्रति हैं ।
श्रीपाल स्तुति	—	"	२१ पद्य हैं ।
साधु वंदना	बनारसीदास	"	—
आदित्यवार कथा	भाऊ कवि	"	१५० पद्य हैं ।
ले० का० सं० १७७६ फागुण सुदी ३ ।			
गुणाक्षरमाला	मनराम	"	४० पद्य हैं ।

प्रास्थ—मन बच कर या जोड़ि कैरे बंदी साख मायरे ।

गुण अखिर माला कहूँ सुणी चतर सुख पाई रे ।

माई नर भव पायौ भिनख को ॥१॥

परम पुरिष प्रणमौ प्रथम रे, श्री गुरु गुरु आराधौ रे,

ग्यान ध्यान मारिणि लहै, होई सिधि सब साधो रे ।

माई नर भव पायौ भिनख को ॥२॥

अन्तिम भाग—हा हा हासी जिन करै रे, करि करि हासी आनी रे ।

होरौ जनम निवारियो, बिना भजन मगबानी रे ॥३॥

पदै गुणै अर सरदहै रे, मन बच काय जो पीहारे ।

नीति गहै अति सुख लहै, दुख न व्यापै ताही रे ।

माई नर भव पायौ भिनख को ॥३॥

निज काश्य ऋपदेस मेरे, कीयों तुमि अतुसार रे ।
 कविगण दूसण जिनधरो लौक्यो सब सुधारी रे ।
 यह विनती मनराम की रे, तुम हो गुणह निधान रे ।
 संत सहज अब गणत जो, करै सुशुण्य परवानी रे ।
 साई नर भव पायों भिनख की ॥४०॥

समयसार	चनारसीदास	हिन्दी	अपूर्ण
विनती	दीपचन्द	"	
	अविनासी आनन्द मय गुण पूरण भगवान ॥		
विनती	कुमुदचन्द	"	—
	प्रभु पाय लागै रक्त सेव भारी ॥		
विनती	मनराम	"	—
	पारस प्रभु तुम नाम जी जो सुमरै मन बस काय		
पंचमगति वेदि	हर्षकीर्ति	"	—
प्रद्युम्नरास	अ० रायभल्ल	"	—

६३३. गुटका नं० १३२—पत्र संख्या—१० से ३० । साइज—६×६ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—X । अपूर्ण ।

विशेष—श्रीपाल चरित्र (ब्रह्मरायभल्ल) तथा प्रद्युम्नरास, (ब्रह्मरायभल्ल) अपूर्ण हैं ।

६३४. गुटका नं० १३३—पत्र संख्या—३४ । साइज—६×४ इंच । भाषा—संस्कृत । लेखन काल—सं० १७७३ भाद्र बुदी २ । पूर्ण ।

विशेष—चिन्तामणि महाकाव्य तथा उमा भद्रेश्वर के संवाद का वर्णन है ।

६३५. गुटका नं० १३४—पत्र संख्या—१०१ । साइज—८×६ इंच । भाषा—संस्कृत । लेखन काल—X । अपूर्ण ।

विशेष—ऋषिमंडल पूजा, दशलक्षण पूजा तथा होम विधान (आशाधर) आदि हैं ।

६३६. गुटका नं० १३५—पत्र संख्या—१६ । साइज—७½×६ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—X । अपूर्ण ।

वच्छराज हंसराज चौमई—जिनदेव सूरि ।

प्रारम्भ—आदीशुर आदि करी, चौबीसउ जिणंद ।

सुरसती मन समरु सदा, श्री जिनलोक सुनिद ॥१॥

सद गुरु पाथि प्रणमु करी वामु गुरु आदेश ।

पुनित गामल वोलिस, कहसुं कवलेस ॥२॥
 पुनि सु सुख उपजै हा, पुन्य संपति होइ ।
 राजरीष लीला घणी, पुण्य पावै सोई ॥३॥
 पुन्य उत्तम कुल होवै, पुण्य पुरुष प्रधान ।
 पुण्य पुरो आवुषो, पुण्य बुधी निधान ॥४॥
 पुण्य अरि सुणी जो कथा, सुणता अचिरज धारि ।
 हंसराज वज्रराज नृप हुआ पुण्य पसाई ॥५॥

मध्यभाग—

कामनी—त्रिविध तेल ताहा कादि घेरै कुमर न जाणै सोद ।
 कुमरी नयणे नरीवई रे देखी धरी विषाद ॥७१॥
 कामनी—अंत भणै ताहीं कामनी के दाहारे खैई मम कुड ।
 नस टालसी साधि परि करसी सगली ओ धुड ॥७२॥
 वज्रराज कहै कामनी रे, विता म करि काय ।
 जेह वे जिण नई चितवई रे, तेह वो तिण नै भाय ॥७३॥

अंतिम पाठ नहीं है

६३७. गुटका नं० १३६—पत्र संख्या—१२६ । साइज—८×६ इंच । भाषा—संस्कृत । लेखन काल—X ।

अपूर्ण ।

निम्न लिखित पूजा पाठ संग्रह हैं—रत्नप्रयपूजा, त्रिपंचाशत्क्रियाप्रतौषापन, जिनमुखसंपत्तिप्रतपूजा (भ० रत्नचन्द्र), सारस्वतयंत्रपूजा, धर्मचक्रपूजा (अपूर्ण), त्रिविधविधान (देवेन्द्रकीर्ति) ग्रहत् सिद्धचक्रपूजा ।

६३८. गुटका नं० १३७—पत्र संख्या—१—३६ । साइज—८×६ इंच । भाषा—संस्कृत । लेखन काल—X ।

अपूर्ण ।

विशेष—गणधरवलंब्य पूजा, एवं आचार्य केशव विरचित षोडशंकारपूजा है ।

६३९. गुटका नं० १३८—पत्र संख्या—६८ । साइज—८×८ इंच । भाषा—संस्कृत हिन्दी । लेखन काल—X । अपूर्ण ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

भवतामरस्तोत्र, (मंत्र सहित) तथा भक्तामर भाषा हेमराज कृत । एकीभावस्तोत्र मूल एवं भाषा । निर्वोण काण्ड भाषा । तत्त्वार्थसूत्र, पंचमंगल रूपचन्द्र कृत । चर्या संग्रह—(आठ कर्मों की प्रकृतियों का वर्णन, जीव सभास वर्णन आदि हिन्दी में) तथा संस्कृतमंजरी ।

६४०. गुटका नं० १३६—पत्र संख्या-१०२ । साइज-७ १/२ x २ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X । अपूर्ण ।

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
सधुमालती की बात	चतुर्भुजदास	हिन्दी	अपूर्ण

६४५ पद्य तक है ।

पंचतंत्रभाषा

हिन्दी गद्य

विशेष—मित्र लाभ तथा सुहृद् भेद तो पूर्ण है किन्तु विग्रह कथा अपूर्ण है ।

६४१. गुटका नं० १४०—पत्र संख्या-५६ । साइज-७ x ५ इंच । भाषा-संस्कृत हिन्दी । लेखन काल-X । अपूर्ण ।

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
नेमीश्वरराजसंवाद	विनीदीशाल	हिन्दी	—
पद	नेमकीर्ति	"	—
	सरणायति तेरो नाथ त्कारिये श्री महावीर ।		
पंचकुमारपूजा	—	"	—
बीस विद्यमान तीर्थकर पूजा	—	"	—
तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	संस्कृत	—
परीषद् वर्णन	—	हिन्दी	—
चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्न	—	"	—

६४२. गुटका नं० १४१—पत्र संख्या-६२ । साइज-६ x ६ इंच । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-X । पूर्ण ।

विशेष—भक्ताभारस्तोत्र (मंत्रसहित) तथा देवसिद्धपूजा है ।

६४३. गुटका नं० १४२—पत्र संख्या-१५ से १८६ । साइज-७ x ६ इंच । भाषा-प्राकृत-संस्कृत हिन्दी । लेखन काल-X । अपूर्ण एवं जीर्ण ।

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
(१) अजितशक्ति स्तवन	—	प्राकृत	४० गाथा
			प्रथम चार गाथायें नहीं हैं ।
(२) सीमंभरस्वामीस्तवन	—		
(३) नेमिनाथ एवं पार्श्वनाथ स्तवन,			
(४) वीर स्तवन और महावीर स्तवन	—	संस्कृत	—

(५) पार्श्वनाथ स्तवन	—	संस्कृत	—
(६) शत्रुंजयमंडल श्री आदिनाथ स्तवन	—	"	१३ पद्य हैं
(७) गौतम गणधर स्तवन	—	"	६ पद्य हैं
(८) वर्द्धमान जिन द्वाविशिका	—	"	—
(९) मारी स्तोत्र	—	"	१२ पद्य हैं ।
(१०) भक्तामर स्तोत्र	—	"	४४ पद्य हैं ।
(११) सच्चिसय स्तोत्र	—	"	—
(१२) शान्ति स्तवन एवं बृहद् शान्ति स्तवन	—	"	—
(१३) आत्मानुशासन	पार्श्वनाथ	"	७७ पद्य हैं
१० का० सं० १०४० भादवा बुदी १५ ।			
(१४) अजितनाथ स्तवन	जिनप्रभ सूरि	"	
(१५) वर्द्धमान स्तुति	—	"	
(१६) वीतरागाष्टक	—	"	
(१६) षष्टिशतं	मंडारी नेमिचन्द्र	"	
(१७) गौतम पृच्छा	—	प्राकृत	
(१८) सम्यक्त्व सप्तति	—	संस्कृत	
(१९) उपदेश भाषा	—	हिन्दी	
(२०) मर्तृहरि शतक	मर्तृहरि	संस्कृत	

६४४. गुटका नं० १४३—पत्र संख्या—५५ । साइज—५×२ इञ्च । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—X । पूर्ण ।

विशेष—चौबीस तीर्थंकरों का सामान्य परिचय है ।

६४५. धर्मविलास—द्यानतराय । पत्र संख्या—४४ । साइज—१० ३/४×७ ३/४ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०८ ।

विशेष—धर्म विलास द्यानतरायजी की रकृत रचनाओं का संग्रह है ।

६४६. पद संग्रह—पत्र संख्या—४९ से ६६ । साइज—११×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—संग्रह । रचना काल—X । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन नं० १४७ ।

६४७. पाठ संग्रह—पत्र संख्या—८८ से ११३ । साइज—७ ३/४×४ १/४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० १२५ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
(१) भक्तामर स्तोत्र	मानतुंग	संस्कृत	
(२) परमज्योति	बनारसीदास	हिन्दी	
(३) निर्वाणकाण्ड भाषा	मैयाभगवतीदास	"	
(४) छहदासा	धानतराय	"	

६४८. पाठसंग्रह—पत्र संख्या—३६ । साइज—११×४ १/२ इंच । भाषा—हिन्दी । रचना काल—X । लेखन काल—X । अपूर्ण ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
(१) पंच मंगल	रूपचंद		
(२) कल्याणमन्दिर भाषा	बनारसीदास	हिन्दी	
(३) विष्णुपदार्	—	"	
(४) एकैभाव स्तोत्र	भूधर	"	
(५) जिनस्तुति	श्रीपाल	"	
(६) प्रभात जयमाल	बिनोदीलाल	"	
(७) बीसतीर्थकर जखड़ी	हर्षकीर्ति	"	
(८) पंचमेक जयमाल	भूधरदास	"	
(९) वीनती	नवलराम	"	
(१०) वीनतियाँ	भूधरदास	"	
(११) निर्वाण काण्ड भाषा	मैयाभगवतीदास	"	
(१२) साधु बंदना	बनारसीदास	"	
(१३) संतोष पंचालिका भाषा	धानतराय	"	
(१४) वारह खंडी	सूरत	"	
(१५) लक्ष्म मंगल	रूपचंद	"	
(१६) जिनदेव पञ्चीर्षी	नवलराम	"	
(१७) वारह भावना	धालू कवि	"	
(१८) वार्डस परीषद	भूधरदास	"	
(१९) वैराग्य भावना	"	"	
(२०) गज भावना	"	"	

(२१) चौबीस दंडक	दीनतराम	"
(२२) जखडी	भूधरदास	"

६४६. पाठसंग्रह—पत्र संख्या—४ से १२ तक । साइज—१०×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—हिन्दी । रचना काल—X ।
लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ४६ ।

विशेष—मत्तामर भाषा पूर्ण है पृकीभाव स्तोत्र अपूर्ण है ।

६४७. पाठसंग्रह—पत्र संख्या—११ । साइज—१०×४ $\frac{1}{2}$ इंच । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४३५ ।

निम्न पाठों का संग्रह है—

विषय—सूची	कर्ता का नाम	भाषा	पत्र
(१) पार्वीसूत्र	कुशल मुनिद	प्राकृत	१ से २० तक
(२) प्रतिक्रमण	—	"	२० से २६ तक
(३) अजितरान्त्रिस्तवन	—	संस्कृत	३६ से ४६ तक
(४) पार्वनाथ स्तवन	—	"	४६ से ५० तक
(५) गणधर स्तवन	—	प्राकृत	६० से ५३ तक
(६) मत्तामर स्तोत्र	—	संस्कृत	५४ से ६८ तक
(७) शान्तिनाथ स्तोत्र	मालदेवाचार्य	"	

इनके अतिरिक्त ये पाठ और:—स्थानक स्तुति, नवपद स्तुति, शत्रुंजय स्तुति, कल्याणमन्दिर स्तोत्र । संध्या चीं
विहार, पंचक, विचार, षट्शिशंक, सामायिक विधि एवं संधारा विधि ।

६४८. बुधजनविलास—बुधजन । पत्र संख्या—५६ । साइज—१० $\frac{1}{2}$ ×६ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य ।
विषय—संग्रह । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० २०६ ।

विशेष—पं० बुधजनजी की रचनार्यों का संग्रह है ।

६४९. भूधरविलास—भूधरदास । पत्र संख्या—११६ । साइज—७ $\frac{1}{2}$ ×११ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य ।
रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० १३२ ।

विशेष—भूधरदास की रफ़्ट रचनाओं का संग्रह है ।

६५०. मित्रविलास—मीसा । पत्र संख्या—६१ । साइज—१० $\frac{1}{2}$ ×५ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—हिन्दी । रचना
काल—X । लेखन काल—सं० १६४३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ११० ।

विशेष—

प्रारम्भ—श्री जिन वरण नमूँ सदा, भ्रम तम नाशक मान ।

जा सुम दर्शन दर्शतै, प्रगटत आत्म ज्ञान ॥१॥

चौपई—बंदू श्रीमत वीर जिनंद, मेरत सकल कर्म जग फंद,

बंदू सिद्ध निरंजन देव, अष्टगुणात्म प्रभुवन सेव ।

बंदो आचारज गुण खीन, जिन निज मान सुद्ध अति खीन ॥

बंदो उपाध्याय करि ध्यान, नाशक भिष्यात्म अज्ञान,

बंदू साधु महा गंभीर, ध्यान विषय अति अवल शरीर ।

बंदू वीतराग हित माध, आत्म धर्म प्रकाशन चाव ॥४॥

मित्र विलास महादुख दैन, वस्तु वस्तु स्वभाविक ऐन ।

प्रगट देखिये लोक मन्हार, संग प्रसाद अनेक प्रकार ॥५॥

—सवैया—

अन्तिम—कर्म रिपु सो तो च्याव मति में घसीट फिरयो,

ताही के प्रसाद सेती घीसा नाम पायो है ।

भारभल मित्र को बहालसिद्ध पिता,

दिनकी सहाय सेती भ्रंश यो बनायो है ॥

थासैं भूल चूक होय सोभि सो सुभार खीजो,

मो पै कृपा दृष्टि कीजो मान थी जनायो है ।

दिग निभ सत ज्ञान हरि को चतुर्थ गन,

कायन सुदि चोक मान जिन गुन गायो है ॥

दोहा—आनंदमय आनंद करन हरन सकल दुख रोग ।

मित्र विलास भ्रंश यह निज रस अमृत भोग ॥

इसमें निम्न लिखित पाठों का संग्रह है—

षट् द्रव्य निर्णय—दूसरे अधिकार तक । भावों का पूर्ण सैद्धान्तिक विवेचन है ।

द्वादस व्रत वर्णन, कषाय के पच्चीस भेद वर्णन, सम्यक् दृष्टि अवस्था वर्णन, शुद्ध स्वरूप वर्णन, द्वादसानुप्रेषा वर्णन, बार्हस परीषह वर्णन, पंच प्रकारचारित्र वर्णन, मोक्ष तरंग वर्णन, एवं सुख दुःख निर्णय/भ्रंश का विषय है आत्मा में स्व और परमावों का सैद्धान्तिक विवेचन ।

६५४. वचनशुद्धिव्याख्यान—पत्र संख्या—६ । साइज—१२×७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—संग्रह । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १६४३ जेष्ठ बुदी ५५ । पूर्ण । प्रेस नं० १५१

विशेष—व्याख्यान कर्ता भूधरालालजी को कहा गया है ।

६५५. विनती पद संग्रह—पत्र संख्या—१४३ से १७६ । साइज—१२×१५ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य ।

विषय—स्फुट संग्रह । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेन्डन नं० १४७ ।

विषय—सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विषय
विनती	भूषादास	हिन्दी	—
भक्तामर साधा	हेमराज	"	—
सम्बेदशिखर पूजा	नंदराम	"	—
स्फुट श्लोक	—	संस्कृत	—
पद	आतमराम	"	—
उपदेशी पद	—	"	—
पद	नवलराम	हिन्दी	—
आलोचना पाठ	जौहरीलाल	हिन्दी	—
पद	धानतराय	हिन्दी	—



卐 ग्रन्थानुक्रमणिका 卐

अ

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा पत्र सं०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा पत्र सं०
अहमंताकुमार रास	मुनि नारायण	(हिन्दी) १६०	अजीर्णमंजरी	—	(सं०) १६०
अकलनामा	—	(सं० हिन्दी) २४२	अठारहनाता	—	(हि०) २७३
अकलंकस्तोत्र	—	(सं० हि०) १००	अठारहनाता का चौढाल्या लोहूट		(हि०) १४३
अकलंकाम्पक भाषा, सदासुख कासलीवाल (हि०)		१००			१३२, १६१, १६६, ३०६,
अकृत्रिमचैत्यालयों की जयमाला		(हि०) ११४	अढाईद्वीपपूजा	डालूराम	(हि०) ४६
अकृत्रिमचैत्यालयों की रचना		(हि०) ४२	अढाईद्वीपपूजा	—	(सं०) ४६
अकृत्रिमचैत्यालय पूजा	चैनसुखदास	(हि०) ४६	अढाईद्वीपपूजा	विश्वभूषण	(सं०) ४६
अकृत्रिमचैत्यालय पूजा	पं० जिनदास	(सं०) ४६	अध्यात्मकमलमार्तेश	राजमल्ल	(सं०) ३०
अकृत्रिमचैत्यालय पूजा	—	(हि०) ४६	अध्यात्मदोहा	रूपचन्द्र	(हि०) ११३
अकृत्रिम जयमाला	—	(सं०) २७३	अध्यात्मकाव्य	—	(हि०) १३०
अक्षयदशमी व्रत पूजा	—	(सं०) २७३	अध्यात्मवृत्तीमी	बनारसीदास	(हि०) २०२
अक्षयनिधि पूजा	—	(सं०) १४७	अध्यात्मबाराहखड़ी	दौलतराम	(हि०) ३०
अक्षयनिधिव्रतोद्यापन	ज्ञानभूषण	(सं०) २०४	अध्यात्मसवैया	रूपचन्द्र	(हि०) ३०४
अक्षर भक्तीसी	मुनि महिसिंह	(हि०) २४२	अन्तर्गददशाश्री वृत्ति अभयदेव सूरि		(सं०) १
अजितनाथस्तवन	जिनप्रभसूरि	(सं०) ३१०	(अन्तर्गददशाश्री वृत्ति)		
अजितशांतिस्तवन	—	(हि०) १४२	अन्तरकाल वर्णन	—	(हि०) ६, ११६
अजितशांतिस्तोत्र	उपाध्याय मेरुनंदन	(हि०) १४०	अन्तरसमाधि वर्णन	—	(हि०) ६
अजितशांतिस्तोत्र	—	(सं०) १०६	अनादिनिधनस्तोत्र	—	(सं०) १४६
अजितशांतिस्तोत्र	—	(प्रा०) २०१	अनित्यर्षचासिका	त्रिभुवनचन्द्र	(हि०) ४, १६५
अजितशांतिस्तवन	जिनवल्लभ सूरि	(प्रा०) ३०१	अनुभवप्रकाश	दीपचन्द्र	(हि०) २३, १०२
अजितशांतिस्तवन	—	(सं०) ३१२	अनेकार्थमंजरी	नंददास	(हि०) २३२
अजितशांतिस्तवन	—	(प्रा०) ३०६	अनेकार्थसंभव	हेमचन्द्र सूरि	(सं०) २३२
अजितजिननाथ की विनती	चन्द्र	(हि०) १४३	अनंगरंगकाव्य	कल्याण	(हि०) २७४

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०
अनंतव्रतोत्थपत्र	—	(सं०)	१४७	अष्टादिककथा	रत्ननन्दि	(सं०)	२२५
अनंतव्रतकथा	—	(सं०)	२२५	अष्टादिकापूजा	—	(हि०)	५०
अनंतव्रतकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	२६५	अष्टादिकापूजा	भ० शुभचन्द्र	(सं०)	१६८
अनंतव्रतपूजा	श्रीभूषण	(सं०)	१६७	अष्टादिकापूजा	ज्ञानतराय	(हि०)	५०, ५७
अनंतव्रतपूजा	—	(सं०)	२०४	अष्टादिकापूजा	—	(सं०)	१६८
अनंतव्रतपूजा	गणेशचन्द्र	(सं०)	२०५	अष्टादिकाव्रतकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	२६५
अष्टकभारणविधि	—	(हि०)	१४८	अष्टादिकास्नपनविधि	—	(हि०)	१४८
अभिषेकपाठ	—	(सं०)	५०, २०६	अष्टादिकाव्रतोत्थापनपूजा	—	(सं०)	५०
अभिषेकविधि	—	(सं०)	१४७	अस्ती शिखा की मूर्ति	—	(हि०)	१३०
अभिधानचिंतामणि	हेमचन्द्र	(सं०)	२३२	अंकुरारोपणविधि	इन्द्रनन्दि	(सं०)	५६
नाममाला				अंकुरारोपणविधि	—	(सं०)	१६७
अमरकोश	अमरसिंह	(सं०)	८८, २३२	अंगोपांगपुरकनवर्णन	—	(हि०)	१४८
अष्टकैकानक	बनारसीदास	(हि०)	१६२	अंजनशास्त्र	अग्निवेश	(सं०)	२४६
अरहंत स्वरूप वर्णन	—	(हि०)	२३				
अर्हत् पूजा	पद्मनन्दि	(सं०)	१६७				
अर्हन् सहस्रनाम	—	(सं०)	१६८				
अरिष्टाध्याय	—	(प्रा०)	२०५				
अवजदकेवली	—	(हि०)	२३८				
अष्टक	—	(सं०)	१६८				
अष्टविधिपूजा	सिद्धराज	(हि०)	१५२				
अष्टकर्मप्रकृतिवर्णन	—	(हि०)	१६४				
अष्टनाम	कवि देव	(हि०)	२७६				
अष्टपादुङ्ग	आ० कुन्दकुन्द	(प्रा०)	३६				
अष्टपादुङ्ग भाषा	जयचन्द्र छात्रड़ा	(हि०)	३६, १६१				
अष्टसहस्री	विद्यानन्दि	(सं०)	४६				
अष्टांगहृदयसंहिता	वाग्भट्ट	(सं०)	२४६				
अष्टापदगिरिस्तवन	धर्मसुन्दर वाचनाचार्य	(हि०)	२७३				
अष्टादिककथा	भ० शुभचन्द्र	(सं०)	८१				
अष्टादिककथा	—	(हि०)	२२४, २२५				

आ

आकाशपंचमीकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	२६५
आख्यातप्रक्रिया	—	(सं०)	२३०
आगतिजागतिपाठ	—	(हि०)	२
आगमसार	मुनिदेवचन्द्र	(हि०) (ग)	१७५
आचारसारा	—	(हि०)	१६६
आचारशास्त्र	—	(सं०)	१८२
आचारसार	वीरनन्दि	(सं०)	२३, १८२
आचारसारवृत्त	—	(सं०)	२३
आठ द्रव्य की मावना	जगराम	(हि०)	१५३
आत्म उपदेश गीत	समयसुन्दर	(हि०)	२६२
आत्मसंशोधनकाव्य	रङ्गधू	(अपभ्रंश)	३६
आत्महिखोलन	केशवदास	(हि०)	१६३
आत्मानुशासन	गुणभद्राचार्य	(सं०)	३६, १६१
आत्मानुशासन	पार्श्वनाग	(सं०)	३१०

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा पत्र सं०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा पत्र सं०
आत्मावृत्तासन टीका	प्रभाचन्द्र	(सं०) ३६, १६१	आराधनाकथाकोष	—	(सं०) २२५
आत्मावृत्तासन भाषा	पं० टोडरमल	(हि०) ३६, १६१	आराधनाकथाकोष	—	(हि०) २२६
आत्मावलोकन	दीपचंद कासलीवाल	(हि०) ४०	आराधनास्तवन वाचक विनय विजय	(हि०) १००	
आदित्यवारकथा	—	(हि०) १५२	आराधनासार	देवसेन	(प्रा०) ४०, ११०, ११८, १३२, १३४, १६१
आदित्यवारकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०) २६६	आराधनासार भाषा	पञ्जालाल चौधरी	(हि०) १६२
आदित्यवारकथा	भाऊ कवि	(हि०) ८१, ११३, ११७, १३८, १४३, १५४, १६६, १६९, १६७, २६२, २६८, ३०६	आलापपद्धति	देवसेन	(सं०) १६६
आदित्यवारकथा	सुरेन्द्रकीर्ति	(हि०) ८१	आलोचनापाठ	—	(प्रा०) १०१
आदित्यहृदयस्तोत्र	—	(सं०) ३१०	आश्रवभिमंगी	—	(हि०) १७६
आदित्यवारव्रतोत्थापन	—	(सं०) २०५	आश्रवभिमंगी	नेमिचंद्राचार्य	(प्रा०) १
आदिनाथपूजा	—	(हि०) ६०, १२६	आसावरी की बात	—	(हि०) २७८
आदिनाथपूजा	अजयराज	(हि०) १३०		इ	
आदिनाथपूजा	रामचंद्र	(हि०) ५०	इक अक्षर आदि बत्तीसी	—	(हि०) ३
आदिनाथ जी का पद	कुशलसिंह	(हि०) १६५	इकवीस गिनती को पाठ	—	(हि०) ३
आदिनाथ का बधावा	—	(हि०) १५३	इकवीस गिनती का स्वरूप	—	(हि०) १
आदिनाथस्तवन	—	(हि०) १५८	इकवीसठायाचर्चा	—	(प्रा०) १
आदिनाथस्तवन	ब्र० जिनदास	(हि०) २६६	इन्द्रध्वजपूजा	भ० विश्वभूषण	(सं०) ५०, १६८
आदिनाथस्तवन	विजयतिलक	(हि०) १४०	इष्टछत्तीसी	—	(सं०) १०१
आदिनाथस्तुति	चन्द्रकीर्ति	(हि०) २७२	इष्टछत्तीसी	बुधजन	(हि०) १०१, १७२
आदिनाथपंचसंगल	अमरपाल	(हि०) १६८	इष्टछत्तीसी	—	(हि०) २६३
आदिपुराण	जिनसेनाचार्य	(सं०) ६३, २२२	इष्टोपदेश	पूज्यपाद	(सं०) २३८
आदिपुराण	पुष्पदन्त	(अपभ्रंश) २२२	इष्टकविमन	नागरीदास	(हि०) २४८
आदिपुराण	भ० सकलकीर्ति	(सं०) ६३		उ	
आदिपुराण भाषा	दौलतराम	(हि०) ६३, २२२	उत्तरपुराण	गुणभद्राचार्य	(सं०) ६४, २२२
आदीश्वर का बधावा	कल्याणकीर्ति	(हि०) १५२	उत्तरपुराण	पुष्पदन्त	(अप०) ६७
आप्तपरीक्षा	विद्यानंदि	(सं०) १६६	उत्तरपुराण	सुशालचंद	(हि०) ६४
आयुर्वेद के तुल्य	—	(हि०) १३०, १३६, १४८, १६०, १६४, २७४, २७६, २८७	उदरगीत	छीहल	(हि०) ११६
आस्ती विनती	—	(हि०) १५८	उनतीस बील दंडक	—	(हि०) १५१

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०
उपदेशजसङ्घी	रामकृष्ण	(हि०)	१३७	एवषादोष (छियालीस दोष) भगवतीदास (हि०)			१८३
उपदेशपञ्चीसी	बनारसीदास	(हि०)	१४६	औ			
उपदेशशतसी	राज	(हि०)	१५२				
उपदेशमाला	—	(सं०)	३१०	औषधिवर्णन	—	(हि०)	२७६
उपदेशशतक	बनारसीदास	(हि०)	६४	शु			
उपदेशरत्नमाला	सकलभूषण	(सं०)	२३				
उपदेशसिद्धान्तस्तवगाथा शंकराजी जेयचंद (प्रा०)			२३	शुभमनाथचरित्र	भ० सकलभूषण	(सं०)	२०६
उपदेशसिद्धान्तस्तवमाला भाषा —		(हि०)	२३	शुभमनाथवेष्टि	—	(हि०)	१६७
उपदेशसिद्धान्तस्तवमाला भाषा भागचंद्र		(हि०)	२४	शुभमदेवस्तवन	—	(हि०)	१४०
उपासकदर्शासूत्रविवरण अभयदेव सूरि		(सं०)	२४	शुभिमंडलपूजा	—	(सं०)	३०७
उपासकाचार	पूज्यपाद	(सं०)	१३२	शुभिमंडलपूजा	आ० गणिनंदि	(सं०)	२०४
उपासकाचारदोहा	लक्ष्मीचंद्र	(अ०)	२४	शुभिमंडलस्तोत्र	—	(सं०)	२६२
उपासकाध्ययन	वसुनंदि	(सं०)	१८३	शुभिमंडलस्तोत्र	गौतम गणधर	(सं०)	१०१
उपसर्गस्तोत्र	—	(सं०)	१८८	क			
उपामहेश्वरसंवाद	—	(सं०)	३०७				
उपाकथा	रामदास	(हि०)	२६७	कक्षा	—	(हि०)	१६६
ए				कक्षाबत्तीसी	गुलाधराय	(हि०)	१५३
				कक्षाबत्तीसी	अजयराज	(हि०)	१३३, १५१,
एकसौअठारन श्रुतों के नाम —		(हि०)	२६६	कक्षाबत्तीसी	—	(हि०)	२६६
एकसौअठार नामों की गुणमाला	द्यानतराय	(हि०)	१०१	कजवाहा राजाश्री की वंशावलि	—	(हि०)	१३६
एकसौगुनहत्तर जीवपाठ लक्ष्मणदास		(हि० प०)	१	कंसलीला	—	(हि०)	१३६
एकसौगुनहत्तर पुराण जीवों का व्योरा	—	(हि०)	१६३	कमलचन्द्रायण कथा	—	(सं०)	२२५
एकसौनाममाला	सुधाकलश	(सं०)	८८	कमलचन्द्रायणव्रतपूजा	—	(सं०)	५०
एकीभावरस्तोत्र	धादिराज	(सं०)	१०१,	कर्मघटावलि	कनककीर्ति	(हि०)	१४६
		१२३, २३८, २७८, ३०८		कर्मचरित्रबाईसी	रामचन्द्र	(हि०)	२४
एकीभावरस्तोत्र	द्यानतराय	(हि०)	२६७	कर्मचूरव्रतोपासन	—	(सं०)	२०४
एकीभावस्तोत्र	जगजीवन	(हि०)	२६६	कर्मदहनपूजा	—	(हि०)	५०
एकीभावस्तोत्र	भूधरदास	(हि०)	२३८, ३११	कर्मदहनपूजा	—	(सं०)	६०
एकीभावस्तोत्र	—	(हि०)	१७२, ३०३	कर्मदहनपूजा	टेकचंद	(हि०)	५०, १६८
			३०८, ३१२	कर्मदहनपूजा	शुभचन्द्र	(सं०)	२०४

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा पत्र सं०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा पत्र सं०
कर्मदहनव्रतपूजा	—	(सं०) ५८	कल्याणमंदिरस्तोत्रभाषा	वनारसीदास	(हि०) १०२,
कर्मदहनव्रतमंत्र	—	(सं०) ५९			११३, ११५, १२४, १४६, १५३, १५८, १७२,
कर्मप्रकृति	नेमिचन्द्राचार्य (प्रा०)	३, १३५, १७६			२३८, २६६, ३११.
कर्मप्रकृतिवर्णन	—	(सं०) ६, १५३	कल्याणमंदिरस्तोत्रभाषा	अखयराज	(हि०) १०२
		१५६, १६६, २६६	कलिकुंडपूजा	—	(सं०) ११६
कर्मप्रकृतिविधान	वनारसीदास	(हि०) ४, ११६	कलिकुंडपाश्वर्नामपूजा	—	(सं०) १२८
कर्मप्रकृतियों का म्योरा	—	(हि०) ६	कलियुग की वीनती	ब्रह्मदेव	(हि०) १७७
(कर्मप्रकृतिचर्चा)			कलियुगचरित	—	(हि०) ११२
कर्मप्रकृति वृत्ति	सुमतिकीर्ति	(सं०) १७६	कलावतीचरित्र	भुवनकीर्ति	(हि०) ६७
कर्मधर्मीसी	—	(हि०) १६३	कवित्त पृथ्वीराज चौहान का	—	(हि०) १२४
कर्मधर्मीसी	अचलकीर्ति	(हि०) ११५	कवलचन्द्रायण व्रत कथा	—	(सं०) ८१
कर्मस्वरूपवर्णन	अभिनव वादिराज	(सं०) ६	कवित्त	गिरधर	(हि०) १३६
(पं० जगन्नाथ)			कवित्त	पृथ्वीराज	(हि०) १३६
कर्मविपाकरास	अ० जिनदास	(हि० गु०) ८१	कवित्त	खेमदास	(हि०) १३७
कर्महिंदोलना	—	(हि०) १२८	कवित्त	—	(हि०) १३६, २७३
कर्महिंदोलना	दर्पकीर्ति	(हि०) १६७, २७२	कबीर की परचई	कबीरदास	(हि०) २६७
कृष्ण का ब्राह्मभाषा	धर्मदास	(हि०) २ ५	कबीर धर्मदास की दया	—	(हि०) २६७
कृष्णदास का रास	—	(हि०) २७७	कविकुलकंठाभरण	दूलाह	(हि०) २४६
कृष्णकमणी बेलि	पृथ्वीराज राठौड़	(हि०) ११८	कबीर धनी धर्मदास की माला	—	(हि०) २०५
कृष्णालीसावर्णन	—	(हि०) २८०	कर्जावतोषापन	—	(सं०) २०५
कृष्णभालचरित	—	(हि०) २७८	कार्तिकेयालुप्रेक्षा	स्वामी कार्तिकेय	(प्रा०) १६१
कृष्णकवच	—	(सं०) ३०२	कार्तिकेयालुप्रेक्षा	जयचंद छाबड़ा	(हि०) १६१
करुणामरन नाटक	लच्छीराम	(हि०) २७०	कार्मदकीयनीतिसार भाषा	—	(हि०) २३५
करुणाएक	—	(सं०) ११२	काल और अन्तर का स्वरूप	—	(हि०) ५
कर्मभकुठार	रामचन्द्र	(हि०) २८८	काया पाजी	कबीरदास	(हि०) २६७
कल्याणकवर्णन	मनसुख	(अ०) १३७	कालचरित्र	कबीरदास	(हि०) ३०५
कल्याणमंदिरस्तोत्र	कुमुदचंद्राचार्य	(सं०) १०१,	कालज्ञान	—	(सं०) २४६
११२, १२२, १२६, १३६, १५६, २३८, २७३, ३१२			कालिकाचार्यकथानक	भावदेवाचार्य	(प्रा०) २२६
कल्याणमंदिरस्तोत्रभाषा	— (हि०)	१२२, २३७, ३०१	किशोरकल्पद्रुम	शिवकवि	(हि०) १६६

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा पत्र सं०
किराताजुनीय	भारथि	(सं०) २०६
क्रियाकोष भाषा	विज्ञानसिंह	(हि०) २१
क्रियाकोष भाषा	दौलतराम	(हि०) १२३
कुंभलिया	—	(हि०) १३६
कुदेववर्णन	—	(हि०) ६
कुदेव स्वरूप वर्णन	—	(हि०) ११३
कुमतिनिघटिन श्रीमंथर जिनस्तवन	—	(हि०) १०७
कुमारसंभव	कालिदास	(सं०) २१०
कुपेस्तोत्र	—	(सं०) २३८
कुवलयानंदकारिका	—	(सं०) १६६
कोकसार	आनंद कवि	(हि०) १३६
कोकिलार्पचर्माकथा	ब्रह्म ज्ञानसागर	(हि०) २६५
कौशकुतूहल	—	(सं०) १६८
क्षपणासार	आचार्य नेमिचंद्र	(प्रा०) ५
क्षपणासार टीका	साधवचन्द्र त्रैविद्यदेव	(सं०) ६
क्षपणासार भाषा	पं० टोडरमल	(हि०) ७, ८, १०
क्षपावतीसी	समयसुन्दर	(हि०) १२६
क्षीरार्णव	विश्वकर्मा	(सं०) २४६
क्षेत्रपाल का गीत	—	(हि०) १४८
क्षेत्रपालपूजा	—	(हि०) १६०, २७५
क्षेत्रपालस्तोत्र	—	(सं०) २८८
क्षेत्रपालपूजा	—	(सं०) १५६
स्व		
खण्डेलनाल गांजोत्पत्ति	—	(हि०) १६१
वर्णन	—	—
खीचडरासो	—	(हि०) २५७

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा पत्र सं०
ग		
गज भावना	भूधरदास	(हि०) ३११
गणधर मुख्य पाठ	—	(हि०) २
गणधरवल्लयपूजा	—	(सं०) ३०८
गणधरवल्लयपूजा	शुभचन्द्र	(सं०) १६८
गणधरवल्लयपूजा	सकलकीर्ति	(सं०) ६१
गणधरस्तवन	—	(प्रा०) ३१२
गणनाथक जेमकरण	धर्मसिंहसूरि	(हि०) २८६
जन्मोत्पत्ति		
गणभेद	रघुनाथसिंह सूरि	(हि०) ५ २५२
गंगायात्रावर्णन	—	(हि०) १३६
गंगाष्टक	शंकराचार्य	(सं०) ३०१
ग्रन्थसूची	—	(हि०) १६६
ग्रहवल्लिचिन्ता	—	(हि०) २८७
ग्यारहप्रतिमावर्णन	मुनि कनकामर	(हि०) ११७
ग्यारहप्रतिमावर्णन	—	(हि०) १८४
गिरनार सिद्धक्षेत्र पूजा	हजारीमल्ल	(हि०) १६८
गिरनारक्षेत्रपूजा	—	(हि०) ५१
गीत	चन्द्रकीर्ति	(हि०) २७२
गीत	मुनि धर्मचन्द्र	(हि०) २७२
गीत	—	(हि०) २६३
गुणतीसी भावना	—	(प्रा०) २६
गुणगाथागीत	ब्रह्म वर्द्धमान	(हि०) ११६, १६४
गुनगंजनम	—	(हि०) ३०४
गुणस्थानचर्चा	—	(सं०) १७६
गुणस्थान जीव संस्था	—	(हि०) १५६
समूह वर्णन		
गुणस्थानचर्चा	—	(हि०) ६
गुणस्थानवर्णन	—	(हि०) १५१

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा पत्र सं०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा पत्र सं०
गुणविवेकवारनिसाणी	—	(हि०) ३००	चउसरथ परिकरण	—	(हि०) २६०
गुणाक्षरमाला	मनराम	(हि०) ३०७	पञ्चेश्वरीस्तोत्र	—	(सं०) २८८
गुरुबीनती	—	(हि०) १४८	चतुर्गतिबेलि	हर्षकीर्त्ति	(हि०) ३०२
गुरुभक्तिस्तोत्र	—	(प्रा०) १५७	चतुर्दर्शकथा	हरिकृष्ण पाण्डे	(हि०) १४४
गुलालपञ्चोत्ती	ब्रह्मगुलाल	(हि०) ६४	चतुर्विधिसिद्धचक्रपूजा	भानुकीर्त्ति	(सं०) ५२
गोत्रवर्णन	—	(हि०) २५२	चतुर्विंशतिजिनकल्याणपूजा	भानुकीर्त्ति	(हि०) १५१
गुरोपदेशभावकाचार	डालूराम	(हि०) २५	चतुर्विंशतिजिनपूजा	रामचन्द्र	(हि०) ५२, १११
गोमट्ट की जयमाला	—	(हि०) ३०४			११२, १६६
गोमट्टसार (जीवकाण्ड)	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०) ६	चतुर्विंशतिजिनपूजा	वृन्दावन	(हि०) ५१, १६६
गोमट्टसार (जीवकाण्ड)	पं० टोडरमल	(हि०) ७, ८, ११७	चतुर्विंशतिजिनपूजा	सेवाराम	(हि०) ५१, १६६
गोमट्टसार (कर्मकाण्ड)	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०) ६, ११२, १७७	चतुर्विंशतिजिनपूजा	—	(हि०) ५१
गोमट्टसार (कर्मकाण्ड)	पं० टोडरमल	(हि०) ८, १०	चतुर्विंशतिजिनस्तुति	पद्मानंद	(सं०) १३६
गोमट्टसार टीका (कर्मकाण्ड)	सुमतिकीर्त्ति	(सं०) ८	चतुर्विंशतिजिनस्तोत्र	जिनरंग सूरि	(हि०) १४०
गोमट्टसार (कर्मकाण्ड)	हेमराज	(हि०) ८, १०७	चतुर्विंशतितीर्थंकरपूजा	—	(सं०) ५२
गोरक्षवचन	बनारसीदास	(हि०) २८१	चतुर्विंशतिस्तुति	समयसुन्दर	(हि०) १४२
गोरसविधि	—	(सं०) २५२	चतुर्विंशतिस्तुति	विनोदीलाल	(हि०) १५५
गोरीकालीनार	—	(हि०) २६४	चतुर्विंशतिस्तुति	शुभचन्द्र	(हि०) १४३
गोविन्दाष्टक	शंकराचार्य	(सं०) ३०१	चतुश्श्लोकी गीता	—	(सं०) ३०२
गोपीपार्थस्तवन	—	(हि०) १४२	चन्दनषष्टिप्रतपूजा	—	(सं०) ५२, २०६
गौतमगथाधरस्तवन	—	(सं०) २१०	चन्दनषष्टिप्रतकथा	खुशालचंद	(हि०) २६७
गौतमपृच्छा	—	(प्रा०) २९०	चन्दनषष्टिप्रतकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०) २६५
गौतमस्वामीचरित्र	धर्मचन्द्राचार्य	(सं०) ६७	चन्दनषष्टिप्रतकथा	विजयकीर्त्ति	(सं०) ८२
गौतमरासा	विनयप्रभ	(हि०) ३०१	चन्दनाचरित्र	शुभचन्द्र	(सं०) २१०
	घ		चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्न	—	(हि०) १६४
घंटाकरण मंत्र	—	(सं०) २०२	चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्न भावभद्र	—	(हि०) १४२
	च		चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्न ब्र० रायमल्ल	—	(हि०) १६३, ३०४, ३०६
चउबीसतीर्थंकरविनती	ब्रह्मतेजपाल	(हि०) ७६६	चन्दराजा की चौपई	—	(हि०) १२७
चउबीसतीर्थंकरस्तुति	सहजकीर्त्ति	(हि०) १४७	(चन्दनमलयगिरि कथा)		

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०
चन्द्रप्रमस्तुति	—	(हि०)	१५८	चिन्तामणि मानबावनी मनोहर कवि	(हि०)		११२
चन्द्रप्रमचरित्र	कवि दामोदर	(सं०) ६७, २१०		चिन्तामणि पार्श्वनाथ पूजा	—	(सं०)	१२८
चन्द्रप्रमचरित्र	धीरनंदि	(सं०) ६८, २१०		चिन्तामणि पूजा	—	(सं०)	१५६
चन्द्रायथप्रतपूजा	भ० देवेन्द्रकीर्त्ति	(सं०)	१६६	चिन्तामणिपार्श्वनाथ स्तवन जिनरंग	(हि०)		१४०
चन्द्रहंसकथा	टीकम	(हि०)	५२	चिन्तामणि पार्श्वनाथ स्तोत्र भुवनकीर्त्ति	(हि०)		१४०
चमत्कारचिन्तामणि	नारायण	(सं०)	२४५	चिन्तामणि स्तोत्र	—	(हि०)	१५२
धरस्वाचउपर्ह	अजयराज	(हि०)	१५६	चिन्तामणि स्तोत्र	—	(सं०)	२८८
चर्चावर्णन	—	(हि०)	६	चिन्तामणि जन्मोत्पत्ति	—	(हि०)	२८६
चर्चाशतक	द्यानतराय	(हि०) ६, १३४, १७७		चिन्तामणि महाकाव्य	—	(सं०)	३०७
चर्चासमाधान	भूधरदास	(हि०) ६, १७७		चून्डी	साधुकीर्त्ति	(हि०)	२६४
चर्चासंग्रह	—	(हि०) ६, १७७, ३०३,		चेतन कर्मचरित्र	भगवतीदास	(हि०) ६८, १३३	
चर्चासागरभाषा	—	(हि०) ३०८, १८४		चेतनगीत	—	(हि०)	२७२
भुचरित	—	(हि०)	१३६	चेतनगीत	जिणदास	(हि०) ११६, ३०४	
चाणक्य नीतिशास्त्र	चाणक्य	(सं०) १११, २३६		चेतनगीत	देवीदास	(हि०)	२७१
			२७४	चेतनबंधस्तोत्र	—	(सं०)	२८८
चार ध्यान का वर्णन	—	(हि०)	४०	चेतनशिखागीत	—	(हि०)	१२८
चार भिन्नो की कथा	—	(हि०)	१६३	चेतनशिखागीत	किशनसिंह	(हि०)	१३१
चारित्रशुद्धिविधान	भ० शुभचंद्र	(सं०)	५२	चेतनबंधना	—	(सं०)	२३८
चारित्रसार	चामुण्डराय	(सं०)	२६	चैत्रीविधि	अमरमाणिक	(हि०)	१४७
(भावनासार संग्रह)				चौदहमार्गशाधर्चा	—	(हि०)	११६
चारित्रशुद्धिविधान	श्री भूषण	(सं०)	१६६	चौबीसठाणा चर्चा	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०) ६, १७७	
(१२३४ वस्त)				चौबीसठाणा चर्चा भाषा	—	(हि०) १०, ११३	
चारित्रसार पंजिका	—	(सं०)	२५	(बालबोधचर्चा)			१२६, ३००
चारित्रसार भाषा	मन्नालाल	(हि०)	२५	चौबीसठाणार्पाटिका	—	(हि०)	१०
चारोंगति दुःख वर्णन	—	(हि०)	१२२	चौबीसठाणा चौपई	साह लोहट	(हि०)	१६८
चारित्रपाहुड भाषा	जयचंद छावडा	(हि०)	१६२	चौबीसठाणाच्योरा	—	(हि०)	१६१
चाणक्य चरित्र	भारामल्ल	(हि०)	२१०	चौबीसदंडक	—	(हि०) २७, ११२	
चित्रसेनपद्मावती कथा	पाठक राजवल्लभ	(सं०)	५३	चौबीसदंडक	दीनतराम	(हि०) २८, १८४	
निह्नी चंदाभाई की सर्वसुखजी आदि की	(हि०)		१३६				३१२
चद्विलिप्त	दीपचन्द	(हि०)	२७				

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०
चौबीसतीर्थकरजयमाला	—	(हि०)	१२	जखडी	अनन्तकीर्ति	(हि०)	१५४
चौबीसतीर्थकरो के नात्र गांव वर्णन	—	(हि०)	१२४	जखडी	दरिगाह	(हि०)	१२६
चौबीसतीर्थकरपरिचय	—	(हि०)	३१०	जखडी	भूधरदास	(हि०)	१२७, ३१२
चौबीसतीर्थकरपूजा	अजयराज	(हि०)	१३०, १५३	जखडी	रूपचन्द	(हि०)	११६, १२६
चौबीसतीर्थकरपूजा	—	(हि०)	१४४, २७७				१६५, २७२, २६७
चौबीसतीर्थकरपूजा	मनरंगलाल	(हि०)	१६६	जखडी	हरीसिंह	(हि०)	१६२
चौबीसतीनामप्रथमंडलविधान	—	(सं०)	२०४	जखडी	—	(हि०)	१४६, १७०
चौबीस महाराज की वीनती रामचन्द्र	—	(हि०)	१०२	जखडी	बिहारीदास	(हि०)	२३६
चौबीसतीर्थकर समुच्चय पूजा	—	(सं०)	१४६	जखडी	जिनदास	(हि०)	२७२
चौबीसजिनस्तुति	शोभन मुनि	(सं०)	२३६	जंतर चौवनो	—	(हि०)	२
चौबीसतीर्थकरस्तवन	ललित विनोद	(हि०)	२३६	जम्बूद्वीपपूजा	जिणदास	(सं०)	१६३
चौबीसतीर्थकरस्तुति	अजयराज	(हि०)	१३०	जम्बूस्वामीचरित्र	ब्र० जिनदास	(सं०)	६८, २१०
चौबीसतीर्थकरस्तुति	—	(हि०)	१४७, २६६	जम्बूस्वामीचरित्र	पांडे जिनदास	(हि०)	६६, १३१
चौरासी आसन भेद	—	(सं०)	५०	जम्बूस्वामीचरित्र	वीर	(अथवा शं)	६८
चौरासीबोल	हेमराज	(हि०)	२७, ११२	जम्बूस्वामीचरित्र	नाथूराम	(हि०)	२१०
चौरासीभाव	—	(हि०)	१६३	जम्बूस्वामीपूजा	पाण्डे जिनराय	(हि०)	११५
चौरासी ग वीरपति वर्णन	नन्दानंद	(हि०)	२५३	जयचन्द्रपञ्चीसी	—	(हि०)	२
चौसठकद्विपूजा	स्वरूपचंद	(हि०)	६३, २००	जयपुरवंदना	वलदेव	(सं०)	२२४
छ				जयमालसंग्रह	—	(प्रा०)	११८
छन्दस्तनावलि	हरिराम	(हि०)	८८	जलगाहनक्रिया	ब्र० गुलाल	(हि०)	५३
छंदशतक	वृन्दावन	(हि०)	८८	जलहरतेला की पूजा	—	(सं०)	२०१
छवितरंग	महाराजा रामसिंह	(हि०)	२७४	ज्वालामालिनीस्तोत्र	—	(सं०)	१०२, २३६
छद्दशा	द्यानतराय	(हि०)	१३७, ३११				२८८
छहजीव कथा	—	(हि०)	२२०	ज्ञानकीजन्मलीला	बालचंद्र	(हि०)	२७८
छद्दाला	बुधजन	(हि०)	१५६	ज्ञानचर्चा	मनोहरदास	(हि०)	२८, २३५
छियालीसदोष रहित आहारवर्णन	—	(हि०)	१६६				१३१, १५३
ज				ज्ञान क्रिया संवाद	—	(सं०)	१०८
जह्मपद बेलि	कनकसोम	(हि०)	२६३	ज्ञानपञ्चीसी	—	(हि०)	२८१, २६३
				ज्ञानपञ्चीसी	बनारसीदास	(हि०)	११५, १५२, १६३
				ज्ञानतिलक के पद	कवीरदास	(हि०)	२६७

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०
ज्ञानपञ्चोसीयतोषापन	सुरेन्द्रकीर्ति	(सं०)	५५४	जिनराजस्तुति	कनककीर्ति	(हि०)	११२
ज्ञानपूजा	—	(सं०)	२००	जिनराज विमती	—	(हि०)	११३
ज्ञानसार	रघुनाथ	(हि०)	५ २६०	जिनरात्रिव्रतकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	२६४
ज्ञानसूर्योदयनाटक	वादिचन्द्र सूरि	(सं०)	८६	जिणालाहूगीत	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	११७
ज्ञानसूर्योदय नाटक भाषा	पारसदास निगोल्या	(हि०)	४०	जिनविमती	सुमतिकीर्ति	(हि०)	१६४
ज्ञानमार्गशा	—	(हि०)	२८	जिनयज्ञकथा	आशाधर	(सं०)	२००
ज्ञानसारगाथा	—	(प्रा०)	१३२	(प्रतिष्ठापाठ)			
ज्ञानमचीसी	बनारसीदास	(हि०)	१६३	जिनस्तुति	—	(हि०)	१०३
ज्ञानसूक्ष्मी	शोभचंद्र	(हि०)	६२६	जिनस्तुति	रूपचंद्र	(हि०)	१५२
ज्ञानानंद आचकावा	रायमल्ल	(हि०)	२८	जिनस्तुति	श्रीपाल	(हि०)	३११
ज्ञानार्णव	आ० शुभचंद्र	(सं०)	४०, १६२	जिनबाणीस्तुति	—	(सं०)	१५४
ज्ञानार्णव भाषा	जयचन्द्र छात्रडा	(हि०)	४०	जिनसंहिता	—	(सं०)	५३
ज्ञानार्णव तत्वप्रकरण टीका	—	(हि०)	२६२	जिनस्वामीविमती	सुमतिकीर्ति	(हि०)	११७
जिनकुशलसूरि छंद	—	(हि०)	३००	जिनसहस्रनाम	जिनसेनाचार्य	(सं०)	१०२
जिनगीत	अजयराज	(हि०)	१६३	१०७, ११६, २०४, २३६, २०१, ३०३			
जिनगुणसंपत्तिव्रतपूजा	भ० रत्नचंद्र	(सं०)	३०८	जिनसहस्रनामपूजा	धर्मभूषण	(सं०)	१३, ११४
जिनगुणसंपत्तिव्रतीयापन	—	(सं०)	२०५	जिनसहस्रनामपूजामाषा	स्वरूपचंद्र विलास	(हि०)	१५
जिनगुणसंपत्ति व्रतकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	२३६	जिनसहस्रनाम	आशाधर	(सं०)	१०२, १३४
जिनगुणपञ्चीसी	—	(हि०)	२८	२०४, २३६, २६२			
जिनदत्तचरित्र	गुणभद्राचार्य	(सं०)	६६	जिनसहस्रनामस्तोत्र	—	(सं०)	१८८
जिणयतचरित्र	पं० लाखू	(अथर्वशं)	६६	जिनसहस्रनामटीका	मू० आशाधर	(सं०)	१०२, १३६
(जिनदत्तचरित्र)				टीका० श्रुतसागर सूरि			
जिनधर्मपञ्चीसी	भगवतीदास	(हि०)	१६५	जिनसहस्रनाम टीका	अमरकीर्ति	(सं०)	२३६
जिनदेवपञ्चीसी	नवलराम	(हि०)	३११	जिनसहस्रनाम भाषा	बनारसीदास	(हि०)	१०३,
जिनपंजरस्तोत्र	कमलप्रभ	(सं०)	१०२	१३७, २६६			
जिनपूजापुरंवर कथा	सुशालचंद्र	(हि०)	२६७	जीवों की संख्या का वर्णन	—	(हि०)	२८
जिनदर्शन	—	(प्रा०)	१०२	जीतकल्याण चूरि	—	(हि०)	१७०
जिनदर्शन	—	(सं०)	१२३	जीवधरचरित्र	आ० शुभचंद्र	(सं०)	२११
जिनपाण्डित्यमुनि स्वाध्याय विमलहर्ष वाचक	(हि०)	१८४		जीवमोक्षचचीसीपाठ	—	(हि०)	२
जिनमंगलाष्टक	—	(सं०)	२६६	जीवसमासवर्णन	नेमिचंद्राचार्य	(प्रा०)	१०

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०
जीव की भावना	—	(हि०)	१६७	तत्त्वार्थसार	—	(सं०)	१६
जीयडा गीत	—	(हि०)	१६७	तत्त्वार्थसूत्र	अमृतचंद्र सूरि	(सं०)	१७६
जैनशतक	भूधरदास	(हि०)	६४, १३४, १६०, २३४	तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	(सं०)	११, १२, ५२, १०७, १११, ११२, १३५, १६७, १७२, १७६, २६४, २७२, २७५, ३०२, ३०६
जैनभाष्य	—	(सं०)	१३३	तत्त्वार्थसूत्र टीका	श्रुतसागर	(सं०)	१३
जैनरासो	—	(हि०)	१४१, १६१	तत्त्वार्थसूत्र टीका (टब्बा)	—	(सं० हि०)	१७६
जैनपञ्चीसी	नथलराम	(हि०)	१५३	तत्त्वार्थसूत्र वृत्ति	—	(सं०)	११
ज्येष्ठजिनवक्त्रभा	—	(हि०)	१५६	तत्त्वार्थसूत्र वृत्ति	योगदेव	(सं०)	१३
जैनमार्तण्डपुराण	भ० महेन्द्रभूषण	(सं०)	२४६	तत्त्वार्थसूत्र भाषा	कनककीर्ति	(हि०)	१३, १७४
जैनविवाहविधि	जिनसेनाचार्य	(सं०)	२००	तत्त्वार्थसूत्र भाषा	जयचंद्र छावड़ा	(हि०)	१४
जैनरक्षास्तोत्र	—	(हि०)	३०१	तत्त्वार्थसूत्रभाषा	सदासुख कासलीवाल	(हि०)	१४
जैनेन्द्रव्याकरण	देवनंदि	(सं०)	८७	(अर्थ प्रकाशिका)			
जोगीरसा	जिणदास	(हि०)	११७, ११८, १३१, १३२, १६३, ३०४	तत्त्वार्थसूत्र भाषा	—	(हि०)	१४, १६
ज्योतिषरत्नमाला	श्रीपति भट्ट	(सं०)	२४६	तपोयोत्तनअधिकार सत्तावनी	—	(सं०)	१३६
ज्योतिष संबंधी पाठ	—	(सं०)	२८८	तमाखु की जयमाल	आणंद मुनि	(हि०)	१६०
ट				तमाखुगीत	आणंद मुनि	(हि०)	२६२
				तमाखु गीत	महसकर्ण	(हि०)	२६१
द				तर्कसंग्रह	अन्नभट्ट	(सं०)	४६, १६६
				तारातबोल की बार्ता	—	(हि०)	१३८, १३९
दालगण	(सूरत)	(हि०)	२८	त्रिपंचाशत्क्रियाजतोषापत्र	—	(सं०)	३०६
दालगण	—	(हि०)	१३४	त्रिभुवनत्रिजयीस्तोत्र	—	(सं०)	१५६
त				त्रिभंगीसंग्रह	नेमिचंद्राचार्य	(प्रा०)	१६, १०
				त्रिभंगीसार	श्रुतमुनि	(प्रा०)	१७६, १६
तत्त्वसार	देवसेन	(प्रा०)	१०, ११०	त्रिलोकदर्पण कथा	खड्गसेन	(हि०)	६२
तत्त्वसारदीहा	भ० शुभचन्द्र	(हि०)	३७८	त्रिलोकदर्पण	—	(सं०)	६३
तत्त्वार्थबोध भाषा	बुधजन	(हि०)	१५	त्रिलोकसार	नेमिचंद्राचार्य	(प्रा०)	६२, २३
तत्त्वार्थरत्नप्रभाकर	प्रभाचंद्र	(सं०)	१५, १७८	त्रिलोकसार भाषा	—	(हि०)	६३, ६४, १०
तत्त्वार्थराजवार्तिक	भट्टाकलंकदेव	(सं०)	१५				
तत्त्वार्थश्लोकवार्तिकालंकार	आ० विद्यानंदि	(सं०)	१५				

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०
त्रिलोकसार भाषा	उत्तमचन्द्र	(हि०)	६३	त्रेपनक्रियावतोद्यापन	देवेन्द्रकीर्ति	(सं०)	२०४
त्रिलोकसार बंध चौपई	सुमतिकीर्ति	(हि०)	६२, ३१८	त्रेपनमात्रवर्णन	—	(हि०)	३००
त्रिलोकसार संश्लि	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	१८०	तेरहकाठिया	बनारसीदास	(हि०)	२२२
त्रिलोकप्रवृत्ति	—	(प्रा०)	१२६	तेरहद्वीपपूजा	—	(हि०)	७३
त्रिलोकप्रवृत्ति	यति वृषभ	(प्रा०)	२३४	तेलावत की पूजा	—	(सं०)	२०१
त्रिलोकसार सटीक	मृ० क० नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	२३४	त्रेसठशलाकापुरुष	—	(हि०)	१६३
	टीका० सहसकीर्ति			त्रेसठशलाकापुरुषों का वर्णन	ब्र० कामराज	(हि०)	१६३
त्रिभंगीवर्णन	—	(हि०)	२६३	त्रेसठशलाकापुरुष	—	(हि०)	१२६
त्रिवर्णाचार	सोमसेन	(सं०)	१८४	नामावलि			
त्रिशतिकाटीका	—	(सं०)	२४७	त्रैलोक्यदीपक	श्यामदेव	(सं०)	६३
त्रिशततुविंशति पूजा	शुभचंद्र	(सं०)	२००	त्रैलोक्यतीजकथा	ब्रह्म ज्ञानसागर	(हि० प०)	२६७
तीनचौबीसी	—	(हि०)	११				
तीन चौबीसी तीर्थकर्तों का नामावलि		(हि०)	१४७, १४८				
तीनचौबीसीपूजा	—	(सं०)	२०४, २००				
तीर्थकरविनता	कल्याणकीर्ति	(हि०)	१४१				
तीर्थमालास्तोत्र	—	(सं०)	१३३				
तीर्थकरवर्णन	—	(हि०)	६				
तीर्थकर्तों की गर्भ जन्मादि		(हि०)	१४७				
कल्याणों की तिथियाँ							
तीर्थकरजयमाल	—	(हि०)	१६२				
तीनलोक के चौबीसों का वर्णन		(हि०)	१२४				
तीनलोककथन	—	(हि०)	१२८				
तीनलोकपूजा	टेकचंद्र	(हि०)	१३				
तीर्थमहासंघ	लोहाचार्य	(प्रा०)	३६				
तीसचौबीसी के नाम	—	(हि०)	१२८				
तीसचौबीसीपाठ	—	(हि०)	२				
तीस चौबीसीपूजा भाषा वृन्दावन		(हि०)	२३				
तीसचौबीसीपूजा भाषा	—	(हि०)	६३				
त्रेपनक्रियाविधि	दौलतराम	(हि०)	२०				
त्रेपन क्रिया	ब्रह्म गुलाल	(हि०)	३००				

द

दक्षिणयोगीन्द्रपूजा	आ० सोमसेन	(सं०)	२०१
दशदेवों के चौबीस नाम	—	(हि०)	१२७
दशस्थजयमाल	—	(प्रा०)	१२०
दशलक्षजयमाल	रहभू	(अ०)	६३, २०१
दशलक्षजयमाल	—	(सं०)	५४, ६१
दशलक्षजयमाल	भावशर्मा	(प्रा०)	६४, २०१
दशलक्षगर्भ पं०	सदासुख कसलीवाल	(हि०)	१८८
दशलक्षगर्भ वर्णन	—	(हि०)	२०, ३६
दशलक्षगणपूजा	—	(सं०)	१४, २०१
			३०७
दशलक्षगण पूजा	अभयनंदि	(सं०)	२०१
दशलक्षगण पूजा	सुमति सागर	(सं०)	५४
दशलक्षगण पूजा	—	(हि०)	२०६
दशलक्षगण व्रत कथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	२८५
दशलक्षगणवतोद्यापन पूजा	—	(हि०)	२०१, २०४
दशस्थान चौबीसी	ज्ञानतराय	(हि०)	२५६

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०
दर्शन	—	(सं०)	३३८, ३०२
दर्शनकथा	भारामल्ल	(हि०)	८३
दर्शनदशक	चैनसुख	(हि०)	१०३
दर्शनपञ्चीशी	आरतराम	(हि०)	२८
दर्शनपाठ	—	(हि०)	१०३
दर्शनपाठ	—	(सं०)	११२, १५८
दर्शनपाहुड	पं० जयचंद	(हि०)	१६६
दर्शनसार	देवसेन	(प्रा०)	१५६, १६६
दर्शनाष्टक	—	(सं०)	२४०
दसकरणापाठ	—	(हि०)	२८

(दसबंधमेद वर्णन)

दस्तूरमालिका	वंशीधर	(हि०)	१७०
दसोत्तरा (पहेलियाँ)	—	(हि०)	१३६
दानकथा	भारामल्ल	(हि०)	८३
दानशीलचौपई	जिनदत्त सूरि	(हि०)	२६१
दानशीलसंवाद	समयसुन्दर	(हि०)	१४१
दानशीलतपसावना	—	(हि०)	२२४
दुर्गपदप्रबोध	श्री यल्लभवाचक हेमचन्द्राचार्य	(सं०)	२३०
देवगुरु पूजा	—	(हि०)	५४
देवप्रभास्तोत्र	जयनंदि सूरि	(सं०)	२४०
देवपूजा	—	(सं०)	५४, ५६, २०१
देवपूजा	—	(हि०)	१५८
देवसिद्ध पूजा	—	(हि०)	१११
देवसिद्धपूजा	—	(सं०)	३०२
देवागमस्तोत्र	आ० समंतभद्र	(सं०)	४७, २४०
देवागमस्तोत्र भाषा	जयचन्द छाबड़ा	(हि०)	४७
देहली के राजाओं की वंशावलि	—	(हि०)	१३६, २७६
देहव्यथा कथन	—	(हि०)	२८
दोहाशतक	हेमराज	(हि०)	११४

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०
दोहाशतक	रूपचन्द	(हि०)	११४, ११६
दोहाशतक	योगीन्द्र देव	(अ०)	१६२
दोहे	वृन्द	(हि०)	१३६
दोहे	दादूदयाल	(हि०)	२७५
दंडकषट्प्रशिक्षा	—	(सं०)	२४०
द्रव्यसंग्रह	आ० नेमिचन्द्र	(प्रा०)	११, १६, १३१ १३६, १८०, २७५, ३०३, १०७ ११२, १२२

द्रव्यसंग्रह भाषा	जयचंद छाबड़ा	(हि०)	१८
द्रव्यसंग्रह भाषा	वंशीधर	(हि०)	१८
द्रव्यसंग्रह भाषा	—	(हि०)	१८
द्रव्यसंग्रह भाषा	पर्वतधर्मार्थी	(गु०)	१६, १७, १८०
द्रव्य का व्योम	—	(हि०)	१६
द्रव्य संग्रह वृत्ति	ब्रह्मदेव	(सं०)	१७, १८०
द्वादशांगपूजा	—	(हि०)	५६
द्वादशांगप्रेक्षा	—	(प्रा०)	४०
द्वादशांगप्रेक्षा	—	(हि०)	४०, ११६, १६५ १२०, १३८, १२२

द्वादशांगप्रेक्षा	लक्ष्मीचन्द	(प्रा०)	११८
द्वादशांगप्रेक्षा	औधू	(हि०)	११६
द्वादशांगप्रेक्षा	आलू	(हि०)	१६३, १६२
द्वादशांगपूजा	देवेन्द्रकीर्ति	(सं०)	२०१, २०६
द्विसंज्ञान काव्य सटीक	नेमिचन्द्र	(सं०)	६६

ध

धनजयनाममाला	धनंजय	(सं०)	२३२
धन्यकुमार चरित्र	सकलकीर्ति	(सं०)	७०, २१२
धन्यकुमार चरित्र	आ० नेमिदत्त	(सं०)	७०, २१२
धन्यकुमार चरित्र	खुशालचन्द	(सं०)	७०, २१२
धन्यकुमार चरित्र	गुणभद्राचार्य	(सं०)	२१०

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०
धमाल	धर्मचन्द्र	(हि०)	१६४	नंदबत्तीसी	मुनि विमलकीर्ति	(हि०)	६४
ध्यानबत्तीसी	बनारसीदास	(हि०)	१५३, २०२	नंदबत्तीसी	—	(सं०)	१५०
धर्मचक्र	रणमल्ल	(सं०)	२१०	नंदबत्तीसी	हेम विमल सूरि	(हि०)	२४५
धर्मचक्रपूजा	—	(सं०)	३००	नंदीश्वरपूजा	—	(सं०)	५५
धर्मचक्रपूजा	यशोनंदि	(सं०)	५५	नंदीश्वरपूजा	अजयराज	(हि०)	१३०
धर्मतरंग गीत	जिणदास	(हि०)	१२३	नंदीश्वरपूजा	—	(प्रा०)	२०१
धर्मपरीक्षा	अभितगति	(सं०)	२६, १०४	नंदीश्वरउत्थापनपूजा	—	(सं०)	५५
धर्मपरीक्षा	मनोहरदास सोनी	(हि०)	२६	नंदीश्वरउत्थमाल टीका	—	(हि०)	५५
धर्मपरीक्षा	हरिषेण	(सं०)	१०४	नंदीश्वरव्रतविधान	—	(हि०)	५५
धर्मपरीक्षा भाषा	—	(हि०)	१०४	नंदीश्वरव्रतकथा शुभचंद्र	—	(सं०)	२०६
धर्मपरीक्षा भाषा	का० दुलीचंद	(हि०)	२६	नंदीश्वरविधान	—	(हि०)	५५
धर्मरत्नाकर	जयसेन	(सं०)	१०५	नंदीश्वरविधान रत्ननंदि	—	(सं०)	२०२
धर्मसायन	पद्मनंदि	(प्रा०)	२६, १०५	नंदीश्वरविधानकथा	—	(सं०)	२०६
धर्मशास्त्र	—	(हि०)	१३१	नंदीश्वरपूजा	—	(सं०)	२०२
धर्म विलास	ज्ञानतराय	(हि०)	२६, १३४, ३१०	नमस्कार स्तोत्र	—	(हि०)	३०१
धर्मप्रश्नोत्तर	चंपाराम	(हि०)	३०	नयचक्रभाषा	हेमराज	(हि०)	४३
श्रावकाचार भाषा	—	—	—	नयचक्र	देवसेन	(सं०)	१६६
धर्मशर्माभ्युदय	हरिचन्द्र	(सं०)	२१०	नरक के दीहे	—	(हि०)	३००, १२७
धर्मसहेली	मनराम	(हि०)	१६७	नरक दुख वर्णन	—	(हि०)	३०
धर्मसंग्रहश्रावकाचार	पं० मेधावी	(सं०)	३०, १०५	नरक निर्गोद वर्णन	—	(हि०)	६
धर्मसास्त्रोपदेष्टा	शिरोमणिदास	(हि०)	२६	नरकवर्णन	—	(हि०)	६, १३०
धर्मपदेशश्रावकाचार	पं० नेमिदत्त	(सं०)	३०, १०५	नलदमयंती चौपई समय सुन्दर	—	(हि०)	२६१
धातुपाठ	बोपदेव	(सं०)	२३०	नवग्रह शरिष्टनिवारकमूला	—	(हि०)	२०२
धृतरि	सुखदेव	(हि०)	२००	नवग्रह निवारण जिनपूजा	—	(सं०)	५५
धृतरि	—	(हि०)	२०४	नवग्रहपूजा विधान	—	(सं०)	२६२
न				नवतत्त्ववर्णन	—	(हि०)	२१०
				नवतत्त्ववर्णन	—	(सं०)	१२५
नक्षत्रसिद्ध वर्णन	—	(हि०)	१०१	नवतत्त्वबालानोध	—	(हि०)	११२
ननद मौजर्ह का	आनंद वर्धन	(हि०)	१५५	नवरत्न कविच	—	(हि०)	२७७
भगवत	—	—	—	नवरात्री नो तिथि	—	(हि०)	२११

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०
नव वाही सिन्धुनाथ	जिनहर्ष	(हि०)	१४६	नित्यविहार (राधा माधो)	रघुनाथ	(हि० प०)	२६२
रहवन	—	(सं०)	२८८	नियम सार टीका पद्मप्रभसलधारिदेव	—	(सं०)	१०१
रहवन विधि	—	(सं०)	२६७	निर्वाणकारण गाथा	—	(प्रा०)	१०६, ११२, ११६
नाकौडा पार्श्वनाथ स्तवन समय सुन्दर	—	(हि०)	१४२	निर्वाणकारण भाषा	—	(हि०)	१६७, २०२, २४०, २६३, ३०८
नागकुमार चरित्र नथमल विलासा	—	(हि० प०)	८३	निर्वाणकारण भाषा भगवतीदास	—	(हि०)	१०३, १०७, १२०, १२६, १३३, १६२, १७२, ३११
नादी संगल विधान	—	(सं०)	५५	निर्वाणकारणपूजा	द्यानतराय	(हि०)	२०२
नागकुमारपंचमी कथा मल्लिकेश सूरि	—	(सं०)	३०६	निर्वाणपूजा	—	(सं०)	५६
नागदमन कथा	—	(हि०)	१३०	निर्वाणक्षेत्रपूजा	—	(हि०)	१६
नागदमन कथा	—	(हि० ग०)	३०१	निर्वाणक्षेत्रपूजा	स्वरूपचंद्र	(हि०)	५६, २०२
(कालिय नागाणी संवाद)	—	—	—	निश्चयव्यवहारदर्शन	—	(हि०)	१२४
नागश्रीकथा	ब० जेम्सदत्त	(सं०)	८३	निश्कषाष्टमी कथा	ब० ज्ञानसागर	(हि०)	२६५
(रात्रिभोजन कथा)	—	—	—	निशिमोजनत्यागकथा	भारामल्ल	(हि०)	८४, २२६
नामकर्मप्रक्रिया का वर्णन	—	(प्रा०)	१००	नीतिशतक	चाणक्य	(सं०)	६४
नाममाला	धर्मजय	(सं०)	८८, ११२	नीतिशतक	भर्तृहरि	(सं०)	२३५
न्यायदीपिका	यति धर्म भूषण	(सं०)	४७, १६६	नीतिसार	इन्द्रनंदि	(सं०)	२३६
न्यायदीपिका भाषा	पन्नालाल	(हि०)	४७	नीलकंठ श्योतिष	नीलकंठ	(सं०)	०४५
नारी चरित्र	—	(हि०)	१५१	नुसखे	—	(हि०)	११८
नारायण लाला	—	(हि०)	२८७	नूर की शकुनावलि	नूर	(हि०)	१४८
नासिकेशोपाख्यान	नंददास	(हि०)	१३६	नेमीकुमार बारहमासा	—	(हि०)	१५८, १६१
नास्तिकवाद	—	(सं०)	१८६	नेमिनाथ के दश भव	—	(हि०)	८९
नित्यपूजासंग्रह	—	(सं०)	६६	नेमिनाथ का बारहमासा श्यामदास गोधा	—	(हि०)	१८६
नित्यपूजा	—	(सं०)	६६	नेमिगीत	—	(हि०)	१६७
नित्यपूजा	—	(प्रा०)	५६	नेमिराजलगीत	डूंगरसी चैनाडा	(हि०)	१६७
नित्यपूजा	—	(हि०)	१५२	नेमिराजलगीत	—	(हि०)	२६०
नित्यपूजापाठ	—	(सं०)	५६, १६४	नेमिराजस्तवन	जिनहर्ष	(हि०)	२६०
नित्यपूजासंग्रह	—	(हि०)	५६, १७१, २६३, २६६, ३००	नेमिराजमहिगीत	—	(हि०)	१६७, २६२
नित्यनियमपूजा	—	(सं०)	२०२, २६०, २६३	नेमिजी की लहर	पं० डूंगो	(हि०)	१६५
नित्यनियमपूजा	—	(प्रा०)	२६०				

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०
नेमिजी को व्याहलो	लालचंद	(हि०)	३०३	नेमीश्वर लहरी	—	(हि०)	१५२
नेमि व्याहलो (नव मंगल) हीरा	—	(हि०)	८४	नेमीश्वर विनती	—	(हि०)	१५५
नेमिनाथ का व्याहलो	नाथू	(हि०)	१२०	नैयसी (नैनसिखी) के व्यापार का प्रमाण	(हि०)	१६०	
नेमिराजमति बेलि	ठक्कुरसी	(हि०)	११७	नैमित्तिक पूजा	—	(हि०)	१५५
नेमिनाथराष्ट्रल गीत	हर्षकीर्ति	(हि०)	१६६	पहाकलि मशवाहु मे पश्चिमदि तक	(सं०)	११७	
नेमिनाथचरित्र	अजयराज	(हि०)	२६८	पत्रिका	—	(सं०)	२७१
नेमिजिनपुराण	अ० नेमदत्त	(सं०) ६४, २२३					१३१, १३२
नेमिनाथ मंगल	—	(हि०)	१२३	पद	अजयराज	(हि०)	१३०, १३३
नेमिराजमति गीत	जिनहर्ष	(हि०)	१४७	पद	कनककीर्ति	(हि०)	३००
नेमिराजमति जलका	हेमराज	(हि०)	१६३	पद	कृष्ण गुलाब	(हि०)	१५६
नेमिदूत काव्य	विक्रम	(सं०)	२१०	पद	कबीरदास	(हि०)	२६४
नेमिदूत काव्य सटीक टीका० गुण विनय (सं०)	—		२११	पद	कालिक सूरि	(हि०)	२१३
नेमिनाथस्तवन	धनराज	(हि०)	२८२	पद	किशनसिंह	(हि०)	१६३
नेमिनाथस्तवन	—	(हि०)	२४४	पद	कुमुदचंद्र	(हि०)	२७३
नेमिनाथस्तवन	—	(सं०)	३०८	पद	किशोरदास	(हि०)	१२७
नेमिनाथस्तोत्र	—	(हि०)	२८६	पद	खुशालचंद्र	(हि०)	२६७
नेमिनाथस्तोत्र	शालि पंडित	(सं०)	२४०	पद	चरनदास	(हि०)	२७५
नेमिशीलवर्णन	—	(हि०)	१३८	पद	छीहल	(हि०)	११७
नेमीश्वरगीत	जिनहर्ष	(हि०)	१५६	पद	जगजीवन	(हि०)	१२०
नेमीश्वरगीत	हर्षकीर्ति	(हि०)	१६६	पद	जगताराम	(हि०)	१३३, १३७
नेमीश्वरराजमतिगीत	विनोदीलाल	(हि०)	१५६				१५४
नेमीश्वरराजमति गीत	—	(हि०)	१६६	पद	जगराम	(हि०)	१६३
नेमीश्वरराष्ट्रल संवाद	विनोदीलाल	(हि०)	३०६	पद	जिनकुशलसूरि	(हि०)	२७३
नेमीश्वर के दशमवातर अ० धर्मरुचि	—	(हि०)	१५७	पद	जिनदत्तसूरि	(हि०)	२७३
नेमीश्वरगीत	छीहल	(हि०)	११७	पद	जिनदास	(हि०)	१६४, १२२
नेमीश्वरजयमाल	भंडारी नेमिचंद्र	(अ०)	११७				१५५
नेमीश्वररास	अ० रायमल्ल	(हि०)	११३, १३२, २७२, २८८	पद	जिनवल्लभ	(हि०)	२६०
नेमीश्वररास	नेमिचंद्र	(हि०)	१२७	पद	जीवनराम	(हि०)	१५५
(हस्तिनापुराण)				पद	ओधा	(हि०)	१३७, १५३
				पद	जौहरीलाल	(हि०)	१७६

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०
पदसंग्रह	देवचंद	(हि०)	११३	पद	बखतराम	(हि०)	१३७
पद	टोडर	(हि०)	१२८	पद	वृन्द	(हि०)	१३२
पद	डालूराम	(हि०)	१४७	पद	विश्वभूषण	(हि०)	१३१, १३२
पद	संघपति राइ डूंगर	(हि०)	२६३	पद	श्यामदास	(हि०)	१६४
पदसंग्रह	ब्र० दयाल	(हि०)	१०४	पद	सालिंग	(हि०)	१६२
पद	द्यानतराय	(हि०)	१२६, १३७ १६३, २१०	पद	कवि सुन्दर	(हि०)	१६७, २०६
पदसंग्रह	दीपचन्द्र	(हि०)	११३, १५१, १६३, २६६, १२७, १३७	पद	सूरदास	(हि०)	२८८
पदसंग्रह	सदास	(हि०)	११३	पद	सोमचंद	(हि०)	१५६
पद	मंदरस	(हि०)	२८८	पद	हरखचंद (धनराज के शिष्य)	(हि०)	२८६
पद	नवलराम	(हि०)	१३७, १५१ १६२	पदसंग्रह	हर्षचंद	(हि०)	११३
पद	नाथू	(हि०)	१२७	पद	हर्षकीर्ति	(हि०)	११७
पद	नेमकीर्ति	(हि०)	६०६	पद	हरीसिंह	(हि०)	१०७, १३७ १६३
पद	पूनी	(हि०)	१३२	पदसंग्रह	—	(हि०)	१०३, १०४ १२६, २००, १२८, १४३, १४६ १४६, १४८, १५१, १५३, १५८ १६३, २६३, २६४, २६६, ३०३ १३५, २८८, २७२
पद	परमानंद	(हि०)	११६	पदसंग्रह	साधुकीर्ति	(हि०)	२७३
पद	बुधजन	(हि०)	१४७		(सत्तर प्रकार पूजा प्रकरण)		
पद	बालचन्द	(हि०)	१२३	पद्यपुराण	रविषेणाचार्य	(सं०)	२२३
पद	भागचन्द	(हि०)	१६२	पद्यपुराण	—	(हि०)	३०१
पद	बनारसीदास	(हि०)	११६, १२६ १६५, १६९, १६३		(उत्तर खण्ड)		
पद	भूधरदास	(हि०)	११६, १३७ १५२, १५६	पद्यनंदिपंचविंशति	पद्यनंदि	(ग्रा०)	३०, २६६
पदसंग्रह	भनराम	(हि०)	११४, ११५ १२०, १४२, २००, ३१०	पद्यनंदिपञ्चीसी	मन्नालाल खिन्दुका	(हि०)	३१
पद	मलजी	(हि०)	१६७	पद्यपुराणभाषा	सुशालचंद	(हि०)	६४
पद	रामदास	(हि०)	१२६, १३२	पद्यपुराणभाषा	दीलतराम	(हि०)	६४, १२३
पद	अष्टभनाथ	(हि०)	१३९	पद्यावतीषष्टकवृत्ति	—	(सं०)	१०४
पद	रूपचंद	(हि०)	१११, ११३ १२६, १२६, १६३, १६६	पद्यावतीकवच	—	(सं०)	२०२
				पद्यावतीपटल	—	(सं०)	२०२

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०
पञ्चावतीपूजा	—	(सं०)	२०२, २०६	पञ्चपरमेष्ठीपूजा	—	(हि०)	२०३
			१५८	पञ्चपरमेष्ठीपूजा	शुभचन्द्र	(सं०)	२०४
पञ्चावतीकथा	—	(हि०)	१८०	पञ्चपरमेष्ठीगुणस्तवन	पं० डालूराम	(हि०)	२४०
पञ्चावतीस्तो	—	(सं०)	१०४, २०२	पञ्चपरमेष्ठीस्तोत्र	—	(सं०)	२०५
			२७६	पञ्चपरमेष्ठियों के मूलगण	—	(हि०)	३००
पञ्चावतीस्तोत्र	—	(हि०)	१०४	पञ्चपरमेष्ठियों की चर्चा	—	(हि०)	२७३
पञ्चावतीस्तोत्रपूजा	—	(सं०)	२०४	पञ्चपरमेष्ठीमंत्रस्तवन	प्रेमराज	(हि०)	१४१
पञ्चावतीसहस्रनाम	—	(हि०)	२०२, २०४	पञ्चतंत्र	—	(हि०)	३०४
पञ्चावतीस्तोत्रकवच	—	(सं०)	२४०	पञ्चमकाल का गण भेद	करमचन्द्र	(हि०)	३००
पञ्चावतीचउपदे	जिनप्रभसूरि	(हि०)	३०१	पञ्चमीस्तवन	समय सुन्दर	(हि०)	१४७
पञ्चकल्याणकपूजा	पं० जिनदास	(सं०)	५६	पञ्चमीस्तुति	—	(सं०)	१४२
पञ्चकल्याणकपूजा	सुधासागर	(सं०)	५६	पञ्चमास चतुर्दशी (भ० सुरेन्द्र कीर्ति)	—	(सं०)	२०४
पञ्चकल्याणकपूजा	—	(हि०)	५७, २०३	अतीषापन	—		
पञ्चकल्याणकपूजा	लक्ष्मीचन्द्र	(हि०)	२०२	पञ्चमीजतोषापन	—	(सं०)	२०४
पञ्चकल्याणकपूजा	टेकचन्द्र	(हि०)	२०२, ५७	पञ्चमेकपूजा	टेकचन्द्र	(हि०)	५७
पञ्चकल्याणकपूजा	—	(सं०)	२०४	पञ्चमेकपूजा	भूधरदास	(हि०)	५७, ३११
पञ्चकल्याणकवडा	—	(हि०)	२६६	पञ्चमेकपूजा	विश्वभूषण	(हि०)	१६२
पञ्चकुमारपूजा	जवाहरलाल	(हि०)	५०	पञ्चमेकपूजा	—	(हि०)	२०३, २८६
पञ्चकुमारपूजा	—	(हि०)	३०१	पञ्चमेकपूजा	भ० रत्नचन्द्र	(सं०)	२०५
पञ्चमंगल	रूपचन्द्र	(हि०)	१०५, १११	पञ्चमेकपूजा	अजयराज	(हि०)	२३०
			११६, १२०, १२३, १४१, १४६	पञ्चमधावा	—	(हि०)	१५८, १६४
			१५६, १६४, १६७, १६९, २४०				२०२
			२८६, ३०४, ३०६, ३०७, ३११	पञ्चमधावा	पं० हरीचन्द्र	(हि०)	१६५
पञ्चमगतिवेलि	हर्षकीर्ति	(हि०)	११७, १२०	पञ्चलब्धि	—	(सं०)	१६४
			१६५	पञ्चसंसारस्वरूपभिरूपण	—	(सं०)	१८५
पञ्चदशशरीरवर्णन	—	(सं०)	२६६	पञ्चसंखि	—	(सं०)	२३०
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	यशोनन्दि	(सं०)	५७	पञ्चसंखिटीका	—	(सं०)	२३०
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	डालूराम	(हि०)	५७	पञ्चस्तोत्र	—	(सं०)	२३०
पञ्चपरमेष्ठीगुण	—	(हि०)	१३१	पञ्चस्तोत्र	—	(सं०)	२०५
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	—	(सं०)	२०३	पञ्चसहेली	दीदल	(हि०)	२६२

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०
पंचाख्यान (पंचतंत्र)	निरमलदास	(हि०)	२६१	परिभाषापरिच्छेद	पंचानन भट्टाचार्य	(सं०)	१६१
पंचाणुमत की जयमाला	वाई मेघश्री	(हि०)	३०४	(नयमूलसूत्र)			
पंचास्तिकाव्य	कुन्दकुन्दाचार्य	(प्रा०)	११, १८०	प्रथमशुक्लव्यानपञ्चीसी	—	(हि०)	३
पंचास्तिकाव्य टीका	अमृतचन्द्राचार्य	(सं०)	११, १८०	प्रक्रियारूपावली	पं० रामरत्न शर्मा	(सं०)	८७
पंचास्तिकाव्यप्रदीप	प्रभाचन्द्र	(सं०)	१६	प्रतिक्रमण	—	(प्रा०) (सं०)	३१
पंचास्तिकाव्यभाषा	हेमराज	(हि०)	१६, १८	प्रतिक्रमणसूत्र	—	(प्रा०)	२५६, ३१२
पंचास्तिकाव्य भाषा	बुधजन	(हि०)	१६१	प्रतिभास्तवन	राजसमुद्र	(हि०)	१४१
पञ्चेंद्रियवेष्टि	उक्कुरसी	(हि०)	११७, ११६ १६४, २६६	प्रतिष्ठापाठ	आशाधर	(सं०)	१७२
पन्थीगीत	झीहल	(हि०)	११४, ११६ १६४, ३०४	पृथ्वीराजवेष्टि	पृथ्वीराज	(हि०)	३०२
पद्मद्वयकार के पात्र वर्णन	—	(हि०)	१२७	प्रतिष्ठासारसंग्रह	चसुनंदि	(सं०)	५०
पद्माशाहजोदा की बात	—	(हि०)	१७१	प्रबोधसार	पं० यशःकीर्ति	(सं०)	३१
परमात्मप्रकाश	योगीन्द्रदेव	(अ०)	४१, ११४ ११८, १३२, १७१, १८३	प्रद्युम्नचरित्र	—	(हि०)	७०
परमात्मप्रकाश टीका	ब्रह्मदेव	(सं०)	४१	प्रद्युम्नचरित्र	सधारु	(हि०)	७०
परमात्मप्रकाश भाषा	दीनतराम	(हि०)	४१	प्रद्युम्नचरित्र	महासेनाचार्य	(सं०)	२१३
परमात्मपुराण	दीपचंद्र	(हि०)	४१	प्रद्युम्नचरित्र	कविसिंह	(अप०)	२१३
परमात्मवृत्तीसी	भगवतीदास	(हि०)	३०३	प्रद्युम्नकाव्य पंजिका	—	(प्रा०)	२१३
परमार्थगीत	रूपचंद्र	(हि०)	११६, १६०	प्रद्युम्नरासो	ब० रायमल्ल	(हि०)	१३२, ३०३ ११३
परमार्थदीक्षाशतक	रूपचंद्र	(हि०)	१११	प्रबोधबावनी	जिनरंग	(हि०)	१४१
परमानंदस्तोत्र	—	(सं०)	११२, १३३ १५७, २८८, ३०२	प्रबोधचन्द्रोदय	मल्लकवि	(हि०)	६०
परमानंदस्तोत्र	पूज्यपाद स्वामी	(सं०)	२६६	प्रबोधचन्द्रोदय नाटक	कृष्णमिश्र	(सं०)	२३३
परमज्योति	बनारसीदास	(हि०)	१७२, २७७ ३११	प्रभातजयमाला	विनोदीलाल	(हि०)	३०१
परमज्योतिस्तोत्र	—	(सं०)	२८७	प्रभादीगीत	गोपालदास	(हि०)	२६१
परवतपाइणी का रासो	—	(हि०)	२०७	प्रमेयलनमाला	अनन्तवीर्य	(सं०)	८८
परीवह विवरण	—	(हि०)	६१, ३०६	प्रयोगमुख्यसार	—	(सं०)	२३०
परीक्षामुख	आचार्य मारिक्खनंदि	(सं०)	४८	प्रवचनसार	कुन्दकुन्दाचार्य	(प्रा०)	४२, १६३
परीक्षामुख	जयचंद्र झाबडा	(हि०)	४८	प्रवचनसार भाषा	हेमराज	(हि० सं०)	४२, १११, १६३
				प्रवचनसार भाषा	बृन्दावन	(हि०)	४२
				प्रवचनसार भाषा	हेमराज	(हि० प०)	१६३

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०
प्रवचनसार सटीक	अमृतचंद्र सूरि	(सं०)	१६३	पार्श्वनाथस्तवन	विजयकीर्ति	(हि०)	१४१
प्रश्नोत्तरोपासकाचार	बुलाकीदास	(हि०)	११, १२६	पार्श्वनाथस्तवन	—	(सं०)	३०६, ३१० ३१२
प्रश्नोत्तरश्रावकाचार	सकलकीर्ति	(सं०)	३१, ३२, १०६	पार्श्वनाथनमस्कार	अभयदेव	(प्रा०)	३०१, २६४
प्रश्नोत्तरमाला	—	(हि०)	१३७	पार्श्वदेशान्तर छन्द	—	(हि०)	२४०
प्रशस्तिका	—	(सं०)	२५६	पार्श्वनाथस्तुति	—	(हि०)	१४५
प्रसंगसार	रघुनाथ	(हि०)	२६२	पार्श्वनाथस्तुति	भाव कुशल	(हि०)	१४६
प्रस्ताविकदीक्षा	जिनरंग सूरि	(हि०)	१४१	पार्श्वनाथस्तोत्र	—	(सं०)	१०४, २०० १४७, २४०, २७६
पथ्यविधानपूजा	रत्ननंदि	(सं०)	५८, १७२	पार्श्वनाथस्तोत्र	—	(प्राचीन हि०)	१३३
पथ्यविधान	—	(हि०)	१५७	पार्श्वनाथस्तोत्र	जिनराज सूरि	(सं०)	१४०
पथ्यविधानकथा	—	(सं०)	१२७	पार्श्वनाथस्तोत्र	कमललाभ	(हि०)	१४०
पथ्यप्रतोषापनपूजा	शुभचंद्र	(सं०)	२०५	पार्श्वनाथस्तोत्र	सनरंग	(हि०)	१४०
पथ्यविधानकथा	अ० ज्ञानसागर	(हि० प०)	२६५	पार्श्वनाथस्तोत्र	जिनरंग	(हि०)	१४०
पहेलियाँ	—	(हि०)	१३६	पार्श्वनाथस्तोत्र	—	(हि०)	१४२
पाक्षरक्षदलन	वीरभद्र	(सं०)	१८१	पार्श्वनाथस्तोत्र	मुनि पद्मनंदि	(सं०)	२४०
पाक्षीमूत्र	कुशल मुनिव	(प्रा०)	३१२	पार्श्वनाथस्तोत्र	राजसेन	(सं०)	२६६
पाठसंग्रह	—	(प्रा०)	१७२	पार्श्वनाथस्तोत्र	समयराज	(हि०)	१४०
पाठसंग्रह	—	(हि०)	१७२, ३१०	पार्श्वनाथ का सालेहा अजयराज	—	(हि०)	३०, १६३
पाठसंग्रह	—	(सं०)	१७२	पार्श्वजिनस्मरण वर्णन सहजकीर्ति	—	(हि०)	१४७
प्राकृतव्याकरण	चंड	(सं०)	२३०	पार्श्वनाथचरित्र	अ० सकलकीर्ति	(सं०)	२१३
प्राकृतव्याकरण	—	(सं०)	२३०	पार्श्वपुराण	भूधरदास	(हि०)	७२, १११, २१३
पार्श्वपुराण	बुलाकीदास	(हि०)	६४	पार्श्वलघुपाठ	—	(प्रा०)	१०४
पार्श्वपुराण	अ० शुभचंद्र	(सं०)	६४, १२३	पार्श्वस्तोत्र	—	(सं०)	११२, २७६
पार्श्वनाथपूजा	—	(हि०)	६८	पार्श्वस्तोत्र	पद्म प्रभदेव	(सं०)	११२, २०७
पार्श्वनाथजयमाला	—	(सं०)	१५६	पार्श्व भजन	सहज कीर्ति	(हि०)	१४७
पार्श्वनाथ की वीनती	—	(हि०)	१५२	पार्श्वस्तोत्र हरखचंद (धनराज के शिष्य)	—	(हि०)	२८६
पार्श्वनाथजिनस्तवन	—	(सं०)	१४०	प्रायश्चित्तसमुच्चय	नंदिगुरु	(सं०)	३१, १०६
पार्श्वनाथस्तवन	—	(हि०)	१३८, २४० २६१	प्रायश्चित्तसंग्रह	अकलंक देव	(सं०)	१८४
पार्श्वनाथस्तवन	रंगवल्लभ	(हि०)	१४०				

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०
पाशाकेवली	—	(सं०)	२४५	पूजा एवं अभिषेक विधि	—	(सं०)	२०३
पाशाकेवली	—	(हि०)	१२५	पूजाटीका	—	(सं०)	२०४
(अबजदकेवली)				पूजा स्तोत्रसंग्रह	—	(हि०)	२४६
पाण्डिकसूत्र	—	(सं०)	१८१	पोसापण्डिकम्भण उठावना विधि	—	(हि०)	१४७
पीपाजी की चित्रावली	—	(हि०)	२८०	फ			
पीपाजी की परिचर्य	—	(हि०)	३०१				
प्रीतिकरचरित्र	ब्र० नेमिचंद्र	(सं०)	७२, २१३	फलपासा	—	(हि०)	१५२
प्रीतिकरचौपाई	नेमिचंद्र	(हि०)	१२७	(फलचिंतामणि)			
पुण्यकरीकस्तोत्र	—	(सं०)	२८८	फलवर्षी पार्श्वनाथस्तवन	पदमराज	(हि०)	१४०
पुण्यपाप जगमूल पर्वशीली भगवतीदास	—	(हि०)	१५५	फुटकरकवित्त	—	(हि०)	१५२
पुण्यसारकथा	पुण्यकीर्ति	(हि०)	२८४	फुटकरगाथा	—	(प्रा०)	२५७
पुण्यश्रवकथाकोष	दौलतराम	(हि०)	२२६, ८४	फुटकर दोहे तथा	गिरधरदास	(हि०)	१२७
पुण्यश्रवकथाकोष	किशनसिंह	(हि०)	१२५	कुंडलिया			
पुण्यहस्ताचन	—	(सं०)	२८८	ब			
पुण्यचौपाई	भालदेव	(हि०)	८४, ११४				
पुराणसारसंग्रह	भ० सकलकीर्ति	(सं०)	६४	बडाकवका	मनराम	(हि०)	१५३
पुरुषार्थसिद्धयुपाय	अमृतचंद्राचार्य	(सं०)	३२, १८५	बडाकल्याण	—	(हि०)	१५७
पुरुषार्थसिद्धयुपाय	पं० टोडरमल	(हि०)	३२	बडादर्शन	—	(सं०)	१०४
पुरुषार्थसिद्धयुपाय	दौलतराम	(हि०)	१८५	बडीसी	मनराम	(हि०)	२४६
पुरुषार्थानुशासन	गोविंद	(सं०)	१८६	बधाई	बालक अमीचंद्र	(हि०)	१२७
पुण्यभाषा	हेमचंद्र सूरि	(प्रा०)	१८६	बधावा	—	(हि०)	१३१, १४२
पुष्पाजलित्रतोद्यापन	—	(सं०)	२०४, ५८	बनारसीविलास	बनारसीदास	(हि०)	४, ११४,
पुष्पाजलित्रतकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि० प्रा०)	२६५				११५, ११८, १२०, १३७, १७२
पूजनक्रियावर्णन	धावा दुलीचंद्र	(हि०)	५८	बलभद्रपुराण	रहधू	(अ०)	२२३
पूजासंग्रह	—	(हि०)	५८, २७४	बहुरिगिनेन्द्र जयमाल	—	(सं०)	१३६
			२७७	बाईस परीषद	भूधरदास	(हि०)	११५
पूजासंग्रह	—	(सं०)	६८, ६९	बाईसपरीषद	—	(हि०)	२८७, २८८
पूजासंग्रह	—	(सं० हि०)	२१२, २६७				३२, ४१
पूजापाठसंग्रह	—	(हि०)	१६३, १६७, २६४, २६७, ३०६, २०३	बाल्यवर्णन	अजयराज	(हि०)	१३०
				बालनख्ख	रूपदीप	(हि०)	३

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०
भारहस्रनुप्रेक्षा	जगन्नाथ	(हि०)	२२७	शंकरोक्तिका	नथमल	(हि०)	२२७
भारहस्रडी	सूरत	(हि०)	१४१, १६१ २५७, ३११	(धनदत्तसेठकीकथा)			
भारहस्रडी	—	(हि०)	१४२, १६७	बंदेतानजयमाल	—	(सं०)	१६७
भारहस्रडी	श्रीदत्तलाल	(हि०)	१६२, १६६	बंदना	अजयराज	(हि०)	१३०
भारहभावना	—	(हि०)	२६३, ३०० १३६	बंधबोल	—	(हि०)	३
भारहभावना	भूधरदास	(हि०)	१५७	ब्रह्मविलास	भगवतीदास	(हि०)	३३
भारहभावना	भगवतीदास	(हि०)	१६२, १६६	ब्रह्मचर्यनववाहि वर्णन	पुठण्य सागर	(हि०)	१४८
भारहमासा	—	(हि०)	२६०	भ			
भारहस्तोत्रापन	—	(सं०)	२५७				
(द्वादशव्रतविधान)				भक्तमाल	—	(हि०)	१३६
बाहुबलिचरित्र	पं० धनपाल	(अप०)	७२	भक्तामरपूजाउद्यापन	श्री भूषण	(सं०)	५६, २०४
(बाहुबलि देव चरित्र)				भक्तामरस्तोत्रपूजा	आ० सोमसेन	(सं०)	२०३
बीसतीर्थकरजखंडी	भूधरदास	(हि०)	३११	भक्तामरपूजा	—	(सं०)	१६८
बीसतीर्थकरों की जयमाल		(हि०)	१२३	भक्तामरभाषा	गंगाराम पांड्या	(हि०)	१२६
बीसतीर्थकरों की नामावलि		(हि०)	१५७	भक्तामरभाषा	—	(हि०)	१२४, २६० २६०, ३०१, ३०३, ३१२
बीसतीर्थकरों की पूजा	अजयराज	(हि०)	१३०	भक्तामरस्तोत्र	आचार्य मानतुंग	(सं०)	११, १०४ १०६, १०७, १११, ११२, ११६, १३४, १६२, २०३, २६४, २७६, २०७, २८०, ३००, ३१०, ३११, ३१२
बीसतीर्थकरपूजा	पन्नालाल संधी	(हि०)	२०३	भक्तामरस्तोत्र भाषा	हेमराज	(हि०)	१०४, ११२ ११५, १३५, १३६, १६४ १७२, २६३, २६६, ३०२, ३०३, ३०८
बीसतीर्थकरपूजा	नरेन्द्रकीर्ति	(सं०)	२०४	भक्तामरस्तोत्रटीका	—	(सं०)	१०५, १०६ २०१
बीसतीर्थकरस्तुति	सहजकीर्ति	(हि०)	१४७	भक्तामरस्तोत्र टीका	अखयराज श्रीमाल	(हि०)	११४
बीसविरहमान के नाम	—	(हि०)	१२६	भक्तामरस्तोत्रवृत्ति	अ० रायमल्ल	(सं०)	१०६
बीसविरहमानस्तुति	प्रेमराज	(हि०)	१४७	भक्तामरवृत्ति	अ० रतनचन्द्र सूरि	(सं०)	२४१
बीसविधमानतीर्थकर पूजा	—	(हि०)	३०३	भक्तामरस्तोत्र भाषा	जयचन्द्रजी छावड़ा	(हि०)	२४२
बीसा यंत्र	—	(हि०)	२८७	भक्तामरस्तोत्रभाषा कथा सहित	नथमल	(हि०)	२४२
बुधजनविलास	बुधजन	(हि०)	१७३, ३१२				
बुधजनसतसई	बुधजन	(हि०)	१४				
बुधरास	—	(हि०)	१६०				
बेलिकेविपैक्यन	हर्षकीर्ति	(हि०)	१२८				
भोधिपाहुच भाषा	जयचंद्र छावड़ा	(हि०)	१६४				

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०
भक्ताभरस्तोत्र भाषा कथा सहित	विनोदीलाल (सं०)	१२६		भवसिंधुचतुर्दशी	बनारसीदास	(हि०)	२६१
भक्ताभरस्तोत्रसहित	—	(सं०)	३०८	भववैराग्यशतक	—	(अ०)	१६४
भक्ताभरस्तोत्रकथा	—	(सं०)	२०६	भगवत महापुराण भाषा	नंददास	(हि०)	२६६
भक्तिभावती	—	(हि०)	२८५	भारतीस्तोत्र	—	(सं०)	२४२
भक्तिमंगल	बनारसीदास	(हि०)	१६२	भावनावचीत्ती	अमितिगति	(सं०)	१५६, २५७
भक्तिवर्णन	—	(प्रा०)	१४६	भावनावर्णन	—	(हि०)	६६
भगवती आराधनाभाषा	मदा मुख कासलीवाल (हि०)	३३,		भावसंग्रह	देवसेन	(प्रा०)	२०, १०१
			१८७	भावसंग्रह	श्रुतमुनि	(प्रा०)	२१, १८१
भगवतीपूज	—	(प्रा०)	१८१	भावसंग्रह	पं० वामदेव	(सं०)	१८१
भगवानदास के पद	भगवानदास	(हि०)	२४१	भावों का कथन	—	(हि०)	१३७
भट्टारक देवेन्द्रकीर्ति की पूजा	—	(सं०)	१६४	भास	मनहरण	(हि०)	२६२
भट्टारकपट्टावली	—	(हि०)	१७७	भाषाभूषण	महाराज जसवंतसिंह	(हि०)	२७६
भङ्गलीविचार	सारस्वत शर्मा	(हि०)	२८६	भुवनेश्वरस्तोत्र	सोमकीर्ति	(सं०)	२७५
	आ० रत्ननंदि	(सं०)	७३	भूधरविलास	भूधरदास	(हि०)	३१२
भद्रबाहुचरित्रभाषा	किशोरसिंह	(हि०)	७३, २१६	भूपालचतुर्विंशति	भूपाल कवि	(अ०)	१०६, २४२, २७८
भद्रबाहुचरित्रभाषा	चंपाराम	(हि०)	२०४	भोजचरित्र	पाठक राजबल्लभ	(सं०)	७४
भयहरस्तोत्र	—	(अ०)	३०१	भोजप्रबंध	पं० अल्लारी	(सं०)	२१६
भयहरस्तोत्र	—	(सं०)	१०६, २८८				
भयवर्षादर्शनाथस्तोत्र	—	(प्रा०)	१००				
भारताराजदिव्यजयवर्णनभाषा	—	(हि०)	६४				
भरतनक्तवसि के १६ स्व रूपों का वर्णन	—	(हि०)	१५७				
भरतेश्वरवैभव	—	(अ०)	११७				
भर्तृहरि की वार्ता	—	(हि०)	२७८				
भर्तृहरि शतक	भर्तृहरि	(सं०)	३१०				
भविष्यत्त चरित्र	श्रीधर	(अ०)	७४				
भविष्यदत्त चरित्र	श्रीधर	(सं०)	२१६				
भविष्यदत्तपंचमी कथा पं० धनपाल	—	(अ०)	७३, २१६				
भविष्यदत्तचौपई	त्र० रायमल्ल	(हि०)	१११, २१६				
भविष्यदत्तकथा	—	(हि०)	१६१				

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०
मनुष्य की उत्पत्ति	—	(हि०)	१४१	मुनिमाला	—	(हि०)	१४८
मनो(ध)माला	—	(हि०)	१६४	मुनिवर्णन	—	(हि०)	३
महादेव का व्याहली	—	(हि०)	१३६	मुनिवा स्तुति	—	(हि०)	१५६
महाभारतकथा	लालदाम	(हि०)	१३६, २६७	मुनीश्वरों की जयमाला	जिणदास	(हि०)	१६४, २०५
महाभारत कथा	—	(हि०)	३०१	मुनिगीत	—	(हि०)	२६२
महावीर वीमती	—	(हि०)	१५६	मुनिसुवतानुमेजा	योगदेव	(अथ०)	११७, १३१
(चादिनपुर)				मुक्तावलिप्रकाश	सुशालचन्द्र	(हि०)	२२७
महावीरस्तवन	जिनवल्लभ	(सं०)	१४१	मुक्तावलीनतोधावनपूजा	—	(सं०)	२०६
महावीर स्तवन	—	(हि०)	२६१	मुकुटसप्तमीकथा	अ० ज्ञानसागर	(हि०)	२६५
महावीर स्तवन	—	(सं०)	२०६	मुकुटसप्तमीवतकथा	सुशालचन्द्र	(हि०)	२६७
महीमई	भट्टी	(सं०)	८७	मूढावृक्वर्णन	भगवतीदास	(हि०)	१३२
महीपालचरित्र	मुनि चारित्रभूषण	(सं०)	७४	मूलाचारप्रदीपिका	भ० सकलकीर्ति	(हि०)	३३
महीपालचरित्र	नथमल	(हि०)	२१६	मूलाचारभाषा टीका	अष्टभद्रदास	(हि०)	३३
मांगीतुंगी तीर्थ वर्णन	परिवारराम	(हि०)	२१४	मेघकुमारगीत	पूना	(हि०)	११५, ११७
मांगीतुंगी श्री जखड़ा	रामकीर्ति	(हि०)	२७०				१२०, १३०, १४६, १६४, १६७
मांगीतुंगी स्तवन	—	(हि०)	३०३	मेघकुमारगीत	कनककीर्ति	(हि०)	२२७
मतिवर्चोसा	यशःकीर्ति	(हि०)	२६२	मेघदूत	कालिदास	(सं०)	२१७
मातृकापाठ	—	(हि०)	१४८	मेघमालाउद्यापन	—	(सं०)	२०४
मानवावनी	मनोहर	(हि०)	११६	मेघमालावतकथा	अ० ज्ञानसागर	(हि०)	२६५
मानमंजरी	नंददास	(हि०)	२७८, २६३	मेघमालावतकथा	सुशालचन्द्र	(हि०)	२६७
मानवर्णन	—	(सं०)	२१७	मोक्षपैठी	वनारसीदास	(हि०)	३३, ११३, ११६, १६२, ३०६
मारीस्तोत्र	—	(सं०)	३१०	मोक्षमार्गप्रकाश	पं० टोडरमल	(हि०)	३४, १५७
मालपञ्चोत्ती	विनोदीलाल	(हि०)	२५०	मोक्षसुखवर्णन	—	(हि०)	३५, ६,
माखामहोत्सव	विनोदीलाल	(हि०)	३३	मोडा	हर्षकीर्ति	(हि०)	१४८
माखीरासा	जिणदास	(हि०)	१६६	मोरभ्रज लीला	—	(हि०)	१३६
मासांतचतुर्दशीपूजा	अक्षयराम	(सं०)	२०४	मोहउच्छेदस्थिति पञ्चांगी	—	(हि०)	३
मित्रविकास	घीसा	(हि०)	३१२	मोहमर्दनकथा	—	(हि०)	२८७
मितभाषणीटीका	शियादित्य	(सं०)	४८	मोहविवेकयुद्ध	वनारसीदास	(हि०)	६१२, १६५
मिथ्यावैखंडन	अखतराम साहू	(हि०)	१८७				१७६
मिथ्यात्वनिषेध	वनारसीदास	(हि०)	१८७				

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०
मौनएकादशीव्रतकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	२६५	यादवरासो	पुण्यरत्ननगरि	(हि०)	२६२
मौनव्रताद्यापन	—	(सं०)	२०५	यादुरासो	गोपालदास	(हि०)	२६२
मंगलाष्टक	—	(सं०)	१०६	योगशत	अमृतप्रभ सूरि	(सं०)	२४७
मंगल	विनोदीलाल	(हि०)	१३१	योगसमुच्चय	नवनिधिराम	(सं०)	१९४
मंजारीगीत	जिनचन्द्र सूरि	(हि०)	२६४	योगसार	योगचन्द्र	(हि०)	१६०, ३०५
मंत्रस्तोत्र	—	(हि०)	१४८	योगसार	योगीन्द्रदेव	(अ०)	४२, २१४ ११६, १२८
मंत्रशास्त्रपाठ	—	(सं०)	२७५	योगसारभाषा	बुधजन	(हि०)	४२
मृगसिंहादवर्णन	—	(हि०)	१२५	योगीशसा	पांडे जिनदास	(हि०)	४०, १२० १२२, १६५
मृत्युमहोत्सव भाषा	दुलीचन्द्र	(हि०)	४२				
मृत्यु महोत्सव	—	(सं०)	१०७				
मृत्युमहोत्सव	बुधजन	(हि०)	१६४				

य

यस्यावार	वसुनंदि	(सं०)	३४
यवचिन्तामणि	—	(हि०)	२६४
यंत्रलिखन व पूजने की विधि	—	(सं०)	३०२
यशस्तिलकचम्पू	सोमदेव	(सं०)	७४
यशोधरचौपई	अजयराज	(हि०)	७७
यशोधरचरित्र	खुशालचन्द्र	(हि०)	७६, १२४
यशोधरचरित्र	ज्ञानकीर्त्ति	(सं०)	७५, २१७, २१८, २६७
यशोधरचरित्र	परिहानंद	(हि०)	७६
यशोधरचरित्र	लिखमीदास	(हि०)	२१८
यशोधरचरित्र	पद्मनाभ कायस्थ	(सं०)	२१७
यशोधरचरित्र	बादिराज सूरि	(सं०)	२१७
यशोधरचरित्र	सकलकीर्त्ति	(सं०)	७६, २१७
यशोधरचरित्र	वासवसेन	(सं०)	७६, २१७
यशोधरचरित्र	सोमकीर्त्ति	(सं०)	७५, २१७
यशोधरचरित्रभास	सोमदत्त सूरि	(हि०)	१२६
यशोधरचरित्र टिप्पण	—	(सं०)	७७
याग मंडल	—	(सं०)	२८८

र

रत्नार्चन कथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि० प०)	२६५
रघुवंश	कालिदास	(सं०)	२१८
रजरत्ना स्त्री के दोष	—	(सं०)	१४६
रत्नकरण्डआवकाचार	समन्तभद्राचार्य	(सं०)	३०
रत्नकरण्डआवकाचार टीका	प्रभाचन्द्र	(सं०)	३४
रत्नकरण्डआवकाचार सदासुख काशलीवाल भाषा	(हि०)	३४, १८७	
रत्नकरण्डआवकाचार भाषा	थान जी	(हि०)	१८७
रत्नत्रयजयमाल	—	(हि०)	५६
रत्नत्रयजयमाल	नथमल	(हि०)	६१
रत्नत्रयजयमाल	—	(प्रा०)	२०६
रत्नत्रयपूजा	—	(सं०)	५६, २०८ २०६
रत्नत्रयपूजाभाषा	द्यानतराय	(हि०)	५६
रत्नत्रयपूजाभाषा	—	(हि०)	६६, २०६ २०७
रत्नत्रयपूजा	केशव सेन	(सं०)	२०६
रत्नत्रयपूजा	आशाधर	(सं०)	२०६
रत्नत्रयव्रतकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि० प०)	२६५

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०
रत्नत्रयव्रतोद्यापन	—	(सं०)	२०४	रेखता	बन्नीराम	(हि०)	४४
रत्नावलीव्रतोद्यापनपूजा	—	(सं०)	२०५	रेखता	कवीरदास	(हि०)	५६७
रत्नसंचय	विनयराज गणि	(प्रा०)	१८१	रैदवतकथा	देवेन्द्रकीर्ति	(सं०)	२२७
रथगसार	कुन्दकुन्दाचार्य	(प्रा०)	१०७	रोगपरीक्षा	—	(हि० सं०)	२४७
रंगनाथ स्तोत्र	—	(सं०)	२०१	रोग (कोथ) वर्णन	गोयम	(अ०)	११७
रविग्रतपूजा	—	(सं०)	५०६	रोहिणीकथा	—	(सं०)	८१
रविचार कथा	—	(हि०)	१४६	रोहिणीव्रतकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि० प०)	२६५
रविग्रतविधान	देवेन्द्रकीर्ति	(सं०)	३००	रोहिणीव्रतकथा	भानुकीर्ति	(सं०)	
रसरत्नसमुच्चय	—	(सं०)	२४७	रोहिणीव्रतोद्यापन पूजा	—	(सं०)	२०५
रसराज	—	(हि०)	२००	रोहिणीव्रतोद्यापन	केशवसेन	(सं०)	४८
रससार	—	(सं०)	२४७	ल			
रसिकप्रिया	केशवदास	(हि०)	२५१				
रागभाला	—	(सं० हि०)	१७१	लक्ष्मणचौबीसभेद	विद्याभूषण	(हि०)	२६४
रागभाला	भानुकीर्ति	(हि०)	२७३	लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मनंदि	(सं०)	१०६, २४२
रागरागिनी भेद	—	(हि०)	२६४	लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	(सं०)	१०७
राजनीति कवित्त	देवीदास	(हि०)	२३६	लक्ष्मस्तोत्र	—	(सं०)	२७६, २८८
राजमती नो निहो	—	(हि०)	२४१	लघुचेतसमाप्त	—	(सं०)	१७३
राजाचंद की चौबई	—	(हि०)	८५	लघुवाकनी	मनोहर	(हि०)	११६
राजाचंद की कथा	पं० कूरो	(हि०)	२८६	लघुस्नपनविधि	—	(हि०)	१०८
राजल का बाद मासा पदमराज	—	(हि०)	१००	लघुभंगल	रूपचंद	(हि०)	३११
राजलभारहमासा	—	(हि०)	१०६	लघुचायवपनीति	—	(सं०)	५०२
राजलपञ्चमी	—	(हि०)	८५	लघुलक्ष्मण	—	(सं०)	१०२, १५०
राजलपञ्चमी लालचंद त्रिनोदीलाल	—	(हि०)	१३१	५४०			
	१३२, १०६, १३१, १६६, २२७						
रामकथा भाषा	—	(हि०)	२६२	लघु सामायिक पाठ	—	(सं०)	१०६
रामस्तव	—	(सं०)	३०२	लब्धिविधान उद्यापन पूजा	—	(सं०)	२२, २०१
रामकृष्णकाव्य	पं० सूर्यकवि	(सं०)	२१८	लब्धिविधानपूजा	—	(हि०)	२०६
रामपुराण	भः सोमसेन	(सं०)	२२३	लब्धिविधानव्रतोद्यापन	—	(सं०)	२०६
(पञ्चपुराण)				लब्धिविधानकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	२६५
रूपदीप पिंगल	लैकृष्ण	(हि०)	८८	लब्धिविधानव्रतकथा	सुशालचंद	(हि०)	२६७
				लब्धिसारभाषा	पं० टोडरमल	(हि०)	५, २२

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०
लब्धिसार	आ० नेमिचन्द्र	(प्रा०)	२१	वृत्तरत्नाकर	भट्ट केदार	(सं०)	२३३
लाटीसंहिता	राजमल्ल	(सं०)	१=७	व्रतचोतनध्यानकाचार	अभ्रदेव	(सं०)	३४
लावणी	—	(हि०)	२=७	वृत्तरत्नाकरटीका	सोमचन्द्र गरि	(सं०)	२३३
सिंगानुशासन	हेमचन्द्राचार्य	(सं०)	२३०	वृन्दविनोदसतसई	वृन्द	(हि०)	१११
लीलावती	—	(सं०)	२५७	वृहदभक्तिकमण	—	(प्रा०)	३४
लीलावती भाषा	—	(हि०)	१७३	वृहदशांति विधान	—	(सं०)	६०
व				वृहदशांति स्तोत्र	—	(प्रा०) (सं०)	१०६
वहरागीर्णित	—	(हि०)	२३४	वृहदशांतिस्तवन	—	(सं०)	३१०
वज्रराज हंसराज चौपई जिनदेव सूरि	(हि०)	३०७		वृहदसिद्धचक्रपूजा	—	(सं०)	३०८
वज्रदन्तचक्रवर्ती की भावना—	(हि०)	१३३		व्यसनराजवर्णन	टेकचंद	(हि०)	१७३
वज्रनाभि चक्रवर्ती की भावना भूधरदास	(हि०)	१६४, १५७		वसुधारा	—	(हि०)	३०१
			१६२	वाय गीता का मंत्र	—	(हि०)	५४८
वज्रपंजरस्तोत्र	—	(सं०)	२७५	वाईसपरीषद् वर्णन	—	(हि०)	३०३
वणिकप्रिया	कवि सुखदेव	(हि०)	१२१	वाईस परीषद्	भूधरदास	(हि०)	३११
वड्दमाण कव	पं० जयमित्रहल	(अप०)	७०	वासवदत्ता	महाकवि सुबंशु	(सं०)	२१८
(वड्दमानकाव्य)				पंचक विचार	—	(सं०)	३१२
वणिजारोरास	रूपचंद	(हि०)	१६३	विमलप्रबंधरास	विनय समुद्र	(हि०)	२६५
वरागचरित्र	वड्दमान भट्टारक	(सं०)	७०, २१८	विघ्नहरस्तोत्र	—	(प्रा०)	१००
वड्दमानचरित्र	सकलकीर्ति	(सं०)	७०, २२३	विचारषड्विंशिका	धवलचंद के शिष्य	(सं०)	२४३
वड्दमानचरित्रटिप्पण	—	(सं०)	१७३	गजसार			
वड्दमानजिनद्वारविशिका	—	(सं०)	३१०	विजयसेठ विजया	सूरि हर्षकीर्ति	(हि०)	२६१
वड्दमानपुराणभाषा	पं० केसरीसिंह	(हि०)	६५	सेठायी सभभाष			
वड्दमानपुराणभाषा	—	(हि०)	६६	विज्जुचर अणुपेहा	—	(अप०)	११७
वड्दमानपुराण सूचनिका	—	(हि०)	६६	विदग्ध मुखमंडन	धर्मदास	(सं०)	७०, २१३
वड्दमानस्तोत्र	—	(सं०)	२६६	विद्यमानबीसतीर्थकर पूजा	—	(हि०)	६०
वड्दमानस्तुति	—	(सं०)	३१०	विद्यमान बीसतीर्थकरपूजा	जौहरीलाल	(हि०)	६०
व्रतकथाकोष भाषा	खुशालचंद	(हि०)	८५, २२६	विद्याविलास चौपई	आज्ञासुंदर	(हि०)	२६६
व्रतकथाकोश	श्रुतसागर	(सं०)	२२६	विनती	अजयराज	(हि०)	२४३, ३०६
व्रतविधानरामो	संगही दौलतराम	(हि०)	२५८				१६१
				विनती	कनककीर्ति	(हि०)	१३१, १४६

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०
विनती	विश्वनाथसिंह	(हि०)	१०८	वैद्यलक्षण	वनारसीदास	(हि०)	२८१
विनती	जगताराम	(हि०)	१२६	वैनविस्तार	नागरीदास	(हि०)	२५०
विनतीसंग्रह	देवावध	(हि०)	१३२	वैराग्यपञ्चीसी	भगवतीदास	(हि० प०)	४३, १३३, १०२
विनती	पूनी	(हि०)	१३१	वैराग्यशतक	—	(प्रा०)	४३
विनती	मनराम	(हि०)	३०६, ३१७	वैराग्यशतक	भर्तृहरि	(सं०)	१४२
विनतीसंग्रह	—	(हि०)	१०४, १३२, १५७, २७३	वैराग्यपुराण	प्रसू कवि	(हि०)	२६३
विनतीसंग्रह	—	(हि०)	१५८, २००	वैराग्यसामाना	भूधरदास	(हि०)	३११
विमलनाथपूजा	—	(सं०)	६०	श			
विमलनाथपूजा	—	(हि०)	६०				
विमलनाथपूजा	रामचंद्र	(हि०)	२०६	शकस्तवन	सिद्धसेन द्विवाकर	(सं०)	३०१
विवेकचोपड़	ब्रह्मगुलाल	(हि०)	३०४	शतकयथ	भर्तृहरि	(सं०)	२३६
विरहनी के गीत	—	(हि०)	२७५	शब्दानुशासन वृत्ति	हेमचन्द्राचार्य	(सं०)	२३३
विवेकजखड़ी	—	(हि०)	२७२	शब्द व धातु पाठसंग्रह	—	(सं०)	२६४
विष्णुसहस्रनाम	—	(सं०)	२७४	शब्दरूपावली	—	(सं०)	२७
विषापहार	—	(हि०)	३११	शत्रुंजयमुखमंडल ध्यादिनाथ स्तवन	—	(सं०)	३१०
विषापहार टीका	नागचंद्रसूरि	(सं०)	२४३	शत्रुंजयमुखमंडनस्तोत्र	विजयतिलक	(गु०)	२४३
विषापहारस्तोत्र	धनंजय	(सं०)	१०६, १०७, १५७, १५८, २४३, २७८, २७९	(युगादिदेव स्तवन)	—	—	—
विषापहारस्तोत्र भाषा	अचलकीर्ति	(हि०)	१०६, १२४, १२६, १३१, २४३	शत्रुंजयोद्धार पं० भानुमेरु का शिष्य	—	(हि०)	१२६
विशेषसत्ताविमर्श	—	(हि०)	१०२	नयसुन्दर			
विहारीपुस्तक	विहारी	(हि०)	१११, १३४				
विनतीसंग्रह	भूधरदास	(हि०)	३११	शनिश्चरदेव की कथा	—	(हि०)	२६७, २७, ३३४, १३८
वीतरागाष्टक	—	(सं०)	३१०	शनिश्चरस्तोत्र	दशरथ महाराज	(प्रा०)	१४०
वीरपदसंभाष	—	(हि० गु०)	१०६	शनिश्चरस्तोत्र	—	(हि०)	२७४
वीरस्तवन	—	(सं०)	३०६	शान्तिधरस्तोत्र	—	(प्रा०)	२८८
वैतालपञ्चीसी	—	(हि०)	२६४	शान्तिचक्रपूजा	—	(सं०)	६०, २०४
वैतालपञ्चीसी	—	(हि० ग०)	२६	शान्तिनाथपूजा	सुरेश्वर कीर्ति	(सं०)	२०७
वैथजीवन	लोलिम्बराज	(सं०)	२४७	शान्तिनाथपुराण	अशर	(सं०)	६६
				शान्तिनाथपुराण	सकलकीर्ति	(सं०)	६६, १२४
				शान्तिनाथजयमाळ	अजयराज	(हि०)	१३०

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०
शान्तिपाठ	—	(सं०)	१५६	शुभाधितार्थ	—	(सं०)	१६३
शान्तिनाथस्तवन	केशव	(हि०)	२६१	अद्वाननिर्णय	—	(हि०)	३५
शान्तिनाथस्तवन	गुणसागर	(हि०)	२४२	आवकाचार	अमितगति	(सं०)	३६
शान्तिनाथस्तोत्र	गुरुभद्र (गुणभद्र)	(सं०)	११७	आवकाचार	गुरुभूषणाचार्य	(सं०)	३६
शान्तिनाथस्तोत्र	कुशलवर्धनशिष्य	(हि०)	२४३	आवकाचार	पद्मनंदि	(सं०)	३५
	नगराणि			आवकाचार	पूज्यपाद	(सं०)	३६
शान्तिनाथस्तोत्र	मालदेवाचार्य	(सं०)	३१२	आवकाचार	योगीन्द्रदेव	(अप०)	१=६
शान्तिस्तवन	—	(सं०)	३१०	आवकाचार	वसुनंदि	(सं०)	३५
शान्तिस्तवनस्तोत्र	—	(हि०)	१०७	आवकाचार	—	(प्रा०)	३५
शालिभद्रचौपई	जिनराजसूरि	(हि०)	७=, २=६	आवकाचार	—	(सं०)	३६
शालिभद्रचौपई	—	(हि०)	२७२	आवकाचार	—	(हि०)	१=
शालिभद्रसंभाष	मुनि लावनस्वामी	(हि०)	१७४	आवकाचारदीहा	लक्ष्मीचंद	(प्रा०)	११०
शालिहोत्र	पं० नकुल	(सं० हि०)	२६६	आवकाचार	—	(हि०)	४
शास्त्रपूजा	ज्ञानतराय	(हि०)	६०	आवकाचार	—	(हि०)	३५
शास्त्रसंझलपूजा	ज्ञानभूषण	(सं०)	२०४	आवकाचार	—	(हि०)	३६
शिवरविलास	मनसुखराम	(हि०)	१=	आवकाचार	—	(हि०)	३५
शिवरविलास	—	(हि०)	१२६	आवकाचार	—	(प्रा०)	३५, २६४
शिवपञ्चीसी	वनारसीदास	(हि०)	२=, २=६	आवकाचार	जिनहर्ष	(हि०)	१४२
शिवरमणी का विवाह	अजयराज	(हि०)	१६३	आवकाचार	—	(हि०)	१७३
शिशुपालवध	महाकवि माघ	(सं०)	२१६	आवकाचार	—	(प्रा०)	२४०
शिष्यदीक्षादीक्षा पाठ	—	(हि०)	२	आवकाचार	—	(हि० प्रा०)	२६५
शीघ्रबोध	काशीनाथ	(सं०)	२४१	श्रीपालचरित्र	कवि वामोदर	(अप०)	७=
शीलगीत	भैरवदास	(हि०)	२४४	श्रीपालचरित्र	दौलतराम	(हि०)	७=
शीतलनाथस्तवन	धनराज के शिष्य	(हि०)	२=६	श्रीपालचरित्र	ब्र० नेमिदत्त	(सं०)	७=, ११६
	हरखचंद			श्रीपालचरित्र	परिमल्ल	(हि०)	७४, २१६
शीलकथा	भारामल्ल	(हि०)	२=, २=७	श्रीपालचरित्र	—	(हि० ग०)	७६
शीलतरंगिनीकथा	अक्षैराम लुहाडिया	(हि० प्रा०)	७६	श्रीपालदर्शन	—	(हि०)	१४६
शीलरास	विजयदेवसूरि	(हि०)	१३१, २६१	श्रीपालरास	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	११३, १३१
शुक्रराज कथा	माणिक्यसुन्दर	(सं०)	२२३		२७२, २=१, २=, ३०४, ३०७		
(रात्रु'जयगिरि स्तवन)				श्रीपाल की स्तुति	—	(हि०)	१४६, ३०६

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०
श्रीपादस्तोत्र,	- -	(हि०)	१४३	वटभक्तिपाठ	—	(सं०)	१२४
श्री अजितशान्तिस्तोत्र	---	(प्रा०)	१४०	षट्मालवर्णम	श्रुतसागर	(हि०)	१४३
श्री जिनकुशलसुस्तिुति उपाध्याय जयसागर (हि०)	१४०			वटिशतं	भण्डारी नैमिचन्द्र	(सं०)	३१०
श्री जिननमस्कार यशोनंदि	(हि०)	१६७		षोडशकारणजयमाला	—	(हि०)	६०
श्री जिनस्तुति ब्र० तेजपाल	(हि०)	१६७		षोडशकारणजयमाला	रङ्गधू	(अ०)	६१
श्रुतज्ञानवर्णन	—	(हि०)	६	षोडशकारणजयमाला	—	(सं०)	६१
श्रुतज्ञानमतोधापन	—	(सं०)	२०५	षोडशकारणपूजा	—	(सं०)	६१, २०६
श्रुतज्ञानपूजा	—	(सं०)	२०७	षोडशकारण पूजा उपापत केशवसेन	(सं०)	२०४, २०७	३०८, ६०
श्रुतोधापन	—	(हि०)	६०				
श्रुतबोध कालिदास	(सं०)	८६, २३३		षोडशकारणमतोधापनपूजा ब्र० ज्ञानसागर (सं०)	६०		
श्रुतस्कंधकथा ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	२६४		षोडशकारणभावना वर्णन	—	(हि०)	३६, २०८
श्रेणिकचरित्र गुरुचन्द्र सूर	(हि०)	२६३		षोडशकारण पं० सदासुख कासलीवाल (हि०)	१८८		
श्रेणिकचरित्र जयमित्रहल	(अ०)	७६		भावना			
श्रेणिकचरित्र भ० विजयकीर्ति	(हि०)	७६		षोडशकारणव्रत कथा सुशान्तचंद	(हि०)	२६७	
श्रेणिकचरित्र शुभचन्द्र	(सं०)	२१६		षोडशकारणव्रत कथा ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	२६४	
श्रेणिकचरित्र की कथा —	(हि०)	१२७					
शृंगारपञ्चोत्ती	ब्र० विनाथ	(हि०)	२५१				
शृंगारतिलक कालिदास	(सं०)	२५१					
ष							
षट्कर्मापदेशमाला अमरकीर्ति	(अ०)	१८८, ७८		सकलीकरण विधान	—	(सं०)	२०८, २६७
षट्कर्मापदेशमाला भ० सकलकीर्ति	(सं०)	१८८		सगुरुतीक्ष्ण मनोहर	(हि०)	१६५	
षट्कारिक पाठ	—	(हि०)	२	राजजनचित्तवल्लभ	—	(सं०)	१५६
षट्प्रशिका महावीराचार्य	(सं०)	२४८		सज्जनाय	विजयभद्र	(हि०)	१७४
षट्दर्शन समुच्चय हरिभद्रसूरि	(सं०)	१६६		सज्जनाय	—	(हि०)	२६१
षट्द्रव्यचर्चा	—	(हि०)	१२४	सत्तसिद्धय स्तोत्र	—	(सं०)	३१०
षट्द्रव्यवर्णन	—	(हि०)	२२, १३८	सतगुरु महिमा चरनदास	(हि०)	२८६	
षट्पाहुड कुन्दकुन्दाचार्य	(प्रा०)	४३, ११०		सद्भाषितावली	पन्नालाल	(हि० ग०)	२३६
		१३२, १६४, २७५					२३७
षट्पाहुडटीका भूधरदास	(हि०)	१६४		सद्भाषितावली	—	(हि०)	६५
षट्पञ्चासिका बालाबोध भट्टोत्पल	(सं०)	२४६		संक्रांति तथा महातिचार फल	—	(सं०)	२४६
				संगीत भेद	—	(हि०)	२६४
				संघपञ्चोत्ती	—	(हि०)	३०३

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०
संखेश्वर पार्श्वनाथस्तुति	रामत्रिजय	(हि०)	१६०	सम्बेदशिखरमहात्म्य दीक्षित देवदत्त	(सं०)	३६, १६०	
संखेश्वर पार्श्वनाथस्तवन	—	(हि०)	१४०	सम्बेदशिखरमहात्म्य मनसुख सागर	(हि०)	३६	
संभारा विधि	—	(सं०)	३१२	सम्यग्रकाश डालूराम	(हि०)	३६	
सप्ततितर्क	मिद्धसेन दिवाकर	(सं०)	१६६	सम्यग्दर्शन के आठ अंगों की कथा—	(सं०)	१६	
संस्कृतसंजरी	—	(सं०)	३०८	सम्यक्त्वकौमुदी मुनि धर्मकीर्ति	(सं०)	८६	
सप्तपदार्थी	श्री भावविद्येश्वर	(सं०)	८८	सम्यक्त्वकौमुदी कथा जोधराज गोदिका	(हि० प०)	८६	
सप्तश्रिपूजा	—	(सं०)	१६६, २०७			२२५	
सप्तपरमस्थान कथा	सुशालचंद	(हि०)	२६७	सम्यक्त्वकौमुदी कथा	—	(हि०)	८६
सप्तपरमस्थान पूजा	—	(सं०)	२०५	सम्यक्त्व के आठ अंगों	—	(हि०)	१२८
सप्तपरमस्थान विधानकथा	श्रुतसागर	(सं०)	८६	का कथा सहित वर्णन			
सप्तव्यसन कथा	आ० सोमकीर्ति	(सं०)	८६, १२६	सम्यक्चतुर्दशी	—	(हि०)	३
सप्तव्यसन कवित्त	—	(हि०)	१५५	सम्यक्त्वपञ्चीसी	भगवतीदास	(हि०)	३६, १०२
सप्तव्यसन चरित्र	—	(हि०)	२१५	सम्यक्त्वसप्तति	—	(सं०)	३१०
सप्तश्लोकी गीता	—	(सं०)	३०२	सम्यक्त्वों का भ्रमावा	—	(हि०)	१५०
संबोधपंचासिका	गोतमस्वामी	(प्रा०)	१२३, १८६	समकित्तभावना	—	(हि०)	३६०
संबोधपंचासिका	त्रिभुवनचंद	(हि०)	११४	समंतमद्रस्तुति	समंतभद्र	(सं०)	१०८
संबोधपंचासिका	आनतराय	(हि०)	३७, ११६	(बृहद स्वयंभू स्तोत्र)			
			१२३, २७३, १११	समयसारकलशा	अमृतचन्द्राचार्य	(सं०)	४३, १६०
संबोधपंचासिका	देवसेन	(प्रा०)	११८				२५६
संबोधपंचासिका	विहारीदास	(हि०)	१५३	समयसारगाथा	कुन्दकुन्दाचार्य	(प्रा०)	१३२,
संबोधपंचासिका	—	(प्रा०)	१३६				१६४, २०३
संबोधपंचासिका	—	(हि०)	३००	समयसारटीका	अमृतचन्द्राचार्य	(सं०)	४३
संबोधपंचासिका टीका	—	(प्रा० सं०)	१८६	समयसारनाटक	वनारसीदास	(हि०)	४४, ११३
संबोधपंचासिका	रङ्गभू	(अप०)	३६				११५, ११८, १२०, १५८
संबोधसूचरी सार	—	(सं०)	३७				१६५, २७४, ३०३
सम्बेदशिखरपूजा	जवाहरलाल	(हि०)	८०७	समयसारभाषा	राजमल्ल	(हि०)	४, १८५
सम्बेदशिखरपूजा	नंदराम	(हि०)	२०७	समयसारभाषा	जयचंद छाबड़ा	(हि०)	४१
सम्बेदशिखरपूजा	रामचंद्र	(हि०)	६१	समयसारवचनिका	—	(हि०)	१६६
सम्बेदशिखरपूजा	—	(हि०)	६१, ११६	समयशरणपूजा	पद्मलाल	(हि०)	२०७
सम्बेदशिखरपूजा	—	(सं०)	२०७	समयशरणपूजा	लालचंद विनोदीलाल	(हि०)	११६

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा पत्र सं०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा पत्र सं०
समवशरणपूजा	ललितकीर्ति	(सं०) २०७	सर्वैया	बनारसीदास	(हि०) १४६
समवशरणस्तोत्र	—	(सं०) २४६, २६४	सहस्रगुणितपूजा	भ० शुभचंद	(सं०) १२, २००
समाधितंत्र भाषा	पर्वत धमार्थी	(यु०) ४६, १६४	सहस्रगुणपूजा	भ० धर्मकीर्ति	(सं०) ६६
समाधितंत्र भाषा	—	(हि०) ४५, २३२ २६३, २०७	सहस्रनामपूजा	धर्मभूषण	(सं०) २००
समाधिमरण भाषा	—	(हि०) ४६, ४६, १६५	सहस्रनामपूजा	चैनसुख	(हि०) २००
समाधिमरण	—	(प्रा०) १४०	सहस्रनामस्तोत्र	—	(सं०) ५०, १७२
समाधिमरण	द्यानतरांग	(हि०) १६२	सहेलीगीत	सुन्दर	(हि०) १३१
समस्तकर्म सन्यास भावना	—	(सं०) २६७	सहेलीसंशोधन	—	(हि०) १५३
समाधिशतक	ममंतभट्टाचार्य	(सं०) ४६	सामारधर्मीनृत	पं० आशाभर	(सं०) २७, १६०
समाधिशतक	पूज्यपाद	(सं०) ११०	साली	कबीरदास	(हि०) २६७, ३०५
समुच्चय चौबीसी पूजा	रामचन्द्र	(हि०) ११६	साठि संवत्सरी	—	(हि०) २६५
समुच्चय चौबीसी तीर्थंकर अजयराज पूजा	—	(हि०) १६७	सात प्रकार वनस्पति उत्पत्ति पाठ	—	(हि०) ३
समुच्चय चौबीसी तीर्थंकर जयमाल	—	(हि०) १४०	सातव्यसनसंज्ञाया	होम कुशल	(हि०) २६१
समोत्तरावर्णन	—	(हि०) १	साधर्मी भाई राधवल्ल रायमल्ल की चिट्ठी	—	(हि०) १७४
संयमप्रवहण	मुनि मेघराज	(हि० प०) १०६	साधुबंदना	—	(हि०) १००
सरस्वतीस्तोत्र	विरंचि	(सं०) १०७	साधुओं के आहार के समय ४६ दोषों का वर्णन	—	(हि०) १००
सरस्वतीजयमाल	—	(सं०) २७७	साधु बंदना	बनारसीदास	(हि०) १३६, १६१ २०४, ३०६, ३११
सरस्वतीपूजा	—	(सं०) १५२	सामायिकपाठ	—	(सं०) १००, १४६ २००, ३००, ३६०
सरस्वतीपूजा	—	(हि०) ६१	सामायिकपाठ	—	(हि०) ३००
सरस्वतीपूजा भाषा	पञ्जलाल	(हि०) ६१	सामायिकपाठभाषा	त्रिलोकेन्द्रकीर्ति	(हि०) १००
सर्वज्ञर समुच्चय दर्पण	—	(सं०) २४७	सामायिकपाठभाषा	जयचंद छावड़ा	(हि० भा०) १६० ३०६
सर्वज्ञर के पुत्र अमरचंद की पुत्री (चाँदबाई) की जन्मरत्नी	—	(हि०) १३६	सामायिकटीका	—	(सं० प्रा०) १००
सर्वार्थसिद्धि	पूज्यपाद	(सं०) २२	सामायिकमहात्म्य	—	(हि०) ३७
सर्वोच्चिदायकस्तोत्र	—	(प्रा०) १४०	सामायिकविधि	—	(सं०) ३१०
सर्वोच्चिदायकस्तोत्र	—	(हि०) ३०१	सामुदिक श्लोक	—	(सं०) १६६
सर्वैया	केशवदास	(हि०) १६५			

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०
सारमनोरथमाला	साहू अचल	(हि०)	११७	सिद्धान्तसारदीपक	भ० सकलकीर्ति	(सं०)	२२, १८२
सारसमुच्चय	कुलभद्र	(सं०)	२७	सिद्धान्तसार दीपक	नथमल विलास	(हि०)	२४
सारसमुच्चय	दौलतराम	(हि०)	३८	सिद्धान्तसार संग्रह	आ० नरेन्द्रकीर्ति	(सं०)	१८२
सारस्वत धातुपाठ	हर्षकीर्ति	(सं०)	२३१	सिद्धों की जयमाला	—	(हि०)	३०४
सारस्वत प्रक्रिया	नरेन्द्र सूरि	(सं०)	२३५	सिद्धान्तक	—	(हि०)	१४७
सारस्वत प्रक्रिया	अनुभूति स्वरूपान्वार्य	(सं०)	८७, २३१	सिंहासन द्वात्रिंशिका	—	(सं०)	२२८
सारस्वत प्रक्रिया टीका	परमहंस	(सं०)	२३१	सिंहासन वत्सीसी	—	(हि०)	२६०
परिव्राजकाचार्य				सिन्दूर प्रकरण	वनारसीदास	(हि०)	४, ११४, ११५, ११८, १३३, २३६, २८२
सारस्वत रूपमाला	पद्मसुन्दर	(सं०)	२३१	सीता गुरुजनो की	—	(हि०)	१५८
सारस्वत यंत्र पूजा	—	(सं०)	३०८	सीता चरित्र	गमचन्द्र 'बालक'	(हि० प०)	७६, ११४, २४१
सास बहू का भगवद्	—	(हि०)	१७२	सीता की व्रताल	लक्ष्मीचंद	(हि०)	१६७
सास बहू का भगवद्	देवा ब्रह्म	(हि०)	२६७	सीता स्मरणलीला	तुलसीदास	(हि०)	२७८
साह्य द्वयदीपपूजा	त्रिश्व भूषण	(सं०)	२०८	सीमंधरस्तवन	—	(हि०)	१७७
सिद्ध क्षेत्र पूजा	—	(हि०)	२०८	सीमंधरस्तवन उपनिषदाय भगवत् लाभ	—	(हि०)	२४०
सिद्धचक्रकथा	नरसेन देव	(अप०)	७६	सीमंधरस्वामी जिन स्तुति	—	(हि०)	२६०
सिद्धचक्रपूजा	नथमल विलास	(हि०)	२०८	सीमंधरस्तवन	गणेश लालचंद	(हि०)	२६०
(अष्टाहिका पूजा)				सीमंधरस्वामी स्तवन	—	(प्रा०)	३०६
सिद्धचक्रपूजा	शानत राय	(हि०)	६२	सुकुमाल चरित्र भाषा	नाथूलाल दोसी	(हि० ग०)	२१६
सिद्धचक्रव्रतकथा	नथमल	(हि०)	८६	सुकुमाल चरित्र	भ० सकलकीर्ति	(सं०)	२१६
सिद्धचक्रस्तवन	जिनहर्ष	(हि०)	१४७	सुगुरुशतक	जिनदास गोधा	(हि०)	३८, १६३
सिद्धप्रियस्तोत्र	देवनंदि	(सं०)	१०६, १४१, १४५, २४४	सुगन्धदशमीपूजा	—	(हि०)	६२
सिद्धप्रियस्तोत्र टीका	—	(हि०)	१६४	सुगन्धदशमी व्रत कथा	नयनानंद	(अप०)	८६
सिद्धप्रियस्तोत्र	—	(सं०)	२८७	सुगन्धदशमी व्रतोपासन	—	(सं०)	२०८
सिद्धपूजा	पद्मनंदि	(सं०)	२०८	सुगन्धदशमी व्रतकथा ब्र० ज्ञानसागर	—	(हि०)	२१५
सिद्धपूजा	—	(हि०)	२८६	सुगन्धदशमी पूजा व कथा	—	(सं०)	२६३
सिद्धान्तचंद्रिका	रामचन्द्राश्रम	(सं०)	२३१	सुदर्शन चरित्र	भ० सकलकीर्ति	(सं०)	७६
(छन्दन्त प्रकरणी)				सुदर्शन चरित्र	विद्यानंदि	(सं०)	७७
सिद्धान्तचंद्रिका वृत्ति	सदानंद	(सं०)	२३१	सुदर्शन जयमाला	—	(प्रा०)	११०
सिद्धस्तुति	अजयराज	(हि०)	१३०				

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०
सुदर्शनरास	ब्रह्म रायमल्ल	(हि०)	११२, ११३	सोलहघड़ी दिनधर्म पूजा की		(हि०)	१६३
			१३१, १३२	सोलह सतीस्तवन	—	(हि०)	१४१
सुदृष्टितरंगिणी	टेकचंद	(हि०)	१४०	सोलहस्वप्न	भगवतीदास	(हि०)	१४४
सुदामा चरित्र	—	(हि०)	१३६	(स्वप्न भतीसी)			
सुपथ दोहा	—	(प्रा०)	१११	सोसठ बंध	कवीरदास	(हि०)	२६७
सुषाहुरिषिसंधि	महाशिव सूरि	(हि०)	१४८	सौख्यकार्य	अक्षयराम	(सं०)	१०६
सुद्धि प्रकाश	थानसिंह	(हि० प०)	६५	मतीघापन विधि		६३, २०५	
सुभाषित	—	(हि० प०)	६६	स्तंभनपार्श्वनाथगीत	महिमा सागर	(हि०)	२७३
सुभाषितरत्नावलि	भ० सकलकीर्ति	(सं०)	१६, ३३७	स्तवन	—	(हि०)	२६०
सुभाषितरत्नसंदोह	अमिनगानि	(सं०)	२३६	स्तवन	—	(हि०)	२५८
सुभाषितसंग्रह	—	(सं०)	२३६	स्तवन	जिनकुशल सूरि	(हि०)	३००
सुभाषितार्णव	—	(सं०)	४३	स्तुति	—	(हि०)	११३
सुभाषितार्णव	शुभचंद्र	(सं०)	२३७	स्तुति	द्यानतराय	(हि०)	१३४
सुभाषितरत्न भाषा	—	(हि०)	४६	स्तुतिसंग्रह	चंद कवि	(हि०)	२४४
सुमद्रासतीसुखाय	—	(हि०)	२६०	स्तोत्रटीका	आशाधर	(सं०)	२४८
सूतकवर्णन	—	(सं०)	१४६, १६०	स्तोत्रविधि	जिनेश्वर सूरि	(हि०)	२७३
सूतकभेद	—	(हि०)	१३१	स्तोत्रसंग्रह	—	(सं०)	१०७, १३६
सूक्ति सुक्तावलि	सोमप्रभ सूरि	(सं०)	१००, २३७			१४६, २४८, २०६	
सूक्तिसंग्रह	—	(सं०)	१००	स्नपन पूजा	—	(हि०)	१४४
सूत्रपाठक भाषा	जयचंद छावडा	(हि०)	११५	स्नान विधि	—	(प्रा० सं०)	२५७
सोलहकारण	—	(हि०)	२८६	स्फुट पद	—	(हि०)	१३३
सोलहकारण जयमाल	—	(अप०)	२०६	स्याद्वादमंजरी	मल्लिषेण	(सं०)	४८, ४२
सोलहकारण जयमाल	—	(प्रा०)	६२	स्वयंभूस्तोत्र	समंतभद्राचार्य	(सं०)	५८, ११२
सोलहकारण पूजा	—	(हि०)	६२			१०७, १३६	
सोलहकारण पूजा	टेकचंद	(हि०)	६२	स्वर्ग नर्क और मोक्ष का वर्णन		(हि०)	११६
सोलहकारण पूजा	द्यानतराय	(हि०)	६२	स्वामी कार्तिकेयानु स्वामी कार्तिकेय		(प्रा०)	४१
सोलहकारण भावना	—	(हि०)	६२	प्रेमा			
सोलह कारण भावना कनककीर्ति		(हि०)	१४२	स्वामी कार्तिकेयानु जयचंद छावडा		(हि०)	८६
सोलहकारण विशेष पूजा	—	(प्रा०)	६३	प्रेमा भाषा			
सोलहकारण पाषाण	—	(सं०)	१४६				

ग्रन्थ नाम	लेखक	सा. सं.	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं.
ह			हरिवंशपुराण	महाकवि स्वयंभू	(अ.प.)	३६
हनुमंतकथा (चौबई) अ० रायमल्ल		(हि०) ७७, १३२ १६१, २२१	हृदयास्तोकलोचन	—	(सं०)	२६२
हनुमच्छरित्र	अ० अजित	(सं०) २२१	हितोपदेश की कथाएँ	—	(हि०)	५७३
हंसमुक्तावलि	कवीरदास	(हि०) २६७	हितोपदेश (बत्तीसी)	बालचंद्र	(हि०)	१५०
हंसामावना	अ० अजित	(हि०) ११७	हितोपदेशभाषा	—	(हि० ग०)	२६५
हरिवंश पुराण	खुशालचंद्र	(हि०) ६७	हुक्कानिषेध	भूधरमल्ल	(हि०)	१२६
हरिवंश पुराण	अ० जिनदाम	(सं०) २२४	हेमन्याकरण	हेमचंद्राचार्य	(सं०)	२३१
हरिवंश पुराण	जिनसेनाचार्य	(सं०) ६६	होमविधान	आशाधर	(सं०)	३०७
हरिवंशपुराण	दौलतराम	(हि० ग०) ६७, २२४	होलिकाचरित्र	छीतर ठोलिया	(हि०)	८०
हरिवंशपुराण	महाकवि धवल	(अ.प.) १७४	होलीरेणुकाचरित्र	जिनदास	(सं०) ८७, २२१	
हरिवंशपुराण	अशः कीर्ति	(सं०) २२४	होलीवर्णन	—	(हि०)	२५८



★ ग्रन्थ प्रशस्तियों की सूची ★



क्रम संख्या	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता	रचना काल	ग्रन्थ सूची का क्रमांक
१.	अध्यात्मसवैया	रूपचंद	—	६२८
२.	आगमसार	मुनि देवचन्द्र	सं० १७७६	१
३.	आदिनाथ के पंचमंगल	अमरपाल	—	८४६
४.	आदिनाथस्तवन	ब० जिनदास	—	४१४
५.	आराधनास्तवन	ब्राह्मक विनयविजय	सं० १७२६	६२१
६.	दशकचमन	नागरीदास	—	४७०
७.	उपदेशसिद्धांतरत्नमाला भाषा	—	सं० १७७२	१४२
८.	उपासकदशामूत्रविवरण	अभयदेव सूरि	—	१४४
९.	उपा कथा	रामदास	—	४१६
१०.	एक सौ गुणहत्तर जीव पाठ	लक्ष्मणदास	सं० १८२४	४
११.	करुणाभरण नाटक	लच्छीराम	—	४२६
१२.	कर्मप्रकृति	नेमिचन्द्राचार्य	—	११
१३.	कर्मस्वरूपवर्णन	—	—	१८
१४.	कविकुलकंठाभरण	दूलह	—	४७१
१५.	कामन्दकीयनीतिसार भाषा	कामंद	—	२७६
१६.	काल और अंतर का स्वरूप	—	—	१८
१७.	गणभेद	रघुनाथ साहू	—	४०७
१८.	गुणाक्षर माला	भनाराम	—	६३२
१९.	गोमट्टसारकर्मकांड भाषा	पं० हेमराज	—	३७
२०.	गौतमपृच्छा	—	—	४४४
२१.	चंद्रराजा की चौपट्टी	—	सं० १६०३	७३२
२२.	चन्द्रहंसकथा	टीकम	सं० १७०८	४४६
२३.	चारित्रमारणजिका	—	—	१६१

क्रम संख्या	ग्रन्थ नाम	कर्ता	रचना काल	ग्रन्थ मूत्रों का क्रमांक
२४.	चारित्रसारभाषा	मन्नालाल	सं० १८७१	१६२
२५.	चौबीसठाणचौपई	साहू लोहट	सं० १७३६	८६१
२६.	चौरासीगोत्रोत्पत्तिदर्शन	नंदानंद	---	४८३
२७.	छवितरंग	महाराजा रामसिंह	---	४६७
२८.	छंदरत्नावली	हरिराम	सं० १७८८	४८२
२९.	जडतपदवेलि	कनकसोम	सं० १६२५	६०३
३०.	जम्बूस्वामीचरित्र	नाथूराम	---	२४७
३१.	जानकीजन्मलीला	बालवृन्द	---	४६६
३२.	जिनपलित मुनि स्वाध्याय विमलहर्ष वाचक	---	---	४४
३३.	जैनमार्त्त एंड पुराण	भ० महेन्द्र भूषण	---	४८४
३४.	ज्ञानसार	रघुनाथ	---	४०७
३५.	तत्त्वसारदोहा	भ० शुभचन्द्र	---	१६
३६.	तत्त्वार्थबोध भाषा	बुधजन	सं० १८७६	६४
३७.	तत्त्वार्थसूत्र भाषाटीका	कनककीर्ति	---	८०, ६२
३८.	तमाखू की जयमाल	आणंदमुनि	---	८०८
३९.	त्रिलोकसारबंधचौपई	सुमतिकीर्ति	सं० १६२७	५२३, ४६४
४०.	त्रिलोकसारभाषा	उत्तमचन्द्र	सं० १८४१	४६८
४१.	दशलक्षणव्रतकथा	ब्र० ज्ञानसागर	---	४१४
४२.	दस्तूरमालिका	वंशीधर	सं० १७६५	८६४
४३.	द्रव्यसंग्रहभाषा	वंशीधर	---	१२४
४४.	श्री धू चरित्त	---	---	४७६
४५.	नववाइसउक्ताय	जिनहर्ष	---	८०८
४६.	न्यायदीपिकाभाषा	पन्नालाल	सं० १६३५	३१२
४७.	नागदमनकथा	---	---	७५८
४८.	नित्यविहार (राधामाधो)	रघुनाथ साहू	---	४०७
४९.	नेमिजी का व्याहलो	लालचन्द्र	---	६२५
(नवमंगल)				
५०.	नेमिव्याहलो	हीरा	सं० १८४८	४५४
५१.	नेमिनाथचरित्र	अजयराज	सं० १७६३	६०६

क्रम संख्या	ग्रंथ नाम	कर्ता	रचना काल	ग्रंथ सूची का क्रमांक
५०.	नंदवत्तीसी	हेमचिसल मूरि	सं० १५६०	४८५
५१.	नंदरामपञ्चीसी	नंदराम	सं० १७४४	५७२
५२.	परमात्मपुराण	दीपचन्द्र	—	२६८
५३.	पाकशास्त्र	अजयराज पाटनी	सं० १७६३	७२६
५४.	पार्श्वनाथ स्तुति	भाषकुश्ल	—	८०६
५५.	पुरंदरचौपई	म० मालदेव	—	५५७
५६.	पुण्यसारकथा	पुण्यकीर्ति	सं० १७६६	५६७
५७.	पंचाख्यान (पंचतंत्र)	कवि निरमलदास	—	५६७
५८.	पंचस्तिकायभाषा	हुंजरा	सं० १८६२	१३०
५९.	प्रबोधचन्द्रोदय	मल्ल कवि	सं० १६०१	५८६
६०.	प्रतिष्ठासारसंग्रह	वसुनंदि	—	४२४
६१.	प्रद्युम्नचरित्र	सवारी	सं० १४११	४६७
६२.	प्रसंगसार	रघुनाथ	—	५०७
६३.	चारहस्यडी	श्रीरत्नलाल	—	८४१
६४.	बुधरासा	—	—	८०८
६५.	भक्तामरस्तोत्रभाषा	गंगाराम पांडे	—	७३१
६६.	भक्तामरस्तोत्रवृत्ति	म० रत्नचन्द्र मूरि	सं० १६६७	४२६
६७.	भक्तिभावती (भक्ति भाव)	—	—	५७६
७०.	भद्रबाहुचरित्रभाषा	चंपाराम	सं० १८००	२६६
७१.	भद्रबाहुचरित्र	किशनसिंह	सं० १७८३	५२७
७२.	मदनपराजय भाषा	स्वरूपचंद बिलास	सं० १६१८	५६०
७३.	सधुमालतीकथा	—	—	५७४
७४.	महाभारत	लालदास	—	५१८
७५.	मानमंजरी	नंददास	—	५७५
७६.	मितभाषिणी टीका	शिवदित्य	—	३१६
७७.	मूलाचारभाषाटीका	ऋषभदास	सं० १८८८	२११
७८.	सृष्टीसंवाद	—	—	७२६
७९.	मोडा	हर्षकीर्ति	—	८०७
८०.	यशोधरचरित्र	परिहानंद	सं० १६७०	५१४
८१.	रामकृष्णकाव्य	पं० सूर्यकवि	—	२६३

क्रम संख्या	ग्रंथ नाम	कर्त्ता	रचना काल	ग्रंथ सूची का क्रमांक
८२.	रूपदीपशिखल	जयकृष्ण	सं० १७७६	५८५
८३.	वच्छराजहंसराजचौपई	जिनदेव सूरि	—	६३६
८४.	वर्णिकाप्रिया	सुखदेव	सं० १७६०	७१६
८५.	वर्द्धमानपुराणभाषा	पं० केशरीसिंह	सं० १८७३	४७१
८६.	वंकचोरकथा	नथमल	सं० १७२५	३३४
८७.	विक्कमप्रबंधरास	विनयसमुद्र	सं० १५८३	६०३
८८.	विद्याविलासचौपई	आज्ञासुन्दर	सं० १५१६	६०३
८९.	वैतालपच्चीसी	—	—	५६२, ६०३
९०.	वैनविलास	नागरीदास	—	४७२
९१.	वैराग्यशतक	—	—	२७६
९२.	व्रतविधानरासो	मंगड़ी दौलतराम	सं० १७६७	५०४
९३.	शांतिनाथस्तोत्र	कुशलवर्द्धन शिष्य नगार्गण	—	४४२
९४.	शालिभद्रचौपई	जिनराज सूरि	सं० १६७८	५६७
९५.	शृंगारपच्चीसी	छविनाथ	—	४७५
९६.	पद्मालवर्णन	श्रुतसागर	सं० १८२१	७६२
९७.	षोडशकारणव्रतकथा	ब० ज्ञानसागर	—	५१४
९८.	मत्तरप्रकारपूजा प्रकरण	साधुकीर्ति	सं० १६१८	५३५
९९.	मत्तपदार्थी	भावविद्येश्वर	—	३१७
१००.	संखेश्वरपार्श्वनाथ स्तुति	रामविजय	—	८०८
१०१.	संबसप्रवहण	मुनि मेघराज	सं० १६६१	६४
१०२.	संबोधसत्तरी सप्त	—	—	२४१
१०३.	संबोधर्पचासिका	रङ्गू	—	२३६
१०४.	मास्ती	कबीरदास	—	६२६
१०५.	सामायिकपाठभाषा	त्रिलोकेन्द्रकीर्ति	सं० १८८२	६८७
१०६.	सारसमुच्चय	कुलभद्र	—	२४४
१०७.	सारसमुच्चय	दौलतराम	—	२४५
१०८.	सुकुमालचरित्र भाषा	नाथूताल दोसी	—	२६३
१०९.	सुबुद्धिप्रकाश	भानसिंह	सं० १८४७	६११

★ लेखक प्रशस्तियों की सूची ★

क्रम संख्या	ग्रंथ नाम	लेखक	लेखन काल	ग्रंथ सूची का क्रमांक
१.	आगमसार	मुनि देवचन्द्र	सं० १७६६	१
२.	आत्मानुशासन टीका	पं० प्रभाचन्द्र	सं० १४८१	२४३
३.	आदिपुराण	गुणदत्त	सं० १४४३	२६६
४.	आराधनाकथाकोष	—	सं० १४४४	३१७
५.	उत्तरपुराण	गुणदत्त	सं० १४४७	४७६
६.	उपासकाध्ययन	आ० वसुनंदि	सं० १८०८	४८
७.	कर्मप्रकृति	नेमिचन्द्राचार्य	सं० १६०६	६
८.	कर्मसंहिता	"	सं० १६७६	१२
९.	गोमट्टसार	"	सं० १७६६	२६
१०.	चतुर्विंशतिजिनकल्याणक पूजा जयकीर्ति		सं० १६८४	१४४
११.	चारित्रशुद्धिविधान	भ० शुभचन्द्र	सं० १४८४	३४३
१२.	जंबूस्वामीचरित्र	महाकवि वीर	सं० १६०१	४८४
१३.	जिणायत्तचरित्त	पं० लालु	सं० १६०६	४८६
१४.	जिनसंहिता	—	सं० १४६०	३४६
१५.	म्लायकुमारचरिए	गुणदत्त	सं० १४१७	४६०
१६.	"	"	सं० १४२८	४६१
१७.	तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामी	सं० १६४६	७८
१८.	तत्त्वार्थसूत्र वृत्ति	—	सं० १४४७	७६
१९.	त्रैलोक्य दीपक	वामदेव	सं० १४१६	६०१
२०.	द्रव्यसंग्रह	नेमिचन्द्राचार्य	—	१११
२१.	द्रव्यसंग्रहटीका	ब्रह्मदेव	सं० १४१६	२८
२२.	धन्यकुमारचरित्र	सकलकीर्ति	सं० १६४६	४६३
२३.	धन्यकुमारचरित्र	"	सं० १४६४	३४१
२४.	धर्मपरीक्षा	आ० अमितगणि	सं० १७६२	१७७
२५.	नंदवत्तीसी	हेमविमल सूरि	सं० १६००	४८४
२६.	पद्मनंदिपंचविंशति	पद्मनंदि	सं० १४३०	१६१

क्रम संख्या	ग्रंथ नाम	कर्त्ता	लेखन काल	ग्रंथ सूची का क्रमांक
२७.	परमात्मप्रकाश	योगीन्द्रदेव	सं० १४८६	११६
२८.	प्रबोधसार	पं० यशःकीर्त्ति	सं० १४८४	१६४
२९.	प्रवचनसारभाषा	हेमराज	सं० १७११	२७१
३०.	प्रश्नोत्तरश्रावकाचार	सकलकीर्त्ति	सं० १६३२	१६६
३१.	बाहुबलिदेवचरित्र	पं० धनपाल	सं० १६०२	४००
३२.	भक्तामरस्तोत्रवृत्ति	भ० रत्नचन्द्र सूरि	सं० १७२४	४२६
३३.	भगवानदास के पत्र	भगवानदास	सं० १८७३	४२६
३४.	भविष्यत्तत्त्वचरित्र	पं० श्रीधर	सं० १६४६	४०४
३५.	भविष्यत्तत्त्वचरित्र	"	सं० १६०६	४०६
३६.	भावसंग्रह	देवसेन	सं० १६२१	१३३
३७.	"	"	सं० १६०६	१३४
३८.	"	श्रुतमुनि	सं० १४१०	१३४
३९.	भोजचरित्र	पाठक राजवल्लभ	सं० १६०७	४०७
४०.	मृगीसंवाद	—	सं० १८२३	७२६
४१.	मूलाचारप्रदीपिका	भ० सकलकीर्त्ति	सं० १४८१	२१०
४२.	यशोधरचरित्र	वासवसेन	सं० १६१४	२७७
४३.	लब्धिसार	नेमिचन्द्राचार्य	सं० १४४९	१३६
४४.	वड्ढमाणकह	नरसेन	सं० १४८४	४१८
४५.	वड्ढमाणकव	पं० जयमित्रहल	सं० १४४०	४१६
४६.	वणिकप्रिया	सुखदेव	सं० १८४४	७१६
४७.	शब्दानुशासनवृत्ति	हेमचन्द्राचार्य	सं० १४२४	३६४
४८.	पट्कर्मोपदेशमाला	अमरकीर्त्ति	सं० १४४६	४२३
४९.	पट्कर्मोपदेशमाला	भ० सकलभूषण	सं० १६४४	८६
५०.	पट्पंचासिका बालाबोध	भट्टोत्पल	सं० १६४०	४४६
५१.	ममयसार टीका	अमृतचन्द्राचार्य	सं० १७८८	२८३
५२.	"	"	सं० १८००	२८६
५३.	ममयसारनाटक	धनारसीदास	सं० १७०३	२६०
५४.	संयमप्रवहण	मुनि मेधराज	सं० १६८१	६४
५५.	सिद्धचक्रकथा	नरसेनदेव	सं० १४१४	४३३
५६.	हरिवंशपुराण	महाकवि स्वयंभू	सं० १४८२	४३६

* ग्रंथ एवं ग्रंथकार *

संस्कृत-भाषा

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
अकलंकदेव—	तत्त्वार्थराजवार्तिक	१५	अमृतचन्द्र—	तत्त्वार्थसार	१७६
	प्रायश्चित्त संग्रह	१८६		पंचास्तिकायटीका	१६, १८२
अक्षयराम—	गणोत्कारपैतृतीर्था	२०५		प्रवचनसार टीका	१६३
	भासातचतुर्दशी	२०५		पुरुषार्थसिद्धयुपाय	३२, १८६
	सौख्यमन्त्रोद्योगः १, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १३, १४, १५, १६, १७, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २४, २५, २६, २७, २८, २९, ३०, ३१, ३२, ३३, ३४, ३५, ३६, ३७, ३८, ३९, ४०, ४१, ४२, ४३, ४४, ४५, ४६, ४७, ४८, ४९, ५०, ५१, ५२, ५३, ५४, ५५, ५६, ५७, ५८, ५९, ६०, ६१, ६२, ६३, ६४, ६५, ६६, ६७, ६८, ६९, ७०, ७१, ७२, ७३, ७४, ७५, ७६, ७७, ७८, ७९, ८०, ८१, ८२, ८३, ८४, ८५, ८६, ८७, ८८, ८९, ९०, ९१, ९२, ९३, ९४, ९५, ९६, ९७, ९८, ९९, १००	२०५		समयसार कलशा	४३, १६४, २५६
अग्निवेश—	अंजनशास्त्र	२४६		समयसार टीका	४३
मह्य अजित—	हनुमन्चरित्र	२२१	अमृतप्रभसूरि—	योगशतक	२४७
अनन्तवीर्य—	प्रमेयलमाला	४८	पं० अल्लारी—	मोजप्रबंध	२१६
अन्नंभट्ट—	तर्कसंग्रह	४६, १८६	अशाग—	शांतिनाथ पुराण	६६
अनुभूतिस्वरूपाचार्य—	सारस्वतप्रक्रिया	८९, १३१	आनन्दराम—	नीबीसठाणा चर्चा टीका	१
अभयदेव सूरि—	अष्टागव्यशशास्त्रा वृत्ति	१	आशाधर—	जिनयज्ञकल्प (प्रतिष्ठापाठ)	२००
	उपासकदशामुख त्रिवर्णा	२४		जिनसहस्रनाम	१०२, १३४, २०४, २३६, २४०
अभयनंदि—	दशसुख पूजा	२०१		स्तोत्रयपूजा	२०६
अभयदेव—	तृतीयोत्तम आवकाचार	३४		सागारचर्मामृत	३७, १६०
अभिनव यादिराज (पं० जगन्नाथ)				स्तोत्र टीका	२४४
	कर्मरत्नरूप वर्धन	२		होमविधान	३०१
अभिनव धर्मभूषण—	न्यायदीपिका	४७, १६६	इन्द्रनंदि—	शंकरारोपकतिथि	४६
अमरकीर्ति—	जिनसहस्रनामटीका	२३६		नीतिसार	२३५
अमरसिंह—	अमरकोश	८५, २३२	उमास्वामी—	तत्त्वार्थसूत्र	११, १२, १८, १०५, १११, ११२, १३६, १६७, १७९, १८६, २६८, २७२, २७६, ३०९, ३१६
अमितिगति—	धर्मपरीक्षा	२६, १८४			
	भावनावर्त्तिका	१७६, २५७			
	आवकाचार	३६			
	सुभाषितस्तसंदोह	२३६			

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	श्रावकाचार	३६	चंड—	प्राकृत व्याकरण	२३०
कमलप्रभ—	जिनपंजर स्तोत्र	१०२	चारक्य—	चारक्यनीतिशास्त्र	१११, २३५, २७४
कालिदास—	कुमार संभव	२१०		नीतिशतक	४४
	मेघदूत	२१७	चामुण्डराय—	चारिवसार	२५
	रघुवंश	२१८		सावनासार संग्रह	२५
	श्रुतबोध	२२, २३३	मुनि चारित्रभूषण—	महीपालचरित्र	७५
कालिदास—	दुर्घट काव्य	२११	जयकीर्ति—	अधुर्विशतिजिनकल्याणकपूजा	५१
	शृंगारतिलक	२१०	जयानंदि सूरि	देवप्रभा स्तोत्र	२४०
काशीनाथ—	शीघ्रबोध	२४५	जयसेन—	धर्मरत्नाकर	१८५
कुमुदचन्द्र—	कल्याण मंदिर स्तोत्र	१०१, ११२, २२२, १३२, २३३, २७३	पारडे जिनदास—	पंचकल्याणक पूजा	५६ (१० १६४२)
	गारिस्तुक्चय	३७	पं० जिनदास—	होतीरेणुकाचरित्र	१०, २३१
कुलभद्र—	वृत्तरत्नाकर	२३	ब० जिनदास—	अम्बुद्वीपपूजा	२००
भट्ट केदार—	कल्याणपूजा	२०५		जन्मस्वामी चरित्र	६२, २१०
केशवसेन (कुशा सेन) स्वयंपूजा	गंदिगीवत्तपूजा	५८, २०६	हरिकेश पुराण		४२४
	पंडितशकारणमंडलपूजा	६०, २०७, ३०८	जिनदेव—	मदनपराजयनाटक	६१, २३४
	पंडितशकारण पूजाउत्थापन	२०४	जिनसेनाचार्य—I	आदिपुराण	६३, ६६, २२२
राजसार (धवलचंद्र के शिष्य)	विचारखंडविशिका स्तोत्र	२४३		जिनपदसनाम	१०२, १०७, ११६
गणिनंदि	कविमंडलपूजा	२०४			२०४, २३४, ३०१
गुणचंद्र -	अनंतव्रतपूजा	२०५	जिनसेनाचार्य—II	हरिकेशपुराण	६६
आ० गुणभद्र—	आरमानुशासन	६८, १६१	ज्ञानकीर्ति—	गशोधरचरित्र	५१, २१७
	उत्तरपुराण	१४, २२२	ज्ञानभूषण—	अलक्ष्मिभिन्नतोषापन	२०४
	जिनदत्तचरित्र	६६		शास्त्रमंडलपूजा	२०५
	अभ्युक्तुमार चरित्र	२११	ब्रह्म ज्ञानसागर—	षोडशकारणमनोधापन पूजा	६०
गुरुभद्र—	शान्तिनाथ स्तोत्र	११७	दशरथ महाराज—	शनिधर स्तोत्र	१४८
गुणभूषणाचार्य—	श्रावकाचार	३६	कवि दामोदर—	चंद्रप्रभचरित्र	६७, २१०
गोविन्द—	पुरुषार्थानुशासन	१८६		श्रीपालचरित्र	७८
गौतम गणधर—	कविमंडलस्तोत्र	१०१	दीक्षित देवदत्त—	सम्बेदशिक्षणमहान्यास	३६
			देवनन्दि—	जैनेन्द्रयाकरण	८७

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	सिद्धिप्रिय स्तोत्र	१०६, १४१ १५६, २४४	ब० नेमिचन्द्र—	बन्धकुमार चरित	७०, २१२
देवसेन—	आलाप पद्धति	१५६		भर्गोपदेशावकाचार	३०, १८४
	नगधर	१५६		नागश्रीकथा (रात्रिभोजन त्याग कथा)	५३
भ० देवेन्द्रकीर्ति—	चन्द्रायणव्रतपूजा	१६६		नेमिनाथपुराण	६४, २२३
	त्रैलोक्यक्रियावतोद्योग	२०५		प्रोक्तिकर चरित	७२, २१३
	रादशव्रतपूजा	२०१, २०४		श्रीपालचरित	७८, २१६
	रत्नमत्तविधान	३०८	पद्मसुन्दर—	शारस्वत रूपमाला	२३१
	देवताश्रय	२३७	पद्मप्रभदेव—	पार्श्वस्तोत्र	११०
धनंजय—	द्विसंभानकाव्य (सटीक)	६४		लक्ष्मीस्तोत्र	१०७
	नाममाला	८८, २३२	पद्मप्रभमलधारि देव—	नियमसार टीका	१८५
	विषापहारस्तोत्र	१०६, १०७, १५७ १५८, २४३	पद्मनन्दि—	अर्हतपूजा	१६७
भ० धर्मकीर्ति—	सहस्रगुणपूजा	६२		पार्श्वनाथस्तोत्र	२४०
	सम्पत्कवकौमुदी	८६		लक्ष्मीस्तोत्र	१०६, २४२, २४४
आचार्य धर्मचन्द्र—	गीतमस्वामी चरित	६७		आवकाचार	३५
धर्मदास—	विदग्धमुखसंग्रह	७८, २१६		सिद्धचक्रपूजा	२०५
धर्मभूषण—	अनसहस्रनाम पूजा	३२, ११४, २०८	पद्मनाभ कायस्थ—	शरोधरचरित	२१७
पं० नकुल—	शालिहोत्र	२६०	परमहंस परिव्राजकाचार्य—		
नेदिगुरु—	प्राप्यभित्त समुच्चय चूलिका	३१, ३२ १०६		सारस्वतप्रक्रिया	२३१
नरेन्द्रकीर्ति—	जीसर्तार्थकरपूजा	२०४	पंचाननभट्टाचार्य—	परिभाषापरिच्छेद (नयमूल सूत्र)	१६६
नरेन्द्रसेन—	सिद्धान्तसारसंग्रह	१०२	प्रभाचन्द्र—	आत्मानुशासनटीका	६६, १६१
नरेन्द्रसूरि—	शारस्वतप्रक्रिया टीका	२३१		तत्त्वार्थरत्नप्रभाकर	१५, १७८
नवनिधिराम—	योग समुच्चय	१६४		तत्त्वार्थसूत्रटीका	१२
नागचन्द्रसूरि—	विषापहार टीका	२४३		पंचारितिकायप्रदीप	१६
नारायण—	चमत्कारचिन्तामणि	१४५		रत्नकरणद्वारावकाचारटीका	३४
नीलकण्ठ—	नीलकण्ठ ज्योतिष	१४५	पार्श्वनाग—	आत्मानुशासन	६१०
नेमिचन्द्र—	द्विसंभानकाव्य टीका	६४	पूज्यपाद—	इष्टोपदेश	२६८
				परमानन्दस्तोत्र	२६६
				आवकाचार	३५, १३२

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	अमाशिशतक	११०		११८, २०२, २७३, २७७, ३११	
	सर्वार्थसिद्धि	२२	मालदेवाचार्य—	शान्तिनामस्तोत्र	११२
भट्टी—	महोमर्डी	८७	पं० मेधावी—	धर्मसंग्रहश्रावकाचार	३०, १८५
भट्टोत्पल—	१२ पंचासिका बालाबोध	२४६	पं० यशःकीर्ति—	प्रबोधसार	३१
भट्टहरि—	नीतिशतक	१४२	अशोचंदि—	धर्मचक्रपूजा	५६
	भट्टहरिशतक	३१०		पंचपरमेष्ठीपूजा	५७
	वैराग्यशतक	२४२	योगदेव—	तत्त्वार्थसूत्र वृत्ति	१३
	शतकत्रय	२३६	रणमल—	धर्मचक्र	२०४
भानुकीर्ति—	चतुर्विधमिह्वनकपूजा	७२	भ० रत्नचंद्र—	अष्टादशिकावृत्ति	२२५
	रोहिणीमतवथा	२२७		मन्दीश्वरविधान	२०२
भारवि—	किरातावृत्तिगीत	२००		पत्यविधानपूजा	५८, १७२
भावविश्वेश्वर—	अष्टपदावृत्ति	४८		भद्रबाहुचरित्र	७३, २१४
भूधर मिश्र—	वटपाहुड टीका	१२४	रत्नचंद्र—	जिनगुणसम्पत्तिवतपूजा	३०८
भूपाल कवि—	भूपालचतुर्विंशति १०३, २०२, २६२			पंचमेरूपूजा	२०६
मल्लिषेण—	निशिभोजनकथा	२२६		भक्तोत्तमस्तोत्र वृत्ति	२४२
	संजनचित्तवस्तुस	१४६	रविषेणचार्य—	पद्मपुराण	२२३
मल्लिषेणसूरि—	स्थावादर्शनजरी	४८, ४९	राजमल्ल—	अध्यात्मिकमलमाचंशुड	३८
महावीराचार्य—	वृत्तिशिक्षा	२४८		लाठीसंहिता (श्रावकाचार)	१८७
महासेनाचार्य—	प्रबुद्धचरित्र	२१३	पाठक राजवल्लभ—	दिवसेनपद्मावती कथा	८३
भ० महेन्द्रभूषण—	जैनमाचंशुडपुराण	२६६		भोजचरित्र	७४
माध—	शिशुपालवध	२१६	रामचन्द्राश्रम—	सिद्धान्त चन्द्रिका	१३१
माणिक्यचंद्र—	परीक्षामुख	४८	रामचन्द्राचार्य—	प्रक्रियाकौमुदी	२३०
माणिक्यसुन्दर—	शुकरराजकथा	२२६	पं० रामरत्न शर्मा—	प्रक्रिया रूपान्वली	८७
माधवचंद्र त्रैविद्यदेव—			भ० रायमल्ल—	भक्तोत्तमस्तोत्रवृत्ति	१०६
	अथवासासटीका	६	लक्ष्मीचन्द्र—	पंचकल्याणपूजा	२०२
	त्रिलोकसारटीका	६२	ललितकीर्ति—	समवशरणपूजा	२०७
	नवविंशतिटीका	२०, १८१	लोलिम्बराज—	वैद्य जीवन्	२४७
मानतुंगाचार्य—	भक्तोत्तमस्तोत्र ११, १०२, १०६		लोहाचार्य—	तीर्थमहात्म्य	३६
	१०७, ११२, १०९, १३८, १४०				

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं.	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं.
वर्द्धमान भट्टारक देव—	वराहचरित्र	७७, २१८	श्रीपतिभट्ट—	भक्तभरपूजा उद्यापन	४६, २०४
वाग्भट्ट—	अष्टांगहृदयसंहिता	२४६	आ० शुभचन्द्र—	स्योतिषरत्नमाला	२४५
वादिचन्द्र सूरि—	ज्ञानसुधोदय नाटक	—६	भ० शुभचन्द्र—	ज्ञानार्णव	८०, १६२
वाहिराज—	एकीभावस्तोत्र	१०१, १२३		अष्टादिका कथा	८१, २२६
	यशोधर चरित्र	२१७		अष्टादिका पूजा	१६८
वामदेव—	त्रैलोक्य दीपक	—३		कर्मदहनपूजा	२०४
	भाव संग्रह	१०३		गणधरवल्लभ पूजा	१६८
वासवसेन—	यशोधरचरित्र	४६, २१४		चन्दना चरित्र	२१०
विक्रम—	नेमिदूत काव्य	२१२		चारित्र्यशुद्धिविधान	६२
आचार्य विद्यानंदि—	अष्टसहस्रा	४६		जीवधर चरित्र	२११
	अष्टतपरीक्षा	१६६		त्रिंशच्चतुर्विंशतिपूजा	२००
	तत्त्वार्थस्योक्त्यातिशयोक्तिकार	१६		पंचपद्मेष्टीपूजा	२०४
विद्यानंदि (भ० देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य)	सुदर्शन चरित्र	७८		पञ्चपत्रतोषापन	२०४
विरंचि—	सरस्वती स्तोत्र	१०७		फण्डवपुराण	६४, २२३
	सारस्वत स्तोत्र	१०७		अश्विकचरित्र	२१६
विश्वकर्मा—	वीरार्णव	२४४	शोभन मुनि—	यशसनामशुशितपूजा	६२
वीरनंदि—	व्याचारसार	२३, १२२	श्रीकृष्णमिश्र—	भुभावितार्णव	२३७
	चन्द्रप्रमचरित्र	६८, २१०	श्रुतमुनि—	चौबीसजिन स्तुति	२६६
वीरभट्ट—	पाण्डव दलन	१०५		प्रबोधचन्द्रोदय नाटक	२३३
वोपदेव—	वातुपाठ	२३०	श्रुतसागर—	त्रिमंतीसार	१६
शंकराचार्य—	गंगाष्टक	२०१		भावसंग्रह	२०, १०१
	मोक्षिन्दाप्टक	३०१		जिनसहस्रनामस्तोत्र टीका	१०२, २३६
शिवादित्य—	मितभाविणी टीका	४८		तत्त्वार्थसूत्रटीका	१३
शालिपंडित—	नेमिनाथ स्तवन	२८०		अंतकथा कोश	२२६
श्रीधर—	भविष्यवक्त्र चरित्र	७४, २१६		भक्तपरमस्थानविधानकथा	८६
श्रीभूषण—	अनंतमृतपूजा	११७	सकलकीर्ति—	अग्निपुराण	६३, २०६
	चारित्र्यशुद्धिविधान	६२		गणधरवल्लभ पूजा	१६
				धन्यकुमारचरित्र	७०, २१२
				प्रबोधोत्तरावकाश	३१, १०६

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	पार्श्वनाथचरित्र	२१३	पं० सूर्य कवि—	रामकृष्णकाव्य	२१८
	पुराणसंग्रह	६४	सोमधन्द्र गणि—	वृत्तस्त्राकर टीका	२२३
	मूलाचार प्रदीप	३३	सोमकीर्ति—	प्रद्युम्न चरित्र	२१३
	यशोधर चरित्र	७५, २१७		यशोधर चरित्र	७५, २१७
	शास्तिनाथपुराण	६६, २२४		सप्तव्यसन कथा	८६, २२६
	सदसाधितावली	६५, ६६, २३७	सोमदेव—	यशस्तिलक चम्पू	७४
	सिद्धान्तसारदीपक	२२, १८२	सोमप्रभाचार्य—	सूक्तिमुक्तावली	१००, २३७
	सुकुमालचरित्र	२१६	सोमसेन—	त्रिवर्णाचार	१८४
	सुदर्शनचरित्र	७६		दक्षिणयोगीन्द्र पूजा	२०१
सकलभूषण—	उपदेशरत्न माला	२३, १८८		भक्ताभरतस्तोत्र पूजा	२०३
	(षट् कर्मोपदेशरत्न माला)			बर्द्धमान पुराण	२२३
सदानन्द—	सिद्धान्तचन्द्रिका कृति	२३१	हरिचन्द—	धर्मशार्माभ्युदय	२१२
आ० समन्तभद्र—	देवागमस्तोत्र	४७, २५०	हरिभद्र सूरि—	षट् दर्शन समुच्चय	१६६
	स्तनकरणदशावकाचार	३४	श्री धल्लभवाचक हेमचन्द्राचार्य—		
	समन्तभद्रस्तुति	१०८		दुर्गपदप्रबोध	२३१
	समाधिशतकं	८६	हर्षकीर्ति—	सारस्वत धातु पाठ	२३२
	स्वयंभूस्तोत्र	१०७, २१०, १३७		सूक्तिमुक्तावली टीका	२३७
सहस्रकीर्ति—	त्रिलोकसार सटीक	२३४	हेमधन्द्राचार्य—	प्राकृतव्याकरण	२३०
सिद्धसेन दिवाकर—	कल्याणमंदिरस्तोत्र	१५६		हेमव्याकरण	२३१
	सन्मतिर्क	१६७		अभिमानवितामणिनाममाला	२३८
	राक्षस्तवन	३०१		अनेकार्थसंग्रह	२३२
सुधाकलश—	एकाक्षरनाममाला	८८			
सुधासागर—	पंचकल्याणक पूजा	५६			
सुबन्धु—	वासवदत्ता	२१८			
सुमतिकीर्ति—	जिन विमर्श	१६४			
	कर्मप्रकृति वृत्ति	१७६			
	गोमट्टसार कर्मकांडटीका	८८			
सुमतिसागर—	दशलक्षण पूजा	५४			
सुरेश्वरकीर्ति—	शान्तिनाथ पूजा	२०७			

प्राकृत-भाषा

अभयदेव—	पार्श्वनाथ स्तवन	२३४, ३०१
स्वामी कार्तिकेय—	कार्तिकेयानुप्रेक्षा	८६, १६१
आचार्य कुन्दकुन्द—	अष्ट पाहुड	३६
	द्वादशाक्षरप्रेक्षा	१६२
	पंचास्तिकाय	१६, १८०
	प्रबचनसार	४२, १६६

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
गौतम स्वामी— देवसेन—	रथसार	१८७	पद्मनन्दि—	विशेषसत्ताविमर्गो	१६
	षट्पाहुड ४३, ११०, १३२, १६४			सत्ताविमर्गो	१६
	समयसार	१३२, १६४, २८७		धर्मस्मायन	२६, १८७
	संबोधपंचासिका	१२३, १८६		पद्मनन्दिपंचविंशति	३०, २३६
	आराधनासार	४०, ११०, १३७, ११८, १६१, ३१२		कालिकाचार्यकथानक	२२५
	तत्त्वसार	१०, ११०		दशलक्षण जयमाल	१४, २०१
	दर्शनसार	१६६, १६६		रत्न संचय	१८१
	भावसंग्रह	२०, १८१		त्रिलोक प्रकृति	२३५
	संबोधपंचासिका	११८		गुणमाल	१८६
	धर्मदास गणि—	उपदेशसिद्धांतरत्नमाला		२३	अपभ्रंश भाषा
भंडारी नेमिचन्द्र—	उपदेशसिद्धांतरत्नमाला	२३	अमरकीर्ति—	षट्कर्मोपदेशात्ममाला	१८, १८८
नेमिचन्द्राचार्य—	षष्टिशतप्रकरण	३१०	गोयमा—	गोप (भोग) वर्णन	११७
	आश्रवविमर्गो	१	जयमित्र हल—	वर्द्धमान काव्य	७५
	उदय उदीरणा विमर्गो	१६	धनपाल—	श्रेष्ठिक चरित्र	७८
	कर्मप्रकृति	३, १३५, १७६		बाहुबलि चरित्र	७२
	उपयासार	६		भविष्यत्तपंचमीकथा	७३, ७९६
	गोमटसार	६, १७७		(भविष्यदरा पंचमी कथा)	
	गोमटसार (कर्मकाण्ड गाथा)	११२		हरिवंशपुराण	१७४
	चौबीस ठाण चर्चा	३, १७७		सुमंथदशमीव्रत कथा	८६
	जीव समाप्त वर्णन	१०		वर्द्धमान कथा	७७
	त्रिमंजीसार	११७, १७६		सिद्धचक्र कथा	७६
	त्रिमंजीसरसंडधि	१८०		भंडारी नेमिचन्द्र—	नेमिश्वर जयमाल
त्रिलोकसार	६२, २३४	पुष्पदेव—	यादिपुराण	२२२	
द्रव्यसंग्रह	१६, १०७, ११२, १२२, १४५, १८०		उत्तरपुराण	६७	
बंधविमर्गो	१६	मनसुख—	भागकुमारचरित्र	६६	
मात्रविमर्गो	१६	यशःकीर्ति—	कल्याणक वर्णन	१३७	
सुब्धिसार	२०	पं० योगदेव—	हरिवंशपुराण	२२५	
			पुनिपुनतानुप्रेक्षा	११७	

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
योगीन्द्रदेव—	दोहा शतक	१६२	कवका बत्तीसी		१३३, १५१
	परमात्मप्रकाश	४१, ११४, ११८ १३१, १७१, १८२	चरखा चौपई		१५५
	योगसार	४५, ११४, ११६, ११८ १३२, १५४, १६४, २०५	चार भित्तों की कथा		१५६
	आयकाचार दोहा	१८६	चौबीसतीर्थकर पूजा		१३०, १६३
	(सावयवस्मदोहा)		चौबीसतीर्थकर स्तुति		१३०
रङ्गभू—	आत्मसंभोधन काव्य	३६	जिनगीत		१६३
	दशलक्ष जयमाल	५०, २०१	जिनजी की रसोई		१२६
	बलभद्र पुराण	२२३	शमोकर सिद्धि		१३१
	बोडिशकारण जयमाल	६१	नंदीश्वर पूजा		१३०
	संबोध पंचासिका	३६	नेमिनाथ चरित्र		२३८
पं० लाम्बू—	त्रिणयत्तचरित्र	६६	पद	१३०, १३२, १३३, १६३	
धीर—	अम्बुस्वामीचरित्र	६८	पंचमेष्ट पूजा		१३०
स्वयंभू—	(रिवंश पुराण	७८	पार्श्वनाथजी का सालेहा		१३०
कवि सिंह—	प्रद्युम्नचरित्र	२१३	बाल्यवर्णन		१३०
हरिधरण—	धर्मपरीक्षा	१८८	चीसतीर्थकरों की जयमाल		१३०
			गशोधर चौपई		७७
			चंदना		१३०
			शक्तिनाथ जयमाल		१३०
			शिवरमणी का विवाह		१६३
			विनती		१५१

हिन्दी भाषा

अक्षयराज (श्रीमाल)	कल्याणमंदिरस्तोत्र भाषा	१०२	अज्ञा अजित—	हंसा भावना	११७
	भक्तभरस्तोत्र भाषा	११४	अनंतकीर्ति—	जखड़ी	१५६
अक्षयराम लुहाडिया—			अभयचंद्र सूरि—	मांगीतुंगी स्तवन	३०३
	शीलतरंगिनी कथा	८६	अमरपाल—	अग्निनाथ के पंच मंगल	१६८
साह अचल—	सारमनोरथमाला	११७	अमरमणिक—	चैत्रीविधि	१४७
अचलकीर्ति—	कर्मभत्तीसी	१७७७	बालक अभीचन्द्र—	बधाई	१३७
	विषाणहार स्तोत्र भाषा	१०६, १२४ १२६, १३१, २४३	अवधू—	द्वादशानुप्रेक्षा	११६
अक्षयराज (पाटली)			आज्ञा सुन्दर—	त्रियाविलास चौपई	१६६
	आदिनाथ पूजा	१३०	आणंदमुनि—	तमायू की जयमाल	१५०, २६२

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
आनंद कवि—	कोकसार	१४०		सोसट बंध	२६७
आनन्द बद्धन—	नन्द मौजाई का भगवत	२५५		हंसमुक्तिविलि	२६७
आरतराम—	दर्शनपञ्चीसी	२८	कामन्द—	कामन्दकीय नीतिसार	२३५
आलू—	डादशानुप्रेता १६३, १६८, २११		ब० कामराज—	त्रैलोक्य-शलाकापुरुषोंका वर्णन	२४३
उत्तमचन्द्र—	भिलोफसार भाषा	६३	कालकसूरि—	पद	२६३
कृष्णभनाथ—	पद	१३१	कृष्ण गुलाब—	पद	१५५
कृष्णभदास—	मूलाचार भाषा टीका ३२, १८८		किशनसिंह—	आदिनाथ का पद	१६५
मुनि कनकामर—	ग्यारह प्रतिमा वर्णन	११७		एकावलीभक्तकथा	७३
कनककीर्ति—	कर्मघटा बलि	१४६		कियाकोश	२८
	जिनराज स्तुति	१५२		शुभमङ्गलगीत	७३
	तत्त्वार्थसूत्र भाषा टीका १६, १७६			चतुर्विंशति स्तुति	७३
	पद	३००		चेतन गीत	७२, १३१
	मेघकुमारगीत	२२७		चेतन सौरी	७३
	विनती १११, १४६			चौबीस दंडक	७३
	श्रीपाद स्तुति	१४३		जिनमङ्गलगीत	७३
कनकसोम—	जहल पद बलि १२६, १६२५			शुभोक्त रास	७३
कमललाल—	पार्श्वनाथ स्तोत्र	१४०		नागश्रीकथा	७३, ८३
करमचंद—	पंचमकाल का गण मंद	३००		(रात्रि भोजन त्याग कथा)	
महाकवि कल्याण—	अनंगरंग काव्य	२७४		निर्वाण काह भाषा	७३
कल्याणकीर्ति—	आदीश्वरजी का बधावा	१५२		पद	१६३
	तीर्थकर विनती	१४६		पद संग्रह	१०४
कबीरदास—	कबीर की चौपई	२६७		पुण्याश्रवकथाकोश	१२
	कबीर धर्मदास की दया	२६७		भद्रनाहुचरित्र भाषा ७३, १५६, २७०	
	काया पात्री	२६७		लब्धिविधान कथा	७३
	कालचरित्र	३०५		विनती संग्रह	१०५
	ज्ञानतिलक के पद	२६७		श्रावकमुनिवर्णन गीत	७३
	पद	२६४	किशोरदास—	पद	१२७
	रेवता	२६७	कुमुदचंद—	पद	२७३
	साक्षी	२६७		विनती	३०७

प्रंथकार का नाम	प्रंथ नाम	प्रंथ सूची की पत्र सं०	प्रंथकार का नाम	प्रंथ नाम	प्रंथ सूची की पत्र सं०
कुशललताभ—	धर्मपार्श्वनाथस्तवन	१४०	गुणसागर—	कुटकर दोहे तथा कुंडलियाँ	१३३
कुशलवर्द्धन (शिष्य नगागणि)	शान्तिनाथ स्तोत्र	२४३	गुलाबराय—	शान्तिनाथ स्तवन	२६२
पं० केशरीसिंह—	वर्द्धमानपुराण भाषा	६५	ब्र० गुलाल—	कवका बत्तीसी	१५३
केशवदास—	रसिकप्रिया	२५१		गुलाल पच्चीसी	६४
केशवदास—	आत्महिंदोलना	१६३		जलगालनक्रिया	५३
	शान्तिनाथ स्तवन	२६१		त्रेपनक्रिया	३००
	सवैया	१६५	गोपालदास—	त्रिवेक चौबई	३०४
लोकेशल—	सातव्यसन सवभाष	२६१		प्रसादगीत	२६१
लक्ष्मणसेन—	त्रिलोकदर्पण कथा	४२		यादुरासो	२६२
लुशलचन्द्र—	उत्तरपुराणभाषा	६४	धीसा—	मित्रविलास	३१२
	* चन्दनषष्टिमत कथा	२६७	चतुर्भुजदास—	मधुमालती कथा	२०१, २०६
	* जिनपूजा पुरंदर कथा	२६७	चंद्रकीर्ति—	आदिनाथ स्तुति	२७२
	धनपकृमाच चरित्र	७०, २१२		गीत	२७२
	पद	२६७	चंपाराम—	धर्मप्रश्नोत्तर आनकीचारा	३०
	पद्मपुराणभाषा	६४		भद्रबाहुचरित्र	२१४
	* मुक्तावलिमत कथा	२२७	चरनदास—	पद	२७५
	* मुकुटसप्तमीमत कथा	२६७	चन्द्र—	अजित जिननाथ की वीनता	१४३
	* मेघमालामत कथा	२६७		स्तुतिसंग्रह	२४४
	यशोधरचरित्र ७६, १२४, २३०, २६७		चैनसुख—	अकृत्रिम चैन्यालय पूजा	४१
	* लब्धिविधानमत कथा	२६७		दर्शनदशक	१०३
	घतकथाकोश	२४, २२६		सहस्रनामपूजा	२००
	* षोडशकारणमत कथा	२६७	छविनाथ—	गृंगारपच्चीसी	२५१
	* सप्तपरमस्थान कथा	२६७	छीतर ठोलिया—	होतिकाचरित्र	८०
	हरिवंश पुराण	६७	छीहल—	उदरगीत	११४
खेमदास—	कविच	१३७		छीहल की भाषनी	३०४
गंगासम पांड्या—	भक्तामरस्तोत्र भाषा	१२६		पद	११४
निरधर—	कविच	१३६		पंचसहेली	२६२
				पंथीगीत	११४, १६५, ३००
			जगजीवन—	पूकीभाव स्तोत्र भाषा	२६६

* ये सब कथाएँ जनकथा कीष में संग्रहीत हैं ।

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	पद	१२०		भंजारी गीत	२६०
जगतभूषण—	पार्श्वनाथ स्तोत्र	२४४	जिनदत्त—	वर्मतरुगीत	१२६
जगतराम—	पदसंग्रह १२५, १३३, १३७, १५५			पदसंग्रह	१२३
	विनती	१२६		(जिनदत्त विलास)	
जगराम—	अठद्वय की भावना	१५३	जिनदत्त सूरि—	दानशौल चौपई	२६१
	पद	१६२	जिनदास गोधा—	अष्टत्रिम चैत्रालय पूजा	४८
जयकृष्ण—	रूपदीपविमल	८८		सुगुरु रातक	३०
जयचन्द्र छावड़ा—	अष्टपाहुड भाषा ३६, १६१		ब्र० जिनदास—	आदिनाथस्तवन	२६६
	स्वा० कार्तिकेयानुप्रेक्षा भाषा ४६, १६१			कर्मनिपाकरास	=१
	चारित्रपाहुड भाषा	१६२	जिनदेव सूरि—	नन्दराज हंटराज चौपई	३०७
	ज्ञानार्थक भाषा	४०	पाण्डे जिनदास—	चेतनगीत	११६, ३०४
	तत्त्वार्थसूत्र भाषा	१४		जम्बूस्वामीचरित भाषा	६८, १३१
	दर्शनपाहुड	१६२		धिरचर जल्लड़ी	११६
	देवगामस्तोत्र भाषा	४७		पद	२३२
	द्रव्यसंग्रह भाषा	१८		मालीरासा	१६६
	परीक्षामुल भाषा	४८		मुनीश्वरी की जयमाल १५४, ३०६	
	बोधपाहुड भाषा	१६४		योगीरासा ४७, ११७, ११८, १२०	
	भक्तगामस्तोत्र भाषा	२४२		१३१, १३२, १५३, १६६, ३०६	
	समयसार भाषा	०५	जिनप्रभ सूरि—	अजितनाथ स्तवन	३४०
	सामायिक वचनिका १०६, १६०, २६०			पद्मावती चौपई	३०१
	सूत्रपाहुड	१६५	जिनरंग—	चतुर्विंशति जिनस्तोत्र	१४१
उपाध्याय जयसागर—	श्री जिनकुशल सूरि स्तुति	१४०		विंतामणि पार्श्वनाथ स्तवन	१००
जयहरलाल—	पंचकुमार पूजा	६७		पार्श्वनाथ स्तोत्र	१४०
	सम्प्रेक्षशिखर पूजा	२०७		प्रवीण बावर्नी	१४२
महाराज जसवंतसिंह—				प्रस्ताविक दोहा	१४२
	भाषाभूषण	२७६	जिनराज सूरि—	पार्श्वनाथ स्तोत्र	१४०
जिनकुशल सूरि—	पद	२७३		शालिमद्र चौपई	१८, २८६
	स्तवन	३००	पांडे जिनराज—	जम्बूस्वामी पूजा	११५
जिनचंद्र सूरि—	पद	२७३	जिनवल्लभ सूरि—	अजित-शक्ति स्तवन	३०१

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	
जिनहर्ष—	पद	२४०	टीकम—	रोहणीव्रत कथा	२६५	
	नववाड सवभाष	१४६		लब्धिविधान कथा	२६५	
	नेमिराजमति गीत	१४७, २६०		षोडशकारणव्रत कथा	२६४	
	नेमीश्वर गीत	१५६		श्रुतरंज (कथा)	२६५	
	भावकनी सवभाष	१४१		भावणदादशी कथा	२६५	
जिनेश्वर सूरि—	सिद्धचक्र स्तवन	१४७	टेकचन्द—	सुगन्धदशमीव्रत कथा	२६५	
	स्तोत्रविधि	२७३		चन्द्रहंस कथा	८२	
जोधराज गोदीका—	पदसंग्रह	२३७, १५३	तीनलोक पूजा	कर्मदहन पूजा	५०, १६८	
	सम्भवकौमुदी कथा	८६, १२५		तीनलोक पूजा	६३	
जौहरीलाल—	पद	१७२	पदसंग्रह	पदसंग्रह	११३	
	विद्यमान बीसतीर्थकर पूजा	६०		पंचकल्याण पूजा	२०२	
ब० ज्ञानसागर—	अनन्तव्रत कथा	२६५	पंचमंगल पूजा	पंचमंगल पूजा	५७	
	अष्टादिकव्रत कथा	२६५		पंचमेक पूजा	५७	
आकाशपंचमी कथा	२६५	व्यसनराज वर्णन	१७३	सुदृष्टितरंगिणि	१६०	
	आदित्यवार कथा		२६६		सोलहकारण पूजा	६२
कोकिलपंचमी कथा	२६५	पद	१२८	पं० टोडरमल —	आत्मानुशासन भाषा	३६, १६१
	चन्दनवधोव्रत कथा		२६५		गोमद्वार जीवकाण्ड भाषा	१७७
जिनगुनसंपत्तिव्रत कथा	२६६	टोडर—	ठकुरसी—	गोमद्वार भाषा	७८	
	जिनरात्रिव्रत कथा			२६५	पुरुषार्थ सिद्धयुपाय	३२
त्रैलोक्यतीज कथा	२६५	निशल्पाष्टमी कथा		हाल्लराम—	मोक्षमार्गप्रकाश	३५, १८७
	दशरत्नव्रत कथा		२६५		लब्धितार भाषा	२३
पद्मविधान कथा	२६५	पुष्पाजलिव्रतविधान कथा	ठकुरसी—	नेमिराजमति बेलि	११७	
	मुकुटसप्तमी कथा			२६५	पंचेन्द्रिय बेलि	११७, ११८, १६५
मेघमालाव्रत कथा	२६६	मीन एकादशीव्रत कथा	हाल्लराम—	गुरोपदेश आचकाचार	१६७, २६६	
	रक्षाबंधन कथा				२६५	अटार्कशीप पूजा
रत्नयव्रत कथा	२६५	रत्नयव्रत कथा	हाल्लराम—	गुरोपदेश आचकाचार	२५	
	२६५				पद	१४७

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	पंचपरमेष्ठी गुणस्तवन	२४०		रत्नत्रयपूजाभाषा	४८
	पंचपरमेष्ठी पूजा	५७		शास्त्र पूजा	६७
	बारहखनुप्रेक्षा	१४७		समाधिमरण	१६२
	सम्यग्प्रकाश	३६		सिद्धचक्र पूजा	६२
संघपतिराय झूंगर—	पद	२१३		सोलहकारण पूजा	६२
झूंगरसी बैनाडा—	श्री जिनस्तुति	१६७		संबोधपंचासिका	६७, ११६, १३२
पं० झूंगो—	नेमिजी की लहर	१६४			२७२, ३११
तुलसीदास—	सीतास्वयंवर लीला	२७८		स्तुति	१३४
म० तेजपाल—	चलन्तीसतीर्थकर विनती	२६६	दादूदयाल—	दोहा	२७५
	श्रीजिनस्तुति	१६७	दीपचन्द्र—	अनुभव प्रकाश	२१, १८२
त्रिभुवनचन्द्र—	अनित्य पंचाशिका	४, १६४		आत्मावलोकन	४०
	संबोध पंचासिका	११४		चिद्विलास	२७
त्रिलोकेन्द्रकीर्ति—	सामागिकपाठ भाषा	२८८		पद संग्रह	११६, १२७, १३२
श्रीदत्तलाल—	बारहखन्दी	१६२			१५१, १५३, १६३, २३६
थानसिंह—	रत्नकरचक्रआवकाचार	१८७		परमात्मपुराण	४१
	सुषुप्तिप्रकाश	१५		विनती	३०७
ब्रह्मदयाल—	पद संग्रह	१०४	बाबा दुलीचंद—	धर्मपरीक्षा भाषा	२६
हरिगह—	जखंडी	११६		पूजनक्रिया वर्णन	५८
द्यानतराय—	अष्टाहिका पूजा	५०		मृत्युमहोत्सव भाषा	४२
	१०८ नामों की मुखमाला	१०१	दूलह—	कविकुलकंठामरणा	२४६
	एकीभाव स्तोत्र भाषा	२६७	कवि देव—	अष्टजाम	२७६
	चर्चोशतक	६, १३४, १७७	मुनि देवचंद्र—	आगमसार	२७५
	ब्रह्मदाता	१३७, ३११	देवाग्रह—	विनती	१३२
	दशस्थानचौबीसी	२५६		सास बहूका भगडा	२५७
	धर्मविलास	२१, १३४, ३१०	देवीदास—	राजनीति कविरा	२३६
	निर्वाणकारण पूजा	२०२	देवीदास नन्दन गणि—		
	पदसंग्रह	१०४, १२६, १३७		चेतनगीत	२७२
		१६३, ३००		वैराग्य गीत	१२२
	आश्चर्यनाथ स्तोत्र	२४४	संगही दौलतराम—	अतविधान रसो	२५८

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
दौलतराम—	अध्यात्म बारहलक्ष	३८	सिद्धचक्र पूजा (अष्टादिका)	२०८	
	आदिपुराण भाषा	६३, २२२	सिद्धचक्रमत कथा	८६	
	क्रियाकोश	१८३	सिद्धांतसार दीपक भाषा	२२	
	चौबीसदंडक	२८, १८४, ३१२	यशोधर चरित्र	७१	
	नीपनक्रिया विधि	२८	मानमंजरी	२७८, २८३	
	पद्मपुराणभाषा	६४, २२३	नासिकेतोपाध्याय	१३९	
	पद्मपुराणकाव्य	४१	अनेकार्थ मंजरी	२३२	
	पुरुषार्थसिद्धश्रुपाय	८४, २२६	चौरासी गोत्रोत्पत्ति वरणन		
	पुरुषार्थसिद्धश्रुपाय	१८५	सम्पेदशिक्षण पूजा	७७७	
	श्रीपाल चरित्र	७८	इशकचमन	२४८	
	सारसमुच्चय	३८	बैनविलास	२७७	
	हरिवंशपुराण	६६, २२४	नेमिनाथ का व्याहला	१२७	
धनराज—	नेमिनाथ स्तव	२८६	पद	१२७	
मुनिधर्मचंद्र—	गीत	२७२	जम्बूत्सामी चरित्र	२१०	
	धर्म धमाक	१६३, १६४	सुकुमाल चरित्र	२१६	
धर्मदास—	कृष्ण का बारहसामा	२७६	अद्वैताकुमार राम	१६८	
	पद संग्रह	११३	नूरकी शकुनावली	१४८	
जह्न धर्मरुचि—	नेमाश्वर के दश भवामर	१६७	पंचाख्यान (पंचतंत्र)	२६१	
धर्मसुन्दर (वाचनाचार्य)			पद	३०८	
	अष्टापदगिरिस्तवन	२७३	हरिवंशपुराण	१२७	
नयसुन्दर—	शत्रुजयोद्धार	१२६	प्रीत्यंकर चौपई	१२७	
नवलराम—	मिनदेव पञ्जीस	२२१	नेमाश्वरराम	१२७	
	पदसंग्रह	१३७, १४३, १६२	कलबर्ही पद्मवैनायक स्तवन	१४७	
	वनती	३११	राजल का बारहसामा	१४७	
नयमल विलास—	नागकुमार चरित्र	८३	हंगर की जावनी	३०६	
	चक्रचोर कथा	२२७	आराधनासार भाषा	१६१	
	(धनदत्त सेठ की कथा)		न्यायदीपिका भाषा	४७	
	भक्तामररसोप भाषा कथा सहित	५४१	सद्भाविलावली	२३६	
	भट्टीपाल चरित्र	२१६	समवशरण पूजा	२७७	

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	सरस्वती पूजा	६१	बखतराम—	आसावरी	१६०
	सुभाषितावली	२३६		पदसंग्रह	१३७
पद्मलाल संची—	बीस तीर्थकर पूजा	२०३		मिथ्यात खंडन	१=६
पृथ्वीराज राठौड़—	कृष्णरुक्मणि बेलि	११८	बनारसीदास—	अध्यात्म बचीसी	२८२
	कविच	२३६		अध्यात्म बचीसी	१८६
	पृथ्वीराज बेलि	३०२		उपदेश पञ्चीसी	१४६
	(कृष्णरुक्मणि बेलि)			उपदेश शतक	६४
प्रभु कवि—	बैराट पुराण	२६३		कर्मप्रकृति वर्णन	११५
पर्वतधर्मार्थी—	द्रव्यसंग्रह बाल बोधिनी टीका	१६, १७, १८०		कर्मप्रकृति विधान	४, ११५
	समाधितंत्र भाषा	४५, १६५		कल्याणमंदिरस्तोत्र भाषा	१०२, ११३, ११५, १२४, १४६, १५३
परमानंद—	पद	११६		१५८, २३८, २६६, ३११	
परिवाराम—	मोगीतुंगी तीर्थ वर्णन	११४	कविच		१६८
परिमल्ल—	श्रीपाल चरित्र	४६, २१६	गोरख वचन		२८१
पारसदास निगोत्या—	ज्ञानसूर्योदय नाटक	६०	जिनसहस्रनाम भाषा	१०३, १३७, २६४	
पुण्यरत्नगणि—	यादवरासो	२६२	ज्ञानपञ्चीसी	११५, १५२, १६३, २८१	
पुण्यकीर्ति—	पुण्यसार कथा	२८६	ज्ञानबचीसी	१६३	
पुण्यसागर—	ब्रह्मचर्य नववादि वर्णन	१४८	तेरहकाठिया	२८२	
	हुवाहु कवि संधि	१४८	ध्यानबचीसी	१५३, २८२	
पूनी—	पद	१३२	पद संग्रह	११३, १५३, १५५	
	मैधकुमार गीत	११५, ११७, १२०, १३०, १५६, १६४	परमज्योति	२७७, ३११	
	विनर्ता	१३१	बनारसी शिलास	११४, ११५, ११६, १२०, १३७, १७२	
प्रेमराज—	पंचपरमेष्ठि भंज स्तवन	१४१	सबसिंधु चतुर्दशी	२८१	
	बीसविस्मयान स्तुति	१४१	संभा	१२०	
	होलह सती स्तवन	१४१	मिथ्यात्व निबंध	१=७	
पोपट शाह—	मदनमंजरी कथा प्रबंध	२२७	मोक्ष पैत्री	३३, ११३, ११६, ३०६	
पं० फूरो—	राजाचंद की कथा	२८६			
कबीराम—	रेखता	२५			

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	मोहविवेक सूक्त	१०, १२, १६५	बिहारीदास—	जखड़ी	२३६
	वैद्य सङ्गण	२८१		संक्षोभ पंचासिका	१५३
	शिव पञ्चीसी	२०१, २६६	बूचूराम—	गीत	११७
	समयसार नाटक ४४, ११५, ११८, १२०, १६५, ३०७			मदनहृदय	३०४
	सर्वथा	१४६, १६९	उपाध्याय भगतिलाभ—	सीमंभस्वामी स्तवन	१४०
	साधु बंदना	११६, १६१, ३०४, ३०६, ३११	भैया भगवतीदास—	एकपा दोष	१८३
	सिन्दूर प्रकरण	४, ११४, ११५, ११८, १३३, २३६		चेतन कर्म चरित्र	६८, १३३
बालचन्द्र—	पद संग्रह	१२३		जिनधर्मपञ्चीसी	१५५
	द्वितीयदेश पञ्चीसी	१००		निर्वाणकारण भाषा	१०३, १२०, १११
कवि बालक(रामचन्द्र)	सीता चरित्र ७६, ११४, २२१, २६६			परमात्म कृतीसी	३०३
बालचन्द्र—	जानकी जन्मलीला	२७८		पुण्य जगमूल पञ्चीसी	१५
धुधजन—	इष्ट कृतीसी	१०१		महाविलास	३२
	छह दाता	१५५		धारह भावना	१६६
	सत्कार्य बोध	१५		मूढाटक वर्णन	१७२
	पञ्चास्तिकाय भाषा	१०		वैराग्य पञ्चीसी ४३, १३६, १७२	
	पद संग्रह	१३७		सम्यक्त्व पञ्चीसी	३६, १७१
	धुधजन विलास	१७२, २१२		साधुओं के आहार के समय के ४६ दोषों का वर्णन	१२०
	धुधजन सतसई	१४		सोलह स्वप्न (स्वप्न कृतीसी)	१६१
	पुण्य सहोत्सव	१६४	भगवानदास—	भगवानदास के पद	२४१
	धीगसार भाषा	४२	भाऊकवि—	आदित्यवार कथा ८१, ११३, ११७, १३८, १४३, १५४, १६६, १६१, १६७, २६२, २६८, ३०६	
बुलाकीदास—	प्रश्नोत्तरोपासकाचार	६१, १८६	भाराचन्द्र—	उपदेश सिद्धांत रत्नमाला	२४, १८३
	पाण्डवपुराण	६४		पद	१६२
वंशीधर—	द्वयसंग्रह भाषा	१८, १	भैरवदास—	शीश गीत	२६४
वंशीधर—	रत्नूर भाषिका	१७०	भारामल्ल—	दर्शनकथा	८३
अन्नदेव—	द्वयसंग्रह वृत्ति	१७, १८०		दानकथा	८३
	परमस्वयंकाश टीका	४६			

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	निशिर्भोजनत्याग कथा	२०४, २०६		विनती	२०६, २०७
	शीलकथा	२०५, २०७	मनरंग—	चौबीस तीर्थकर पूजा	१६६
भावकुशल—	पार्श्वनाथस्तुति	१६६		पार्श्वनाथ स्तोत्र	१४०
भावभद्र—	विन्दुशक्त के सीलह स्तवन	१४२	मनसुखराम—	शिखर विलास	१००
भुवनकीर्ति—	कलावती चरित	१६७	मनसुख सागर—	सम्बेदशिखर महात्म्य	१६
	चितामणि पार्श्वनाथस्तोत्र	१४०	मन्नालाल (खिन्दूका)		
भूधरदास—	पुर्कसावस्तोत्र भाषा	२०३, २११		चारित्रसार भाषा	२७
	मङ्गभावना	२११		पञ्चनदिवचनीसी भाषा	३१
	चर्का सम्प्रदाय	११, ११७	मनोहरदास—	ज्ञानचितामणि २०, १२१, १४३, २३५	
	अक्षडी	१३७, २१२		धर्म परीक्षा	२६
	जैनशातक	६४, १३४, २३६	मनोहर—	चिन्तामणि मान भावनी ११२, ११६	
	पद संग्रह ११२, १२२, १३७, १५६			लघु भावनी	११६
	पंचमेक पूजा	५७, ३११		सगुरु सीख	१६५
	पार्श्वपुरुष	७२, १११, २१२	ममहरण—	भास	२६२
	बारह भावना	१५७	मलजी—	पद संग्रह	१३७
	भूधर विलास	३१२	कवि मल्ल—	प्रबोधचन्द्रोदय (नाटक)	६०
	वज्रनाभि चक्रवर्ती की	१५४, १६२	महपद—	पद	१४६
	वैराग्य भावना	३११	महिमा सागर—	स्तोत्रमनक पार्श्वनाथ गीत	२७३
	वाईस परीषद	३११	मुनि महिसिंह—	अक्षर बत्तीसी	२५२
	वीनतिया	३११	ब० मालदेव—	पुरंदर चौपई	२४, ११४
भूधरमल्ल—	हुक्का निवेद्य	१०६	वाई मेघश्री—	पंचाणुग्रत की जयमाला	२०५
मनराम—	अक्षरसाक्षा	१२७	मुनि मेघराज—	संयम प्रवहण	१००
	गुणाक्षरभाषा	२०६	उपाध्याय मेरुनन्दन—		
	धर्मसहेला	१६७		अजित शांति स्तोत्र	१४०
	पद ११४, ११६, १२०, १४२, २००		सहजकीर्ति—	वाति लक्ष्मी	२१२
	बडा कक्का	१५३	यशोनन्दि—	धौजिननमस्कार	१६७
	बत्तीसी	२६१	रघुनाथ—	गणमेद	२६१
	मनराम विलास	२३६		ज्ञानसार	२६०
	रेगापहार स्तोत्र	११५		नित्यविहार (राधा भाषा)	२६२

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
रंगबल्लभ—	प्रसंगसार	२६२	रामविजय—	संखेश्वरपार्श्वनाथस्तुति	१६०
श्री रत्नहर्ष—	पार्श्वनाथ स्तवन	१४०	महाराजा रामसिंह—	व्यक्तिरंग	२७६
अ० रायमल्ल—	हितोपदेश एकोत्तरी	१६०	रायमल्ल—	ज्ञानानन्द श्रावकाचार	२८
	चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्न १६३, ३०४			साधर्म्य मारई रायमल्ल की चिट्ठी १७४	
	जिनलाहगीत	११७	रूपचंद—	अध्यात्म दोहा	११३
	नेमिकुमाररासो १३२, २०२, २८८			अध्यात्म सवैया	३०५
	प्रद्युम्नरासो १३२, ३०७			जखड़ी	११६, १६६
	मविष्यदत्त चौपई १११, २१६			जिनस्तुति	१५२
	श्रीपालरास ११३, १३१, २७२, २८८, ३०४, ३०७			दोहा शतक	११४, ११६
	सुदर्शनरास १११, १३२			पद १११, ११३, १२३, १२५, १२६, १६५	
	हनुमंतकथा (चौपई) ८७, १३२, १६१, २२१			परमार्थगीत	११६, १६४
राज—	उपदेशचत्वीसी	१५१		परमार्थदोहा शतक	१११
राजसमुद्र—	प्रतिमारस्तवन	१४१		पंच कल्याणक पाठ (पंच मंगल)	
राजसेन—	पार्श्वनाथ स्तोत्र	२४५		१०५, १११, ११६, १२०, १२३, १४१, १४६, १५३, १६४, १५७, १६१, २४०, २८६, ३०५, ३२१	
रामकीर्ति—	मामतुंगी की जखड़ी	२७२		लघु मंगल	३११
रामकृष्ण—	उपदेशजखड़ी	१३७	लक्ष्मीदास—	वशोधर चरित्र	२१८
रामचन्द्र—	आदिनाथपूजा	५०	लच्छीराम—	करुणाभरण नाटक	२७०
	कर्मचरित्रबार्हसी	२४	लक्ष्मीदास—	एकसी गुणहृत्तर जीव पाठ	१
	चतुर्विंशति जिनपूजा ५२, १११, ११६		लक्ष्मीचन्द्र—	उपासकाचम दोहा	२४, ११०
	चौबीस महाराज की बीनतो १०२, ११२			द्वादशानुप्रेक्षा	११८
	विमलनाथ पूजा	२०६	गणेश लालचंद—	सीता की घमाल	१६७
	समुच्चय चौबीसी पूजा	११६		सीमंधर स्तवन	२१०
	सम्पेदशिक्षर पूजा	६१	लब्धिविजय—	नेमिगीत	२६०
रामदास—	ऊषा कथा	२६७	लालचंद—	नेमजी का ब्याहलो (नव मंगल)	३०३
	पद १२६, १३२		लालचंद यिनोदीलाल—	चतुर्विंशति स्तुति	१५५, २३६
रामभद्र—	करुण कठार	२८०			
राजमल्ल—	समयसार भाषा	४६, १६६			

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	पंचमंगल	१३१	विनोदीलाल—	नेमीश्वर राजमति गीत	१५६
	राखल पञ्चीसी १३१, १३२, १४६ १५१, १६६, २२७			नेमीश्वर राखल संवाद	३०६
	समवशास्थ पूजा	११४		प्रभात जयमाल	३११
लालदास—	महाभारत कथा	१३६, २६७		भक्तभरस्तोत्रकथा भाषा	२२६
मुनि लावन स्वामी—	शालिभद्र सञ्ज्ञाय	१७४		मान पञ्चीसी	२५७
साह लोहट—	अठारह नाता का चौदाला ११३, १३२ १६१, १६६, ३०६		मुनि विमलकीर्ति—	नंद बत्तीसी	६४
	चौबीसठाणा चौपई	१६६	विमलहर्ष वाचक—	जिनपालितमुनि स्वाध्याय	१८४
ब्रह्मवर्द्धन—	गुणस्थान गीत	११६, १६४	बिहारी —	बिहारी सतसई १११, १३४	
वृन्द—	दोहा	१३६	कवि वीर—	मणिहार गीत	२६३
	पद	१३२	वीलहव—	नेमीश्वर गीत	
	वृन्द सतसई	१११	श्यामदास (गोधा) पद		१६४
वृन्दावन—	चतुर्विंशति जिनपूजा	५१, १६६		नेमिनाथ का बारहमासा	१६६
	वृन्द शतक	८८	पं० शिरोमणिदास—	धर्मसार चौपई	२६
	तीस चौबीसी पूजा	६३	शिव कवि—	किशोर कल्पद्रुम	१६६
	प्रबचनसार भाषा	४२	शुभचन्द्र—	चतुर्विंशति स्तुति	१५३
भ० विजयकीर्ति—	चन्दनवृक्षव्रतकथा	६१		तत्त्वसार दोहा	१७८
	पार्श्वनाथस्तवन	१४१	शोभचन्द्र—	ज्ञान सुखर्षा	१२६
	अष्टावक्रचरित्र	७६		पद	१५५
विजयतिलक—	आदिनाथ स्तवन	१४०	श्रीपाल—	जिनस्तुति	३११
विजयदेव सूरि—	शीलरास	११३, २६१	श्रुतसागर—	वट्मास वर्णन	१४३
विजयभद्र—	सञ्ज्ञाय	१७४	सदासुख कासलीवाल—		
विद्याभूषण—	लक्षण चौबीसी पद	२६४		अकलंकाष्टक भाषा	३४, १८७
विनयतमुद्र—	विक्रम प्रबंध रास	२६५		अर्थप्रकाशिका	१४
विनयप्रभ—	गोतम रासा	३०१		तत्त्वार्थसूत्र भाषा	१४
विश्वभूषण—	पद	१३१		भगवतीश्वरभक्ता भाषा	३३, १८७
	पंचमेक पूजा	१५२		रत्नकरण्ड आनकाचार भाषा	३४, १८७
वाचक विनय सूरि—	आराधनास्तवन	१००		लघु भाषा वृत्ति	२४
				वीरशङ्करभक्तना तथा	१८८

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	दशलक्षण धर्म			वाणिक प्रिया	१२१
समथराज—	पार्श्वनाथ लघु स्तोत्र	१४०	सुमतिकीर्त्ति—	जिनवररवाभी श्रीमती	११७
समथसुन्दर—	आत्मउपदेश गीत	२६२		जिनविनयी	१६४
	तमावतीनी	१२६		भिलोकसारबंध चौपई	६२, ११८, २३४
	चतुर्विंशति स्तुति	१४२		पद	१६७, २६६
	दानशील प्रनाद	१४१	सुन्दर—	सहेली गीत	१३१
	नलदमयंती चौपई	२६१		आदित्या कथा	८१
	नाकौल्या पार्श्वनाथ स्तवन	१४२	सुरेन्द्रकीर्त्ति—	ज्ञानपञ्चीसी व्रतोत्थापन	२०५
	पंचमी स्तवन	१४७		पंचमास चतुर्दशी व्रतोत्थापन	२०४
सहजकीर्त्ति—	चउवीस जिनगणधर वर्णन	१४७	सूरत—	ढालमथ	२८
	पार्श्व जिनस्थान वर्णन	१४७		बारहसब्दी	१४१, २५७, ३११
	पार्श्व भजन	१४७	सेवाराज—	चतुर्विंशतिजिन पूजा	११, १६६
	प्राप्ति छत्तीसी	२६२	सोमदत्त सूरि—	यशोधरचरित्र रास	१२६
	बीसतीर्थेश्वर स्तुति	१४७	हजारीमल्ल—	गिरनार सिद्धचित्र पूजा	१६८
सहस्रकर्ण—	तमासू गीत	२६१	हरिकृष्ण पारडे—	चतुर्दशी कथा	१५४
संतलाल—	सिद्धचक्र पूजा	२०८	हरिसम—	बंद रत्नावली	८८
स्वरूपचन्द्र बिलास—	चौसठकृद्धि पूजा	५२, २००	हरीसिंह—	जसब्दी	११२
	जिनसहस्रनाम पूजा	५३		पद	१२७, १२८, १४६, १६२
	निर्वाणेश्वर पूजा	५६, २०२	हर्षकीर्त्ति—	कर्महिंदोलना	१६७, २७२
	मदन पराजय भाषा	६१		चतुर्गति बेलि	११७, १२८, १६१
साधुकीर्त्ति—	चून्डी	२६४		(बेलि के विषय कथन)	
	पदसंग्रह (सतरप्रकार पूजा प्रकरण)	२७२		पद	११५, १६५
	रागमाला	२७३		पंचमगति बेलि	११७, १२०, १६५
सालिग—	पद	१६२			३०७
सारस्वत शर्मा—	भडली विचार	२४५		नेमिनाथ राजल गीत	१६६
सिद्धराज—	अष्टविधि पूजा	१४२		नेमीश्वर गीत	१६६
कवि सुखदेव—	धु चरित्र	२८०		बीसतीर्थेश्वर जसब्दी	३११
				मो.बा	१४८

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
सूरि हर्षकीर्ति—	विजय सेठ विजया सेठानी	५६०	पं० हेमराज—	गीत	१६७
	सम्भव			गोमहसूर कर्म काण्ड भाषा =	१७७
हर्षचन्द्र—	पद संग्रह	११३		चौरासी घोष	२७, ११२
हरखचंद (धनराज के शिष्य)				दीक्षा शतक	१२४
	पदसंग्रह	२०४		नयचक्र भाषा	४७
	पार्श्वनाथ स्तोत्र	२०६		नेमिराजमती जलडी	१६२
	शीतलनाथ स्तवन	२०८		पंचास्तिकाय भाषा	१६, १०१
हरिकलश —	सिंहासन बत्तीसी	२६२		प्रवचन सार भाषा ४२, १११, ११३	
पं० हरीवैस—	पंचवधावा	१६५		मत्तकामर स्तोत्र भाषा १०५, १५२,	
हीरा—	नेमि व्याख्यान	८४		११५, १३५, १३६, १६४, १७२,	
हेमकिमल सूरि—	नन्द बत्तीसी	२५५		२६३, २६६, ३०२ ३०३, ३०८	



★ शुद्धाशुद्धि विवरण ★

पत्र एवं पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
१×१ ३१५×१५ }	अन्तगडदशाओ वृत्ति	अन्तगडदशाओ वृत्ति
१×७	इकवीसठाणा चर्चा	इकवीसठाणा —सिद्धसेनसूरि
१×१३	जीवपाठ	जीवसंख्यापाठ
१×१४	माघ सुदी	पौस बुदी
२×१६	—	१ से १७ तक सभी पाठ रामचन्द्र कृत हैं।
४×६	कण्ठ्यशिंद	कण्ठ्यशंदी
५×२२	पावल्ली	यावल्ली
६×१५	बोछं	बोच्छं
६×२१	समोसरमवर्णन	समोसरणवर्णन
१३×१	१८३६	१८४६
१५×१७	×	१४२६
२०×२२	जिनाय	—
२४×७	भंडार	भंडारी
२८×२२	—	भाषा—हिन्दी
२६×६	रचनाकाल ×	रचनाकाल—
३६×२३ ३४५×२५ ३५३×२५ }	रइधू	अज्ञात
३८×१६	में प्रतिलिपि की थी	में संशोधन करके प्रतिलिपि करवाई थी
३६×७	५१	२५१
३६×२०	चिन्तान	चित्तान्
३६×२०	धर्मरेजितचैतसान	धर्मरंजितचेतसान
४१×६	भाषा—अपभ्रंश	—
४५×१८	विद्यानन्दि	विद्यानन्द

पत्र एवं पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
४६×१४	१८८३	१८६३
४६× ७ ३४६×१२ }	आ. समन्तभद्र	पूज्यपाद
४७×१०	यति	अभिनव
४७×१३	३१	३१२
४८×१०	सं० १६२५ आषाढ सुदी २	सं० १८६३ अषाढ सुदी ४ बुधवार
६०×२३	—	भाषा-संस्कृत
६१× ३	प्राकृत	अपभ्रंश
६४×२५	रामचन्द्र	रायचन्द्र
६६× ८	अधुसारि	असुसारि
६६× ७	वसंतपाल	वसंतपाल
७०×१८	प्रद्युम्नचरि	प्रद्युम्नचरित — मध्वाक्ष
७३×२४	भविसयत्त	भविसयत्त
७४× २	संस्कृत	अपभ्रंश
७७× ४ ३३६×२३ ३५२×३० }	परिहानन्द	नन्द
७६×२२	परिहानन्द	परि हां नन्द
७८×१६	सं० १६१८	सं० १६७८
७८×२६	आराधना	दौलतरामजी कृत आराधना
७६× ३	श्रेणिक चरित्र	श्रेणिक चरित्र (वर्द्धमान काव्य)
७६×११	कवि बालक	कवि रामचन्द्र "बालक"
८१×१६	गौतम पृच्छा	गौतमपृच्छा वृत्ति
८०× १	अंतिमपाठ—"पाठक पद संयुक्त" के पूर्व निम्न श्लोक और पदों—	

श्रीजिनहर्षसूरिणां सुशिष्या पाठकवरा ।

श्रीमत्सुमतिहंसश्च तच्छिष्योमतिवर्द्धते ॥ १ ॥

८४×१८	ज० मालदेव	मालदेव
८४×२१	अनुरूप कोठ	अनुरूप कोठ
८४×२४	अगर्वा मील तो	अगर्मी मीलतो
८५×२५	भारामल्ला	भारामल्ला

पत्र एवं पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
८४×२५	पद्य	पद्य
८६× ८	आ०	भ०
८७× ७	१७०८	१७६५
८७× ७	लेखनकाल ×	लेखनकाल—सं० १८०६ कागुण बुदी १३
८७×२१	रचन	रचना
६०×१५	प्रारंभिक पाठ के चौथे पद्य से आगे निम्न पद्य और पढ़ें—	

अंतर नाही सोखै वाय, समरस आनंद सहज समाय ।

विश्व चक्र में चित न होय, पंडित नाम कहावै सोय ॥ ५ ॥

जब वर खेमचन्द गुर दीयो, तब आरंभ ग्रंथ को कीयो ।

यह प्रबोध-उत्पन्नो आय, अंधकार तिहि घाल्यो खाय ॥ ६ ॥

भीतर बाहर कहि समुझावै, सोई चतुर तापै कहि आवै ।

जो या रस का भेदी होय, या में खोजै पावै सोइ ॥ ७ ॥

मथुरादास नाम विस्तारयो, देवीदास पिता कौ धारयो ।

अंतर वेद देस में रहै, तीजै नाम मल्ल कवि कहै ॥ ८ ॥

ताहि सुनत अद्भुति रुचि भई, निहचै मन की दुविधा गई ।

जितने पुस्तक पृथ्वी आहि, यह श्री कथा सिरोमणि ताहि ॥ ९ ॥

यह निज बात जानीयो सही, पचै प्रगट मल कवि कही ।

पोथी एक कहुं तैं आनि, ज्यो उहां त्यो इहां राखी जानि ॥ १० ॥

सोरह सै संवत जब लागी, तामहि वरष एक अर्द्ध भागी ।

कार्तिक कृष्ण पक्ष द्वादसी, ता दिन कथा जु मन में बसी ॥ ११ ॥

जो हों कृष्ण भक्ति नित करौ, वासुदेव गुरु मन में धरौ ।

तो यह मोपै हूँ ज्यौं जिसी, कृष्ण भट भाषी है तिसी ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

मथुरादास विलास इहि, जो रमि जानै कोय ।

इहि रस-वेधे मल्ल कहि, बहुरनि उलटै सोय ॥ १३ ॥

जब तिसु चन्द्र अकासै होइ, तब जो तिमिर न देखै कोइ ।

तैसे हि ज्ञान चन्द्र परकासै, ज्यौं अज्ञान अंध्यारौ नासै ॥ १४ ॥

परमात्म परगट है जाहि, मानौ इहै महादेव आहि ।

ग्यान नेत्र तीजे जब होई, मृगतृष्णा देखै जगु सोई ॥ १५ ॥

पत्र एवं पंक्ति

अशुद्ध पाठ

शुद्ध पाठ

अनुभू ध्यान धारणा करें, समता सील मांहि मन धरै ।

इहि विधि रमि जो जानै सही, महादेव मन बच क्रम कही ॥१६॥

६०×२६

या र

या र

६१×३
३६४×७

उतमचंद

टोडरमल

६४×६

बनारसीदास

द्यानतराय

१००×१८

वाचक विनय सूरि

वाचक विनय विजय

१०१×६

उगणसीयइ

उगणसीसइ

१०१×६

राते रचउ

राते

१०१×७

कारणां

कारणां

१०१×६

इठवन

इठवन

१०३×२६

नेमिदश भववर्णन

नेमिदश भववर्णन

१०४×२२

मानतुंगाचार्य टीकाकार

मानतुंगाचार्य । टीकाकार

१०७×२१

६

५

१०१×१

प्रथम पंक्ति के आगे निम्न पंक्ति और पढ़ें—

“शिष्य ताहि भट्टारक संत, तिलोकेन्द्रकीरति मतिवंत ।

११०×११

प्राकृत (॥)

अपभ्रंश

११४×१, १८

कवि कालक

कवि रामचन्द्र 'बालक'

११४×२३

दोहा

दोहा

११४×२४

१६६१

१६६३

१ ७×१४

नि कनकामर

मुनि कनकामर

१२१×२

१२६०

१७१७

१२७×२

ोष

विशेष

१३१×६

मनरकट

मनरकट

१३४×३

बडा चादन्त

बड़ाचा दन्त

१३७×५

बंदो के पठनार्थ ने

चंदो के पठनार्थ

१३८×११

... क

धार्मिक

१३६×१

का नाम

कर्त्ता का नाम

१३६×२३

चरित

धू चरित

पत्र एवं पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
१४६×५	ललचचंद	लालचन्द
१४७×१६ } ३६३×२७ }	अमरमणिक	अमरमणिक के शिष्य साधुकीर्ति
१४८×२ १४८×२४, २६ } ३३८×२६ } ३४०×२६ }	माणिक सूरि मो. ८.	पुण्यसागर मो. ८.
१४६×२१	गुजराती	हिन्दी (राजस्थानी)
१४६×३	मोड़ो	मोरडो
१४०×११	जसुमालीया	जसु मालिया
१४०×१८	कापथ	कायथ
१४०×२०	परवार	परवार
१४१×६	नारी चरित्र	नारी चरित्र संबंधी एक कथा
१४४×१०	जैन	जे न
१४४×२१	बुधजन	बान्ततराय
१४४×६	राज पट्टावली	देहली की राजपट्टावली
१४६×१०	राजाओं के	देहली के राजाओं के
१६३×१४ } ३७०×२१ }	ज्ञानवत्तीसी	अध्यात्म वत्तीसी
१७०×६	३५ वें पद्य के आगे की पंक्ति निम्न प्रकार है—	

तस शिष्य मुनि नारायण जंपइ धरी मनि उल्हास ए ॥१३५॥

१६६×८	पत्र संख्या-।	पत्र संख्या-१६।
१७८×२६	रचनाकाल-×।	रचनाकाल सं० १४२६।
१८०×१६	कण कणत्व	देवपट्टोदयान्नितरुण तरुणित्व
१८०×१८	लोधा ही	लोधाही
१८४×६	विमलहर्षवाचक	भाव
१८७×११	१६०७	१६००
१८७×१६	१८२१	१६२१
१८८×६	१४४४	१६४४
१६०×२१	श्रीरत्नहर्ष	श्री रत्नहर्ष के शिष्य श्रीसार
१६४×४	भव वैराग्य शतक	वैराग्यशतक

पत्र एवं पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
१६४×१८	भूधर	पं० भूधर
१६६×१७	धर्मभूषण	अभिनव धर्मभूषण
२००×२५	तेलावत	लब्धिविधान तेलावत
२०४×१५ ३१८×१०	आ० गणिनंदि	आ० गुणिनंदि
२०४×२४	पीले	पील्या
२१८×१६	पंडि	पंडित
२१६×२४	रचनाकाल	रचनाकाल सं० १६१८
२२१×१२	कवि बालक	कवि रामचन्द्र 'बालक'
२२१×१३	सं० १७०३	१७१३
२२४×१६	अष्टान्हिका कथा	अष्टान्हिका कथा—मतिमंदिर
२२७× ७	कनककीर्ति	कनक
२२७×२१ ३३६× २	बंकचोरकथा (धनदत्त सेठकी कथा)	बंकचोरकथा, धनदत्त सेठ की कथा
२२८×२१	देव ए	देवरा
२२८×२६	सैं भदारखां	सैंभदारखां
२३४× २ ३५०×१८ ३६४×५	कामन्द	—
२३४×१५	१७२६	१७२८
२३७× ७	१०८०	१७८०
२३८×१०	कुमुदचन्द्र	मू० क० कुमुदचन्द्र/टीकाकार उत्तमऋषि
२४०× ८	जयानंदिसूरि	जयनंदिसूरि
२४०×१४	शलिपंडित	शालि पंडित
२४३×१७	(युगादि देव स्तवन) ।	(युगादिदेव स्तवन) विजयतिलक
२४३×२७	मिथुण्यो	मिथुण्यो
२४४× २	ए भणइ	पभणइ
२४४× ६	ज्योतिष (शकुन्तलाशस्त्र)	वास्तुविज्ञान
२४६× ७	वराहमिहरज	वराहमिहर
२५२×१०	महिसिंह	महेस

पत्र एवं पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
२५२×१४	महसंहि	महेसहि
२५२×१६	गोत्रवर्णन	खंडेलवाल्लों के गोत्र वर्णन
२५३× ६	रचनाकाल	रचनाकाल सं० १८८६
२५३× ६	लेखनकाल सं० १८८६	लेखनकाल X ।
२५३×१५	छद्म सतीयासिंह	छद्म सतीयासिंह
२५४×२५	अब्दनीवासी	अब्द नीवासी
२५५×१४	हेमविमलसूरि	हेमविमल सूरि के प्रशिष्यण संघकुल
२५७×१६	समासो	तमासो
२५८× ६	व्रतविधानवासों	व्रतविधानरासो
२५९× ५	श्रावण	श्रावक
२६०× ८	२७७	२७० रचना काल सं० १७४३
२६७× ६	५१६	५१८
२६६×१२	बालक	रामचन्द्र 'बालक'
२७०× ६	२६	२४
२७१×१२	गोट	गोत
२७३× ६	वीर सं०	विक्रम सं०
२७३×११	हिन्दी	संस्कृत
२७३×१५	१६५८	१६१८
२७३×१८	पद २	जिनदत्त सूरि गीत
२७३×१८	जिनदत्तसूरि	
२७६×८	पाठ्य	पाठ
२७६×१३	भूषाभूषण	भाषाभूषण
२८०×१०	पत्रावली	चपत्रावली
२८४×१८	श्री धूचरित	श्री धूचरित-जनगोपाल
३२८×१६		
३५१×२२		
२८६×२८	१७६६	१६६६
२८०× ६	भाषा	भाषा
२८०×१०	तसंघरन बनि धथाइ	तसंघर नबनिधथाइ
३६०×१२	अधकउ न तरुवइ	अधक बनत हुवइ

पत्र एवं पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
२६१×२८	जिनदत्त सूरि	सययसुन्दर
२६१×२०	१० का० सं० १७२१ पृष्ठ १८	—
२६२×८ ३०८×१८ }	माति छत्तीसी	प्राति छत्तीसी
२६२×८ ३३८×१८ }	ग्रशः कीर्त्ति	सहजकीर्त्ति
२६२×१४	हरिकलश	हीरकलश
२६२×१४	सं० १६३२	१६३६
२६४×७	थावलपुरि	पावलपुरि
२६४×११	भारववा	भैरवदास
२६४×२८	वेतालदास	—
२६७×६	२१८	३१८
३०१×१६	" (१२)	संस्कृत (१२)
३०१×२०	" (१३)	हिन्दी (१३)
३०१×२५	चतुरार्द्ध	परिचर्द्ध
३०३×६	१७४०	१७४४
३०४×२ ३२०×२४ }	गुनगंजनम	गुनगंजन कला
३१०×१५	षष्ठिशतं	षष्ठिशत प्रकरण
३१०×१५	"	प्राकृत
३१२×६	६१	८१
३१२×६	कुशलमुनिद	—
३१५×८	चैनसुखदास	चैनसुख
३१५×१५	मुनि महिसिंह	मुनि महेस
३१६×७	गणचन्द्र	गुणचन्द्र
३१८×६	उपदेशशतक-बनारसीदास	उपदेशशतक-द्यानतराय
३२०×१६	यति धर्मभूषण	अभिनव धर्मभूषण
३३१×११	मर्दास	धर्मदास
३४१×२२	२६१	२६२
३४०×१८	२७६	३७६
३६२×१४	गोयमा	गोयम
३६३×१४	संबोध पंचासिका	—
३६४×७	उत्तमचंद्र	टोडरमल
३६४×४	कामन्द कामन्दकीय नीतिसार	—